-: श्री राज स्यामा जी सहाय :-

श्री मुख बीतक साहिब

श्री १०८ श्री प्राणनाथ जी महाराज

विजया अभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार
आखरूलजमां इमाम मेहेंदी साहिब पूर्ण
ब्रह्म सच्चिदानन्द अछरातीत के
श्री मुख की वाणी।

श्री १०८ स्वामी लाल दास जी कृत

अवतरण काल १७५१
श्री १०८ पदमावती पुरी धाम
पन्ना (मध्य प्रदेश)

प्रकाशक
श्री निजानन्द आश्रम ट्रस्ट (रजि.)
रतनपुरी, मुजफ्फर नगर
(उत्तर प्रदेश)

Nijanand App

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।

।।अथ तीनों सरूपों की बीतक लिखते।।

भविष्य पुराण में, राजा कहे जुग चार।
वचन जो हैं व्यास के, ताको करो विचार।।१

सत्रह राजा सतजुग में, एक कह्यो राजा कृत्त।
तिन अपनी भुगती, तापर भयो कृतदत्त।।२

ता ऊपर अन्त भयो, फेर मुचकुन्दभा होय।
ता ऊपर भैरवानन्द, राजा कम्भो कह्यो सोय।।३

ता ऊपर आदि भयो, फेर हरनाकुस कह्यो नाम।
ता ऊपर ताके ठौर, प्रहलाद भयो इस ठाम।।४

ता ऊपर बलिलोचन, तापर बलिभोगत।
इनहों अपनी भुगती, लोचनबली इत।।५

ता ऊपर बानासुर, तापर कपिलाक्ष नाम।
कपिलभद्र तापर भयो, जरासरी इस ठाम।।६

तापर धूमऋषि कह्यो, ए सत्रह सतजुग के।
अब कहों त्रेता के, उनतीस नाम भये।।७

Nijanand App

प्रथम तो ब्रह्मा भयो, तापर मारीच नाम।
तापर कश्यप भयो, फेर सूरज इस ठाम।।८

तापर तवछत्र भयो, तापर अक्षयभा नाम।
ता ऊपर अरण्यभा, विश्वामित्र इस ठाम।।६

फेर महामंत्र भयो, तापर भयो चिमन।
ता ऊपर राजा भयो, नाम भद्र उदवन।।१०

तापर त्रिसंख भयो, तापर हरिश्चन्द्र होय।
तापर रोहितास नाम, मानधाता कह्यो सोय।।११

फेर राजा सगर भयो, फेर आसा मित्र नाम।
तापर भगीरथ भयो, दिलीप जो इस ठाम।।१२

तापर रघु भयो, फेर अज इस ठाम।
तापर भयो दसरथ, फेर रामचन्द्र नाम।।१३

तापर लव भयो, तापर अन्तभान।
तापर कयलखी, तापर बबरबान।।१४

ता ऊपर सुदरसन, तापर अग्निवरन।
ऐ उनतीस त्रेता मिने, भये राजा ऊपर धरन।।१५

उनैस भये द्वापर में, प्रथम इन्द्र नाम।
तापर भयो चन्द्रमा, फेर पूरवा राजा इस ठाम।।१६

Nijanand App

अय राजा तापर भयो, निरमोक्ष तापर होय।
तापर सान्तनु भयो, चित्र राजा कह्यो सोय।।१७

तापर विचित्र भयो, तापर भयो व्यास।
ता ऊपर पांडव भयो, फेर अर्जुन राजा आस।।१८

तापर अहिवरन कुमार, फेर सेत्रनख नाम।
ता ऊपर संतन भयो, वलीवान इस ठाम।।१९

तापर निरवान भयो, तापर बलीचन्द होय।
तापर परीछित भयो, फेर जनमेजय कह्यो सोय।।२०

अब कहों बीस कलिजुग के, उन्नीस कहे द्वापर।
उनतीस त्रेता के कहे, सत्रह सतजुग पर।।२१

अब कहों कलिजुग के, प्रथम तो जदु नाम।
ता ऊपर अजयपाल, फेर महिपाल इस ठाम।।२२

तापर गन्धर्वसेन, वीर विक्रमादित्य।
तापर विक्रमाचक्र, फेर भोज कह्यो सावित।।२३

तापर गौरी पादसाह, सुलतान अलाउद्दीन नाम।
ता-ऊपर नसीरूदीन, लोढ़ा महमूद इस ठाम।।२४

तापर बड़ा महमूद, तापर सूरखो होय।
तैमूरलिंग तापर भयो, बावर कह्यो सोय।।२५

Nijanand App

ता ऊपर हुमायुं, ता ऊपर अकबर।
ता ऊपर सलीम साह, साहजहां तिन पर।।२६

ता ऊपर औरंगजेब, ए कलियुग के नाम।
आगे अवतार होयगा, बुद्ध कलंकी इस ठाम।।२७

श्री महामति कहे ऐ साथ जी, सास्त्र कहें यों कर।
आगे अपनी बीतक, सो लीजे चित धर।।२८

प्रकरण।।१।। चौपाई।।२८।।

महाकारण

अब कहों फेर के, मूल मिलावे की बीतक।
जैसी आज्ञा धनी की, सों बातें बुजरक।।१

पहले मूल अद्वैत में, भोम जहाँ इस्क।
तहां प्रेम रबद में, भया हुकम हक।।२

एह खेल देखन की, इच्छा उपजाई दोय।
अक्षर और सैयन को, आदि अनादि फल कह्यो सोय।।३

ताके तीन तकरार कहे, सो भये तीनों इण्ड।
ताकी बीतक जुदी-जुदी, माया मिथ्या नट ब्रह्मांड।।४

पहले अग्यारे बरस, और ऊपर बावन दिन।
काल माया ब्रह्मांड में, खेले मिल निज जन।।५

Nijanand App

ता पीछे आये रास में, इण्ड जोगमाया जाग्रत।
जहां विरह विलास दोऊ, देख के फिरे इत।।६

ब्रज-रास दोऊ अखण्ड, कर चेतन बुधि फिरे मन।
ए ब्रह्मांड तीसरा, जहां महम्मद आये रोसन।।७

रास लीला खेल के, आये बरारब में।
तहां बात सब जाहिर करी, चल्या मारग इनसे।।८

छे दिन कुरान में, वाके भए जब।
ता दिन की हकीकत, सारी छिप कही तब।।९

तामें एक दिन ब्रज में, दूसरे दिन रास।
एक रात तहां खेले, देखे विरह विलास।।१०

मनोरथ पीछे रहे, तब तीसरो भयो इण्ड।
तामें आये बरारब, आमर फैलाया ब्रह्मांड।।११

एह है दिन तीसरा, रहे साठ बरस और तीन।
रब्बानी कलाम अल्लाह के, सब को दिया आकीन।।१२

एह कथा बहुत है, विस्तार नहीं सुमार।
पर ए चौथे दिन की, सैयां करो विचार।।१३

जब महंमद साहेब की, नव सदी बीतक।
सवा नव बाकी रहे, दसमी के बुजरक।।१४

Nijanand App

साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब।
रूह अल्लाह मिसल गाजियों, सैंयां उतरे तब।।१५

सम्बत सोलह सै अड़तीसे, आसो सुदी चौदस को।
जन्में दिन श्री देवचन्द्र जी, आए प्रगटे मारवाड़ मों।।१६

तामें गाम उमरकोट, मत्तू मेहता घर अवतार।
माता जो कुंवरबाई, ताको कहों विस्तार।।१७

जब जनमे मारवाड़ में, घर अति आनन्द नर नार।
यह बधाई ब्रह्मांड में, त्रिगुण समेत विस्तार।।१८

सुखदाई सबन को, अखण्ड करन हार।
विश्व बन्दे अक्षर लों, सुके परीक्षित सों कह्यो विचार।।१९

"देवापिः सन्तनोर्भ्राता, मरुश्चेक्ष्वाकुवंशजः।
कलाप ग्राम आसाते, महायोग बलान्वितौ।।"

"ताविहैत्य कलेरन्ते वासुदेवानुशिक्षितौ।
वर्णाश्रमयुतं धर्मं पूर्ववत प्रथयिष्यतः।।"

(भागवत स्कंध १२/२/३७,३८)

सतजुग के बीज भूत, इनों बीच रहे विस्तार।
होवे सब में जाहिर, अखंड ए संसार।।२०

सोई वेद कतेब में, इनों की लिखी साख।
और उपनिषद भागवत में, लिखी बाणी कै भाख।।२१

Nijanand App

जब को ये ब्रह्मांड, तब के एह वचन।
जनम से ले बीतक, जाके सुने पतीजे मन।।२२

ताके ग्रन्थ भाषा मिने, आप अपने किये सब।
एक मिलाय खोल दीजिए, ए वस्त पावे तब।।२३

सोई सरत कुरान में, लिखी एक सौ बीस बरस।
चार पांच छठा दिन, तब जाहिर होवे अरस।।२४

सब सृष्टि सेजदा करे, होवे जाहिर अखण्ड धाम।
जो याद नहीं अक्षर को, सो सुध सबों हुई तमाम।।२५

जो दृष्टि सुपन जीव की, नहीं लखी मिनें लगार।
सो दृष्टि अखण्ड सुख में, पहुंची नूर के पार।।२६

ए सुध जो ले आये, रूह अल्ला चौथे आसमान।
तिन सेती प्रापत भई, त्रिगुण सृष्ट पहिचान।।२७

तीन सरूप की बीतक, जनम से लेकर।
सो कहों आगे सैयनों, ए चरचा सब ऊपर।।२८

जब भया बरस अग्यारमाँ, तब मन उपज्यो विचार।
मैं कौन कहां थे आइयो, कहां मेरो भरतार।।२९

पूछत फिरे परदेस में, कहां है परमेस्वर।
जिन सब को पैदा किया, सो कहां है सब ऊपर।।३०

Nijanand App

कोऊ कहे वह घट घट, है व्यापक संसार।
तब जान्या वह निकट, ए ही ग्रहों में सार।।३१

एक देहुरा तहां रहे, तामें मूरत पिंगल स्याम।
आगे इहां बिराजते, दै प्रदक्षणा उस ठाम।।३२

ले लोटा घर से चले, दन्त धावन के काज।
सुध आकार करके फिरें, आवे न मन में लाज।।३३

नित्य इत प्रदक्षणा, देवें एक पोहोर।
फेर दण्डवत करके, मेहनत करें अति जोर।।३४

उस देस में साध सन्त, आवत नाहीं कोइ।
जल कसनी देख के, काहू न आवन होइ।।३५

एक बेर मत्तू मेहता संग, आए हते कच्छ देस।
तहां देहुरे साध बहुत, देखे बीच विदेस।।३६

बात तब की मन में रहे, मैं जाऊं कच्छ में।
तहां जाय के खोज करों, पाऊं परमेस्वर तिन से।।३७

घर में खटपट रहे, मन में रहे वैराग।
दुनी से वैर रहे, उन्हें देखे लगे आग।।३८

दै सिखापन बहुतक, कर कर थके सब कोय।
ए फिराए ज्यों फिरे, कहे समझावें सोय।।३९

Nijanand App

श्री देवचन्द्र जी के मन में, जाऊं कहूं विदेस।
तहां जाय के खोज करों, कोई मोहे दे उपदेस।।४०

पूछत फिरे सब ठौरों, कोई मुझे बतावे राह।
या समय राजा उमरकोट का, ताको बजीर जाय ताह।।४१

खांड़ा विवाहने को, जाता था कच्छ में।
दो सै असवार एक बहल, उतावले पहुंचने।।४२

श्री देवचन्द्र जी नें सुनी, गए पूछने तिन के।
तिन बजीर ने बातें करी, हम कच्छ जायेंगे।।४३

तब पूछा उन्होंने, क्या असवारी तुम्हारे।
हम संग क्यों पहुंचोगे, प्यादे असवारों के।।४४

तब कह्या श्री देवचन्द्र जी, हम चले आवेंगे।
तब उनने बरजे, जिन आओ संग हमारे।।४५

तब श्री देवचन्द्रजी विचारिया, मैं काहे पूछों इन्हें।
पीछे चला जाऊंगा, अपने पांवों से।।४६

घरों जाय के साज को, राह की लेने लगे।
थारी कटोरा लोहंडा, और लोटा जल के।।४७

एक नीमचा कमर को, और कपड़े पहनन के।
बकुचा बांध तैयार भये, खरची बांधी तिन में।।४८

Nijanand App

ले प्रसाद पौढ़ रहे, पीछला दिन रह्या घड़ी चार।
वे साथ असवार भये, ए करने लगे विचार।।४९

कमर बांधते बांधते, कछू ढील हो गई इत।
वे असवार रिंग गये, ए पीछे चले जाये तित।।५०

चले अति उतावले, मन में पहुंचौं धाय।
वे असवार ये प्यादे, क्यों कर पहुंच्यो जाय।।५१

यों करते चले गये, बीच पड़ी आए रात।
ए मुलक रेतीय का, ए किन सों करें बात।।५२

तहां चली राह न पाइये, भय चोरन का जोर।
एक दोय निबाह न सकें, है इन भांत का ठौर।।५३

एक ढेर वाउ उठाए, खड़ा करे तरफ और।
फेर तहां वाउ लगे, ढेर लगे और ठौर।।५४

वय बालक मन दहसत, पेट में उठा दरद।
ना जाने आगे पीछे, हैं कौन जागा सरहद।।५५

यों करते चले जाते, एक सख्स दिया दीदार।
तब बड़ी दहसत भई, ऐसो आयो विचार।।५६

ए चोर मोको मारेगा, नहीं बचने का ठौर।
मेरा कछु न चलहे, मुझ गई दिस और।।५७

Nijanand App

इतने में आए गया, होए गई मुलाकात।
देखत ही दहसत भई, वह कहने लगा-बात।।५८

ए भेष सिपाही का, कमर कटारी तरवार।
मोंह दाढ़ी हाथ बरछी, ऐसो भेष ल्यावन हार।।५९

मुख से आये वचन, कहे छोड़ो कमर तरवार।
मुंह मूंदा दहसत से, कछू न आयो विचार।।६०

तुरत तरवार छोड़ के, दई हाथ में श्री राज।
कहा छोड़ तू गाठड़ी, ए बातें देखी इन काज।।६१

तब जान्या मुझे मारेगा, उनने कहे सुकन।
बिछाय पिछौड़ी सुवाये, तब कांपने लगा मन।।६२

बरछी हाथ पकड़ के, एक साथल पर दे पाय।
बोझ दिया सरीर का, फेर यों पूछी जाय।।६३

दरद भया कछू हलका, सूल पेट का था जोर।
श्री देवचन्द्र जी उत्तर दिया, कछू रह्या और ठौर।।६४

फेर दूसरी जांघ मूल में, दे पांव खड़े रहे।
बोझ दिया सरीर का, इन सरीर पर दे।।६५

फेर पूछा क्या खबर, सूल मिटा आकार।
तब उठ खड़े भये श्री देवचन्द्र जी, ऐसा किया विचार।।६६

Nijanand App

पिछौड़ी कमर बंधाइ के, बोझ बांधा अपनी पीठ पर।
तब जान्या श्री देवचन्द्र जी, ए मारे नहीं क्योंए कर।।६७

बन्दीखानें रख के, करेगा गुलाम।
मारने से तो बचाया, अब क्या करावे काम।।६८

मिल दोऊ इहां से चले, राह में अत जोर।
लगे बात लौकिक पूछने, कहो कौन तुमारो ठौर।।६९

नाम माता को पूछत, और कुटुम्ब परिवार।
ताको उत्तर देत हैं, चले जाये तिन लार।।७०

देवचन्द्र उत्तर दियो, रहें उमरकोट गाम।
मत्तू मेहता जो पिता, करें सौदागरी का काम।।७१

फेर खबर देस की, पूछने लगे सुकन।
कौन राजा तुम देस को, कैसो ताको चलन।।७२

कौन वजीर ताके रहे, क्योंकर चलत बेहेवार।
कै ऐसी बातें लौकिक, एही पूछे विचार।।७३

यों करते पूछत चले, पन्थ करते जाय।
रात रही थोड़ी बाकी, साथ को पहुंचे धाय।।७४

उस जागा खड़े रहे, पिछौड़ी छुड़ाई कमर से।
अपनी पीठ पर गांटड़ी, सो दई श्री देवचन्द्र जी को इन समें।।७५

Nijanand App

दई तरवार छोड़ के, देख ए तेरो साथ।
पीछे फिर के देखहीं, मेरा किनने पकड़ा था हाथ।।७६

उहां तो कछु न देखहीं, कौन कहां गयो एह।
ए तहकीक मेरा खावन्द, कियो विलाप याद कर तेह।।७७

फेर के एता विचारिया, मेरे ए तो हैं सिर पर।
जहां कहूं मैं डार हों, ए छोड़े नहीं क्यों कर।।७८

ए तो तहकीक हुआ, धनी हैं मेरे हाजर।
भले अब कहां जायेंगे, खोज लेऊं इन पर।।७६

तब सनमुख चले साथ को, आवत रोके तिन।
कौन है कहां आवत, नाम श्री देवचन्द्र लिया इन।।८०

तब ले चले सिरदार पे, उनने पूछे सुकन।
तुम क्यों आये हमको मिले, बड़ो अचरज भयो मन।।८१

क्योंकर राह पाई तुम, क्यों पहुंचे असवारों संग।
तब जवाब श्री देवचन्द्र जी दिया, आए चले जैसे वंग।।८२

तुमारे पीछे चले आये, कदमों पर धरे कदम।
पांव अपने बल से, चले मार्ग आये हम।।८३

सबों बड़ो अचरज पाइ के, कही खोलो कमर।
वे पुन डेरा डाण्डी पछाड़ी, कोई था आग जलावने पर।।८४

Nijanand App

तब उन कायस्थ सिरदार ने, रसोई का किया आदर।
चाहो तो सीधा लेवो, या आओ रसोई पर।।८५

तब श्री देवचन्द्र जी ने, यों कर दिया जवाब।
मैं अपने हाथों करत हों, कह्या कायस्थ तिन के बाब।।८६

तो हमारे भंडार से, सीधा लेवो तुम।
तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा, घर से सीधा ल्याए हम।।८७

तब कायस्थ दुख पाय के, कही हमारी नहीं ए रवेस।
हमारी न्यात का ले हम पे, हो तुम हमारे खेस।।८८

तब सीधा तिनका लिया, करी रसोई तब।
जा सरूप को दर्शन पायो थे, ताको रसोई अरूगायी सब।।८९

प्रसाद लेके पौढ़ रहे, फेर के उठे जब।
उठके गैल चलन को, हुए तैयार सब।।९०

तब उन कायस्थ ने, कह्या अपने लोगों को।
दोय ऊंट पर असवार, केते सामिल हो उन मो।।९१

तब उनने उत्तर दिया, हम हैं जने चार।
तब कह्या पांचमा एह तुम, सामिल करो असवार।।९२

इन भांत श्री देवचंद्र जी, आये पहुंचे कच्छ मों।
गये लोक अपने ठौर, आप लगे खोज को।।९३

Nijanand App

महामति कहें ए साथ जी, एह श्री देवचन्द्र जी की बीतक।
आगे खोज करेंगे, सो बातें बुजरक।।६४

प्रकरण।।२।। चौपाई।।१२२।।

बीतक कच्छ देश की

अब कहो कच्छ देस की, पहुंचे आप आये जित।
तहां आये खोज करी, सो बताऊं इत।।१

लगे खोज करने, बैठे देहुरे जाय।
चरचा को उत पूछत, वे प्रतिमा को ठहराय।।२

तहां मन माने नहीं, राह न आवे नजर।
कोइक दिन रहे तिन में, फेर उठे खोज ऊपर।।३

आये खोजे सन्यासी, बड़े डिंभ धारी।
आम पूजे तिन को, आवे खलक सारी।।४

तहां जाय के खोजिया, कहें जानत हैं सब हम।
देवें नाम सुमरन, नेहेचे कर ग्रहो तुम।।५

और चरचा करें दत्त की, लिया नाम सुमरन।
दिल में कछु न आवहीं, क्यों ए न पतीजे मन।।६

कोइक दिन तहाँ रहे, फेर चले जागा और।
बड़े डिंभ कन फटे, चले गये तिन ठौर।।७

वे राज गुरू कहावते, बहुत चेले तिन को।
कच्छ देस ताय मानहीं, जाय पहुंचे इन मों।।८

Nijanand App

कोइक दिन तहां रहे, साख न होय अन्दर।
पूछी चरचा तिनकी, कछु न पड़े खबर।।९

फेर वैरागी कापड़ी में, रहे कोइक दिन।
वस्त न देखी तिन में, परे इन्द्री बस मन।।१०

इन भाँत मेहेजद में, मुल्ला की करी सोहबत।
तहाँ कछु न पावहीं, कोइक दिन रहे तित।।११

और ब्राह्मण भेष कई, और भेष सब ठौर।
खोजत ही फिरत रहे, मेहनत करी जोर।।१२

फिर भोजनगर आए, तिन सहर में।
तहां हरदास जी रहे, भई सोहबत तिन से।।१३

वे थे राधा वल्लभी, सेवत कारज आतम।
सेवा बंके बिहारी की, करे सखी भाव धरम।।१४

रहे तिनकी सोहबत में, देखी सेवा अत प्रेम।
साँचा देखा तिन को, सेवत हैं अत नेम।।१५

जब रूत आवे गरमी की, तब सेवा तिन माफक।
टंडक करें हर भांत सों, आगा समे रूत ताकत।।१६

जाड़े की रूत मिने, गरमी का करें इलाज।
अब ए वस्त करों, चाहिएगी मुझे आज।।१७

Nijanand App

अस्नान करें दिन में, दोय चार वखत।
जब रूत पलटे में चाहिए, गरमी सीत होय इत।।१८

तब इनको अस्नान का, फेर फेर वखत होय।
ए सांचवटी देख के, ऐसी करे न कोय।।१९

इन ठिकाने आये के, आतम पायो करार।
ए सांचवटी देख के, करने लगे विचार।।२०

इनकी मैं सेवा करों, वस्त ग्रहों इनसों।
तब लगे सेवा करने, रहें इनकी सोहबत मों।।२१

नित्याने चरचा सुने, जाय बैठे सोहबत।
जब ए मतू मेहते सुनी, धाय के आए तित।।२२

नसीहत जो कहने हती, सो कह कह थके सब।
ए क्योंए माने नही, बेजार हुए तब।।२३

श्री देवचन्द्र जी माया के, क्योंए नजीक न जाये।
इनको वह गमे नहीं, बड़ो दुःख पहुंचाय।।२४

हरदास की सेवा करें, मनसा वाचा करम।
कछू सक न ल्यावहीं, रहें आतम के धरम।।२५

देख सांचे हरदास जी इनको, मन में देऊं नाम सुमरन।
ऐसो विचार करके, एक दिल में लिया दिन।।२६

Nijanand App

मतू मेहता विचार करें, क्योंए डारों माया में।
तो ए हाथ आवे मेरे, छूटे वैराग इनसे।।२७

एक ठौर सगाई करके, ब्याह को धरायो दिन।
वही दिन था उत्तम, लेने का नाम सुमरन।।२८

मारग राधावल्लभी में, लेने नाम सुमरन।
भद्र भेष होत है, श्री देवचन्द्रजी विचार किया मन।।२९

हरदास जी ने पूछिया, तुमको नाम सुमरन देवें आज।
भद्र भेष हो आओ, तो होय तुम्हारा काज।।३०

तब ही भद्र भेष होय के, आय के बैठे पास पूछा नाम।
सुमरन काहू का लिया है, कह्या सन्यासी का कर विस्वास।।३१

कहा सोई नाम सुमरन, चिट्ठी में लिख कर ।
रोटी में चिट्ठी वायके, देवो सन्यासी को यों कर।।३२

तब श्री देवचन्द्रजी ने कह्या, इनसे कछु न होय।
जो नाम ओ जोरावर, तो क्योंकर निकसे सोय।।३३

जो तुम्हारा नाम जोरावर, ओ आपही होवे दूर।
ए तो अर्थ ऊपर का, ए आम का मजकूर।।३४

सुन ऐसी बात हरदास जी, बड़ो जो पाया सुख।
दियो नाम सुमरन, देखो सरूप सनमुख।।३५

Nijanand App

भजमन श्री वृन्दावन, कुञ्जबिहारी नित बिलास।
एह राखो तुम दिल में, सुमरो कर विस्वास।।३६

सखी भाव होय भजिओ, उपदेस करके एह।
विदा दई तिन घर को, देखा मतू मेहते तेह।।३७

भद्र भेष देख के, करने लगे सोर।
ए कैसो काम कियो, चाहिए सिनगार इस ठौर।।३८

रोय पीट दुख पाय के, खीज डराय कहे सुकन।
श्री देवचन्द्र जी उत्तर दियो, तुम क्या चाहत हो दिन।।३६

मैं ब्याह करने था जिनसों, किया है तिन सों।
मैं तो तुमको बरजिया, मेरे काम नहीं इनमों।।४०

ऐसे में ब्याह हुआ, खटपट नित होइ।
श्री देवचन्द्र जी हरदास जी की, सेवा करत है सोइ।।४१

रहे सोहबत हरदास जी की, दोय पहर रात लगे।
चरचा और कीर्तन में, गुजरान करते ए।।४२

रहें एक पहर घर अपने, पीछली रात रहे जब पोहोर।
तब हरदास जी के मंदिर प्रदक्षिणा, देवे मेहनत जोर।।४३

एक दिवस हरदास जी, उठे थे देह कारज।
ऊपर झरोखे थें देखिया, कह्या कौन फिरत कौन गरज।।४४

Nijanand App

रात पिछली पहर एक है, घर के पीछे फिरत।
ए कौन सख्स आयो कहा, ए देख के तित।।४५

तब हरदास जी टोकिया, कौन सख्स हो तुम।
तब श्री देवचन्द्र जी उत्तर दिया, कह्या इत आये हैं हम।।४६

स्वर पहिचाना हरदास जी, आए श्री देवचन्द्र जी तुम कित।
खोल द्वार घर में लिए, तुम क्यों आए इस वखत।।४७

जवाब श्री देवचन्द्र जी दिया, सुनिए आप वचन।
रात खबर मोहे न रही, मैं जान्या उग्या दिन।।४८

सेवा करे न जनावहीं, अपनी आतम के कारन।
दिखावें नहीं काहू को, समझावें अपना मन।।४९

हरदास जी सुन के, कही है माफक परवान।
ए नित प्रदक्षिणा देवहीं, और दिन की सेवा करे जान।।५०

एक दिवस हरदास जी, थे सेवा में हुसियार।
आगे श्री देवचन्द्र जी, बैठे थे खबरदार।।५१

तब एक सख्स को, मारा बिच्छू ने जोर।
तिनके आकार में चेतन, कछु न रह्या इस ठौर।।५२

चार जने पकड़ के, आये खड़ा किया सामे द्वार।
और सख्स जो संग के, सो करने लगे पुकार।।५३

Nijanand App

आए बाहिर देखिया, हरदास जी इने समे।
हाथ मूंछो पर फेरते, हुआ चैन तिन समे।।५४

फेर के दूसरी बेर हाथ, मूंछो पर फेरा जो और।
तब आकार चेतन होए के, खड़ा रह्या इस ठौर।।५५

तीसरी बेर फेरते, जोर न लगे जब।
तब जहर कछु ना रह्या, दण्डवत किया तब।।५६

सबों ने सलाम कर, अस्तुत करी बनाइ।
जीव दान तुमने दिया, तुम्हारी बड़ाई कही न जाइ।।५७

तब हरदास जी ने कह्या, श्री देवचन्द्र जी सो वचन।
श्री देवचन्द्र जी बड़ो मंत्र है, ए रखों तुम्हारे तन।।५८

जो एक घड़ी फुरसत, न होती मंत्र कहने में।
तो प्राण न रहते इन के, होत ऐसो उपकार इन से।।५९

तब श्री देवचन्द्र जी ने कह्या, हरदास जी सुनो तुम।
हम को मंत्र जो तुम दियो, सो हृदय राखें हम।।६०

सो ए मंत्र कैसा है, जो लाख बिच्छु का दुख।
सो जनम और मरण का, छुड़ाय के देवे सुख।।६१

सो मंत्र जिन उर में रहे, तहां ए कैसे समाय।
तब हरदास जी रीझ के, सिफत करी बनाय।।६२

Nijanand App

हे श्री देवचन्द्र जी ए बुध, हममें नहीं लगार।
जो तुम कहत हो, सो हम में नहीं विचार।।६३

इन भांत के बीतकें, भई माहें भोजनगर।
श्री देवचन्द्र जी सेवा करें, पड़े न काहू खबर।।६४

एक दिन फिरते घर को, देखे झरोखे पर।
देखा श्री देवचन्द्र जी को फिरते, बुलाय लिए ऊपर।।६५

मैं जान्या तुम एक दिन, भूल के रात को आये।
ए तो नित फिरत हो, मैं ए मेहनत सही न जाये।।६६

तुम मोसों कहा कहत हो, क्या मांगत हो मुझ से।
मोसों तुम कह देवो, वह मैं देऊं तुमें।।६७

तब हरदास जी ने कह्या, मैं तुम्हें देऊं बालमुकुन्द।
तिनकी सेवा तुम करो, ज्यों पावो आनन्द।।६८

तब श्री देवचन्द्र जी ने कह्या, जो आज्ञा तुम्हारी होय।
सोई हमें करनी, करें सेवा जो सोय।।६९

महामति कहे ऐ साथ जी, यह बीतक भोजनगर।
आगे इनके और कहों, बीतक पहिचान पर।।७०

प्रकरण।।३।। चौपाई।।१६२।।

Nijanand App

श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप की पहचान

या समै हरदास जी, एक दिन नीको ठहराय कर।
कह्या बाल मुकुन्दजी पधरावो, तुम सेवो अपने घर।।१

ता दिन जो देखे सेवा में, समय प्रातः काल के।
सरूप तो देखे नहीं, तब लगे तहां ढूंढने।।२

सरूप कहूं न पावहीं, भए हरिदास जी दिलगीर।
सिंहासन सेज्या पर, पावे नहीं क्यों ए कर।।३

लगे पूछने घर में, इहां तो कोई आया नाहें।
तब जवाब तिनने दिया, इहां किन की ताकत जो आये।।४

हरिदास जी विस्मय भये, सेवा बिहारी जी की कर।
बाल मुकुन्द जी को ढूंढत फिरत, पस हुए यों कर।।५

इन समें आये पहुंचे, श्री देवचन्द्र जी घर से।
यह हकीकत सुन के, दिलगीर हुए मन में।।६

और हरिदास जी सों, लगे बातें करने।
यह चिन्ता तुम जिन करो, भई चूक हमसें।।७

तुम तो हम को दे चुके, वस्त आई थी हम पास।
एह हमारी भूल है, जो टूटी हमारी आस।।८

Nijanand App

हरिदास जी मानें नहीं, प्रसाद न लेऊं लगार।
जब मैं दर्सन करों, तब मोहे होय करार।।९

बिहारी जी को आरोगाए, दोउ बाल भोग राज भोग।
आरोगने बाल गोपाल को, कर दियो संजोग।।१०

घर में सब लोगों ने, और हरिदास जी नें।
करने लगे सब एकादसी, श्री देवचन्द्र जी तिन समें।।११

प्रसाद न लियो घर में, भयो वितीत दिन।
इहाँ हरिदास जी बैठे रहे, दुख पाया अति मन।।१२

यों करते मध्य रात, भई वितीत जब।
हरिदास जी बैठे हते, कछु आंख मिची तब।।१३

तहां आये बालमुकुन्द जी, साक्षात दियो दर्सन।
अहो प्रभुजी कहां गए हते, हम ढूंढ़त कलपे मन।।१४

कह्या हम तो उतहीं बैठे हते, तो तुम क्यों न दियो दीदार।
कही तुम मोको पधरावते थे, श्री देवचन्द्र जी के द्वार।।१५

सो तुमको इन सरूप की, भई नहीं पहिचान।
मैं इनकी सेवा न सह सकों, ना सह सकों अहसान।।१६

जो दिलगीर होय श्री देवचन्द्र जी, एह बात सुन के।
तो वस्तर सेवा दीजियो, तुम मोहे न दीजो इनें।।१७

Nijanand App

अब प्रभु जी तुम कहा हो, कही मैं बैठो वाही ठौर।
यों करते आंख खुल गई, भड़क उठे यों कर।।१८

जो अन्दर आए के देखहीं, तो बालमुकुन्द बैठे सिंहासन।
फरि-फरि चरणों लगे, प्रफुल्लित हुआ मन।।१९

हरिदास जी घर से चले, देऊं खबर श्री देवचन्द्र जी को।
भई खुसाली दीदार की, मिले सामे बाजार मों।।२०

हरिदास जी दौड़ उतावले, सीस नमाया चरन।
कही हरिदास जी कहा करत हो, हाथों उठाया तिन।।२१

कह्या ए श्री देवचन्द्र जी, कहा खबर कहों मैं तुम।
कही तुमारे सरूप की, पहिचान नहीं हम।।२२

आज दिन लगे हम सेवते, कबहूं दरस नाहीं साक्षात।
सो सरूप बालमुकुन्द जी, मोसों करी विख्यात।।२३

सो तुमारे सरूप की, पहिचान कर दई।
तुम इनको जानत नहीं, मोहे ऐसी बात कही।।२४

और मेरी सेवा करन को, इन्हें देवो तुम जिन।
जो होय श्री देवचन्द्र जी दिलगीर, तो दीजो वस्तर सेवन।।२५

तब पूछा श्री देवचन्द्र जी, पाए बालमुकुन्द तुम।
तब कह्या हरिदास जी ने, चलो दर्सन करावें हम।।२६

Nijanand App

दोऊ जने बातें करते, खुसाल होय के मन।
आये हरिदास जी के घरों, मगन होय रोसन।।२७

दोऊ जने दीदार करके, लिया प्रसाद जो इत।
सब घर के लोगों लिया, हुआ प्राप्त बखत।।२८

इन विध भोजनगर में, भई कै भांत बीतक।
ताकी एक भांत तुम सों कही, है बात बड़ी बुजरक।।२९

जामा बांके बिहारी जी का, दिया सेवने को।
श्री देवचन्द्र जी सिर चढ़ाय के, ल्याए अपने घर मों।।३०

तहां जाय एक ठौर को, बनाई नीके कर।
बासन सेज सिंहासन, तहां पधराये वस्तर।।३१

लगे सेवा करने तिनकी, आप अपने अंग सों।
चौका पानी रसोई, देह पछाड़े इन मों।।३२

जल भर ल्यावें सिर पर, जो काहू की परछाई परे तिन पर।
तो फेर ल्यावें और जल, सेवा करें यों कर।।३३

रसोई करें विवेक सों, सेवा को सब साज।
सेवा में चितवन रहे, मोको ए वस्त करनी आज।।३४

चावल मूंग घीऊ खाड, कर जुदा श्री राज के काज।
अपने वास्ते उतरती, जुदा बनावें साज।।३५

Nijanand App

और रसोई विवेक सों, करे नीके कर।
आकार को प्रवाह ज्यों, पालत हैं यों कर।।३६

जब इन भांत सेवा करें, लगे लीलबाई को लोग कहने ।
तुम ऐसी स्त्री हो घर में, श्री देवचन्द्र जी मेहनत करे हाथों सें ।।३७

तुम क्यों रसोई न करो, जल क्यों न भर ल्यावो तेह।
तुम चौका क्यों न देवत, चाहिए सेवा तुमको येह ।।३८

तब इत लीलबाई नें, करी आय के अरज।
सब मोकों ताना मारत, करों सेवा अपनी गरज ।।३६

तब श्री देवचन्द्र जी ऐं कह्या, नाहीं तेरो ए काम ।
कबहूं तेरो चित दुखायगो, जल भरते इस ठाम ।।४०

या और टहल करते दुखाय, तोको नहीं पहिचान ।
तब सेवा-धरम कहाँ रह्यो, ना होय मेरे समान।।४१

देऊं नहीं तिस वास्ते, मैं करों अपने अंग ।
है मेरो प्रेम सरूप सों, तामें होवे भंग ।।४२

सेवा करने न दई, सब करें अपने हाथ।
हमेसा चितवन करें, रहें सेवा के साथ।।४३

इन भांत एक दिन, हुआ ध्यान में दरसन।
जाने हम ब्रज में गए, द्वार नन्द के रोसन।।४४

Nijanand App

जहां जसोदा जी बैठी थी, ऊपर मांची के।
देखे दूध उटावते, टहेल करावते एह।।४५

तहां आप श्री देवचन्द्र जी, ठाढे भये जब जाये।
कहे आई जी आवो श्री देवचन्द्र जी, मन में महा सुख पाये।।४६

जसोदा जी कहें तुम आरोगो, श्री देवचन्द्र जी इत।
तब पूछा श्री देवचन्द्र जी ने, श्री कृष्ण जी हैं कित।।४७

हैं कहां श्री कृष्ण जी, मैं करों दरसन।
कही गये बन में खेलने, कह्या है उत मेरा मन।।४८

मिठाई घर में से मंगाय के, दई श्री देवचन्द्र जी के हाथ।
उहाँइ जाय के आरोगियो, दोऊ मिलके साथ।।४९

तहां आप श्री देवचन्द्र जी, चले तरफ जहां बन।
तहां बाल गोपाल खेलते, कहां श्री कृष्ण जी पूछा तिन।।५०

कहा कौन श्री कृष्ण जी तुम कहो, खेले टोले टोले लड़के।
कृष्ण जी नाम बहुतन का, कहा बेटा नन्द जी का जे।।५१

नन्द के बेटे कृष्ण जी, इहां बहुत रहत।
तुम किन को कहत हो, कहा जसोदा बेटा इत।।५२

बुलाय लिये देवचन्द्र जी, बैठाए अपने पास।
बातें लगे करने, मुख मीटे प्रेम लिये खास।।५३

Nijanand App

इन समै इत घूंघरी, पकाई भोजन मों।
छेड़े दोऊ छटके लै रूमाल, पानी निकालने तिन सों।।५४

श्री देवचन्द्रजी मिठाई, जो ल्याए थे नन्द घर से।
तिनको ले आगे धरी, दई लड़को को बांटने।।५५

कह्या श्री कृष्ण जी ए बांट दयो, देवो हमको दो बांटे के।
दिये उन लड़कों इन्हें, दोय भाग जो इनके।।५६

और सामा सब के, हिस्से दिये दोय।
श्री देवचन्द्र जी आप आरोगे, फेर ध्यान से चौंके सोय।।५७

तब इनका विचार करके, तहकीक किया मन में।
हमारा खावन्द एही है, चित्त बांधा इन सरूप से।।५८

अरूगावन लगे इनको, दिल में कर विस्वास।
दिल में ए ही उपजी, ब्रजलीला की रही आस।।५९

कोइक दिन इन भांति सों, हुआ है गुजरान।
इन भांत कई बिध की, कहा लों कहों पहिचान।।६०

महामति कहे ए साथ जी, ए इत के कहे बयान।
श्री देवचन्द्र जी के सरूप की, नेक कहों पहिचान।।६१

प्रकरण।।४।। चौपाई।।२५३।।

अब इहां से आये, बीच हलार देस।
तहां नौतन पुरी मिने, बहुत जमा भये खेस।।१

Nijanand App

इत माँ बाप आये रहे, उत वल्लभी मार्ग रहे जोर।
तिन सेती रबद रहे, वे करने लगे सोर।।२

स्याम जी के देवल में, कथा कहे कान जी भट।
निस्टा ले सुनने लगे, होए बल्लभियों से खटपट।।३

जलपान को तब करें, जब आहार देवें आतम।
तब आहार आकार को, देवे न करे कम।।४

जो कदी एक दोय स्लोक, आगे बाँचे होय तिन।
तो फेर पुस्तक मंगाय के, वे ही सुने वचन।।५

ऐसा जान के वह भट्ट, तोलों न खोलें पुस्तक।
जोलों श्री देवचन्द्र जी ना आवहीं, और बात न करें बुजरक।।६

रहे श्रोता सहर के चौधरी, और बड़े साहूकार।
सो मार्ग बल्लभी मिने, होत खटपट हमेसा बेहवार।।७

एक दिवस भट्ट को पूछिया, तुमारा क्या इनसे रूजगार।
जब लग ए नहीं आवत, तोलों करो नहीं उच्चार।।८

तब कह्या कान जी भट्ट ने, मुझे न काहू की आस।
मैं आगे बांचत स्याम जी के, सुने श्री देवचन्द्र जी खास।।९

मोहे प्राप्त कहिये तो तुम से, होय क्या इन गरीब से।
पर तुम कबहूं मोहे पूछत, आगे पीछे स्लोक कहों मैं।।१०

Nijanand App

मैं एक स्लोक आगे कहों, कब हूं ए पास न होय।
तो घरों जाय फेर पूछत, पुस्तक छोड़ावत सोय।।११

तिस वास्ते इन आये से, मैं करत उच्चार।
मैं काहू की आसा न करों, मेरे चाहिए न कार वेहवार।।१२

तब सब ही मोंगे रहे, बोलत नाहीं कोय।
कथा सुन घरों पीछे फिरे, रोस जो मन में होय।।१३

छिद्र को ढूंढत रहे, रहे बाहिर दृस्ट अहंकार।
मार्ग को पावे नहीं, रहे रब्द को तैयार।।१४

और श्री देवचन्द्र जी को प्रन रहे, ना होय द्वादसी को भागवत।
ता दिन आप उपवास करें, आज आहार न पायो आतम इत।।१५

ए तो भांडा आहार का, क्योंकर देऊं आकार।
श्री भागवत सुने नेष्टाबंध, रहे याही को विचार।।१६

यह बात उन लोगों ने, सुनी अपने कान।
ए आहार एकादसी को करे, बारस उपवास रहे जान।।१७

एह निंदा लेय के, करने लगे विचार।
अब दाव हमारा आइया, ए कैसा धर्म वेहेवार।।१८

आए सभा में मिल के, पूछी कानजी भट्ट से।
ऐसा उपदेस तुम दिया, जो प्रसाद ले एकादसी में।।१९

Nijanand App

करे बारस को उपवास, यह कौन सास्त्रों बताइ।
यों श्री देवचन्द्र जी करत हैं, सो हम सों कहो समझाइ।।२०

तब कान जी भट्ट नें, इन भांत दिया उत्तर।
जो वे करें सो समझ के, फेर पूछ के देऊं खबर।।२१

यों करते श्री देवचन्द्र जी, आये बिराजे सभा में।
कान जी भट्टें पूछिया, यों श्री देवचन्द्र जी सें।।२२

करत बारस को उपवास, एकादसी को करत आहार।
मैं तो एह मानी नही, श्री देवचन्द्र जी करन हार।।२३

तब श्री देवचन्द्र जी उत्तर दियो, एही भांत हम करत।
तब सबों ने कह्या अर्थ कहो, हम समझत नाहीं इत।।२४

पर इतना हम समझत हैं, जो श्री भागवत दरखत।
ताकी एक डारी को, कोई बिरला पहुंचत।।२५

पर तुम पात पात की रग में, है दरखत विस्तार।
तहां तुम सब में फिरवले, ऐसो औरन को नही विचार।।२६

कह्या ए तो तुम कहत हो, सास्त्रों के वचन।
ताको सांच जान के, लेत हैं समझाए मन।।२७

तब श्री देवचन्द्र जी ने कही, हम लिया ऐसा पन।
है भागवत आहार आतम को, जोलों सुनने न पावे मन।।२८

Nijanand App

सो भागवत द्वादसी को, तुम नाहीं बांचत।
मैं तब आकार को, आहार न देवत।।२९

और एकादसी को लेत प्रसाद, ताको भेद इतना जानत।
कोट एकादसी एक सीत के, तुल्य न आवत।।३०

श्री पारब्रह्म लीला रस का, यह जो ग्रन्थ श्री भागवत।
तिनको सुन के स्वर्ग का, ए सब साधन करत।।३१

तब कान जी भट्टें कह्या, देवो इनका उत्तर।
जवाब न आया काहू को, धन धन कह्या यों कर।।३२

इन भांत चरचा मिने, रहत है एक रस।
नीर नयनों झरत है, जो वाणी सुने सरस।।३३

यों चौदह वर्ष नेष्टा बंध, बचन ग्रहे सब सार।
या उपरान्त कृपा भई, ताको कहों विचार।।३४

महामति कहें ए साथ जी, ए नौतनपुरी की हकीकत।
और भी आगे की कहों, भई जो बीतक इत।।३५

प्रकरण।।५।। चौपाई।।२८८।।

दरसन

अब कहों श्री देवचन्द्र जी की, जो बात मूल बुजरक।
जो मेहर सैंयन पर, करी सुभानुल हक।।१

Nijanand App

चौदह वर्ष नेष्टाबन्ध, सुनयो श्री भागवत जब।
आवेस लीला भई, सब नजरों आया तब।।२

कछू कसनी भई आकार को, इन समें इस ठौर।
पर नजरों कछु न आइया, दज्जाल लड़ने लगा जोर।।३

इहां ज्वर आवने लगा, एक लंघन भई दोय।
श्रवना भंग न करें, कान बांध के सुनने जायें सोय।।४

तीन चार पांच भई, ज्वर न छूटे जब।
ए तो जाय सुनने, ए सेवा न छूटे तब।।५

यों करते दस बारह लों, लांघन भई जोर।
ए भागवत सुनन का, कछु न छूटे ठौर।।६

मत्तू मेहता तबीब को, बुलाय दिखाया हाथ।
तब तबीब औषध दिया, जतन करो इन साथ।।७

वाउ लगने ना देवो, जतन करो इन पर।
तब कुंअर बाई ने कहा, ए अबहीं जाये भागवत पर।।८

तब वैद औषद को, इनसे लई फेर।
इन वाउ से सनपात होय, मैं न आऊं दूजी बेर।।९

तब मत्तू मेहता ने कह्या, करेंगे हम जतन।
हम क्यों जाने देवेंगे, रखना है याको तन।।१०

Nijanand App

तब श्री देवचन्द्र जी ने कह्या, मैं न रहों क्योंए कर।
धर्म राखे ते देह है, जवाब देत यों कर।।११

वे जवाब यों देवहीं, देह राखे होय धरम।
इनकी मत माया मिने, आधीन रहे करम।।१२

वैद तो तब उठ गया, काढ़ा पिलाया जब।
बखत हुआ सुनन का, कान मूंद लाठी ले चले तब।।१३

मत्तू मेहता कुंवर बाई, बहुतक रहे बरज।
ए कैसेहु माने नही, आतम साधन गरज।।१४

तब घर में रूध किवाड़ दे, द्वार खड़ा मत्तू मेहता आप।
श्री देवचन्द्र जी पुकारहीं, बड़ो दुख पायो ताप।।१५

रे मूरखो मैं मरने का नही, मेरा देखोगे आकार।
उत मेरी आतम जायगी, और नही विचार।।१६

ए क्योंए माने नही, तब गिरे पीछले पाय।
खम्मा खम्मा माता कहे, गिरे भोम भमरी खाय।।१७

तब कुंवरबाई ने सोर करयो, कठिन कह खुलाए द्वार।
आकार आंखे फिर गई, कछु न आवे विचार।।१८

अहो श्री देवचन्द्र जी, यों पुकार सुनावें कान।
ए कछु न सुनत, ना सके काहू पहिचान।।१९

Nijanand App

तुम जाओ सुनने श्री भागवत, भट्ट के बुलोआ आय।
तुम को कोई न रोकहीं, चलो पहुंचावें धाय।।२०

एक आध घड़ी पीछे, कछुक भये सावचेत।
तब उठ बैठे भये, मुख होय गया सुपेत।।२१

जाय श्रवण करो श्री भागवत, कोई न बरजे तुम।
लाठी पकड़ ठाढ़े भये, कहो तो पहुंचावे हम।।२२

श्री देवचन्द्र जी बोले नही, चले स्याम जी मंदिर द्वार।
आय बैठे सभा मिने, सुनत श्रवन उस्तवार।।२३

जब भागवत सुन के, फेर के आये घर।
तबहीं चैन जो पाइया, ठाढ़ा न रह्या ज्वर।।२४

फेर इहां से पथ लिया, होय चली फुरसद।
दिन दिन चढ़ते गये, यही कसनी की हद।।२५

दिन दस पन्द्रह हुए, कथा सुनत है कान।
तहां आय दीदार दिया, तुमको मेरी पहचान।।२६

वय किसोर अति सुन्दर, सरूप खेला जो वृन्दावन।
देख श्री देवचन्द्र जी ने कह्या, जैसी गवाही दई मन।।२७

तुम हमारे खावन्द, एता जानत हैं हम।
आप को पहिचानत हो, कौन कहां से आये तुम।।२८

Nijanand App

इतना हम जानत हैं, जो धनी हमारे तुम।
कह्या तुम एता ही जानत, अब बतावें हम।।२९

नाम तुम्हारा बाई सुन्दर, खेले तुम ब्रज रास में।
मनोरथ पूरे ना भये, ए तीसरा हुआ तिन सें।।३०

अब सब साथ बुलाय के, आओ अपने धाम।
धनी वे साथ कहां है, कह्या मैं भेजों तमाम।।३१

ए भागवत कागद तुम्हारा, सो तुम्हें खुले कलाम।
और कोई ना खोल सके, ए जो खलक आम।।३२

अब तुमहें पूछना होय, सो पूछ लेओ तुम।
फेर के ऐसी तरह से, द्रष्ट न आवें हम।।३३

तब पूछा श्री देवचन्द्र जी नें, धनी कहां जाओंगे तुम।
तुम्हारे अंदर आकार में, आये के बैठें हम।।३४

तब मोको कहा पूछना, ए कहे तारतम बीज वचन।
फेर के अदृष्ट भए, प्रफुल्लित हुआ मन।।३५

तब ही नजर सत वस्त को, जाय के पहुंची धाम।
ब्रज रास दोऊ अखण्ड, सुरत पहुंची तिस ठाम।।३६

श्री भागवत सास्त्र की, सब खुल गई नजर।
विवेक सारी वस्त को, हो गई आतम फजर।।३७

Nijanand App

उठके आये आसन, अपने गृह विश्राम।
एह बात मैं किनको कहों, कौन माने इस ठाम।।३८

एक ठौर कथा मिने, भाई गांगजी देत श्रवण।
जब कथा से उठते, तिन आगे कहे वचन।।३९

राह मिने खड़े रहे, चरचा ठाढ़े करे दोय।
पानी भरने जाये पनिहारी, फेर आए खड़े देखे सोय।।४०

फेर दूसरी बेर जाये भरने, ए त्यों ही ठाढ़े कहे बचन।
तब वे आपस में बातें करे, याके पांउ न थाके मन।।४१

ए चरचा के रस में, देह की न रखे खबर।
तब से पनिहारी तीसरे, कहे वचन यों कर।।४२

ए भाई तुम बैठ के, क्यों न बातें करो बनाये।
कब के तुम ठाढ़े हो, हम तीन बेर फेर फेर आये।।४३

तब जाय सरीर की, सुध आवे याद।
विचार कहे से दोऊ, याद करे बुनियाद।।४४

यों नित करते रहे, गांग जी भाई ने देखे वचन।
एह बात अगाध है, है कछु अलौकिक रोसन।।४५

तब गांग जी भाई ने पूछिया, हम तुम भागवत सुनते दोय।
एह प्रस्न तुम कहां से ल्यावत, तुम मोहे बताओ सोय।।४६

Nijanand App

गांग जी भाई को जब देखिया, वस्त का पूरा पात्र।
तब कछु चले बतावत्ते, सतबोय रज मात्र।।४७

तिन खसबोय से भए, जोर जिज्ञासु जब।
तब कछु आगे चले, बीतक बताई तब।।४८

फेर जनम से लेय के, आये नये नगर।
तहाँ लो सारी बीतक, कह चले ता ऊपर।।४९

फेर नये नगर में, ज्यों कर भया दीदार।
सो सारी बताय दई, जो मेहर परवर दिगार।।५०

तब बहुत राजी भए, आवें चर्चा को घर।
तहां मण्डान होने लगा, बात पसर चली योंकर।।५१

एक से सुनी दूसरे, तहां से मिला साथ।
सोई आवे दीदार को, जाके धनिए पकड़े हाथ।।५२

महामति कहे ए साथ जी, ए अपनी बुनियाद।
अब तुम्हें आगे कहों, ताको करो याद।।५३

प्रकरण।।६।। चौपाई।।३४१।।

साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब।
रूह अल्ला मिसल गाजियों, मोमिन उतरे तब।।१

सम्वत सोलह सै अड़तीसा, आसो सुदि चौदस में।
जनम दिन श्री देवचन्द्र जी, प्रगटे इन समें।।२

Nijanand App

देस मारवाड़ में, उमरकोट है गाम।
मत्तू महता कुंवरबाई, श्री देवचन्द्र प्रगटे इस ठाम।।३

तहां से आए कच्छ देस में, बीच महम्मदें दिया दीदार।
पहुंचाय मजल को, किए खबरदार।।४

कच्छ देस में आय के, खोज बड़ी करी।
जब भोजनगर आय पहुंचे, तब वही इलाही उतरी।।५

हरवंस जी हरिदास के, रहे कोइक दिन।
ता पीछे नौतनपुरी, सुना भागवत होय मगन।।६

चौदह वर्ष लों नेष्टाबंध, बचन ग्रहे सब सार।
चालीस वर्ष की उमर में, हकें दिया दीदार।।७

सुनत भागवत देहुरे, तहां कहा तारतम।
तुम आये हो अरस से, जगाओ अपनी आतम।।८

तुम आए ब्रज रास में, फेर तुम आए इत।
रही खेल देखन की, तुमको इच्छा तित।।९

तिस वास्ते इंड तीसरा, रचा तुम कारण।
ए भागवत तुम को खुले, तुम ही करो रोसन।।१०

बुलाय ल्याओ सैंयन को, अपने वतन निजधाम।
इनको इत जगाय के, पूरो मनोरथ काम।।११

Nijanand App

मोको फेर न देखोगे, इन भाँत इन नैन।
अन्दर तुम्हारे आऊंगा, पूछ लेओ अब बैन।।१२

हुकुम हक सुभान का, मूल श्री देवचन्द्र जी पर।
ए जो खेल देखन को, साथ धाम से आए उतर।।१३

तिनको बुलावने, मैं भेजे तुम को।
खेल से जगाय के, प्यार करों इन सों।।१४

सम्वत सौलह सै अड़तीसे, आसो सुदि चतुर्दसी के दिन।
प्रगटे देस मारवाड़ में, गांव उमरकोट उतपन।।१५

सम्वत सत्रह सै बारोत्तरे, भादों मास उजाला पख।
चतुर्दसी बुधवारी भई, हुए धनी अलख।।१६

बरस चौहत्तर में, न्यून भया एक मास।
तब सौंप चले श्री मेहेराज को, उमत खासल खास।।१७

सम्वत सोलह सै पचोतरा, भादो वदि चौदस नाम।
पहर दिन चढ़ते बार रवि, प्रगटे धनी श्री धाम।।१८

सम्वत सत्रह सै इक्यावना, सावन वदि चौथ में।
रात पीछली घड़ी दोय में, आया फिरस्ता धाम सें।।१९

तीज भई रात घड़ी चौद लों, उपरान्त चौथ भई जब।
दोय घड़ी रात बाकी रही, समय अन्तर्ध्यान को तब।।२०

Nijanand App

बार था इत सुकर, रहे इत एक दिन।
ता पीछे मंदिर मिने, पधराए मोमिन।।२१

बरस छेहत्तर में, कम दो मास दस दिन।
देखा खेल यहां लों, फिरे तरफ वतन।।२२

साथ सौंप्या आप श्री राज को, जाहिर में श्री महाराज।
अब हम फिरत धाम को, तुम रहो सावचेत आज।।२३

महाराजा जी सों कहा, मैं देखत हों एक तुम।
तिस वास्ते सेवा साथ की, सौंप चलत हैं हम।।२४

अब हुकुमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकुम।
दिल मोमिन के आय के, अरस कर बैठे खसम।।२५

अब साथ अगले और बीच के, और आखर की बीतक।
सो सब जाहिर होत है, कहावत हुकम हक।।२६

प्रकरण।।७।। चौपाई।।३६७।।

अब तुम सुनियो मोमनों, देखो अपने कदम।
साथ चले जिन भांत सों, देत नसीहत आतम।।१

कूच किया श्री बाई जी ने, आगे श्री जी साहिब।
जीत चली सब साथ में, सब धन-धन कहें अब।।२

सम्वत सतरह सौ पचास में, बैसाख सुदि अष्टमी।
वार बुध पोहोर दिन चढ़ते, ठौर अपने जाय जमी।।३

Nijanand App

सम्वत् सत्र सौ इक्यावन, असाढ़ के महिने।
दिन चौथ पीछली रात में, धनी पहुंचे धाम अपने।।४

बार सुकर जुम्मे का, पीछली रात घड़ी दोय।
पहुंचे अर्स अजीम को, दारूल बका कह्या सोय।।५

जिन मोमिन को पहिचान, तिन बांधी कमर।
सोंपी आतम कदमों, हुए सब ऊपर।।६

जिन ढील खिन एक न करी, सुनके पानी किया हराम।
हम पहुंचे सेवा मिनें, और न कोई काम।।७

स्वास न खाया बीच में, छोड़ी न साइत।
उठे धाम वतन में, ए फरदा रोज क्यामत।।८

हम साथ देखत रहे, जिन घेर लिया घेन।
जब आँखे खुली, ताय क्योंए ना पड़े चैन।।९

दरद न आया धनी का, बिछुड़ते न उड़ी अरवाहे।
साथ मिने तिनका, मुख ऊंचा होवे क्यों ताये।।१०

जीती बाजी हार दई, ए दरद बड़ा मोमिन।
ए कहनें में न आवत, बहुत भारी होसी रोसन।।११

ना तो सिरदार सिरोमनि, थी बेसक पहिचान।
पर आखर बखत फल समै, हाय हमें कछु न रह्या ईमान।।१२

Nijanand App

निसबत हमारी ना रही, ना तो वतन हमारो श्री धाम।
तिन समे ना देखिया, सो छुड़ाया दज्जाल ने ठाम।।१३

ऐसा पसु भी ना करे, जिन माया की प्रीत।
हमसे कछू ना हुआ, कछू ना आई रीत।।१४

ए रहे श्री राज के हुकमें, और न कोई उपाय।
जान सिरोमनि क्यों रहें, पर हुकमें कछू न बसाय।।१५

कहां लो कहूं मैं इनकी, धिक-धिक हुआ आकार।
अब कहूं मैं तिनकी, जो संग चले साथ सिरदार।।१६

संकर हजूरी चले, और चले लालमन।
और नारायणदास जो, कहे खास मोमिन।।१७

गोदावरी और किसनी, संग दिया धनजी नें।
भए आसिक दीन इसलाम पर, धाम मेले अपनें।।१८

बड़ा जस लिया जसिया, जिन छोड़े न राज कदम।
साथ में धन धन सबों कही, जाग पहुंची आतम।।१९

और अम्बो बाई चलीं, थी इस्क में गरक।
इन ऊपर मेहर मेहेबूब की, पहुंची कदमों हक।।२०

और जो रतन बाई, चली राज के साथ।
सांची रहे सेवा मिने, तो धनिये पकड़े हाथ।।२१

Nijanand App

राम बाई आपा डारिया, थी सेवा में आसिक।
जान के तो अपना, साथ रखी हक।।२२

ए साथ जो संग चले, जिन सिर ऊँचा किया मोमिन।
संसार में धन धन हुए, जिनके दिल रोसन।।२३

महामति कहे ए मोमिनों, देखों साथ कदम।
अब इनको देख के, जगाओ अपनी आतम।।२४

प्रकरण।।८।। चौपाई।।३६१।।

अब कहूं मोमिन की, जो फिदा हुए ऊपर हक।
इनकी सिफत न आवे सब्द में, नेक कहूं अपनें माफक।।१

चलना राज के पीछल, किया अपना कुरबान।
भयो गौवच्छ पद कहिवे को, जाय लगे ब्रह्म बान।।२

भवजल मोह सागर, पार न आवे कोय।
वास्ते दीन इसलाम के, नजरों आया सोय।।३

सूर कई संसार में, होत तरवारों टूक टूक।
पर इनकी तौल न आवहीं, जो हक वास्ते हुए भूक भूक।।४

आकार अपना डारते, जरा न करी सक।
साबित हुए मोमिन, पहुंचे कदमों हक।।५

इनको पीछे फेरन को, ब्रहुत करी अन्तराय।
पर जिनकी नजर धाम में, ताको कौन फिराय।।६

Nijanand App

पुकार करी इनों बहुतक, सबों को दिया पैगाम।
बिना हक के हुकुमें, क्यों पहुंचे इसलाम।।७

कूच सुनत धनीय का, विरह न किया याद।
सोतो नहीं मोमिन, अरस अजीम की बुनियाद।।८

सुनते सब्द धनीय का, तब ही अरवाह उड़ जाय।
ताको कहिए मोमिन, सुनते विरह उड़ जाय।।९

पीछे रखे आकार को, लालच वजूद के।
सो क्यों बैठे सैंयन में, बात कहनें को ए।।१०

मोमिन ऐसी न करे, जो कछू होय पहिचान।
अरवाह सो उड़ावहीं, जाको होय ईमान।।११

धिक धिक पड़ो तिन को, जो ए बात सुने कान।
बिछोहा धनी धाम सों, जाको कछू नहीं पहिचान।।१२

तिन सनमंध अपना तोड़िया, जो था बीच बका।
अब क्यों मुख दिखावहीं, जो बीच बजूद थका।।१३

ले बैठे आकार को, विरह सुनत हैं कान।
तिनको ईमान जिन कहो, कहा रही इत जान।।१४

जो रहे सोहबत में, आठ पहर एक ठौर।
तो पीछे क्यों कर रहे, जाको बात न दिल में और।।१५

Nijanand App

पर ए बात हुकम की, सो तो हाथ है हक।
ऐसा जान बूझ क्यों करें, जिनों नहीं दिल में सक।।१६

जो रहे सो हुकमें, और चले बीच इजन।
मोमिन रखे जिन वास्ते, मजल जाहिर सबों रोसन।।१७

सम्वत् सत्रह से इक्यावना, भादों वदी चतुर्दसी के दिन।
प्रणाम कर सब साथ को, पहुंचे हक कदमों मोमिन।।१८

मैं कहूं नाम तिनके, जिन सुनत होइए पाक।
उड़ाय बजूद अपना, थे हक कदमों खाक।।१९

बल्लभदास एक इनमें, दूजे हैं केसवदास।
तीसरा था मथुरा, ए तीनों मोमिन खास।।२०

राम कुंवर केसव संग, प्रसादी इनके संग।
हमीरा स्त्री इनकी, थी धाम धनी के अंग।।२१

और जो था साहमन, पाचवां नरसिंहदास।
सन्तदास जो इन संग, ए छेहू मोमिन खास।।२२

पूरबाई और खड़गो, और केसरबाई नाम।
कासी चल्या तीसरे दिन, चल्या असऊ पीछे इन काम।।२३

श्री महामति कहे ए मोमिनों, धरो कदमों पर कदम।
तुम आय धाम धनी से, जगाओ अपनी आतम।।२४

प्रकरण।।६।। चौपाई।।४१५।।

Nijanand App

पहिले कहों श्री देवचन्द्र जी, कबीले के नाम।
जो कोई कदमों लगे, भये दाखिल निज धाम।।१

श्लोक : देवापिः सन्तनोर्भाता, मरूश्चेक्ष्वाकुवंशजः।
कलाप ग्राम आसाते, महायोग बलान्वितः।।

मूल श्री देवचन्द्र जी, उतरे हैं अरस से।
वास्ते खास उम्मत के, विहार किया साथ में।।२

सनमंध जाहिर का, हुआ लीलबाई से।
सेवा करी सनेह सों, सोभा दई राजें इनें।।३

तिनके उदर प्रगट भये, बिहारी जी है नाम।
सफर किया स्त्रीय नें, पहुंची अपने ठाम।।४

जमुना बहिन कहियत हैं, थारो मेघो भाई दोय।
जोरू ठकुरानी थारे की, नागजी बेटा कह्या सोय।।५

धनियानी मेघेय की, भाईत्रि याको नाम।
जमुनाबाई दीकरी, श्री देवचन्द्र जी की इस ठाम।।६

कृष्णा स्त्री बिहारीजीय की, धनयानी घर जोय।
नागजी की जोरू, रंगबाई कही सोय।।७

यह कबीला लौकिक, और अलौकिक कहों इत।
जो कोई ल्याया ईमान, करने को खिजमत।।८

Nijanand App

प्रथम कहों हरिदास की, राधावल्लभी नाम।
उनकी पहले खिजमत, श्री देवचन्द्र जी किये काम।।९

जब भई इन्हें पहिचान, तब फेर ग्रहे कदम।
सुख दिया सेवा मिने, सौंप दई आतम।।१०

माता वृन्दावन की, धनियानी हरिदास।
वृन्दावन ईमान ल्याइया, करी सेवा खास।।११

मूली वृन्दावन की, नातो जोरू खसम।
एह आई साथ में, जाग खड़ी आतम।।१२

बेटा वृन्दावन का, कह्या नाम नरहर।
और माता वृन्दावन की, कछु इनको भई खबर।।१३

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए साथ बड़ो विस्तार।
पर कछुक कहों हुकुमें, मेहर धनी निरधार।।१४

प्रकरण।।१०।। चौपाई।।४२६।।

पहिले दीन इसलाम में, गांग जी भाई धरे कदम।
सेवा करी श्री देवचन्द्र जी की, कदमों सौंपी आतम।।१

कहों तिनका कबीला, जो दाखिल हुए निजधाम।
दीदार श्री देवचन्द्र जी के, खिज़मत के किये काम।।२

माता गांगजी भाई की, गंगाबाई है नाम।
श्री देवचन्द्र जी तिनके, किए पूरे मनोरथ काम।।३

Nijanand App

भानबाई धनियानी, रहे गांगजी के घर में।
श्री देवचन्द्र जी की सेवा, पूछ करे उनसे।।४

बेटा कहिए स्यामजी, कछु न बोय ईमान।
चरचा सुनता बहुतक, बिना अंकूर न भई पहिचान।।५

बहू भानबाई की, अजबाई है नाम।
सेवा लई सिर ऊपर, करे हमेसा काम।।६

बेटा दूजा मान जी, करता था खिजमत।
गांग जी भाई के वास्ते, हाजर रहवे इत।।७

हीरबाई का बेटा, धनजी उनका नाम।
बहिन जो है बालबाई, ए थी बीच इसलाम।।८

भौजाई श्री हीरबाई, रहे सेवा में सनमुख।
कै बिध सेवा करके, इनों लिया अति सुख।।९

भाई गोबिन्द जी रहे, ना दाखिल निज धाम।
जुदा रहे सबसे, आवे न किसी काम।।१०

जीवराज साथी साथ में, वासना बाई तान।
माता उनकी बछाई, भई पूरी पहिचान।।११

सालो रहे सामिल, गणेस उनका नाम।
धनियानी रहे गोमती, करी सेवा इस ठाम।।१२

Nijanand App

हीरबाई की बेटी, जसोदा है नाम।
बेटी की बेटी, राजबाई इस ठाम।।१३

देवर मानबाई का, पारप्यो है नाम।
देवरानी जसोदानी, करे सेवा का काम।।१४

दो बेटी स्यामजी की, हरबाई लाड़बाई।
पावत नित दीदार, आगे खिलौने सुखदाई।।१५

मानजी का बेटा, सुखबाई की वासना।
परखी श्री देवचन्द्र जी ने, जान घर अपना।।१६

समय श्री देवचन्द्र जी, चरचा करते जब।
इत काहू को बोलने की, ताकत न रहवे तब।।१७

चरचा जोस में करें, कहें भाव से मुख।
या समै इन साथ को, कह्यो न जाय सुख।।१८

भाव काढ़ दिखावहीं, सब चरचा को रूप।
बरनन करें श्री राज को, सुन्दर रूप अनूप।।१९

ब्रज रास लीला को, बड़ो दिखावें बोझ।
सब्द साखी सास्त्र सब, रहस्य दिखावें कर खोज।।२०

अंग में बड़ो उमंग, साथ मिलावन को।
एक नया कोई जो आवत, तो उमंग न मावे अंग मों।।२१

Nijanand App

अब कहों कबीला श्री मेहेराज का, करी श्री देवचन्द्र जी मेहर।
आवे नहीं हिसाब में, ए जो करी फेर फेर।।२२

केसो ठाकुर पिता कहियत, माता बाई धन।
श्री इन्द्रावती बाई की वासना, सौंपा धन तन मन।।२३

स्त्री घरों फूलबाई, दूजी श्री बाई तेज।
श्री जी साहिब जी धाम धनीय को, इनने पाया सहेज।।२४

भाई गोवर्धन कह्या, जासों पहिले श्री देवचन्द्र जी मिलाप।
भई प्राप्त श्री मेहेराज को, हकें मेहर करी आप।।२५

वासना ठाकुर गोवर्धन की, गुणवन्ती बाई नाम।
और भाई ऊधव जी, गोविन्द जी इस ठाम।।२६

और चतुर्भुज कह्या, घर धनियानी पदमा।
ए आए हैं साथ में, थे कबीले बीच जमा।।२७

स्त्री ऊधवजीय की, नाम बाई भान।
ए साथ में आई नहीं, कर न सकी पहचान।।२८

और भाई ठाकुर श्री स्यामलजी, ए पीछे ल्याए ईमान।
सीताबाई सेवा मिने, है प्रेम जी को पहचान।।२९

और बाई सवीरा, यह आई साथ मिने।
प्रेम जी की सोहबत से, ए फल पाया इनने।।३०

Nijanand App

विस्न जी भाई प्रेमजीय का, आया नहीं साथ में।
पर पाया दीदार, श्री जी की सोहबत से ।।३१

और आई पूरबाई, साथ बेटा पीताम्बर।
बेटे कानजी नान जी तिनके, हुए कुरबान श्री जी पर।।३२

माता कान जी नान जी की, बाई कही रतन।
आई परना बीच में, कहावत है मोमिन।।३३

हरवंस के घर में, मेघबाई है नाम।
हरखबाई की वासना, श्री देवचन्द्र जी कही इस ठाम।।३४

गोकुलदास चलिया, आया था साथ में।
ए श्री जी का कबीला, जो लगा था इनसें।।३५

रहे रूद्रो जूनागढ़ में, था ए दूकानदार।
करी सेवा श्री देवचन्द्रजी की, जान के धनी निरधार।।३६

कानजी और थावर, और पदमसी जीवानाम।
जसोदा और कानबाई, पहुंचे ए निज धाम।।३७

डोसा और नैनबाई, मेनबाई और मानबाई।
करी सेवा श्री देवचन्द्र जी की, सादी दीदार की पाई।।३८

Nijanand App

एक भाई महावजी, और जो परसोत्तम।
रामजी कोठारीय के, इन्हों जाना महातम।।३९

और भाई जयमल कह्या, और जोरू इनकी।
ए पीछे आए साथ में, सेवा बिहारी जी की करी।।४०

और लछो कायथ, ए ल्याई ईमान।
चरचा सुनने आवत, ना इन्हें भई पहिचान।।४१

नारायन सोनी साथ में, और आए लीलाधर।
ए सेवा में आवत, रस पीवत श्रवनों कर।।४२

भाटिया एक भीम जी, था जोरू समेत।
ए ल्याया ईमान, चरचा नित सुनत।।४३

मूल जी की धनियानी, राय कुंवरबाई नाम।
तारतम सुन्या तिनने, पूरे मनोरथ काम।।४४

गुगलन मां दीकरी, हरबाई नाम तिन।
कदमों श्री देवचन्द्र जी के, थी दाखिल मोमिन।।४५

दीप में जो साथ है, एक कंसारा जयराम।
और धनियानी इनकी, थी दाखिल निज धाम।।४६

गणेस और स्त्री इनकी, भोजबाई बाई देव।
भोज मूंजो गंगाबाई, इनों करी बड़ी सेव।।४७

Nijanand App

जीवो गंगो और ग्वाल, इनों सौंपी आतम।
ए दीव में का साथ था, जिनों सुन्या तारतम।।४८

मूलो पुहो करना ब्राह्मण, हासबाई बाई बेन।
ए चरचा में आवत, श्री देवचन्द्र जी निरखे नैन।।४६

और कायस्थ अखई, रहे नौतन पुरी मिने।
मल्लो प्राग मंडई मिने, हरबीर कबीले समेत अपने।।५०

और दूसरा हरबीर, आया अपने कुटुंब परिवार।
तारतम सुन्या तिनने, पहुंचा परवरदिगार।।५१

राधाबाई सोम बाई, सोम आई मंडई मिने।
और बाई कुंवर, सामिल कबीले सें।।५२

और नाथा जोसी टट्ठे मिने, संग बड़ा महावजी ये।
और लाला कायस्थ, और कायस्थ धना उसके।।५३

और साथ बहुत हैं, गाम सहर और और।
मैं थोड़े नाम लिखे, इनों कहे जायेंगे और ठौर।।५४

महामति कहे ए साथ जी, इन साथ की सिफत।
सोतो आगे होयेगी, बखत रोज क्यामत।।५५

प्रकरण।।११।। चौपाई।।४८४।।

Nijanand App

कुरान पुरान की साखी

सिपारे बारमें मिने, पाने चोबीस में।
तफसीर के तीन सौ एक, तुम देखियो तिन सें।।१

श्री देवचन्द्र जी सरूप को, हकें दिया तारतम नूर।
तिनका विस्तार कयामतें, होयेगा बड़ा मजकूर।।२

मूल वेद कतेब की, साहिदियां लिखी सबन।
सो आय मिली सब इतहीं, ताय मोमिन करें रोसन।।३

कागद जो भागवत का, ले आया सुक मुनी।
इनका अर्थ ब्रह्म सृष्टि, खोलें जान अपनी।।४

और कागद ल्याइया, महम्मद अलेह सलाम।
सो बीतक श्री देवचन्द्र जी की, लिखी अल्ला कलाम।।५

जनम से आखर लग, जो लों मोमिन पहुंचे धाम।
सो सारी हकीकत इनमें, सब पूरे मनोरथ काम।।६

एक सौ बीस बरस लों, करी दज्जाल सों जोर।
यहां लों इनसे लड़ा, करके बड़ा सोर।।७

पहिली लड़ाई महम्मद साहिब सों, फेर उनके यार।
ता पीछे श्री देवचन्द्र जी सों, करी खबर परवरदिगार।।८

Nijanand App

श्री जी साहिब जी और गिरोह सों, लड़ा इन दरम्यान।
बीच बिहारी जी के बैठ के, तहां किया बड़ा कुफरान।।९

इन सारों की साहिदी, लिखी अल्ला कलाम।
सो मोमिन बीतक अपनी, आगे खोले खलक आम।।१०

विरोध सारी विस्व का, भागत इन बीतक।
सबको पहिचान होवही, पहुंचे कदमों हक।।११

सेवे सब मोमिन को, पहिचान के निसबत।
भूल माने अपनी, बखत हुआ क्यामत।।१२

सिताबी चारों खूट में, पसर गई पहिचान।
तब सब कोई दौड़िया, ले ले के ईमान।।१३

श्री देवचन्द्र जी सरूप की, मूल जनम की बीतक।
सम्बत सोलह सै अड़तीसे, सो सत्रह सौ बावन लों हक।।१४

मास आसो सुदी चतुर्दसी, इत माह सुदि चौदस।
बरस एक सौ दस, ऊपर मास चार सरस।।१५

सो सब में जाहिर भई, छिपी न रही लगार।
दिन क्यामत के इनसे, करी जाहिर परवरदिगार।।१६

मसरक मगरब से, दौड़ी आवत खलक।
ताको नीयत माफक, दीदार पावत हक।।१७

Nijanand App

जो जैसा मनोरथ, करत है मन में।
पूरन सब ही होत है, सोहबत मोमिनों से।।१८

महामति कहे ए साथ जी, ए मेहर है हक।
जैसा ईमान जिन का, होत तिन माफक।।१६

प्रकरण।।१२।। चौपाई।।५०३।।

दोनों स्वरूपों का मिलाप

श्री देवचन्द्र जी के अमल में, साथ को सुख हुआ अंग।
तिनकी चरचा सुनते, मावत नाहीं उमंग।।१

गांग जी भाई सेवहीं, उच्छव रसोई नित।
नई नई भांतों सेवहीं, हुआ अंग में उमंग इत।।२

कोई नया जो आवहिं, बीच इन निज धाम।
तो श्री देवचन्द्र जी सुख पावहीं, सो केता कहों इस ठाम।।३

कोई नए साथी को ल्यावहीं, समझाय के दीन में।
तिन ऊपर राजी होवहीं, क्या नेकी करों इन सें।।४

दिल में साथ आवन का, करे मनोरथ मन।
आदर होवे तिनका, ए धाम की सैंयन।।५

इन भोम में देखिया, साथ धनी श्री धाम।
कौन ब्रत इनसों करों, पूरों मनोरथ काम।।६

Nijanand App

इनको राजें भेजिया, देऊं धाम न्यामत।
ए कौन भांतों सुख पावहीं, सोई करों मैं इत।।७

ए श्री धाम से आये, खेल माया का देखन।
इनको खबर कछु नहीं, पर मैं पहिचानत सैंयन।।८

ए पड़े माया मिने, होय गये परबस।
इनको समझावने, कौन लेवे जस।।९

मैं बाहिर निकसों, ढूंढ के काढ़ों साथ।
मोको श्री धाम धनीय ने, इनके पकड़ाये हाथ।।१०

तो यह मेहनत, मोकों करनी जरूर।
तिस वास्ते साथ के आगे, चरचा का चलावें पूर।।११

नित्यानें चरचा होत है, सो केती कहों बीतक।
साथ रहे नजर में, आज्ञा दई मोहे हक।।१२

अजबाई भतीजी मेघबाई की, रहे गांगजी के घर में।
स्याम जी को ब्याही थी, हुई बातें इनसें।।१३

मेघबाई हरबंस के, आवे अज बाई।
देखे गांगजी के घर में, राज की मेहरबानगी आई।।१४

राज नित देवें दीदार, आरोगें बेर तीन।
वस्ता मांगे आरोगते आज, क्यों फीकी खारी कीन।।१५

Nijanand App

तंबोलदे आरोगते, और मिठाई के भांत।
जमुना जल अलाखल, चल दिखावें एकान्त।।१६

सैंयन को कंचन की, एक दिन कंसेड़ी दई।
कोई दिन कछु देवहीं, यों करें नित सादी।।१७

अजबाई नित बातें करें, दीदार धनी निरधार।
हम तो नित देखत हैं, तुमहूं करो दीदार।।१८

तब मेघबाई ने कही, जाओ गोवर्धन तुम।
ल्याओ खबर इनकी, फेर बुलाय ले जाओ हम।।१६

पद्मा स्त्री गोवर्धन की, सो पहिले गई सोहबत।
तिन भी आये बातें करी, मैं देखी लीला इत।।२०

तब गोवर्धन गये, जाय के लगे कदम।
मैं सरन तुम्हारे आइया, जगावने आतम।।२१

सम्बत सोलह सौ सतासिया, ए कार्तिक में मजकूर।
यहां सेती उदय भई, उदया मूल अंकूर।।२२

चुगली खाई कोतवाल सों, एक कायस्थ के घर।
जोरू मर्द बैठत हैं, तुम क्यों न लेत खबर।।२३

दोय चोपदार पठवाय दिये, तुम जाय ल्याओ बात।
मोसों आय जाहिर करो, जो कछू होय विख्यात।।२४

Nijanand App

सो चुगल दिखाय पीछे फिरा, ए चले जायें सामे दीपक।
छेह न आवे तिनका, जहां लगे मन सक।।२५

एक फिरा कुंए पर, चार पहर रात।
दूजा बारह कोस का, पन्थ किये जात।।२६

जाय निकसा धरोल में, तहां भई फजर।
पूछा पनिहारी को, मैं कौन गांव देखत नजर।।२७

कैसी बात कहत है, के ज्यों होत दिवाना।
सहर मोहबड़जीय का, तैने जान्या अपना।।२८

खिसियाय के पीछे फिरा, आया मुरक के घर।
घर में बड़ी दुचिताई, लगी लड़ाई लग फजर।।२६

दोनों के घर में, बड़ा जो पड़िया सोर।
एक दूजे को पूछत, कहो खबर कछु और।।३०

फजर को आय के, दोनों कही बीतक।
इन चुगलें हमको मारिया, ल्याया दिल में सक।।३१

आये कोतवाल से कहया, बातें करी बनाय।
जो चुगल हमको मिले, तो मारे गरदन तायें।।३२

हमको इन चुगल ने, मार डारे आज।
जागा ऐसी बताई, सूझे न कोई काज।।३३

Nijanand App

इन भांत कै माजिजे, और लाखों दिये निसान।
पर साथ कोई न समझे, कछू न हुई पहिचान।।३४

सम्बत सौलह सौ पचहतरा, भादों वदि चौदस नाम।
प्रथम जाम और बार रवि, प्रगटे धनी श्री धाम।।३५

हलार देस पुरी नौतन, उदर बाई धन।
केसव ठाकुर पिता कहियत, तहां श्री राज प्रगटन।।३६

सब भाई भेले रहत हैं, सामल जी तन में सिरदार।
बड़ा गोवर्धन कह्या, जो धाम लीला में खबरदार।।३७

श्री देवचन्द्र जी पुरी नवतन, आये इहां बसत।
सेवा गोवर्धन करें, पहुंचा नजीक बखत कयामत।।३८

पहिले मिलाप गोवर्धन का, श्री देवचन्द्र जी से।
तहां श्री राज के दीदार की, बातें करें घर में।।३९

तब कह्या गोवर्धन को, मोहे ले जाओ तुम।
कह्या ए मोसों न होवहीं, बिना श्री देवचन्द्र जी के हुक्म।।४०

तब गोवर्धन के संग, चले श्री मेहेराज।
तहां हाथ छुड़ाय के गये, तित रोय गिरे इन काज।।४१

अरज करी गोवर्धन ने, श्री देवचन्द्र जी सों आय।
आज रोय के पीछे लगे, तब भाग के आया धाय।।४२

Nijanand App

तब आज्ञा दई श्री देवचन्द्र जी ने, ल्याओ बुलाय श्री मेहेराज।
बाल वय वस्त आवत, सो होवे पूरन काज।।४३

ध्रुव को चरन भगवान के, भये पांच बरस सों प्रापत।
तिस वास्ते श्री मेहेराज को, आवन देओ तुम इत।।४४

तब गोवर्धन श्री मेहेराज को, लेके चले साथ।
तब आय चरनों लगे, सिर पर धरे हाथ।।४५

बारह बरस महिना दोय, ता ऊपर भये दस दिन।
तब श्री देवचन्द्र जी सों मिलें, उन पहिचाने मोमिन।।४६

मिलाप श्री देवचन्द्र जी का, सोहबत श्री जी साहिब।
सम्वत् सोलह सै सतासिय में, सो सत्रह सौ बारेत्तर लों अब।।४७

सम्बत् सोलह सो सतासिया, मागसर सुदि नौम।
मिलाप श्री देवचन्द्र जी सों, भए दाखिल कौम।।४८

बारह बरस मास दोय, ऊपर भए दिन चार।
तब से मिलाप का, बातून हुआ विचार।।४९

आय के चरणों लगे, तबहीं दई निध।
ततखिण हिरदे मिने, आय बैठी जागृत बुध।।५०

साकुण्डल सकुमार ढूंढन की, एकान्त होए सुनाई बात।
मूल सरूप उनके हंसत हैं, ओ खेल में हैं अपनी जात।।५१

Nijanand App

तब ए चित में ग्रह लई, इसारत उन बखत।
और बीज कुरान का, सो देखी श्री देवचन्द्र जी में तित।।५२

खोजी बाई यवन को, कही रई बाई वासना जात।
तब पूछी श्री जी साहिब जी यें, क्या इन में है अपनी बात।।५३

तब श्री देवचन्द्रजी यें कह्या, यामें कोई कोई वासना जान।
और इनके कुरान में, है अपनी पहिचान।।५४

हम तो इन कुरान को, बहुत किया पढ़न।
पर जाहिरी लोक जो, हमको न देवे लेवन।।५५

तुम्हारे आगे कहत हों, याके वास्ते सब।
ए बात तुमसे होयेगी, लीला आगे होय जब।।५६

और इसारतें कई धाम की, सो सुनके ग्रह लई तब।
बीज मात्र इन लीला को, सो पायो उस बखत सब।।५७

नित यों चरचा सुनत हैं, मिलके दोऊ भ्रात।
दोऊ प्रेम में भीगे रहें, करे मूल निसबत विख्यात।।५८

घर से चले दोऊ मिल के, आवे मिलकर साथ।
बांध्यो चित अति हेत सों, दो नाते की बात।।५९

तो एक दिन आये घर में, बड़ा भाई करत अस्नान।
कह्या तुम बिगड़े दोऊ भाई, भये काम काज से अजान।।६०

Nijanand App

सो सोहबत गांगजी से, और गुरू सोहबत।
दोनों को निकालें सहर से, तब तुम सुधरो इत।।६१

तब गुस्से होय दौड़े मारनें, मिलके भाई दोए।
छिपाए माता ने घर में, सुनी आए पिता ने सोए।।६२

तब कही केसव ठाकुर ने, जिनकी तुम चरचा सुनत।
तिन सुनी कान जी भट्ट से, बांचे स्याम जी मंदिर जित।।६३

उतही चलके तुम सुनो, तब दियो जबाब इन इत।
जो पूछें ताको देय जवाब, तो हम हमेसा बैठें तित।।६४

तब पिता ले चले तिन पे, वे बैठे जाय के ताहिं।
कही भट्ट लड़के कछु पूछत, देयो जवाब चित दे आहिं।।६५

तब पूछी दोऊ भाई ने, भट्ट कितने गुन के लोक।
तत्व कहो कितने सही, कितने प्रलय अलोक।।६६

तीन गुन ते चौथो गुन नहीं, पाच तें छठो न तत्व।
चौदह तें लोक नहीं पन्द्रहमों, और प्रलय चार है सत।।६७

तो कहो पारब्रह्म रूप जो, सो रहत कौन ठौर।
कही क्षीर समुद्र अक्षय वट पर, रहे अंगुष्ट मात्र न और।।६८

चौथो गुण तुम न कह्यो, छठो तत्व न होय।
लोक कह्यो नहीं पन्द्रहमों, रहे कौन ठौर वह सोय।।६९

Nijanand App

तब भट्ट की सुध बुध गई, कही ए जवाब ब्रह्मा से न होय।
तब कही तहां पिता नें, तुम्हारे चित्त आवे करो सोय।।७०

या भांत नवतन पुरी मे भई, दोऊ भाई से चरचा के ठौर।
सो बीतक कहा लों कहों, भयो प्रेम दोऊ में जोर।।७१

बरस चौबीस मास दस, ऊपर भये पांच दिन।
तहां लो सोहबत रहे, बीच गिरोह मोमिन।।७२

सम्वत सत्रह सौ बारोत्तरे, भादों मास उजाला पख।
चतुर्दसी बुधवार की, हुये दृष्टें अलख।।७३

रहे लौकिक काम में, थे वजीर के कामदार।
लौकिक में से जुदे हुये, रहे तरफ परवरदिगार।।७४

महामति कहे ऐ मोमिनों, जिन पर हुआ म्याराज।
सो खासल खास उम्मत हैं, तन मार डारत हक काज।।७५

प्रकरण।।१३।। चौपाई।।५७८।।

तेरह वर्ष माया मिने, था ऊपर लौकिक बोझ।
श्री राज तरफ रहत है, रमें बीच कौसर हौज।।१

चर्चा नित विचारहीं, मन में बड़ो विलास।
नित प्रते श्री राज सों, करत विनोद कै हांस।।२

एक दिन श्री मेहेराज को, दिल उपजो एह विचार।
हम आये है अरस से, भेजे परवरदिगार।।३

Nijanand App

तो हमारी हुज्जत राज सों, कछु न चलत।
हम क्यों न देखें धाम को, अपनी जो बीतक इत।।४

श्री देवचन्द्र जी देखत, श्री धाम के निसान।
सो हमारे आगे कहत हैं, कर देत पहिचान।।५

हमारा धनी धाम का, क्या तिन से ए न होय।
हमें अरस अजीम की, ठौर दिखावें सोय।।६

सो हमारा खेल में, इतना भी न चलत।
तो क्यों कहिए हम धाम के, अपनी न देखें बीतक इत।।७

पर हममें हैं अवगुन, तिस वास्ते अन्तराय।
जब अवगुन हम काढ़हीं, तब क्यों न देखें हम ताय।।८

तिस वास्ते अवगुण को, ढूंढन लगें जब।
नजरों जो ही आइया, काढ़ दिए तब सब।।९

श्री देवचन्द्र के आगे, आय अरज करते ए।
मेरे अवगुण मुझको, काढ़ देओ सब इन्द्रीयन के।।१०

तब देते उत्तर, तिन में न कोई अवगुण।
तूं निरमल आत्मा धाम की, इन्द्रावती उत्पन्न।।११

फेर अपने दिल में, करते एह विचार।
श्री धाम धनी यों कहत हैं, मोहे चलना इन पर।।१२

Nijanand App

सुनत श्री मुख चरचा, श्री देवचन्द्र जी की जब।
चरचा की चरचा, करत साथ आगे सब।।१३

वचन वर्णन करत हैं, लेत हैं अपने सिर।
ए मोको जो कहत हैं, मोहे चलना इन पर।।१४

यह विचार करके, साथ को दिखावत।
अपने दिल विचारत, ए मोहे करना इत।।१५

तिस वास्ते अपने मन पर, करते बड़ा जुलम।
कस्त अपने आकार को, जगावें अपनी आतम।।१६

उतरता अहार घटाइया, रह्या पैसे भर दोए।
बल घटा इन्द्रियन को, सूक चला आकार सोए।।१७

नैनों नीर झरत हैं, जब लों चरचा धाम।
रंग जरदी का आइया, और न सूझे काम।।१८

ढूंढत फिरे अवगुन को, अजुं मेरे रहे और।
यह मेरे घर में रह्या, पहुंचाऊं हादी ठौर।।१९

तब घर के भूखन, कोई रह्या स्त्री के पास।
सो भी चित्त में अवगुन, आया दिल में खास।।२०

तिनको भी काढ़ के, अरज करे आगे हादी।
तब अवगुन काढ़ के, ए दिल आवे साहिदी।।२१

Nijanand App

मेरे आगे मन की, मैं देखों परख।
बाजार ही में चलते, ए कहूं चले ले हरख।।२२

परख ऐसी करें मन की, खीजे बहू बचन।
अजहूं रही सरीखी, मान रे चण्डाल मन।।२३

इन भांत अंग को, देत कसौटी जोर।
अरज करते अंग की, चित्त न हुआ मरोर।।२४

राह माहें चलते, कोई सामें मिल्या यार।
तो मुंह फिराय के चलें, जिन बीच पड़े परवरदिगार।।२५

तब श्री धाम मुंह आगे, फिरवल्या गिरद।
अपना आपा देखिया, किया आकार को रद।।२६

तब बालबाई आए के, कह्या आगे श्री देवचन्द्र जी।
श्री मेहेराज के आकार की, अरज आए करी।।२७

एक भाई पहिले चलिया, अब यह हुआ तैयार।
तुम क्यों न कहत हो, डर नहीं लगत लगार।।२८

तब श्री देवचन्द्र जी यें, सवाल किया मेहेराज।
क्या है तेरे दिल में, सो मुझे कहो आज।।२९

मेरे अवगुन मुझको, दिखाए देओ तुम।
तब कह्या मुझको, क्या पहिचानत आतम।।३०

Nijanand App

ब्रज की बातें सुनते, पानी झरत है नैन।
तब श्री देवचन्द्र जी कह्या, क्यों रहे तन सुनते बैन।।३१

कह्या मेरे आगे धाम की, बात करो जब तुम।
तब पानी नैना झरे, सुख पाऊं इन हुकम।।३२

तब बालबाई ने कह्या, क्या पहिचान धनी धाम।
जो ए बात लौकिक है, तिनसे होवे पूरन मनोरथ काम।।३३

जो पहिचान होवे सरूप की, तो पलक न रहवे नैन।
प्रदक्षिना फिरता रहे, और मुख न निकसे बैन।।३४

जो मुझे देखे धनी धाम का, तो पलक न फेरे नैन।
रात दिन दे प्रदक्षिना, मुख ना निकसे बैन।।३५

ए अवगुन नहीं तेरे, क्या कहत ए सुख।
अगिनत देखे अवगुन, कह्यो ना जाय या मुख।।३६

श्री देवचन्द्र जी पूछिया, क्या है तेरे मन में।
तुम देखो मैं क्यों न देखूं, सो क्यों न होए मुझ सें।।३७

यह वस्त हुकम की, सो होवे एक ही ठौर।
मोहे उठाय तुम बैठो, पर ना होवे कहूं और।।३८

तब चित पीछा पड़ा, हुआ मनोरथ भंग।
फेर के विचार किया, श्री देवचन्द्र जी संग।।३९

Nijanand App

इन्हें काम दीजे माया का, तब पीछे हटे चित।
कह्या मैं हुकम करत हों, जाओ श्री मेहेराज तित।।४०

तब गुजरात भेजिया, एक बहाना ले।
जब चले गुजरात को, जोस फिरा तिन से।।४१

महामत कहे ऐ मोमिनों, सुनियो यह बीतक।
आगे फेर कहत हों, जो आज्ञा है हक।।४२

प्रकरण।।१४।। चौपाई।।६२०।।

खेता भाई के कार्य हेतु अरब को गए

सम्बत सत्रह सौ तिलोत्तरे, हुक्म हुआ श्री राज।
गांग जी भाई के काम को, तुम जाओ श्री मेहेराज।।१

खेता भाई गांगजीय का, गया है बरारब।
पच्चीस वर्ष इनको भये, तुम सिताब जाओ अब।।२

जो ए आवे साथ में, तो सेवा होये श्री राज।
सो सोभा होए तुमको, पूरे होएं सब काज।।३

श्री देवचन्द्र जी ने कह्या, सो मान लिया हुकम।
नाव चलत बरारब, तामे बैठो तुम।।४

माह फागुन के बीच में, नाव चले जब।
सो चालीस दिन में पहुंच ही, जाए बरारब तब।।५

खेते को आए मिले, दई पाती हाथ।
बहुत सुख पाइया, राखे अपने साथ।।६

Nijanand App

कारभार बखार का, सारा सौंप दिया।
तुम नवतनपुरी को चलो, दुनी बहुतक जमा किया।।७

श्री तारतम की बातें, सुनाई बहुतक।
उनको छांट न लागहीं, सब कही अपनी बीतक।।८

इनको उत ले चलों, तो सेवा होय श्री राज।
भाई है गांगजीय का, इन से होत है काज।।९

चार बरस परवारते रहे, बरारब जब।
खेता पहुंचा अपने ठौर को, मौत हुआ तब।।१०

माल मता बखार पर, हुई हाकिम की मोहोर।
ए तो रहे बाहिर, किया हाकिम नें जोर।।११

तब उन हाकिम ने, बुरी करी नजर।
टरे पीछली रात को, पहाड़ में भई फजर।।१२

इहां सेती जाए के, पहुंचे सुल्तान इमाम।
फरियाद करी दो मास लों, बीच खेते के काम।।१३

जब उत से पीछे फिरे, एक मिला आरब।
तिन आगे बीतक कही, तिन लिख दिया तब।।१४

हिम्मत करके कहियो, जब निकसे सुल्तान।
तब छेड़ा पकड़ के, ए सुनाइयो कान।।१५

Nijanand App

मेरे गले में थी, सो मैं डालत हों गले तुम।
लेऊं हिसाब रोज ईद के, जब होवे हक हुकम।।१६

जब चला सुल्तान निमाज को, ए खड़े रहे बीच राह।
धाए के दावन झटका, टूट गई कस ताह।।१७

था इतमाम जोरावर, सब बरजे सुल्तान।
ए कहो हकीकत अपनी, मैं सुनो अपने कान।।१८

ला तखोफ या बनी, कहो सब तेरी बात।
तब रूक्का दिया हाथ में, कही सब विख्यात।।१६

मैं अपने गले का बोझ, सो डारत हों गले तुम।
लेऊं हिसाब तुमसों, खुदाए के हुकम।।२०

जब हाथ तुम्हारा हाथ में, होवेगा खुदाए के।
इन्सा अल्ला ताला रोज ईद के, तब लेऊं दावन झटक के।।२१

तब जबाब सुल्तान नें, दिया यों कर इत।
यह कलाम दुर्लभ, है बखत रोज क्यामत।।२२

छेड़ा झटका अपनो, देखा तरफ खुदाए।
ए सुकन मुझको कबहूं, किनहूं न सुनाए।।२३

मैं ऐता तुमको ना कहता, पर मुझ पर हुआ जुलम।
मैं बहुत भटका, तब फरियाद करी आगे तुम।।२४

Nijanand App

इन्सा अल्ला ताला करे, मैं करों तेरा इन्साफ।
तेरा तुझको दिलाऊं, कर दिया तोहे सब माफ।।२५

ओ तो गया निमाज को, फेर ए आये अपने घर।
हुआ बखत फजर का, भेजे चोपदार याद कर।।२६

ल्याओ उस सख्स को, जिन दावन झटका बीच राह।
इनका इन्साफ पहिले करों, ए है वास्ता खुदाए।।२७

चोपदार पुकारता, कौन वह सख्स निसान।
जिन इमाम को पकड़ा, फरियाद सुनाई कान।।२८

श्री जी आप खड़े हते, कह्या वह सख्स हैं हम।
दोऊ बाजू दो पकड़ के, खड़े किए तले हुकम।।२६

पहुंचे हजूर सुल्तान के, पूछी बात हिन्दुस्तान।
हकीकत पूछी इसलाम की, यों कर कहे सुल्तान।।३०

राजी होए बातें करीं, तें क्यों फरियाद न करी दिवान।
तब बचाया तिन को, मैं न सुनाई कान।।३१

तब बहुत राजी भये, सेख सल्ला की करी फरियाद।
उसी बखत हुकम हुआ, जाहिर उखाडूं बुनियाद।।३२

सब मता इनका, सुनत दीजियो तुम।
नातो मार उखाडों जड़मूल से, जो फेरे मेरा हुकम।।३३

Nijanand App

इन भांत लिख करके, दिया एक चोपदार।
आये आगे खड़े रहे, सेख सल्ला के द्वार।।३४

कागद दिया हाथ में, करियो इत सिताब।
हुकम हुआ मुझको, इस सख्स के बाब।।३५

तुरत कुंजी बखार की, और सामा सब।
काढ़ के हाथों दई, ढ़ील न करी तब।।३६

सुनी बात श्री देवचन्द्र जी, भेजे बिहारी जी स्याम।
पहुंचे आये बरारब, मुलाकात करी इस ठाम।।३७

तब लेखा दिया हाथ में, पहुंची सब सामा।
रोजनामा आगे रखा, जो लिखा था नामा।।३८

सब मेहनत अपनी, कर दिखाई बात।
पर इनों का कुफर, क्योंये कर न जात।।३९

इहां सेती फेर के, आये पुरी नवतन।
चुगली बालबाई करी, सुनाई जाम के कान।।४०

सम्बत सत्रह सै अठोत्तरे, हुआ ए मजकूर।
सब सामा गई रावर में, जिनके लिखी अंकूर।।४१

इहां नौतनपुरी मिने, रहे बरस दोय।
गये न श्री देवचन्द्र जी पास, हरख मिलने को बड़ो होय।।४२

Nijanand App

भांत भांत बिलखे वहां, घर के बीच में आप।
न वे बुलावे न ए जाय, तो क्यों कर होय मिलाप।।४३

देखो जोर ए माया को, दिखावे धनी धाम।
हल्की याको जिन गिनो, याके रंग में बहो न ठाम।।४४

खट ॠतु में साथ को, कह्या सभी ए खोल।
सिखापन विध-विध के, साथ वास्ते कहे बोल।।४५

एक दिन भौजाई के, वचन ताने के जोर।
तब प्रात उदास होए के, गए धरोल आप कर जोर।।४६

इहां सेती फेर के, गये कलाजी पास।
तहां जाए रोजगार की, दिल में राखी आस।।४७

कलाजी के पास, रहे बरस दोय।
या उपरान्त गुजरात, आठ महीने रहे सोय।।४८

फेर आये गुजरात से, कला पे मांगी बखसीस।
सम्बत सत्रह सै बारोत्तरे, अब मैं पाऊं सीख।।४९

अब मोसों दुनियां का, होय नहीं बेवहार।
एक दिल एकान्त में, सेवों धनी निरधार।।५०

तब कला जी ने कह्या, तेरा है अखत्यार।
जिन्हें जानो तिन्हें सौंप द्यो, सो चलावे कार वेहेवार।।५१

Nijanand App

इन समै श्री देवचन्द्र जी की, फिरी सुरत निजधाम।
बुलाय ल्याओ श्री मेहेराज को, मेरे हजूर इस ठाम।।५२

आई बालबाई बुलावने, तिनको दिया जवाब।
मैं काम छुड़ाय के, आवत हों सिताब।।५३

फेर बिहारी जी आए, मांगी अम्बर कस्तूरी।
सुन बिहारी जी की बात, दिल बीच धरी।।५४

मंगाय कस्तूरी अम्बर, लै करी हाजर।
मैं भी कदमों तले, आवत हों फजर।।५५

अपना काम काज सब, किया छोड़ने का उदम।
मैं इहां से फारक होय के, पहुंचों आय कदम।।५६

यों करते बिहारी जी को, फेर के भेजे श्री राज।
तुम सिताबी जाय के, ल्याओ बुलाए श्री मेहेराज।।५७

वे कहते सैयन को, सिंध की भाखा मों।
मुंह मुंह कोड़ मत्थन, मैं बातें करों तिन सों।।५८

जान हुन कोड़ धड़, धड़ धड़ कोड़ मत्थन।
मत्था मत्था कोड़ मुंह, मुंह मुंह कोड़ जिभ्भन।।५९

हितरा मिडी तोहिजा, तांजे गुण गिनन।
भाल तोहिजे हिकड़ी, पुजी ते न सगन।।६०

Nijanand App

आये बिहारी जी फेर के, बात कही इसारत।
बाप को दुखत है, कछु औषधि चाहिए इत।।६१

तब कह्या श्री मेहेराज ने, मैं आवत हों उत।
कछुक काम रह्या है, मैं उसके गले डालत।।६२

श्री देवचन्द्रजी के दिल में, रही बात अटक।
फेर फेर कहे बुलाओ, मेहेराज रहे खटक।।६३

तब बिहारी जीएं कह्या, तुम फेर फेर करत याद।
हम तो कहि कहि थके, तुम फेर फेर करत बाद।।६४

तब बिहारी जी को कह्या, तुम बुलाय ल्याओ इन।
मैं धाम दरवाजे पैठ ना सकों, ठाढ़ी इन्द्रावती करे रूदन।।६५

यह बचन सुन के, बालबाई पहुंची धाय।
मेहेराज तुम्हें क्या हुआ, एते बुलावने आय।।६६

श्री देवचन्द्र जी तुमको, याद करें फेर फेर।
मैं धाम जाय ना सकों, रह्या इन खातर।।६७

तब श्री मेहेराज नें कह्या, मोसों कही न किन ए बात।
मैं तो तब हीं आवत, जो एती जानों विख्यात।।६८

तब कार भार सब डार के, हुये बिदा सिताब।
आप रहते थे जिनके, तिनको दे आये जवाब।।६९

Nijanand App

सम्वत सत्रह सै बारोत्तरे, श्रावन वदि अस्टमी।
मिलाप श्री देवचन्द्र जी सों, कहों बात जमी।।७०

महामति कहे ए साथ जी, ए नवतन पुरी की बीतक।
याद करो इन समय को, सो भान देऊं सब सक।।७१

प्रकरण।।१५।। चौपाई।।६६१।।

आय के मुलाकात करी, लगे श्री देवचन्द्र जी के कदम।
तब पूछा ए कौन है, कह्या श्री मेहेराज की आतम।।१

नाम सुनत मेहेराज को, बड़ो जो पायो सुख।
पूछा मेहेराज आये तुम, बात करने लगे मुख।।२

दई दिलासा नरमी से, मुखतें कहे सुकन।
मैं बहुत बेर याद किया, तुम तरफ पटाये मोमिन।।३

तब जवाब श्री मेहेराज ने, दिया श्री देवचन्द्र कों।
था काम लौकिक का, डाला गले और के मों।।४

मोकों बुलावने का, किने न कह्या वचन।
जब मैं सुना सुकन, तब देखे कदम रोसन।।५

अब तो फेर न जाओगे, लौकिक काम ऊपर।
के फेर जाय के आओगे, काम इस्लाम पर।।६

मैं तुम को इस वास्ते, फेर फेर किया याद।
जो इन्द्रावती टाढ़ी रोवती, देखी ऊपर बुनियाद।।७

Nijanand App

मैं पैठ न सकों धाम में, तहां इनको रोवती देख।
तिस वास्ते मैं तुमको, बुलाया कर विसेख।।८

अब तो भला भया, तुम आये जो इत।
मोकों अति सुख उपजा, अब मैं हुकम करत।।९

फेर थाल प्रसाद सों भराय के, धराया आगे आन।
तब श्री जी ने किया, बिहारी जी का सम्मान।।१०

आओ बिहारी जी तुम, बैठो मुझ भेले।
एक ठौर प्रसाद लीजिये, बैठ के एकठे।।११

तब बिहारी जी ने कह्या, मैं न बैठों संग तुम।
श्री जी ने फेर कह्या, अरज तलबी हुकम।।१२

तब श्री देवचन्द्र जी ए कह्या, आप श्री मुख सुकन।
क्या रद बदल होत है, आपस में सैंयन।।१३

तब श्री जी ए कह्या, बिहारी जी और हम।
एक ठौर प्रसाद लेवें, ऐसा करो हुकम।।१४

तब श्री देवचन्द्र जी ए कहा, क्यों न भेले बैठो तुम।
जो श्री मेहेराज बुलावहीं, क्यों न होय एक आतम।।१५

तब बिहारी जी आय बैठे, श्री जी के भेले।
प्रसाद लिया एकठे, बातें करने लगे।।१६

Nijanand App

श्री देवचन्द्र जी धनी सों, बातें करीं श्री जी साहिब।
अपनी जो बीतक, बतावत गये तब।।१७

सुनके उत्तर दिया, भला किया अब तुम।
काम माया का छोड़के, आये तले हुकम।।१८

इन समें इहां दिन बाइस, रहे साथ मिने।
फेर नजर करी धाम को, साथ छोड़े इन समें।।१६

साथ को इन समें, कछु नहीं पहिचान।
धाम नाता किने ना देखा, अपने ठौर इहां ईमान।।२०

ए आज्ञा यों ही हती, करी हक सुभान।
लिखा लोहमौफूज में, भई तेती त्यों पहिचान।।२१

बात जो इसलाम की, रही न दिल में किन।
आप अपने घरों, सब बैठ रहे मोमिन।।२२

केतेक दिन पीछे, बाल बाई इत आई।
श्री मेहेराज के घरों आये, ये खबर ल्याई।।२३

श्री मेहेराज सों मसलहत, करने बैठी जब।
अब क्या करना है तुम्हें, रह्या काम धाम का सब।।२४

मसनन्द श्री देवचन्द्र जी की, सोतो बड़ी बुजरक।
सो खाली क्यों रहे, देखो हुकम सामने हक।।२५

Nijanand App

कोई उत आवत नहीं, भूल गए सगाई।
काहू को निजधाम की, रही नहीं असनाई।।२६

किनको बिठावें इन पर, किन का करें अखत्यार।
निसबत नसल से करें, बिहारी जी हैं सिरदार।।२७

तब श्री मेहराज ने कह्या, ये ही बात है सिरे।
सब साथ मिल के, ये ही काम करें।।२८

यह बात बैठी दिल में, यह काम करना जरूर।
साथ सों भली भाँत सों, मैं करों मजकूर।।२६

पहिले श्री बिहारी जी को, मैं बैठाऊं इत।
कदमों लाग सेजदा करूं, तब साथ भी आवे तित।।३०

एह मसलहत करके, आई बालबाई अपने घर।
समय दिन देख के, पहुंचे उस काम ऊपर।।३१

आये के बिहारी जी को, बैठाये ऊपर मसनन्द।
कदमों लाग के बैठे, फेर घर में भया आनन्द।।३२

महामति कहें ये सैंयनों, ए बीतक पुरी नवतन।
अब आगे की कहों, याद करो मोमिन।।३३

प्रकरण।।१६।। चौपाई।।७२४।।

सम्बत सत्रह सौ बारोत्तरे, आसो महिने में।
सब साथ को खबर, पहुंची श्री मेहेराज से।।१

Nijanand App

सबसों चरचा करके, चित को दिया मरोर।
तुम आय सब सेजदा करो, कर खण्डनी कह्या जोर।।२

सब साथ ता दिन से, आए हुकम तले निजधाम।
चरचा प्रात संझा को, करने लगे इस ठाम।।३

जहां तहां साथ में, बात भई जाहिर।
चरचा श्री धाम की, करे बिहारी जी बाहिर।।४

सब उच्छव कीर्तन, हुआ साथ मिने।
सरम पड़ी सबको, जान धाम अपने।।५

ज्यादा किया दीन को, एहिया ने इस ठाम।
साथ की सुरत फेर के, लगाई लै इसलाम।।६

आगे सब के श्री मेहेराज, बैठे चरचा सुनने को।
सबों खण्डनी कर समझावहीं, इन साथ के मों।।७

चरचा की चरचा, करें एकान्त एक ठौर।
धाम धनी साथ बिना, ना दिखावें और।।८

यों नित्याने चरचा करते, खुली आंकड़ी अन्तरजामी।
सब आई दिल में, खुसबोय इसलामी।।९

हम तो हैं धाम में, ए खेल नहीं रंचक।
हम सेहेरग से नजीक, बैठे आगे हक।।१०

Nijanand App

एह खुसाली दिल में, उठत कै तरंग।
हमारे धाम नजीक, हक सुभान की अरधंग।।११

साथ आगे खोलनें, दिल हुआ रोसन।
त्यों चरचा ज्यादा करें, खुसाल होय सैंयन।।१२

सेवा करों सैंयन की, यह मनोरथ उपजत।
कौन भांत कीजिये, इनों की सेवा इत।।१३

इन भांत बंदगी के, लगे करने विचार।
गोविन्द भेड़े के काम में, उहां ही खबरदार।।१४

तहां से कमाए के, तब सेवा होए सब साथ।
करी मसलहत बिहारी जी सों, लई दिवानगिरी वजीरी हाथ।।१५

बात लगाई वजीर सों, जाए तिनका लिया काम।
कोई बखत आवे साथ में, दीदार को इस ठाम।।१६

आया बोझ लौकिक का, सिर के ऊपर सब।
चरचा के करन को, अन्तर पड़या तब।।१७

तब कसाला करके, चूके न बखत सुनन।
धरम लगे पालने, सांचा है मोमिन।।१८

उठे पीछली रात को, करने को दीदार।
बिहारी जी पास आय कें, सुने चरचा परवरदिगार।।१९

Nijanand App

सरूप चरचा सुन के, तब आवें दरबार।
कार भार चलावें लौकिक, होय के खबरदार।।२०

यह काम बेहेवार करते, रह्या चार घड़ी पीछला दिन।
तब वहां से उठके, आय बैठे जमात सैयन।।२१

तहां चितवनी धाम की, करत है सब कोए।
सरूप वस्तर बरनन, होने लगा सोए।।२२

आहार इसलाम करके, रूह को पहुंचावें खुराक।
इस बेर इसलाम की, बुजरक जानी खाक।।२३

अब मैं साथ इसलाम का, करों सबें एक ठौर।
उच्छव रसोई करके, सेवा करों अति जोर।।२४

वस्तर भूखन पहेराए कें, सेवा करों सब साथ।
मोकों धाम धनीय ने, इनके पकड़ाये हाथ।।२५

माया मिने बैठे के, लाहा लेने अब।
धाम में जागे पीछे, एह न होवे कब।।२६

तिस वास्ते इस बात की, लूट होय करनी।
इनसे प्रीत कीजिये, सगाई जान धाम अपनी।।२७

सो सबे जाहिर में, करों मनोरथ सब।
लाभ लेऊं माया मिने, धाम में बातें होवें तब।।२८

Nijanand App

एह अजमाइस साथ की, करत हक सुभान।
मोमिन की माया मिने, होत है पहिचान।।२९

ऐसा जान के दिल में, सेवा लगे करनें।
रखा अपने पास ही, जान धाम सगाई अपने।।३०

तिनको तब ए कह्या, जो हाथ चालाकी होय तुम।
सो साथ की सेवा करो, यह मेरा हुकम।।३१

कछु न पीछा देखियो, करते खर्च मिने साथ।
मैं सब सौंप्या तुमें, दिया मुद्दा तेरे हाथ।।३२

बिहारी जी को भूखन, रूच के दियो बनाइ।
वस्तर करो ऊंचे, प्रेम प्रीत दिल ल्याइ।।३३

एक तो कहना साथ में, और दूजा पाया हुकम।
सो सेवा करने लगा, ज्यों सुख पावे आतम।।३४

नाग जी के हथियार, और वस्त्र भूखन।
ए सेवा साथ की, उस वखत करी मोमिन।।३५

सब साथ के वास्ते, किया बुलावने का इलाज।
इनको इकट्टे करके, उच्छव कीजे श्री राज।।३६

तिस वास्ते साथ को, किया बुलावने का हुकम।
मैदा घीऊ खांड़ को, इकट्टे करो तुम।।३७

Nijanand App

सामा लगे जोड़ने, धरें अपने घर में।
सामा जमा होने लगी, कपड़ा मंगाया उत सें।।३८

इन बात की चुगली, वजीर आगे गई।
उनने कछु ना विचारिया, बात दिल में लई।।३९

ए तो कारज कारन, है धनी को करने।
तिस वास्ते माया का, हुआ धक्का इन समें।।४०

तब बजीर नें लेय के, बैठाये अपने घर।
सामा लई सरकार में, हुआ जोरा इन ऊपर।।४१

सम्वत सत्रह सौ चतुरदसे, भई कुतुबखान की मुहिम।
जाम वजीर गये तिन पर, खड़ भड़ पड़ी इन कौम।।४२

बैठे प्रबोध पुरी मिने, जाय हब्सा लिखा इत।
तहां विचार करने लगे, थे इसलाम काम पर तित।।४३

क्यों ऐसा हम पर, पहुंचाया सख्त बखत।
हम तो बन्दगी में हते, क्यों ऐसा किया इत।।४४

थी मेरे मन में उम्मीद, ले जमात करों निजधाम।
और कछुये वास्ते, कछू ना लिया काम।।४५

यह विचार करते, श्री देवचन्द्र जी बैठे दिल पर।
ठौर एकान्त करके, दिल हुआ विचार पर।।४६

Nijanand App

लगे चरचा करने, वरनन वानी सरूप।
यों करते दिल खुला, बैठे दिल सुन्दर रूप अनूप।।४७

श्री ठकुरानी जी का सिनगार, पहिले हुआ जो ये।
पीछे राज का सिनगार, जरूर करने के।।४८

तब साथ का सिनगार, किया चाहिये इत।
ताको वरनन करत हैं, दिल खुला हुआ बखत।।४९

कछु रास की रामतें, साथ की भी करों रोसन।
एही सेवा साथ जी, सुन सुख पावें सैंयन।।५०

दुःख मोसों जाता रह्या, आय अंग में उमंग।
रामत भई सब रास की, सुख पायो जो थे संग।।५१

सामलिये बड़े भाई को, इत आया ईमान।
चरचा सुनी इन समें, कछुक भई पहिचान।।५२

अंजील किताब इन समें, उतरी कही फिरकान।
हब्से के पातसाह पर, ए बड़ा लिखा निसान।।५३

होते इन किताब से, नूर रोसनी जोर।
तब छोड़ चित राज की तरफ को, छोड़ माया की मरोर।।५४

यों करते चरचा, जबराइलें किया जोर।
आया जोस इन समें, कछू न रही खोर।।५५

Nijanand App

और बानी निकसी मुखसें, सो कलाम जंबूर के।
ज्यों ज्यों आयतें उतरीं, उत्तमबाइयें लिखी ये।।५६

ज्यों ज्यों उतरती गई, त्यों त्यों किये जमे।
फेर उहाँ से उतार के, ले पुस्तक चढ़ाये तिन से।।५७

ए दोय किताबें उतरीं, अंजीर और जंबूर।
षटरूती भी इन समें, इस्क विरहा का उतरया नूर।।५८

फल बीज इन समें, उठा इत अंकूर।
सो तब थें चढ़े दीप में, हुआ सूरत में मजकूर।।५९

बेहद बानी उतरी, दीप बन्दर जल में।
जब तैयार भई, तब जाने सिर लगा आसमान से।।६०

और रास की रामतें, हुआ मेरते में विवेक।
और कीर्तन वेदान्त के, राह में भये अनेक।।६१

और किताब तौरेत, उतरी बीच सूरत।
ताको कह्या कलस, सनन्ध अनूप सहर वखत।।६२

गुजराती भाखा फेर के, करी भाखा हिन्दुस्तान।
ए जो वास्ते ब्रह्मसृष्टि के, सुख पावे कर पहिचान।।६३

केतिक बाणी धनी की, रामनगर में भया मूल।
तहां से विस्तार भया, भया परना में बड़ा तूल।।६४

Nijanand App

और बानी फिरकान की, हदीसें महम्मद अलेह सलाम।
भई सो सारी परना मिने, बीच दीन इसलाम।।६५

जो प्रदक्षिणा निजधाम की, सातों सरूप श्री राज।
सो सारे परना मिने, वास्ते सैंयन के सुख काज।।६६

एक खिलवत और सागर, केतिक बानी और।
सो हुई मोमिनों वास्ते, मजल परना ठौर।।६७

महामति कहे ए मोमिनों, ए हादी मेंहेदी इमाम।
ताकी बीतक और कहों, जो नूर दीन इसलाम।।६८

प्रकरण।।१७।। चौपाई।।७६२।।

अब फेर कहों हब्से की, जाको प्रबोध पुरी नाम।
तहाँ बारह महीना बीतक भई, सम्बत सत्रह सौ पन्द्रोतरे तमाम।।१

कुतब खां सों सलाह करके, बजीर आया नए नगर।
तब अंदर कह्या महल में, क्यों ऐसा जुलम किया मेहेराज पर।।२

एक तो घर लूट लिया, फेर बंध कर बैठाया।
बरस रोज होने आया, क्यों ऐसा जुलम पहुंचाया।।३

सिताब छोड़ो इनको, और देओ दिलासा इन।
दे सिरोपाओ घरों पठाओ, ए दिलगीर होवे जिन।।४

सिताब बजीर बुलाय के, तबही किये खलास।
किताबें उतरी कादर से, बिन धाम न रही आस।।५

Nijanand App

ए किताबें लेयके, लगे बिहारी जी के कदम।
बातें बीतक की करीं, पाया सुख आतम।।६

लगे बातें करने, अपनी जो बीतक।
यों किताबें उतरीं, हुई श्री मेहेराज पर हक।।७

साथ सबों ने इन समें, देखी मेहर श्री राज।
बांह पकड़ाई साथ की, दई हकें हाथ श्री मेहेराज।।८

इत बिहारी जी चमके, सुन खटरूती के सुकन।
इन तहकीक मुझसे लई, खास गिरोह सैयन।।९

इन तो सुकनों में कह्या, मैं लेऊं धनी अपना।
तो इत बाकी क्या रह्या, भई या सुकनों की पहिचान।।१०

करने न देऊं जाहिर, ए बानी साथ मिने।
दिल में जान ऐसा कह्या, क्यों एता विरह किया आपने।।११

मैं तो बैठा था एक सहर में, तेरे आगे नजर।
तेरा विरह मुझ पर पड़ा, ए सुकन का देओ उत्तर।।१२

अब ए बानी रहने देओ, ए चरचा सुनो साथ।
अपनों जो मारग है, सोई ग्रहो हाथ।।१३

बानी वहां न पसरी, वह सरत उस दिन।
इन्तजार थे मोमिन, पर सुन सके न एक सुकन।।१४

Nijanand App

यहाँ से फारक भये, सोलोत्तरे के साल।
वास्ते गांव बसावने, आए जूनागढ़ के हाल।।१५

सत्रोत्तरे इहां रहे, अटोत्तरे के बरस।
कान जी भाई इहाँ रहेवहीं, बानी सुने सरस।।१६

हर जी व्यास एक ब्राह्मण, रहे तिनका चाकर होए।
जब वह दुखी पड़ा, भोम उतारा सोए।।१७

लगे दान करावने को, तब भया सावचेत।
ए कैसा काम करत हो, मैं नही इन खेत।।१८

क्यों मोहे दान करावत, जमपुरी का साधन।
मैं नाहीं इन इण्ड का, मेरा क्यों कलपाओ मन।।१९

दोय बात की दाझ इनमें से, लिये जात हों मैं।
जाको मैं हां कही, सो ना न कही किनने।।२०

जाको मैं ना कही, सो हां न कही किन।
इन दोए बात की दाझ, रह गई मेरे मन।।२१

ए सुकन कानजी सुन के, बड़ी उपजी दाझ।
ए कैसे इनने कह्या, क्या ए है हमारे मांझ।।२२

ए तो सुकन सो कहे, ज्यों कहे वासना धाम।
क्यों ए जीवता रहे, याके पूरें मनोरथ काम।।२३

Nijanand App

यों करते कानजी ने यह बात, श्री जी आगे करी।
श्री जीएँ ये सुनके, दिल बीच धरी।।२४

जो जीवता ए रहत है, कहूं चरचा के सुकन।
सब सर्के भानों इनकी, तुम साख रहियो सैंयन।।२५

फेर एही बात को उठाया, दूर होवे गुमान।
सेवा लगा कान जी करने, क्यों ये होए इन्हें पहिचान।।२६

नित तरकारी ल्यावहीं, सोध के बागों से।
तब राजी होवे कानजी पर, कहों स्याबास मैं।।२७

मांग जो कछु मांगना, सो मैं देऊं तुम को।
तें राजी मुझे बहुत किया, इन सेवा के मों।।२८

जो हजार रूपया देवहीं, मैं राजी न तिन पर।
तेरी तरकारी की सेवा से, खुसाल हुआ इन पर।।२९

तब कह्या कानजी नें, मैं मांगूगा आगे तुम से।
तुम तो मोको देओगे, जो है मेरे मन में।।३०

यों करते नित्याने, होये बहुत राजी।
तब कानजी सों फेर कह्या, तेरी कया करों कारसाजी।।३१

तब कानजी बोलिया, मैं मांगत हों एक वस्त।
एक साध को सुनाओ चरचा, यही पाँउ मैं कस्त।।३२

Nijanand App

स्याबास कानजी तुमको, क्या तुम मांग्या मुझ से।
एक तें राजी किया सेवा मिने, फेर चरचा सुनावने के।।३३

बुलाओ साध वे कहां है, मैं चरचा सुनाऊं ताए।
मैं तो बहुत राजी भया, जो कोई ऐसा आहार पहुंचाए।।३४

तब कान जी ने श्री जी सों, कराए दिया मिलाप।
मिलते ही सुख उपज्या, करनें चरचा लगे आप।।३५

पूछी खबर इन-उनको, कहां बसो तुम साध।
कह्या हम तो हैं परदेस के, सुन्या तुमारा मता अगाध।।३६

भले साध तुम आये, मैं चरचा सुनाऊं तुमको।
जो चर्चा कहो सो करों, तुम्हें राजी करों तिनसों।।३७

ठौर दई उतरने, अपने बीच बाग में।
अब होने लगी चरचा, भागवत के वचनों सें।।३८

सुनत मास दो हुए, दोऊ राजी भए मगन।
एक दिन ठौर नारायण की, ताके कहे वचन।।३९

एक हीरे का मंदिर, ताको बड़ो विस्तार।
चौरासी लाख जोजन, ताको करो विचार।।४०

एह ठौर है किन की, सो मोहे कहो सुकन।
तब जवाब व्यासें दिया, होय के दिल मगन।।४१

Nijanand App

एह ठौर अक्षर की, लिखा सास्त्रों में।
तब कदमों लाग फेर कह्या, एह ठौर पांऊ तुम सें।।४२

एह ऊपर तले माहे बाहिर, के ए ब्रह्मांड तीत।
मो सों कहो समझाए के, ए जो ठौर अतीत।।४३

पांच तत्व तीन गुन, और मूल प्रकृत।
इनको नास तुम कह्यों, यह ठौर अक्षर की कित।।४४

हमसों अन्तर ना करो, यह बताओ तुम।
फेर फेर विनती करें, सुने तुम्हारे मुख हम।।४५

तब जबाब व्यासें दिया, यह ठौर आद नारायण।
खीर सागर में रहत हैं, लिखी सास्त्रों में पहिचान।।४६

तब श्री जी ए कह्या, ए तो कह्या मिने इण्ड।
ये महाप्रलय में ना रहे, उड़े त्रिगुन समेत ब्रह्मांड।।४७

फेर फेर विनती करें, हम सों ना करो अन्तर।
हमें तुम बिना कौन समझावहीं, दिखावे पटन्तर।।४८

तब व्यासें झुक के कह्या, मोहे कहत तुम क्या।
सास्त्रों में ऐसा लिख्या, तो क्या उत्तर देऊं इनका।।४९

कह्या कटुक वचन आचारजों को, इनों ऐसे ही लिखे सुकन।
तो मैं इत क्या करों, क्या निसा करों मोमिन।।५०

Nijanand App

तब कानजी ने कहा, कछु अक्षरातीत की पूछो बात।
क्या जवाब करत हैं, सुनें इनके मुख विख्यात।।५१

आया जोस श्री जीए को, दिया धक्का कर हाथ।
क्या इनको पूछें क्या है इनमों, थका छर के साथ।।५२

ए तो थका छर में, सुध नहीं अछर।
अछरातीत की तिनको, ए क्या देवे उत्तर।।५३

जब रीस करके कहा, श्री जी ने सुकन।
तब व्यास की सुध गई, है ए बात सैंयन।।५४

तब श्री जीयें कह्या, सुनो व्यास वचन।
जो मैं आया तुम पे, सुनने चरचा के सुकन।।५५

तुम वचन अन्त समय, कहे थे मुख थें।
मैं नही इन इण्ड का, क्या दान करों मैं।।५६

और जाकों मैं हाँ कही, ताकी ना न कही किन।
तिस वास्ते गुमान भानने, मैं भेज्या तुम पर सैंयन।।५७

हमको पटाये हकनें, तुम को राखे तिन।
जिन पर मेहर भगवान की, गुमान भान करे रोसन।।५८

तब व्यासें वचन कहे, हे भगत हे भगतराज।
मैं कह्या यों ही कर, मेरा अरथ था इन काज।।५९

Nijanand App

कै गूलर लगे दरखत को, बहुत बेसुमार।
तामें जीव अनेक हैं, एक दूसरे न जानन हार।।६०

मैं जीव उन गूलर में का, नहीं मेरा और गूलर।
आगे पण्डित मैं सब जीते, हारा न काहू सरभर।।६१

सो आज मैं छोड़े हथियार, आगे तुम्हारे सब।
तुम तहकीक भेजे हक के, आये मेरे सबब।।६२

मोंको बताओ तुम, वह जो राह मुस्तकीम।
मैं तो कछु न जानत, मोहे दिखाओ अजीम।।६३

जेता अंकूर इनका, तहां लों भई सोहबत।
फेर तिन से जुदे पड़े, आए नवतनपुरी तित।।६४

सम्वत सत्रह सै उनइसे, देस पर आया कुतुबखान।
उत इल्हाम हुआ, थी ब्रह्मसृष्टि की पहिचान।।६५

कसाला उत साथ को, देखा उत बैठे।
तब दौड़ आये बिहारी जी पे, आये बातें करीए।।६६

फेर बीसोतरे जाम सत्ता की, लई दीवानगीरी सब।
सारा कसाला सिर पर, खेंच लिया तब।।६७

इहाँ से फेर गुजरात, गये बजीर संग जाम।
तहाँ से माया छोड़ के, लिया मोमिनों का सिर काम।।६८

Nijanand App

आए दीप गुजरात से, श्री राज भये फारक।
माया पूरी दिखाय के, नजर करी तरफ हक।।६९

महामति कहे ब्रह्मसृष्ट को, माया में खेल की कही।
अब आगे की कहों, ए जो बीतक भई।।७०

प्रकरण।।१८।। चौपाई।।८६२।।

तीन सृष्ट कही वेद ने, तीनों कही फिरकान।
और तीनों बानी साधों में, तामें सैयों में पहिचान।।१

एक जीव ईस्वरी ब्रह्म की, तीनों के जुदे जुदे मुकाम।
आम खास खासल खास, कही बीच निजधाम।।२

सृष्ट ब्रह्म की साथ है, जाए महंमद दिया पैगाम।
ल्याए कुंजी ईसा रूहअल्ला, दई सो हाथ ईमाम।।३

करे विजयाभिनन्दन जाहिर, बुध जाग्रत अवतार।
कलंक मेट नेहेकलंक करें, अखण्ड किया संसार।।४

एक साहिब वेद कतेब में, सब तिनकी लिखी मजकूर।
जो साहिदी नेक हुकमें, जाहिर किया नूर।।५

हकें भेजा मोमिनों पर, पैगम्बर जो आखरी।
सो लिखी हकीकत कुरान में, ब्रह्मसृष्ट दिलधरी।।६

उनों आगूं लिया दिल में, आवें रुहें बीच इन्सान।
ए खेल किया इनों वास्ते, जाने इनको आवे ईमान।।७

Nijanand App

महम्मद हक के नूर से, भई दुनिया महम्मद के नूर।
चाहे कायम तिन को करें, ईमान बका मजकूर।।८

पैगम्बर का माजजा, देवें सबों ईमान।
एक दीन दुनी कर, किये जाहिर सातों निसान।।६

रूह अल्ला की आवसी, खोलने बका द्वार।
अन्त सदी दसमीय के, सब होय बारहीं कार गुजार।।१०

मिलावा रूहन का, कहे गाजियों मिसल सोइ।
होवे खिलवत खाना जाहिर, बका पहिचान सबों होइ।।११

ईस्वरी सृष्ट फिरस्ते कहे, सो पहुंचे नूर मकान।
और सृष्ट जीव की आम जो, पावें आठों भिस्त निदान।।१२

मोमिन अरस अजीम के, बैठे खेल देखत।
मायने खोल जाहिर किये, एही बखत क्यामत।।१३

एही साइत हजूर की, तहां बेर नहीं लगार।
चार घड़ी दिन पीछला, ए जाने परवरदिगार।।१४

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए बेवरा तीनों का कह्या तुम।
कहूं आगे और मजल की, जो दिखाया खेल हुकम।।१५

प्रकरण।।१६।। चौपाई।।८७७।।

फेर कहों श्री जीय की, जो बीतक बीच इसलाम।
लड़ाई करी दज्जाल सों, सो कहों मुकाम और ठाम।।१

Nijanand App

जब जाम वजीर बिदा दई, देख कसाला दुख।
हुआ हुकम हक सुभान का, अब ए पावें सुख।।२

तब गुजरात से आये दीप में, भाई साथी जयराम के घर।
उठ मिले आनन्द सो, बड़ो सुख पायो देखकर।।३

लगा खेम कुसल पूछने, कहां से पधारे श्री मेहेराज।
हमसों कहो हकीकत, इत पधारे कौन काज।।४

तब जवाब दिया श्री जी नें, हम आए तुम्हारे काज।
हमको भेजा हक नें, हुकम दिया श्री राज।।५

ढूंढ काढ़ो साथ को, माया करो खबर।
याद करो निजधाम को, चलो राह इस्लाम पर।।६

हुई चरचा इन समें, श्री देवचन्द्र जी सों लेके।
साथ की खबर पूछते, एते दिन दीपे में रहे ये।।७

कौन साथ तुम काढ़िया, किन को राह बताइ।
तुम साथी श्री देवचन्द्र जी को, नूर रोसनी न दिल में ल्याई।।८

तुमको ऐसा ना चाहिए, कर बैठो एती अंधेर।
श्री धाम धनी को देखके, तुमको सरम न आई फेर।।९

एक पाती कबहूं ना लिखी, के हमारो नातो श्री धाम।
श्री देवचन्द्र जी सफर किया, तुम कबहूं न आये तिन ठाम।।१०

Nijanand App

बैठे बिहारी जी चाकले, ना गये तुम तित।
कबहूं खबर न पूछो तिनकी, क्या हाल तुम्हारा बखत।।११

मिल गये माया मिने, जाने अनादि के इत।
हम कबहूं न जायेंगे, श्री धाम लीला मों तित।।१२

तुम को ऐसा न चाहिऐ, देखो अपनी बुनियाद।
तुम श्री देवचन्द्रजी के साथी, गिरोह पैगम्बर आद।।१३

तिन सामे तुम ना देखया, के खाविन्द हमारा कित।
हम आये माया देखने, क्यों ऐसा भूलो इत।।१४

यों वचन खण्ड़नी के, श्री जी कहे बेसुमार।
कै दृष्टान्त देके किया, जीवता खबरदार।।१५

कब लों कासा कूटेगा, कब लों हथौड़ा एहरन।
कब लों घर में बैठेगा, आई सिर पर क्यामत रोसन।।१६

एह मुद्दाह चौदह तबक, सो अब होत है नास।
कछु सरम न आई हक की, तुम कहावत गिरोह खास।।१७

बहुत दिन मुरदार में, तुम किया गुजरान।
अब केते दिन जीओगे, कछु घर की करो पहिचान।।१८

कोई न अघाया इनमें, चचोड़त ढौर मुरदार।
श्री धाम धनी सुख छोड़ के, क्या हमेसा होओगे ख्वार।।१९

Nijanand App

एह इन्द्रियन के स्वाद को, लगा सब संसार।
ए मोह के जीव रहेंगे मोह में, तुम को तो चाहिए विचार।।२०

तुमसे माया जीव से, एता भी न होय फरक।
श्री धाम धनी की जिकर में, हुआ चाहिये गरक।।२१

सो बोय न आवत तुममें, ना चरचा चितवन।
ना साथ मिलावा सैंयन, ना दिल को किया रोसन।।२२

ए बचन सुनके रोइया, भूल मानी अपनी सब।
मुझसे कछु ना हुआ, करो धिक्कार आपको तब।।२३

हमको इन माया मिनें, याद न आया धाम।
हम भूले तहकीक, आड़े माया के काम।।२४

ना जानी हम निसबत, ना कछु भई पहिचान।
ना तो हम ऐसा क्यों करें, जो कछु बोए होती ईमान।।२५

अब मेहर देखी श्री राज की, जो भेज दिये तुम को।
हमारी तरफ न देखिया, हम तो डूबे संसार मों।।२६

इन भांत की चरचा भई, सब मिला घर का साथ।
सब आये चरनों लगे, जो धनियें पकड़े हाथ।।२७

आदर रसोई का किया, नहवाए श्री मेहेराज।
बैठाये रसोई मिने, अरूगाये श्री राज।।२८

Nijanand App

प्रसाद सबों ने लेय के, करी पौढ़ने की अरज।
हम ना आये पौढ़ने, हमारी तो और गरज।।२६

तुम्हें माया से काढ़ने, हम आये इन काज।
तुम छोड़ों मुरदार को, याद करो श्री राज।।३०

फेर बैठे चरचा करने, ब्रज को जो बरनन।
देखो पगले आपनें, क्यों कर भरे सैंयन।।३१

कैसा प्रेम तुम से, ब्रज में करते श्री राज।
कौन भाँत तुम चलते, करते माया का काज।।३२

कुटुम्ब परिवार सब थें, रहते चित्त उदास।
तुमको एक श्री राज बिना, और ना रहती आस।।३३

बैठे थे घर अपने, चित्त श्री राज के चरण।
हिरे फिरे टहल में, रहे प्रेमें में मगन।।३४

कोई ना लगता तुमको, इन माया को नेम।
रहों सदा छके जोस में, आठों जाम इन प्रेम।।३५

तो फेर आए जब रास में, किया गौपदवच्छ संसार।
नजरों कछु न आइया, आड़े परवरदिगार।।३६

क्योंकर जोगमाया मिने, बदले तुम आकार।
जोगमाया नें बीच में, नये क्यों कराये सिनगार।।३७

Nijanand App

तुम क्यों उथले किये राज सो, साम सामें बचन।
क्यों कर तुमको राज नें, दिखाय वृन्दावन।।३८

क्यों कर तित खेले तुम, मिलके ब्रज का साथ।
क्यों कर राज रमे तुमसों, क्यों खेले लेके बाथ।।३९

क्योंकर तुम सुख में, होय गए मग्न।
क्यों अंतरध्यान होय के, विरह की दई अगिन।।४०

महामति कहे ए साथ जी, ए दीप की बीतक।
अजूं और बहुत है, सो कहों ग्रहे माफक।।४१

प्रकरण।।२०।। चौपाई।।६१८।।

फेर कहे सुकन जयराम को, दीप में श्रीजीयें जब।
रास लीला याद करते, पहिले कह्या सनमन्ध को सबब।।१

फेर तुमही प्रगटे क्योंकर, क्योंकर भाना सोक।
फेर राज सों मिलके, करने लगे जोक।।२

क्यों कर जमुना त्रट, लगे थे करन झीलन।
क्यों कर सिनगार करके, याद करी बातें मोमिन।।३

क्योंकर तुम आसन किया, तापर बैटे श्री राज।
क्यों घेर बैटे श्री राज को, अरूगावन के काज।।४

फेर झीलना करके, बैटे आरोगन जब।
बिरहा ताप याद आइया, इत स्वाल किये हैं तब।।५

Nijanand App

बातें क्योंकर तुम करी, बैठे हिरदे विरह बचन।
क्यों पूछे प्रस्न श्री राज सों, क्यों उत्तर दिया रोसन।।६

भई क्यों आज्ञा धाम चलने, क्यों रहे मनोरथ तुम।
क्योंकर भाग्या सुपना, तुम पर हुआ हुकम।।७

फेर इत सुपन भागा, जब मोमिन पहुंचे धाम।
चाह रही खेल देखने, होय पूरे न मनोरथ काम।।८

अजूं मनोरथ रह गये, क्यों कहेगी रूहें विख्यात।
क्योंकर राजें दिखाइया, तुम्हारे दिल की बात।।९

तिस वास्ते इण्ड तीसरा, रचिया तुम कारन।
त्रैगुन खिलौने तुम्हारे, तुम हो खास सैंयन।।१०

फेर खेल क्योंकर किया, याद करो ताए तुम।
क्यों रमाये तुमको दे, तुम्हारे साथ अपना हुकम।।११

अजूं तुम मोह अंधेर में, जो एता दिया तुम्हें याद।
फेर फेर माया मोह में, याद न करो बुनियाद।।१२

इन चरचा के रस में, देखा न जाते दिन।
सुनके सब मगन भये, दिल हुआ अति रोसन।।१३

फेर चरचा करने लगे, भलो जो पायो सुख।
ता समें साथ की सिफत, कही न जाय या मुख।।१४

Nijanand App

सम्वत सत्रह सै बाइसे, दीप पधारे श्री राज।
दोए बरस तहां रहे, सब पूरे मनोरथ काज।।१५

नित चरचा इन भांत की, होवे दीप बन्दर में।
बड़ा सोर पड़ा सहर में, आवत सब सुनने।।१६

अपने अंकूर माफक, हिस्सा लिया सबन।
पर आये केतेक साथ में, जो निसबती साथ सैंयन।।१७

जुध किया दज्जाल नें, बड़ा जो किया सोर।
हाथ पांव अपने पटके, पर कछु न चला जोर।।१८

धक्का दिया बड़ा साथ को, पर जाको डग्या न ईमान।
सोई खास गिरोह मोमिन, जाको हकें दई पूरी पहिचान।।१९

अब कहों साथ आवन की, पहिले आये जीवा और जयराम।
रतनबाई घर में रहे, किया माया मिनें आराम।।२०

चरचा सुनके आइया, रहे गणेस इन घर मिने।
यह आया साथ में, सुन राज की चरचा से।।२१

गंगादास आइया, इन चरचा के संग।
आय बैठा साथ में, कर कलजुग से जंग।।२२

नरसिंह दास ग्वाल जी, ए आय बैठे बीच निजधाम।
जंग भया दज्जाल सों, ए डगा नहीं इन काम।।२३

Nijanand App

गरीबदास साथ में, था पहिले का भोज भाई।
आवत नित राज पास, ए चरचा श्रवन देने को सुखदाई।।२४

इत सरूप दे आई साथ में, वीरबाई और तेज।
और तेज बाई गेहेलबाई, इनों का सेवा में बड़ा हेज।।२५

चम्पा और सुहासन, बेलबाई और बाल।
ए आई चारों साथ में, हुये राज अति खुसाल।।२६

यों साथी साथ में, भये संगी चरचा के।
पचास साठ आये साथ में, आहार चरचा देवें ए।।२७

बड़ो विलास जो होवहीं, सो क्योंकर कहों इन मुख।
लाहा लियो साथ में, सो कह्यो न जाए या सुख।।२८

बड़ा सोर हुआ साथ में, कांप्या कुली दज्जाल।
ए आये मेरे दुस्मन, मोकों करे बेहाल।।२९

महामति कहे ए साथ जी, ए बीतक दीप बन्दर।
लड़ाई दज्जाल सों, पहुंचाई सख्ती मोमिनों पर।।३०

प्रकरण।।२१।। चौपाई।।६४८।।

फेर कहों दीप बन्दर की, जो लड़ाई दज्जाल बीतक।
तो मेहर में राखे मोमिन, करी सुभानल हक।।१

कथा बांचने के आसन, सो हुये दुसमन।
श्रोता जो थे उनके, सो आय देने लगे श्रवण।।२

Nijanand App

सवाल पूछे जाए तिनको, हमको देओ जवाब।
इनको अर्थ आवे नही, रख न सके ताब।।३

तब चुगली को चित्त में लिया, कोई करे उपाए।
इनको इहां से काढ़िये, सब झगड़ा कीजे मिल धाए।।४

मिल एक चुगल ठाढ़ा किया, करो फिरंगी से अरज।
ये देव तुम्हारे निन्दत, करो हमारी गरज।।५

चुगल केते दिन पीछे, गया फिरंगी पास।
एक सख्स मिला दरबार में, इनही कारज की आस।।६

तब उन सख्स ने कह्या, तुम कहां जात कौन काम।
आए उतावले दरबार में, इन बेर इस ठाम।।७

तब कह्या चुगल नें, कोई नया साध आया इत।
सो निंदत सब देवों को, ताकी चुगली को जात तित।।८

तब उनने कही तें निंदा, सुनी अपने कान।
के तुम कही काहू की कहत हो, बिना करें पहिचान।।९

तब उनने कही मोसो, नही उन साध पहिचान।
मैं निन्दा कानों भी न सुनी, कही कहों औरों की जान।।१०

ऐसा काम करत है, बिन देखे अपने नैन।
फिरंगी ऐसे जालिम, सुनत तुम मुख बैन।।११

Nijanand App

तुरत अमल करत है, बहुत बुरा ए काम।
तिन साथ को कसाला, देवें फिरंगी इस ठाम।।१२

तो क्या हाल तुम्हारा होवहीं, कछु होयगा तुम्हें दुख।
उनके दिल भली लगी, बड़ो जो पायो सुख।।१३

वह सुनत ही पीछे फिरया, ए कहके भया अलोप।
फेर देखे तो उत ना पावहीं, होय के गया गोप।।१४

साथ में खल भल पड़ी, हुआ चुगल का डर।
भागे चारों तरफों, खाड़ी गये उत्तर।।१५

कोई सहर में छिप गये, कोई कहें हम न जावें इत।
कोई कहे हम न सुनें, कबहूं न गये तित।।१६

इन भांत दज्जाल नें, सब के लिए हथियार।
कोई खड़ा न रह सकया, तरफ धनी निरधार।।१७

एक जयराम खड़ा रह्या, और इनके घर के लोक।
इनों आपोपा दिया, रहे अपने जोक।।१८

ए तो नजर दज्जाल की, दिखाए अजमाए इन।
खड भड पड़ी साथ में, डगे इत सैंयन।।१६

वह तो सोर ऊपर का, स्याह मुंह भए चुगल।
फेर साथ बैठा सब मिलके, करनें लगे नकल।।२०

Nijanand App

हांसी हुई साथ में, कहने लगे बीतक।
भूल मानी भागते, आगे बैठ के हक।।२१

फेर श्री राजें लिया दिल में, क्योंए इहां से पावें निकसन।
साथ जुदा जुदा काढ़ना, क्यों इकट्ठे होए सैयन।।२२

इन उपाय के वास्ते, आये दीप मारी आरबन।
आई श्री बाई जी बंध में, तब चले छुड़ावने तिन।।२३

नवी पोर बन्दर पाटन, सब टौरों देखा फेर।
काहू न हुआ मौयसर, के मोहजल की उठी लहर।।२४

साथ में खल भल पड़ी, दज्जालें किया जोर।
टौर टौर फितने उटे, करनें लगे सोर।।२५

इहां सेती आये कच्छ, थावर दिया साथ।
मंडई मिने आये के, साथ के पकड़े हाथ।।२६

तहां प्रागमल कुंवरबाई, केतेक रहवे साथ।
भूल गये साथ चरचा को, लई दज्जाल सों बाथ।।२७

तहां खण्डनी करके, फेर जीवते किये सब को।
ऐ हाल तुम्हारा क्यों हुआ, रहके माया मों।।२८

अब जागो दिन आइया, धाम चलने का।
अब कहा लों खेल देखने, रहोगे माहें माया।।२९

Nijanand App

ए काहू के रही है, इनकी कौन प्रतीत।
तुम क्या करोगे इनको, रहो दुख देखनें इत जित।।३०

तुम तो चतुर प्रवीन हो, है तुम्हारा तन धाम।
तिनको भूल के माया में, करो कुफर काम।।३१

तुमको ऐसा न चाहिये, जो भूलो अपनो ठौर।
धाम लीला को छोड़ के, जाय काम करो और।।३२

तुम देखो ओ घर अपना, हमको क्या बताया श्री राज।
हम खड़े कौन भोम में, हम आये थें कौन काज।।३३

उहां एक दिन रहके, किये जीवते सब।
चरचा कर समझाए के, कपाइए आये तब।।३४

हरबंस ठाकुर तहां रहे, अपने कबीले समेत।
तहां आय बासा किया, जान धाम का खेस।।३५

चरचा करी तिनके घरों, कहे खण्डनी के बचन।
सबे हुये जागृत, दो दिल हुआ रोसन।।३६

भेजे बिहारी जी के पास, जाये करो दीदार।
तुमको ऐसा न चाहिये, जो छोड़ो धनी निरधार।।३७

तहां से आये भोजनगर, आये घर वृन्दावन।
मिलाप किया तिन सों, हुआ खुसाल मगन।।३८

Nijanand App

कर आदर भली भांत सो, अरूगाये श्री राज।
लगे बातां पूछने, हम सों कहो काज।।३९

कही बात बीतक की, भई चरचा इन समें।
खण्डनी के कहे बचन, सुख पाया तिन सें।।४०

फेर के चरचा भई, बचन खण्डनी के।
वैराग पूरा राज को, सो घात बतावें ऐ।।४१

सब को मीठी लगी, होय चरचा जो हाल में।
मकसूद होवे तिनसों, सब सक जावे सुन के।।४२

जो मलीनता मन की, सो सब हुई दूर।
बड़ा सुख पाया इन समें, करते धाम मजकूर।।४३

दिन दो एक रहके, फेर नलिये पहुंचे।
तहां सेती चलके, आये ठट्ठे नाथे के।।४४

पूछत घर उनका, नाथे सों भयों मिलाप।
मिलते ही सुख उपज्या, मिट गयो सब ताप।।४५

बात लगे पूछने, कौन भाग हैं हम।
उहाँ सेती इहाँ लों, धरे मुबारक कदम।।४६

महामति कहे ऐ साथ जी, दीप से ले ठट्ठा में।
अब फेर कहों ठठे की, भई बीतक जो हमसे।।४७

प्रकरण।।२२।। चौपाई।।९९५।।

Nijanand App

अब कहों बीतक ठट्टे की, याद करो मोमिन।
जो दिखाया खेल तुम को, बीच जिमी नासूत सुभान।।१

श्री जी आये ठट्टे में, रहे दिन दस-बार।
फेर लाठी बन्दर आये, हुए इत हुसियार।।२

विस्वनाथ भट्ट मिले, आये देवे के दुकान।
उन आदर बड़ो कियो, थी ऊपर की पहिचान।।३

इहां से चढ़े नाव में, सत्रह दिन लगा तूफान।
ओ जहाज फेर आई, जो था हुकम सुभान।।४

फेर पधारे साथ वास्ते, अजूं मोमिनों सों न भयो मिलाप।
तो नाव जाय न सकी, फेर के आये आप।।५

फेर लाठी से ठटठे आये, नाथा जोसी मिला धाए।
बन्धन सो मुलाकात भई, उन अपने घरों पधराए।।६

फेर जिन्दा दास मिले, सुनी चर्चा बाई ठाकुरी।
ओ आई साथ में, मेहर राज की उतरी।।७

तब होने लगी चरचा, बड़ो आनन्द भयो साथ।
चरचा करें जोस में, जाके धनियें पकड़े हाथ।।८

इन समें लोक आवत, चरचा सुनने को।
सोर पड़ा सहर में, एक साध आया ठट्टे मों।।९

Nijanand App

जो कोई साध ए सुने, सो करने आवे दीदार।
सुन चरचा राजी होवे, कहे सुकर परवरदिगार।।१०

सुने साध चिन्तामन, रहे कबीर के धरम।
कह्या कीजे दीदार तिनका, देखें चरचा उनके करम।।११

घरों गये उनके, तिनसों करी मुलाकात।
देखत ही पाया सुख, वह करने लगा बात।।१२

कहां से आये तुम, चरचा करो हमसों।
के तुम हमको सुनाओ, जो कछु ज्यादा आवे तुमको।।१३

जो देने आये हों तो देओ, लेने आये हो तो देवें हम।
तुम सुनो हम कहें, ज्यों होए चरचा आतम।।१४

कहो तो चतुर्भुज का, दिखाऊं तुम्हें दरसन।
के कहो-ज्योति स्वरूप को, के सेससांई सहस्त्र फन।।१५

के झिलमिल अनहद, ए सब दिखावें हम।
ना तो तुम हमको दिखाओ, जो कछु पाया होवे तुम।।१६

तब श्री जीयें कह्या, हम लेने आये वस्त।
हमको तुम बताये देओ, ए है हमारा कस्त।।१७

जो कछु तुम कह्या, सो ग्रहें तुम्हारे वचन।
तिनका निरणय कर देओ, दिल करो रोसन।।१८

Nijanand App

एक कमाल की साखी पर, चरचा हुई जोर।
जोस में श्री जी ए कह्या, तब पाया चित मरोर।।१६

साखी : कहया कोड़ी ते हीरा भया, हीरा ते भया लाल।
आधा भक्त कबीर है, पूरा भक्त कमाल।।

तब श्रीजीए कह्या, तुम क्या जानो कबीर।
तुम जो आधा भक्त इनको कह्या, जो चित नाही तुम धीर।।२०

कहां मजल कबीर की, केती अकल कमाल।
तौल देखो दोनों को, किनका कैसा हाल।।२१

बिन पहिचाने बोलत, नाहीं तुम सराफ।
कहां कबीर कहां कमाल, विचार देखो आप।।२२

एक कबीर का कीर्तन, सुनाये दिया तब।
तब चिन्तामने ने कह्या, देखो सब्द निकस्या अब।।२३

साखी : एक पलक ते गंग जो निकसी, हो गयी चहुं दिस पानी।
उहि पानी दो परवत ढांपे, दरिया लहर समानी।।

उड़ मक्खी तरवर चढ़ बैठी, बोलत अमृत बानी।
वह मखी के मखा नाहीं, बिन पानी गरभानी।।

तिन गरभें गुन तीनों जाये, वह तो पुरूष अकेला।
कहे कबीर या पद को बूझे, सो सतगुरू मैं चेला।।

Nijanand App

देखो सब्द आगे चला, सो सख्स मिल्या आए।
अब देखो सब्द इनके, ए सब्द पार पहुंचाए।।२४

मैं तुमसे कहता था, जो सब्द आगे चलत।
अपने सेवकों से कही, वह सख्स पहुंचा इत।।२५

एती मुलाकात करके, उठे श्री जी साहिब।
आए अपने आसन, करी साथ से चर्चा तब।।२६

कलू मिश्र के घरों, कथा में गए एक दिन।
असनाई उहां कच्ची, उत चर्चा सुनी सैंयन।।२७

महामति कहें ऐ साथ जी, ए ठट्ठे का मजकूर।
सम्बत सत्रह सै चौबीसें, कहूं आगे और जहूर।।२८

प्रकरण।।२३।। चौपाई।।१०२३।।

चिन्तामनि ढूंढत फिरे, कहां है उन साध का ठौर।
आया पूछत कथा में, मोहे ढूंढत भई भोर।।१

तब मिसरें बताइया, नाथे जोसी का घर।
तहां से खबर लैय के, आय पहुंचे अटारी पर।।२

तहां साथ सब बैठें थे, बीच में बैठे श्री राज।
चरचा के बखत मों लगा, चिन्तामन कदमों इन काज।।३

साथ संगी सब अपनें, चरचा लगे सुनने।
श्रवना दई भली भांत सों, निसबत अंकूर अपने।।४

Nijanand App

सुख पाया चरचा मिने, अपनी मूली गई भूल।
चरचा देखी अधिक, असल अंकूर का मूल।।५

इनके जो सेवक थे, खल भल पड़ी तिन में।
फिरे चित जो तिनके, इन चरचा सुनने से।।६

दिन दोए तीन लग, चरचा सुनी बनाए।
तब सब लगे कदमों, हुई पहिचान हक जाए।।७

खण्डनी भली भांत सों, देखत साथ सबन।
तब चिन्तामन छाने कह्या, सरम राखियो बीच मोमिन।।८

एकान्त मोसों कहो, जानो तैसी खण्डनी।
पर मेरे सेवकों में सरम, राखो जान अपनी।।९

तब राजें इनसों कह्या, तुम्हारी क्यों न राखें सरम।
तुमको जो हम कहेंगे, दे परदा ओट मरम।।१०

ए सब गये अपने घरों, राजें रात में किर्ये कीर्तन।
सुनो रे सत के बनजारे, ए सुकन ग्रहो मोमिन।।११

तिनमें सुकन खण्डनी के, तुम छोड़ो ग्यान गुमान।
प्रात को आये जब पढ़िया, तब चिंतामन को भई पहिचान।।१२

अब मारों काले कुत्ते को, लाठी सिर ऊपर।
सेवकों आगे तब कह्या, मैं खाली कछु न खबर।।१३

Nijanand App

तब श्रीजीयें सराहिया, स्याबास चिन्तामन।
पाई ते निसबत, ए सुकन मोमिन।।१४

कहूया श्री तारतम इनको, सब सेवकों समेत।
परहेज कराया चार बात का, ए कबूल कर दिल लेत।।१५

एक हराम कहूया मांस को, दूसरा हराम सराब।
तीसरी औरत बिरानी तजे, सो पावे हैयाती आब।।१६

चोरी झूठ बोलना, इनका छोड़ाया उदक।
अब हम कबहूं ना करें, हम पाया बेसक हक।।१७

इन समय में चरचा, बड़ी जो होवे तित।
साथ की आमदानी, हुई बड़ी इन बखत।।१८

चतुरा एक पोहोकरना, आवे श्री राज की सेवा में।
ल्यावे दूध नित्यानें, सुनी चरचा कानों उने।।१९

तहां ब्रज रास को बरनन, होत हतो नित्यान।
वह देख अचंभा होवहीं, चरचा सुनते कान।।२०

तहां उनकी सोहोबत लाल सों, नित्याने बखार में होए।
तहां आये चतुरे कही, चरचा सुनके आया जोए।।२१

कहां ब्रज अखंड क्योंकर, कहां रास अखंड।
ए तो तुम कहत हो, न्यारा जो ब्रह्मांड।।२२

Nijanand App

तब लालें कह्या, रास ब्रज न हमारी दृष्ट।
चरम आंख क्यों देखिए, इन हाल सब सृष्ट।।२३

तब चतुरे ने कही, क्यों आवे तुम्हारी नजर।
तुम दिव्य दृष्ट कब पाओगे, क्यों कर होय फजर।।२४

पांच तत्व तीन गुन को, जब हुयो ब्रह्मांड को नास।
तब ब्रज और रास की, ठौर कहां रही खास।।२५

तब लालदास चौंकिया, तैं कहां सुनी ए बात।
मोहे ठौर बताय देओ, ए कहां पाई सिफत जात।।२६

तब चतुरे ने कह्या, कोई साध आए इन ठौर।
तहां चरचा होत है, ब्रज रास की जोर।।२७

महामति कहें ए साथ जी, ए ठट्ठे की बीतक।
ए मेहर सैयों पर करी, साहिब सुभानल हक।।२८

प्रकरण।।२४।। चौपाई।।१०५१।।

श्री लालदास जी का श्री जी से मिलाप

ए ठट्ठे की बीतक, लालदास की मुलाकात।
जिन भांत आए मिले, सो ए कहों फेर बात।।१

तब लालदासें कह्या, मोकों ले चलो तुम।
मैं जाए मुलाकात करों, ए रहमत पावें हम।।२

Nijanand App

मैं उन्हें पूछ तुम्हें ले चलों, बिना उनके हुकम।
मैं ले जाए ना सकों, तुमको उनके कदम।।३

चतुरे आए अरज करी, लाल चाह करें दीदार।
लछमन उनका नाम है, है तालिब धनी निरधार।।४

हुकम हुआ श्री राज का, उनको बुलाओ सिताब।
काहू काहू ने मने करी, फेर मेहर करी उनके बाब।।५

आया बुलावन चतुरा, चला अपने संग लगाए।
आये पहुंचे कदमों, भेंट करी बनाए।।६

देखत ही दीदार को, बड़ो जो पायो सुख।
मन की कुलफत सब मिटी, भाग गया सब दुख।।७

भई चरचा सब ब्रज की, देखी सुनी सब कान।
तब आय ईमान की, होय गई पहिचान।।८

चार घड़ी चरचा सुनी, हुई खुसाली मन।
फेर के लाल घरों आये, रहा कदमों दिल मोमिन।।९

फेर के चरचा सुनने, आये बेर दो चार।
बाग में जिन्दादास कही, धाम पैठे बिना विचार।।१०

फेर चरचा मारकंड की, कह दिखाया दृष्टांत।
तब नजर खुली बातन की, देखी दृष्ट एकांत।।११

गीता और भागवत के, खोल दिये सब द्वार।
आई वस्त अखण्ड, देखे धनी निरधार।।१२

Nijanand App

आया जोस वस्त का, रही न कछु सुध।
लौकिक दृष्ट उतर गई, आई जागृत बुध।।१३

और सुध कछु ना रही, वही आवे याद।
दृष्ट फिरी उतथें, अपनी जो बुनियाद।।१४

इन समें कलयुग ने, बड़ा जो किया सोर।
लोग जो उन मुलक के, उनों किया जोर।।१५

कछु ना चला काहू को, रहे सिर पटक।
निन्दा करी बहुतक, थी इत मदद हक।।१६

इन समें आइया, मोहनदास दलाल।
राम दास वैद्य, ए भी हुआ खुसाल।।१७

खटू मटू खत्री आये, और आया चतुर।
और मंगल आइया, हुई खुसाली खूबतर।।१८

और भगत सामल, कुंवरजी और गोवरधन।
सुकदेव और जेठा, और द्वारका सैंयन।।१९

रायचन्द्र बुला धीरा, और आये थिरदास।
और साथी केतेक, ल्याये ईमान खास।।२०

किसन बाई बसई, सेहेज बाई राम।
वल्लभी चतुराई करें, चरचा में आराम।।२१

Nijanand App

और चिन्तामन के संग, आया केतेक साथ।
तामें ईमान दाखिल वह भये, जाके धनियें पकड़े हाथ।।२२

इत चरचा का मारका, बड़ा जो पड़िया आए।
वल्लभी मार्ग के लोग, लड़नें को उठ धाए।।२३

कलयुग डरा देख के, मेरे ए दुस्मन।
मेरा कछु ना चले, ए मारत मेरा मन।।२४

गुसांई के बालक रहे, होय निंदा तिन में।
वस्त को समझे नहीं, फरियाद लगी तिन सें।।२५

मास दस यहां रहे, हुआ चलने का दिन।
मौसम भई मसकत की, विदा हुये साथ मोमिन।।२६

अरज करी सब साथ नें, ए कारज करें हम।
आप इत बिराजे रहो, ए कारज होवे हुकम।।२७

तब कहया साथ को, उत है मेरा काम।
क्या जानें किन कारने, मेरा जाना होत तिस ठाम।।२८

बहुत विनती साथें करी, मानीं नाहीं कोय।
तब आज्ञा पर धरी, कहा कारज कारण सोय।।२९

फेर ठट्टे से लाठी बन्दर, नाव ऊपर चढ़े।
तहां से पहुंचे मसकत, सरत थी वायदे।।३०

Nijanand App

महामति कहे ए साथ जी, ए ठटठे की बीतक।
अब कहों मसकत की, जो आज्ञा है हक।।३१

प्रकरण।।२५।। चौपाई।।१०८२।।

आए पहुँचे मसकत में, उतर नाव से।
कांटे दुकान महाव जी की, आए बैटे उन में।।१

पूछी खबर उन नें, उठ के मिले धाए।
कुसल खेम पूछन लगे, भले आप पहुँचे आए।।२

इत बड़ो आदर कियो, लौकिक नाते से।
आदर भाव करने लगा, खबर बन्द की पूछी इन समें।।३

विस्वनाथ संग था, श्री बाई जी की दई खबर।
रूपा राधा संग थी, धाए के पहुंची घर।।४

ठौर पास दई रहने को, सब मिल हुये खुसाल।
बातां लगे करनें, बीतक अपनें हाल।।५

महावजीयें रसोई का, आदर किया इत।
लगा आप सेवा करने, हाल भाल इन बखत।।६

कानजी बेटा उनका, रहे दुकान पर।
आरोग के फेर बैटे, साथ टट्ठे की कही खबर।।७

लगी होने चरचा, जो टट्ठे की बीतक।
उन समय जो सुख भया, मेहर सुभानल हक।।८

Nijanand App

तिनकी बातें करते, बड़ा जो हुआ सुख।
कसाला जो बंद का, सो भाग गया सब दुख।।९

इत रूपाबाई राधा, सुनी चरचा तिन।
श्री राज की तरफों, रोसन हुआ मन।।१०

चरचा मीठी होत है, कोई देवे कान।
महावजी ने चरचा सुनी, होने लगी पहिचान।।११

और लोग आवें सुनने, लगी बातें चलनें।
दीदार को लोग आवही, बातां लगे सुनने।।१२

इहां दिन दस बीस में, भई जो चरचा जोर।
दज्जालें इत सुनिया, लगा जो करने सोर।।१३

दज्जाल अपनी सिपाह में, निन्दा लगा करने।
ए कहाँ से आये है, मेरे मारनें का मन में।।१४

मैं करों लड़ाई इनसों, ए क्या करें मुझको।
बैट बाजे दिल में, आये लड़ने को सामों।।१५

इहां चरचा कीर्तन होत है, हांस विनोद विलास।
साथ को धाम धनी बिना, और न कछुये आस।।१६

इत दोय चार कीर्तन, नये किये बीतक।
तूं दुनी को क्या पुकारे, देख तरफ हक।।१७

Nijanand App

रे हो दुनियां बांवरी, खोवत जनम गमार।
दुनिया को तू कहा पुकारे, ए अपनो करे आहार।।१८

तूं भूल ना महामत, संभार अपना आप।
सब स्याने अपने काम में लगे, तोहे विरह धाम का ताप।।१९

इन चरचा होते भया, भाई महाव जी का इत काम।
चरचा मीठी लगी इनको, दाखिल हुआ निजधाम।।२०

और भी केतेक साथी, आय पहुंचे इन ठौर।
श्री राज की चरचा बिना, सूझत नाहीं और।।२१

एक दिन चरचा मिने, भई खण्डनी महावजी पर।
वाकिफ पूरा न था साथ में, अवगुन भासा दिल ऊपर।।२२

मैं न जाऊं उन पे, चरचा सुनने को।
मुझ पर करी खण्डनी, क्या देखा अवगुन मुझमों।।२३

रिसाय के आप अपने, रह गया घर में।
चरचा समें न आइया, हुआ दिलगीर राज सें।।२४

जब सोया रात को, अपनी दुकान मों।
रातें मारा तमाचा राज ने, हुई दहसत जोर इनको।।२५

क्यों रीस करी इन को, क्यों न दिये तुम कान।
तूं जा फेर उतहीं, कर देख पहिचान।।२६

Nijanand App

जागे पीछे रोइया, प्रात बैठा आय द्वार।
जगाये श्री जीय को, करने लगा मनुहार।।२७

रोय के कदमों लगा, अपनी कही बीतक।
मुझे तमाचा मार के, मोंह फिराया हक।।२८

मैं खण्डनी सुन के, होय गया बेजार।
मैं तो कच्चा साथ में, ना पहिचाना परवरदिगार।।२९

इहाँ से चरचा मिने, भया पकव प्रवीन।
चरचा सुनते सुनते, बड़ा भया आकीन।।३०

बेटा जोरू बाप महतारी, और कुटुम्ब परिवार।
सो सब लगे लड़नें, ले दज्जाल हथियार।।३१

ओ तो लसकर दज्जाल का, करने लगा सोर।
जोर लड़ाई उनों करी, जो था उनमें जोर।।३२

एह ना डगा इन समें, थे श्री राज इनके साथ।
जाको मदद हक की, धनीये पकड़े हाथ।।३३

किने ना चला तिनसों, सिर भाना दज्जाल।
इनको धाम धनीय का, बड़ा जो हुआ हाल।।३४

इन समें साथ आइया, कहों जो तिन के नाम।
पहिले सबसे आइया, विस्वनाथ इन काम।।३५

Nijanand App

राधा बाई रूपा, और भाटिया प्रधान।
और आया खट्टू, पहिले राजो को पहिचान।।३६

और हीर जी भाटिया, और महावजी इन समें।
और नारायण कायथ, रामें सुनी उन सें।।३७

और जीवा खम्भालिये का, संग जी आया इन ठाम।
कान जी महावजी का, आए गंगा हीरा इसलाम।।३८

और लखमन रंगानाथी, और मानजी जीवा वे।
और रूप जी कामदार, और बेरसी सुनी ये।।३६

एह आये इन समें, तामें चरचा बड़ी होए।
सुख लिया इन साथ में, क्योंकर कहों मैं सोए।।४०

उच्छव चरचा नित्याने, होत साथ मिने।
हाथ पटके दज्जालें, ए मगन धाम मिने।।४१

बन्दीवान के पैसे को, आए दरोगा करे पुकार।
काफर गरजे सिर पर, क्यों होत न खबरदार।।४२

सिर पर साहिब जो, वह है खबरदार।
हमको फिकर न कछुये, और कादर भरतार।।४३

बड़ो दृढ़ाव देख के, वह हो गया जेर।
जिनकी ऐसी चरचा, फेर कहने आवे फेर।।४४

Nijanand App

इन मिस से इनके, करने आवे दीदार।
चरचा सुने श्रवनों, कहे सुकर परवर दिगार।।४५

इन भांत अट्ठाइसे साल में, रहे मसकत में।
जात आप अपनी, सबों छुड़ाई अरबों सें।।४६

यह बात भैरों सेट सुनी, सबों छुड़ाई जात अपनी।
रहे अबासी बन्दर, करों अपनी नेक नामी।।४७

भेजे अपने आदमी, लेने को खबर।
केते पैसे बंद के, है डांड इन ऊपर।।४८

खबर लेके आदमी, दई उनें पहुंचाए।
लहारी सत्तर हजार, इतनी देनी आए।।४९

महामति कहे ए साथ जी, है बहुत मसकत बीतक।
सो आगे मजकूर होएगा, कहों अबासी बन्दर बुजरक।।५०

प्रकरण।।२६।। चौपाई।।११३२।

अबासी बन्दर की बीतक

अबासी बंदर में, भैरों रहे सिरदार।
अपनी न्यात छुड़ावनें, हुआ खबरदार।।१

भेजे अपने आदमी, मसकत बन्दर में।
छुड़ाय ल्याया न्यात को, आया आबासी बन्दर अपने।।२

Nijanand App

भई मुलाकात भैरों से, श्री जी साहिब जी सों जब।
अपने घरों ले गया, खिजमत करने लगा तब।।३

खेम कुसल बातें पूछी, अपने देस परदेस।
सब बात का उत्तर, बताए दिया खेस।।४

भई पहिचान आपस में, हुआ रसोई का आदर।
जागा अपने नजीक, उतारे अपने घर।।५

उहां बिछौना बिछवाए के, तहां पधराये श्री राज।
रसोई होत एक तरफ, लगे चरचा के काज।।६

आए आगे बैठा भैरों सेठ, अपने कबीले समेत।
ब्रज लीला की चर्चा, भैरों श्रवणा सों लेत।।७

सुन चरचा सुख पाइया, भई दो पहर बैठक।
काहू को खबर न काल की, ना रही सुख आड़े सक।।८

रसोई की अरज भई, उठे श्री राज उन बखत।
भैरों गया अपने घरों, बहुत खुसाल हुआ इत।।६

श्री राज आरोग फेर बैठे, साथ सुख मिलाय।
कोई कोई इत आय मिले, चरचा को ललचाये।।१०

फेर होने लगी चरचा, बखत भयो लेल।
फेर कीर्तन करने लगे, भये मगन ब्रज के खेल।।११

इहां बहुत रात बीत गई, हुआ उठने का समें।
भैरों सेट गया अपने घरों, भये साथ मगन चरचा से।।१२

Nijanand App

फेर चरचा होत होत, होय गई फजर।
उठे दातौन पानी को, भैरों खुली नजर।।१३

कोई इत सोये रहे, कोई बैठे पासे श्री राज।
कोई आवत दीदार को, रह्या चरचा का काज।।१४

तब आये भैरों ठक्कर, उन संग आये कै लोक।
होने लगी चरचा, भागा सारा सोक।।१५

दोय मुलतानी भैरों संग, आये उन बखत।
थे जोगारंभ में मेहेरम, चेला नानक के तित।।१६

पोथी साखी कबीर की, रहे उनके पास।
अरथ न सूझे तिनका, तापर चरचा हुई खास।।१७

कोई दिन चरचा से, वे दोऊ लगे कदम।
जेता था अंकूर इनका, इनों सौंपी आतम।।१८

तेजबाई इन समै, आई करन दीदार।
ल्याई कबीला अपना, न रही सक कीर्तन विहार।।१९

तिनको सुन गलतान भई, संग आई सखी जेतीं।
कीर्तन उन्हें मीठे लगे, राज के चरन चित लेतीं।।२०

फेर वे आवनें लगीं, छोड़ दिये सबों घर।
बैठी रहें चरचा मिने, घर दिल न लगे क्योंए कर।।२१

Nijanand App

अब भैरों सों राजें कह्या, तुम हमें बुलाये इत।
उहां सेती छुड़ाय के, सेवा करी इन बखत।।२२

अब हम तुम्हारे आगे, कौन सी राखें वस्त।
जिनसे होवे बदला, हम ता का किया कस्त।।२३

जो कछु हम पै वस्त है, सो आगे राखें सब तुम।
सो ग्रहों तुम चित्त में, ज्यों फल पावे आतम।।२४

तब भैरों ठक्कर ने, बचन आजिजी के कहे।
तुम मेहर करी मुझ ऊपर, जो सुनावने के तुम भये।।२५

तब श्री जी ने कहा, तुम इतना करो परहेज।
होंए प्राप्त चरन भगवान के, घरों बैठे सेहेज।।२६

एक महीना की मुद्दत, इत मुझ आगे करो तुम।
ज्यों होवें चरन प्राप्त तुमको, कहे ते सुनावें हम।।२७

तब अपना परहेज तोड़ियो, बिदा कीजो हमको।
हम जावें अपने घरों, तुम रहियो मगन माया मों।।२८

पीउना तमाखू छोड़ देओ, और मांस मछली सब।
सराब और सब कैफ, परदारा चोरी न कब।।२९

इत एती बात का परहेज, करो इन बखत।
तो तुमको होय प्रापत, पाओ सुख तित।।३०

Nijanand App

एह सुकन सुन भैरों ने कहा, एह बात है सेहेल।
ए अवस्य मोहे करना, ए छोड़ दई दज्जाल गैल।।३१

इतनी मेहेनत से, जो जागे अपनी आतम।
तो और क्या चाहियत है, हमको कह दिखाओ तुम।।३२

उस बखत आगे हुक्का था, सो दिया तुरत फोर।
उदक धरा चार वस्त का, देई श्रवना आतम जोर।।३३

रसोई मिने मने भई, मांस मछली करो जिन कोए।
हमारी रसोई जुदी करो, होय गया विरक्त सोए।।३४

घर के लोग अन्दर, लगे बड़ बड़ करने।
कौन आया हमारे घरों, क्यों परहेज कराया इने।।३५

इनको पिण्ड तो इनपे, था इन पर गुजरान।
ताको क्यों छुड़ावत, सुकन कहे बिन ईमान।।३६

भैरों सेटे खीझकर कहा, लिया परहेज मैं कोई दिन।
मैं परहेज फेर तोड़ूंगा, जो दाखिल न होऊं मोमिन।।३७

यों दृढ़ाव करके, चरचा लगे सुनने।
तीसरे दिन के सुनते, कहे वचन मुख अपने।।३८

मै जनम भर को छोड़िया, ए चारों वस्त निखेद।
वस्त भई मोहे प्रापत, पाया माया माहें भेद।।३९

Nijanand App

एह आया यों साथ में, पड़ा सहर में सोर।
तब दज्जाल लगा पुकारने, बड़ा जो किया जोर।।४०

सखी बाई आई साथ में, तिन संग आया गोवरधन।
लगे भणसारी निन्दा करनें, ए कहां से आये मोमिन।।४१

हमारे घर के लोग, बरजे न रहवें कोय।
राव भैरों ठक्कर से कही, हमारी लड़ाई तुमसे होय।।४२

तब भैरों ठक्कर ने कह्या, रखो अपनी लुगाइयां बरज।
हम बुलावने न जात काहू को, सब आवत अपनी गरज।।४३

इत हम इनको क्या करें, इत चरचा होत भगवान।
कारज होत आतम को, आवत पूरी पहिचान।।४४

तुम आड़े होत हो तिन के, न आप सुनो न देओ सुनने।
ए सब करत है कलिजुग, सब भलो चाहें अपने।।४५

ए सुकन सुनके, हुये सरमिंदे सब।
खिसियाय के पीछे फिरे, अपने घरों आये तब।।४६

लगे लुगाइयों से लड़ने, क्यों तुम जाओ तित।
ऐसा न चाहिए तुम को, जो घर छोड़ो रात वखत।।४७

तब जवाब दिया उनों ने, हमसे बुरा न हुआ कोई काम।
चरचा सुनने भगवान की, जात हैं तिस ठाम।।४८

Nijanand App

एक तो इस देस में, कबहूं न चरचा होए।
इत कौन आवत करने, आये भाग हमारे सोए।।४९

ए तो पूर्व अंकूर तें, प्रापत भये चरन।
तिन आड़े तुम होत हो, हमारे दुसमन।।५०

हम आतम सौंप चुकीं, भगवान के कदम।
देह तुम्हारे भाग की, सो छोड़ देत हैं हम।।५१

क्या करोगे तुम हमको, यों बरजी न रहवे कोए।
तब तेजबाई के घर गये, मिल लड़ने को सोए।।५२

वह थी सहर में सिरदार, तिन आगे करी अरज।
तुम जिन जाओ साध पे, हमारी एह गरज।।५३

तब तेजबाई ए कह्या, क्या मोहे बरजत तुम।
मेरी अवस्था न देखत, दोष न कछुए हम।।५४

तब उन सबों ने कह्या, हम तुम्हें क्यों बरजें।
पर तेरे पीछे सब लगी, जात हैं चरचा में।।५५

तिस वास्ते हम तुमको, बरजत हैं इन काम।
ना जाओ हमारी खातर, सुनने चरचा उस ठाम।।५६

तब तेजबाई ने कह्या, तुम अपने घर के बरजो जाए।
मैं तो वहां जाऊंगी, तुमें करने होए सो करो आए।।५७

Nijanand App

साथ नाम केते कहों, अबासी बन्दर के।
एक तो भैरों ठक्कर, और देवचन्द भाई जे।।५८

और भाई अमरिया, और भाई अमोलक।
मेर बाई बाई इन्द्रावती, राधाबाई बुजरक।।५९

सुताई और फूलबाई, और बाई रतन।
लच्छो बाई और सखी, ए आई तले जतन।।६०

तेजबाई और बाई किसनी, और जसोदा बाई।
पहिले ए आई साथ में, खुसखबरी इनों पाई।।६१

और साथ बहुत हैं, सो केते लेऊं नाम।
आगे जाहिर होयेंगे, जो दाखिल निजधाम।।६२

यों चरचा होने लगी, एक दूजे के संग।
साथ को आनन्द भयो, अंग न माए उमंग।।६३

चरचा चितवनी उच्छव, होने लगा जोर।
चित राज को साथ तरफ, बढ़ते चला और।।६४

नयो साथ आवत है, सो करत है हेत।
रमण ब्रज रास को, सो बानी भली भाँत लेत।।६५

भैरों ठक्कर आदर, भला जो किया साथ।
श्री जी से दिल बांधिया, धनिये पकड़े हाथ।।६६

Nijanand App

जब इत मास दोय तीन भये, रजा मांगी जब।
हम जायें उन देस में, उन रोय बातें करी तब।।६७

हमको क्यों इत छोड़ोगे, कर असनायी धाम।
हमारी सुरत बंधी एक तुम सों, रह्या न कोई काम।।६८

श्री जीयें विचारिया, जो कदी बरस रहवें एक।
तो साथ आवे सनेह सों, एक से होए अनेक।।६९

बात बड़ी है करनी, आवे सकुण्डल सकुमार।
विस्तार होय ब्रह्मांड में, जाको वार न पार।।७०

हम एकै बन्दर अटकें, क्या राज करना इत।
एतो हमें ना छोड़त, आज इन बखत।।७१

यह विचार नित करें, देखा तरफ श्री राज।
साथ चित बांध चला, धाम के सुख काज।।७२

यह तो कारज कारन, आज साथ काढ़ना ठौर ठौर।
तिस वास्ते ऐसा चाहिए, तब आई बातिन और।।७३

हुकम हुआ तागीर का, वहाँ नये की आमदान।
तब रात को लगे भागने, जहाँ तहाँ निदान।।७४

संकोच भयो भैरों को, रखने लड़के अपने।
इनको कहां छिपाऊंगा, बात आवे न दिल मिने।।७५

Nijanand App

तब रजा दई राज को, नाव को बैठ गये बसरे के।
तापर चढ़ाये साथ को, उत आये पहुंचे ए।।७६

वस्तर भूषण पैसे, भली भांत दिये साथ।
जैसी उनकी सकत, तैसी भली चालाकी करी हाथ।।७७

जैसा जिनका अंकूर, लाभ लिया तिन माफक।
ताको तैसी सोभा भई, जो अग्या थी हक।।७८

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए अबासी बन्दर की बीतक।
अब फेर कहों ठटे की, जो बीतक हुकम हक।।७६

प्रकरण।।२७।। चौपाई।।१२११।।

आवासी बन्दर से श्री जी का ठट्ठानगर पहुंचना

अबासी बन्दर से, आये कोग बन्दर।
तहाँ से फेर नाव चढ़े, पहुंचे लाठी बन्दर।।१

तहाँ चार दिन रह के, आये नगर ठट्ठे।
नाथे जोसी ने सुनी, दौड़ा लेने को आगे।।२

साथ सब दौड़े सामें, मारग में किया मिलाप।
साथ सबें सुख पाइया, मिट गई दुनियां ताप।।३

ठाकुरी बाई जिन्दादास, आये डेरा किया तित।
और साथ सब आए मिले, आये डेरा किया मिलाप इत।।४

ठाकुरी बाई इन समें, भये साथ रसोई के काम।
साक तरकारी बाजार से, सब साज ल्याई इस ठाम।।५

Nijanand App

श्री जी और बाई जी, और साथ सब ततपर।
बैठे इत आरोगने, ठाकुरी बाई के घर।।६

इत उछरंग साथ में, हुआ बड़ा ठौर ठौर।
सब सामा लै लै दौड़हीं, अपनें घरों से और और।।७

आबासी बन्दर की, कही सब बीतक।
इन भांत साथ आये के, सुकर बजाया हक।।८

मन बढ़े सब साथ के, सुनते यह बीतक।
राह जानी निजधाम की, देखी सबों पर बुजरक।।६

इत दीदार को आवत, ठठे के सब लोक।
देख साथ सब तिन को, भागत सारा सोक।।१०

सम्बत सत्रह सै अठावीसे, मास बैसाख का होय।
पधारे ठठे मिने, तब साथ रजा न देवे कोय।।११

ठठे के साथ के संग थें, आया मटहरी का साथ।
जिन चरचा सुनी धाम की, जाके हकें पकड़े हाथ।।१२

ताके नाम लेत हों, सुनियो सब सैयन।
हकें इनों के दिल को, किये अपनी तरफ रोसन।।१३

भगतीदास साहजू, और अड़न मकरन्द।
पारन मोटन तुलसी, और आया गोवरधन।।१४

Nijanand App

जेठमल और बालचन्द, दयाल और धर्मदास।
सुखनन्द स्यामल श्री नन्द, सेवा दास मीठा खास।।१५

टोडरमल और नन्दलाल, और दूसरा मोटन।
लाड़क गौरी गरीबदास, बाई ज्ञान और खेलन।।१६

स्यामबाई सुहागबाई, और बाई कल्यान।
समगी और मेघबाई, भई सहजमल को पहिचान।।१७

थारीबाई और पारबीबाई, और बाई कही परी।
अजबाई आई तिन पर, पाई धनी की खुसखबरी।।१८

और भाई धर्म दास, और कहूया बन्धन।
पृथ्वीमल और जयमल, माधो दासे सौंप्या मन।।१६

और आया जेठमल, बालचन्द गोकल दास।
बंसीदास और गिरधर, बूलचन्द रायचन्द हक आस।।२०

और तीसरा मूलचन्द, हरपाल हीरा उन नाम।
बाल भोग और सूर जी, खेमदास आया बीच निजधाम।।२१

और राजन थारा कमाल, सुमारचन्द हरवंस जेह।
कृस्नदास जेठियानन्द, मूलबाई रामबाई एह।।२२

मखाबाई उमर बाई, मलूक बाई जीवनी।
स्याम बाई सहुद्रा बाई, रूईचन्द हरबाई जान्या धनी।।२३

Nijanand App

लखमीबाई समईबाई, ए आई बीच निजधाम।
पर पूठे कानों सुनी, ल्याये ईमान इस ठाम।।२४

एह साथ मटोद में, इत भई राज की चरचा जोर।
एह देख के दज्जाल नें, इत किया जो बड़ा सोर।।२५

साथ सब कोई को, पहुंचा कसाला इत।
यह समया कठिन है, आया बखत रोज क्यामत।।२६

अब फेर कहों बात ठठे की, भेजी खबर पुरी नवतन।
हम आये बन्दर अबासी से, सब खबर लिखी रोसन।।२७

ज्यों साथ आया मसकत में, और अबासी बन्दर।
सो हकीकत पाती में लिखी, श्री बिहारी जी ऊपर।।२८

और भी सहर पुरन के, साथी सबकी लिखी खबर।
स्यामलदास था साथ में, तिन पैगाम दिया सब पर।।२९

और साथ सब दीप का, सब लिखी नवतन पुरी।
हकीकत पाती लिखी, बिहारी जी को खुसखबरी।।३०

हम आवत हैं कच्छ में, तहां तुमसों होय मिलाप।
वहां से इत आवन का, इलाज कीजो आप।।३१

ए पाती भेज के कह्या, हमको रजा देओ तुम साथ।
हम जायेंगे कच्छ में, होय बिहारी जी सों मिलाप।।३२

Nijanand App

साथ रजा न देवहीं, भई रद बदल कोईक दिन।
मास एक तहां रह के, फेर बिदा दई सैयन।।३३

इन समें लछमन पुर में, जाय साथ काढ़या एह।
तहां जो चरचा भई, लिखी खबर पाती में तेह।।३४

महामति कहें ए साथ जी, ए बीतक टट्टे की जान।
अब याद करो नलिये को, आगे कहों पहिचान।।३५

प्रकरण।।२८।। चौपाई।।१२४६।।

श्री जी साहिब जी चले टट्टे से, नलिये आये पहुंचे।
धारे ने यह बात सुनी हती, आय पहुंचा धाय के।।१

नलिये में आये मिल्या, किस्सा कह्या अपना।
मैं खंभालिया रहता था, हुआ साथ मिने रहना।।२

आया सूर जी मसकत से, खंभालिये में जब।
साथ का मण्डान चरचा का, बड़ा जो हुआ तब।।३

नया साथ केतेक आया, आया मेरा कबीला सब।
तहां श्री राज के दीदार से, वृद्ध लीला भई तब।।४

मोकों आवे तहां आवेस, दिन में होवे दीदार।
मैं श्री राज की बातें सब कहों, श्री धाम लीला विस्तार।।५

तब साथ सब मिलके, लगे पूजने मोको।
गादी बिछाय बैठाया, मोकों सेवे साथ मों।।६

Nijanand App

जहां कृपा होवे श्री राज की, तहां साथ सब पूजे।
तहां सक न रहवे काहू को, मिल सेवे चित दे।।७

ए बात सुनी बिहारी जी, अकरास लगी मन।
ए कैसी राह चली, भई माया सामिल सबन।।८

ए पन्थ गोलों का, हुआ सबमें नाम।
कोई न लेवें श्री देवचन्द्रजी, मारग नाम निजधाम।।९

तब बुलाया नाग जी को, कह्या बिहारी जी इत।
पाती लिखी सूरजी पर, सिताब पहुंचो इन बखत।।१०

वह पाती सुन के दौड़िया, पहुंचा सूरजी नये नगर।
मुलाकात करी बिहारी जी सों, डरया धारे की खातर।।११

पूछी खबर साथ की, सब बताई इन।
मेहर भई साथ ऊपर, कही खुसाली मोमिन।।१२

तब बिहारी जी खण्डनी करी, तुमको माया लगी जोर।
तुम्हारे घर मिने, किया कलिजुगें सोर।।१३

धारे को तुम काढ़ देओ, रहे ना साथ मिने।
ना राखो इनका कबीला, जो रहे साथ मिने।।१४

तो हमारे तुम्हारे, नाता न रहे श्री धाम।
नातो तुम्हें निकालें साथ से, जो हम सुन्या तुम्हें ए काम।।१५

Nijanand App

ए बात सूरजी सुनके, हुआ धारे से बेजार।
हम काहे को इन्हें रखें, हम दाखिल बारे हजार।।१६

मेरे नाता श्री धाम का, क्यों कर तोड़त तुम।
हम कबीला न रखें धारे का, ना छोड़े तुम्हारे कदम।।१७

ए रद बदल करके, फेर आया सूरजी खंभालिये।
धारा कबीले समेत इलाज, किया निकालने के।।१८

सब साथ को कहके, मोकों रजा दई तब।
बेनी बाई जो थी साथ में, अरज करी साथ आगे सब।।१६

क्या हमारा गुनाह है, कौन बुरा किया हम काम।
जो हमको साथ से निकालत, देस टौर ए गाम।।२०

हुकम नही बिहारी जी का, इत क्या चले साथ हुकम।
अरज करो उत जाए के, हजूर जाओ बिहारी जी तुम।।२१

तब मैं कबीला लेय के, गया नवतन पुरी।
आजिजी करी बहुतक, सो चित में कछु ना धरी।।२२

रोए धोए पीछा फिरा, आज मोहे बरस भया एक।
विनती मैं बहुतक करी, कै किये उपाए अनेक।।२३

तब इलाज मैं देखिया, है टौर एक श्री मेहेराज।
मैं उत जाऊं कदमों, मेहर होवे श्री राज।।२४

Nijanand App

सुन तुम्हारी आमदानी, मोहे आनन्द भयो मन।
मैं दौड़ा इत धाए के, आए कदमों लगा मोमिन।।२५

अब ज्यों जानों त्यों करो, मैं तो आए ग्रहे कदम।
अब मैं तो कहूं ना जाउंगा, रहों हक के तले हुकम।।२६

ए बात धारे की सुन के, श्री जीयें दिया उत्तर।
खातर जमा रख तूं, कछु दिल में न कर फिकर।।२७

बिहारी जी इत आवत, जाए खबर देऊं मैं।
मेहरबान होवें मुझ पर, ए काम किये सें।।२८

पहिले बिहारी जी को कागद, ताको दियो जवाब।
हम तो कहूं न आवहीं, तुम जाए के कहो सिताब।।२९

तब फेर विस्वनाथ को, पठाया नये नगर।
हम चले आवत हैं, तुम रह न सको क्यों ए कर।।३०

तब बिहारी जी चले, बैठ नाव ऊपर।
मंडई में जब उतरे, धारा दौड़ा ले खबर।।३१

दई बधाई आए के, आये श्री बिहारी जी इत।
श्री जी सुन खुसाल भये, लगे बख्सीस देने तित।।३२

तब धारे ने कह्या, मैं एही पाऊं बख्सीस।
कदमों बिहारीजीए के, जाए नमाऊं सीस।।३३

Nijanand App

मोकों लेओ साथ में, दाखिल करो इसलाम।
मेरे दिल एही रहे, तुम पूरो मनोरथ काम।।३४

इन समें साथ सूरत से, आये थे आठ जने।
ते श्री जी के दीदार को, ले चले कबीले अपने।।३५

एक आकिल भगवान था, और नागजी नाहना।
बल्लभ और धन जी, ले चले कबीले अपना।।३६

सुन्दरबाई साथ में, और बाई रतन।
और बाई मटा लालो, ए आई भले जतन।।३७

और बिहारी जी के साथ, संग जी और अखई।
हरबंस और लाला, ए सोहबत इकट्ठी कही।।३८

और श्री जी की सोहबत में, एक बाई कही तेज।
रूपा और राधाबाई, उनों को सेवा में हेज।।३९

आये ठठे से संग राज के, नाथा और खेमा।
ए आये थे पहुंचावने, रहे साथ में जमा।।४०

सूरजी और हरजी, थिरदास और जीवराज।
अजबाई बहन धारे की, ए आये बिनती के काज।।४१

और आया हरवंस, और आया नरहर।
संग स्त्री अपनी, आये दीदार के खातर।।४२

Nijanand App

आये मिले नलिये सहर में, मिल के हुये खुसाल।
बिहारी जी का आगा लिया, दौड़े दीदार को ले हाल।।४३

एक ठौर मांग लई, नलिये के कामदार पास।
थी उनसे न्यात की हुज्जत, तिन सगाई जानी खास।।४४

उन हवेली में उतरे, साथ सबे एक ठौर।
बिहारी जी की खिजमत, सब करने लगे जोर।।४५

अपनी जो बीतक, श्री जी साहिब जी लगे कहने।
बिहारी जी सारी सुनी, हंसने लगे मिनों मिने।।४६

सब साथ एक ठौर हैं, सुन चरचा पाया सुख।
सब सोक दिल के गए, जो देखे माया दुख।।४७

उच्छव रसोई होने लगी, हुआ अंग उछंरग।
सब साथ है एकठो, अंग न माय उमंग।।४८

श्री जी साहिब जी की चरचा, होने लगी जोर।
भाव दिखाए बचन कहें, चित माया से देवें मरोर।।४९

रूपा राधा बाई जी, एकान्त बैठाये तिन को।
सिखापन देने लगे, करो सेवा इन बखत मों।।५०

श्री धाम का धनी जानियो, बिहारी जी को राज।
इनकी आज्ञा में रहो, तो तुम मेरे किये सब काज।।५१

Nijanand App

जो इनकी आज्ञा भंग करो, तो मेरा तुमसे नही काम।
तो तुम से मैं जुदा होऊंगा, तुम मेरा न लीजो नाम।।५२

इन भांत इनको, दई सिखापन जोर।
अब मैं कह छूटत हों, तुम मेरी न काढ़ियो खोर।।५३

इन भांत सब साथ को, सिखापन लगे देने।
सगाई श्री धाम वतन की, दई कर अपनायत अपने।।५४

एक ठौर एकान्त में, करने लगे मसलहत।
बिहारी जी और श्री जी, क्या करना आई साइत।।५५

पहिनाये साथ सब को, काहू बस्तर काहू भूखन।
काहू बासन काहू कछु, यों सेवें मोमिन।।५६

और सामा सब लेयके, धरी बिहारी जी के आगे।
नगद बस्तर भूखण, पहिन पोतिया जुदे हुए।।५७

श्री बाई जी के भूखण, और बस्तर सिनगार।
सो सब आगे रखा, जान के धनी निरधार।।५८

आए आगे अरज करी, धारा साथ में दाखिल होए।
इनका हों मैं रिनियां, तुम्हारी दई बधाई सोए।।५९

मैं इनसे बचन हारिया, मोकों दई बधाई जब तुम।
जीव निछावर इन पर करों, तो आवे न पटन्तर हम।।६०

Nijanand App

तिस वास्ते इनको, लेओ साथ में तुम।
इतनी अरज करत हैं, इन तुम्हारे चरनों सौंपी आतम।।६१

तब बिहारी जी ने कह्या, ए अरज न सुने हम।
यह अरज कबहू ना करियों, जिन फेरो मेरा हुकम।।६२

बहुत खीझ के कह्या, इनें करों न दाखिल साथ।
इनका दुख मोहे बहुत है, याके कबहुं न पकड़ो हाथ।।६३

तब श्री जी साहिब जी नें, दिन दोय-चार बीच डार।
फेर अरज विनती करी, तुम इनका करो विचार।।६४

क्या गुनाह है इनका, और जो बाइयाँ दोए।
काढ़ी इन्हें कौन गुनाह से, साथ से बाहिर सोय।।६५

कदी गुनाह किया धारें नें, बदले और के क्यों निकालो इसलाम।
ए तो जुलम होत है, सब दुख पावत इस ठाम।।६६

तब बिहारी जी ने कह्या, मैं तुम्हें बरजे तब।
तुम फेर उनकी अरज, करत हो मिल सब।।६७

मैं तो कबहू न मान हों, वास्ते उन के।
जो लाख बेर मोसों कहो, तो मेरा जवाब एक ये।।६८

तब श्री जी साहिब जी सों, सब साथ लगे कहने।
तबियत तो तुम जानत, क्यों न डरो वास्ते अपने।।६९

Nijanand App

और रूपा बाई का, ना लगे चित सेवा में।
वहां से श्रीजीय के, सक बढ़ चली तिन से।।७०

महामति कहे ऐ साथ जी, ए नलिया में मजकूर।
और भी अजूं बहुत है, सो आगे कहों जहूर।।७१

प्रकरण।।२८।। चौपाई।।१३१७।।

देख नूर चरचा रोसनी, भई बिहारी जी को दिल सक।
ए तहकीक मसनंद मेरी लेयगा, ए बात बड़ी बुजरक।।१

फेर के बैठे मसलहत करने, जाएगा एकान्त एक ठौर।
अब क्या करना हमको, चलो ढूंढ़ काढ़िये साथ और।।२

तब श्री बिहारी जी यें कह्या, ए राह नही इसलाम।
जो आपन माया को छोड़ के, कीजे विरक्त का काम।।३

जो इत हलार देस में, रह ना सको तुम।
तो करो चाकरी कच्छ में, ए सुकन मानो हुकम।।४

तब श्री जीयें कह्या, मोकों श्री देवचन्द्र जी दई निध।
तिन से मेरे दिल में आई, वतन की जागृत बुध।।५

तिनसे ऐसे राजाओं को, जब देवें प्रमोध हम।
सो सेवा तुम्हारी करें, चलें तुम्हारे हुकम।।६

अब तो हम माया को, क्यों ए पकड़ें नाहें।
रद किये चौदह तबक, हम क्यों काम करे सो जायें।।७

Nijanand App

सकुण्डल-सकुमार की, थी श्री देवचन्द्र जी नजर।
वे आवें जब साथ में, लैल मिट होवे फजर।।८

ताके वास्ते आपन, मिल निकसें बाहिर।
श्री देवचन्द्र जी को प्रकास, करे सब में जाहिर।।६

यह जो इष्ट फिरके चले, किया मूल बिना विस्तार।
अपनी अखण्ड वस्त श्री धाम की, खड़े सिर पर धनी निरधार।।१०

सो विस्तार क्यों न करें, जाको मूल है हक।
चाहिए लीला परवरदिगार, होय ब्रह्माण्डों पर बुजरक।।११

और तुम दिल में कछुए, संकोच न राखो लगार।
हम तुम्हें बैठावें अटारी पर, तले हम रहे खबरदार।।१२

चरचा सबसे हम करें, सबको देवें जवाब।
जब श्री धाम के जोग होय, सो इत आवे लेने सवाब।।१३

ताको पठाऊं तुम पे, आवे करन दीदार।
तुमको यों कर सेवहीं, जान के धनी निरधार।।१४

तब बिहारीजीयें कह्या, मेरा निकलना क्यों होय।
मेरे संग रंगबाई कही, है बड़ी बोझल सोय।।१५

तिनकी महतारी तिन संग, और कुटुम्ब परिवार।
सो तो निकल ना सके, मेरा क्यों चलना होय तुम लार।।१६

Nijanand App

तिस वास्ते मेरा चलना, होय नहीं क्योंए कर।
धनी को जो है करना, सो आय जुड़े त्यों ही कर।।१७

इन भांत की रदबदल, होत रहे निसदिन।
मास डेढ़ लगे इहाँ रहे, करे परियान मिल सैंयन।।१८

और कोई साथी साथ में, किए थे उनों दूर।
अरज होत रही तिनकी, सो न मान्या मजकूर।।१९

रूपा बाई ऊपर, भई बिहारी जी को सक।
ए सेवा में न आवहीं, दिल में पैठी अनख।।२०

श्री जी के दिल में, ऐसी उपजी आए।
इत आवेस रहे राज को, मेरा दिल क्योंये न समझाए।।२१

इत से दोऊ के दिल में, होय चली अन्तराए।
पर बाहिर जाहिर ना हुई, एक दूजे रखी छिपाए।।२२

श्री जीयें अपना चित्त, समझाय कियो फेर।
अवगुन उठा सो भान के, फेर सुध किया दूसरी बेर।।२३

इहाँ सेती चलके, आये मंडई बन्दर।
तहाँ साथ सब आये मिले, बाग में लई जागा उतारा कर।।२४

गये बिहारी जी खंभालिये, इहाँ दज्जालें किया सोर।
मोमिन एक ठौर भये, इनें पहुंचाऊं जोर।।२५

Nijanand App

तब एक सख्स से, कह्या राजा आगे।
तुम्हारे गांव में श्री मेहेराज, इत आये उतरेंगें।।२६

वह रखता था दुसमनी, दिल में असल की।
तिन चौकी बैटाई सब ठौरों, करी बड़ी हराम खोरी।।२७

सब साथ चढ़े नाव पर, रहे श्री जी आप एकले।
जब चढ़ने लगे नाव में, छींक भई तिन समें।।२८

तब श्री जी पीछे हटे, हम ना चढ़े इस ठाम।
सकुन मोकों ना भयो, और राह चलें इन काम।।२६

जब इहाँ से नाव चली, लगा वायु जोर।
खंभालिये आये पहुंचे, किया दज्जालें बड़ा सोर।।३०

साथ सब पकड़े गये, उत माहें राज द्वार।
साथ सूरत का सब था, सो हुआ खबरदार।।३१

बहुत जाप्ता तिन किया, चल्या न कछु लगार।
खलास किये दूसरे दिन, हुये तरफ धनी निरधार।।३२

महामति कहें ऐ साथ जी, ये नलिये की बीतक।
अब सूरत की कहों, जो आज्ञा है हक।।३३

प्रकरण।।३०।। चौपाई।।१३५०।

श्री जी साहिब जी खुस्की चले, रण आन उतरे।
चीरक भेष करके, धोरा जी मारग पन्थ चढ़े।।१

Nijanand App

ए जो साथ सूरत का, खंभालिया से चले।
धोरा जी में उतरे, श्री जी साहिब सों आये मिले।।२

प्रेम जी थावर सुनी, गाड़ी ले दौड़े ये।
आये मिले मारग में, साथ को चढ़ाय लिये जे।।३

पदमसी सेवा मिने, रह्या हता दस दिन।
तहां से आये घोघे मिने, तीन दिन रहे सैयन।।४

तहाँ से सुहाली उतरे, फेर आये सूरत।
गये सैयद पुर भगवान के, मोहनदास के रहे तित।।५

तहां से सिवजी के, था घर के जोड़े घर।
उतारे तिन मिने, हुआ सेवा में ततपर।।६

सत्रह महीनें तहाँ रहे, कहों ताकी बीतक।
जिन भाँत लीला करी, सो याद करो बुजरक।।७

मोहन दास अमीन के, तित चरचा हुई जोर।
तहाँ दज्जालें देख के, करने लगा सोर।।८

तब वहाँ से उठ के, आये सैयद पुर में।
तहां सिवजी भाई हते, सेवा भली हुई इन सें।।९

पहिले ए जो साथ था, सिवजी राम जी नाम।
तिनको समझाय के, भेजे बिहारी जी के ठाम।।१

Nijanand App

तुम जाय दीदार उत करो, जोलों उत ना लगों कदम।
तोलों तुम्हारी अलौकिक, सुध न होय आतम।।११

इन भांत समझाय के, भेजे भाई सिवजी को।
फेर पाती लिख दई रामजी को, सो भी चले इन काम मों।।१२

सिवजी पाती दै मिले, जाय के लगे कदम।
पांच मोहोर खर्च करी, उन निरमल करी आतम।।१३

राम जी पाती ले गया, उनको न दिया आवनें।
पाती ना लई तिनकी, साथ में न दिया पैठने।।१४

रोय धोय विनती करी, और तीन किये उपवास।
दया ना करी किनने, तब टूटी इनकी आस।।१५

उन पाती फेर दई, कही अपनी बीतक।
श्री जी तब दिलगीर भये, दिल में भई सक।।१६

रहे धारा श्री जी के संग, सो बिहारी जी सुन्या मजकूर।
कही जिनको हम निकालत, ताए ए ना करत क्यों दूर।।१७

इन बात की उनके, दिल में रहे सक।
मेरा हुकम ना मानत, ए आप कहावें बुजरक।।१८

रामजी को हम काढ़िया, इन तिन को रख्या साथ में।
ए भली न करी इनों ने, दुख पाया इन बात सें।।१९

Nijanand App

तब श्री जी साहिब जी नें सुनी, बिहारी जी पायो बड़ो दुख।
मैं काढ़ों ताय ए रखें, इन हम सों फेरया मुख।।२०

तब श्री जी साहिब जी नें कह्या, जो कोई लूला पांगला साथ।
इन्द्रावती न छोड़े तिनको, पहुंचावे पकड़ हाथ।।२१

इन समय गोवरधन, आया अबासी बन्दर से।
सो भी आये के इत, रह्या भेला साथ मिनें।।२२

तिन सेवा श्रीजीय की, सिर लई अपनें।
सब खर्चनें लगा साथ में, सुफल जनम करने।।२३

सोर पड़ा सहर में, चरचा को आवे खलक।
ले दिल में सक आवहीं, कर दीदार होय बेसक।।२४

भीम स्याम भट्ट सुनी, करने आये दीदार।
चरचा इत बड़ी भई, उनों किया बड़ा प्यार।।२५

इन प्यार के बांधे, करने आवें दीदार।
भयो रस चरचा को, हम समझें परवरदिगार।।२६

उनों एक पख वेदान्त का, तिन गुरू सन्यासी संभूनाथ।
ताय वस्तो गत दूसरा नही, इन चरचा लगे साथ।।२७

जो खोज करे आतम की, ताय दिल में न होए विकार।
सब आतम देखहीं, एही करे करार।।२८

Nijanand App

ए लगे चरचा समझनें, इत सर्व देसी चरचा होए।
ताय सुन के अचरज, पावत हैं सब कोए।।२६

वेदान्त की चरचा, वह तो जानत सब।
ए चरचा तिन ऊपर, और कोई नहीं मतलब।।३०

ए सुन के स्याम भट्ट, करनें लगा विचार।
भीम भाई को कह्या, तुम हूजो खबरदार।।३१

वेदान्त के खोज की, इनों से छिपे नही सुकन।
तिन ऊपर बतावत, ए कौन राह रोसन।।३२

एह विचार करते, भीम की खुली नजर।
ए तो अक्षर पार के, नजरों आई फजर।।३३

आपन थे व्यापक लों, जानी सूरत एक।
जब नींद उड़ी अक्षर की, ए जो फैली उड़ी अनेक।।३४

ए तिन अक्षर के पार की, लीला बताई अखण्ड।
त्रिगुन विष्णु महाविष्णु की, बोय न लोक ब्रह्मांड।।३५

भीम की नजर खुली, जाय पहुंची लीला मों।
तब आये कदमों लगा, अपनें कबीले सों।।३६

पहिले गुरू से तोड़ के, आया बीच निजधाम।
चरचा का सुख पाए के, रह्या मोमिनों के काम।।३७

Nijanand App

एक व्यास गोविन्द जी, रहे वल्लभी मारग में।
उनने चरचा सुनी, भागवत के बचनों सें।।३८

इन समय भागवत की, मारग बल्लभाचारज।
तिनके टीका मिने, था सैंयों का कारज।।३९

इनकों कछु ना खुलहीं, चालीस प्रस्न तिन में।
सो लिख के धर उतारिए, ए लिया चाहिये इन सें।।४०

ए जो दलाल वल्लभ, रहे अपने साथ।
सो मेहनत कर ल्याइया, आन दई श्री जी के हाथ।।४१

तिन प्रस्नों की चरचा, कहवाई गोविन्द जी के मुख।
तिनको तिनसे समझाइया, तिन पाया बड़ा सुख।।४२

सो तबहीं कदमों लगा, आया साथ मिने।
तब दज्जाल के लसकर के, लगे निंदा करने तिन से।।४३

एह कीर्तन हुये तिन पर, मीठी वल्लभाचारज बान।
कोई भली बुरी कहने लगे, काहू काहू भई पहिचान ।।४४

कोई आवे लड़ने, कोई आवे निन्दक।
जब पावे दीदार, तब सुकर कहवे हक।।४५

इनकी निंदा जो करे, सो होवे ख्वार।
ए तो साध बड़े हैं, हैं तरफ धनी निरधार।।४६

Nijanand App

मानिक आवे दीदार को, सोहबत संग भगवान।
इनको चरचा सुनते, होय गई पहिचान।।४७

बिहारी जी इन समें, पाती लिख भेजे कलाम।
तीन बात का बन्धेज, हम किया इस ठाम।।४८

सो तुम भी कीजियो, ए बात बहुत सिरे।
ए बात तुम उत करो, तो इत भी आन फिरे।।४९

एक तो नीच जात को, सुनाइयो नहीं तारतम।
दूजे रांड स्त्रीय को, तीजे कहें हम तुम।।५०

एह तीन बात को, जहूर कीजो उत।
धर्म उज्जवल देखियो, कोई करे न निन्दा कित।।५१

ए बात पाती की सुन के, श्री जी लिखी खबर।
तुम बाहिर दृष्ट छोड़ के, देखो अन्तर की नजर।।५२

जवाब तीन बात का, हम तुम्हें लिखों बनाए।
ताको विचार कीजियो, श्री देवचन्द्र जी राह चलाए।।५३

उननें जात भेष को, भान डारया सीस।
देख्यो जित अंकूर को, तित करी बखसीस।।५४

सो देखो तुम जाहिर, खोजी बाई मुसलमान।
और ओ स्त्री रांड थी, बखस्यो रही बाई वासना जान।।५५

Nijanand App

सो ए बात तुम देखी है, उनकी दृष्ट जात भेष पर नाहिं।
जित देखो अंकूर धाम को, गिनो ऊंच नीच न ताहिं।।५६

और उनने ए कही, ए लीला आई अखण्ड।
या लीला के प्रताप तें, होए बका ब्रह्माण्ड।।५७

सो हम तुम वस्त को, कहाँ लो कहते फिरें।
जिनको पहुंचे तारतम, सोई प्रकास करे।।५८

जित होए अंकूर निजधाम को, गिनिये ऊंच नीच न तित।
ए राह श्री देवचन्द्र जीयें, कही आतम दृष्ट की इत।।५९

सोई लिखी वेद पुरान में, जहाँ भक्त प्रगट होई।
तिनकी जात पात न देखिए, ए बैकुण्ठ वालों की राह सोई।।६०

ए राह श्री देवचन्द्र जीयें, हमको तुम आगे दई दिखाई।
सोई तुम सब साथ को, अब वोही देओ बताई।।६१

तो राह ए चलसी, होए बड़ो प्रकास।
साथ सब दौड़सी, ले दिल जागनी की आस।।६२

साथ सबे उतरयो, चारों वर्णो माहिं।
ए बन्धेज बांधे से, होए अकारज ताहिं।।६३

इन भांत की हकीकत, लिखों जवाब बिहारी जी ऊपर।
और भेजी किताब कलस की, लेने मसनंद खबर।।६४

Nijanand App

सुन के बिहारी जी नें, बड़ो पायो दुःख तब।
न मानों कलस को, देखी पाती जब।।६५

उन लिख भेजी पातीय को, तुम्हारी राह भई और।
और हमारी भी और है, भई जुदागी इस ठौर।।६६

हम तो तुमको चीन्हया, तुम्हारे माहें कलाम।
तुम नही हमारे साथ में, हम काढ़े तुम्हें इस धाम।।६७

हम जिन साथ को काढ़िया, क्यों तिन को लिया बीच दीन।
तो इत तुमको हमारा, छूट गया आकीन।।६८

तिस वास्ते हम तुमको, किए साथ से दूर।
हमारे तुमारे नाता न रह्या, जिन पाती करो मजकूर।।६९

इन भाँत पाती लिखी, आए पहुंची सूरत।
तब श्री जीयें विचारिया, ऐसा हुआ बखत।।७०

ऐसा तो न चाहिये, जो हमको ऐसे लिखे सुकन।
हमसे तकसीर ना पड़ी, ए काम नहीं सैंयन।।७१

इन समें सब साथ ने, करी ए मसलहत।
बैटे श्री देवचन्द्र जी किनके हिरदे, तुम तौल देखो इत।।७२

कही ए श्री जी साहिब जी सों, तुम लेओ हक सिर काम।
साथ को जमा करना, बीच दीन इसलाम।।७३

Nijanand App

कोई उनसे साथ में, ल्याया नही ईमान।
चरचा राज की करके, काहू न भई पहिचान।।७४

जिनको तुम समझाए के, भेजत हो उन तरफ।
सो विकार पाए के, खाए आवत सब सक।।७५

अब तुम क्या देखत, नजर करो तरफ धाम।
लेओ तुम सिर आपने, दीन इसलाम का काम।।७६

साथ सब लागू हुये, आगा किया भाई भीम।
चरचा करके सिर ले, लिया जस अजीम।।७७

तब पाती का जवाब, लिख भेजे कलाम।
तुम हमको काढ़े साथ से, हम सिर पर लिया काम।।७८

जो हम स्वारथ को, दौड़ करेंगे इत।
तो सीधा कबहूं न होएगा, हम जायेंगे तित।।७६

और साथ के वास्ते, जो हम करत मेहनत।
तो हमारे सीधा होयगा, नजीक है साइत।।८०

इन भांत का जवाब, पाती में लिखे कलाम।
हम तो कमर बांधी, श्री निजधाम के काम।।८१

इन समय लालदास, साथ आया ठट्ठे से।
सुदामा पुर पहुंचिया, कहों बीतक तिन सें।।८२

Nijanand App

सम्बत् सत्रह सताईसे, पहुंचे सुदामा पुर।
तहां भीम पीताम्बर मिले, हुई चरचा तिन ऊपर।।८३

कछुक इन ठट्टे मिने, चरचा देखी जब।
वहां दोऊ लागू भये, सुनायो तारतम तब।।८४

कोइक दिन पीछे उने, सुनायो श्री तारतम।
ए दोऊ जने तबहीं, सौंप चुके आतम।।८५

तब दज्जाल इन समें, लगा जो करने सोर।
विठलेस गुसांई के, लगे निंदा करने जोर।।८६

वल्लभी मारग में, खड़ भड़ पड़ी उत।
ए कौन मारग पैदा भयो, ए चलें सेवक इत।।८७

हमारो तो बड़ों मारग, चारों खूंटों रोसन।
तिन भांत के और को, बतावत साधुजन।।८८

श्री राज के दर्सन की, चरचा होवे जोर।
दज्जाल तिनकी करे, अपनी सिपाह में सोर।।८९

धरम उंदरियों पैदा भयो, पांव बांधत घूंघरी।
थाल धरे परदा करें, देखो ऐसी राह चली।।९०

कहें हमारे घरों, श्री कृष्ण जी पधारत।
सो अरूगाय के, एही राह चलावत।।९१

Nijanand App

इन भाँत सहर में, निंदा निस दिन होय।
पूछे प्रस्न भागवत के, ताको अरथ न कहवे कोय।।६२

काहू को सांची भासे, कोई चरचा सुन होवे गलित।
कोई अस्तुति करे, जो देखे आये के तित।।६३

रब्द प्रस्न चरचा का, रात दिन उत होय।
जवाब काहू न आवहीं, क्यों उत्तर देवें सोय।।६४

यों करते लोग इन समें, लगे चरचा सुनने को।
गोपी साथ में आइया, खेमजी जोसी इन मों।।६५

दामा और सूरचन्द्र, और वस्ता नाम।
लालबाई धनियानी, भए दाखिल निजधाम।।६६

इहाँ होय चरचा उच्छव, आया इत प्रधान।
और आया मसकत से, महाव का बेटा कान।।६७

यों एक गांठ होय चली, आवने लगा नया साथ।
सोई चरचा सुनत हैं, जाके धनिये पकड़े हाथ।।६८

लाल दास को इन समें, भई माया की उरझन।
इनको राजें काढ़ के, चाहिये कदमों पहुंचे मोमिन।।६६

तब माया की तरफ का, हुआ धक्का जोर।
दज्जालें जोरा किया, ऊपर करने लगा सोर।।१००

Nijanand App

जब कछु न रह्या हाथ में, तब माया दिया छोड़।
तब नजर करी तरफ राज के, चित माया से लिया मोड़।।१९०१

अन्न का नेम लिया, जब मैं करों दीदार।
नवतनपुरी जाय के, देखों धनी निरधार।।१९०२

तब लों अनाज ना लेऊं, तोलो करों फल आहार।
इन भांत चलने लगे, ऐसा किया विचार।।१९०३

जब मगरोल पाटन, आये पहुंचे इत।
तहाँ दज्जाल बैठा था, कहे तुम जाओ सूरत।।१९०४

बहुत रद बदल भई, माने नही सुकन।
तब देखा तरफ श्री राज की, हुई आज्ञा ऊपर सैयन।।१९०५

तब उहाँ से दीप आये, तहां रहे पन्द्रह दिन।
साथ सों मुलाकात करी, फेर घोघे पहुंचे ततखिन ।।१९०६

तहाँ से नाव चढ़ के, आये बन्दर सूरत।
सम्बत् सत्रह सौ उन्तीसे, इहाँ आय पहुंची सरत।।१९०७

आय के श्री जी साहिब जी के, लगे दोऊ कदम।
नेम था अनाज का, सौंपी थी आतम।।१९०८

श्री जी अपने चित्त में, बड़ो पायो सुख।
प्रसाद लेओ उठो अब, यों कह्या श्री मुख।।१९०९

Nijanand App

तब लालदासें कह्या, हमको अगड़ है अनाज।
जाऊं बिहारी जी के कदमों, अनाज छोड़े तिन काज।।११०

तब आप श्री मुख कह्या, भया पूरा तुम्हारा पन।
कछु फिकर ना करो, पहुंचे मिलावे सैयन।।१११

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए सरत करो याद।
फेर लाल आगे की कहों, जो झगड़े को बुनियाद।।११२

प्रकरण।।३१।। चौपाई।।१४६२।।

हजरतें हज इत करी, लेनें को मक्का।
फते करी दज्जाल की, कूच करे दारूल बका।।१

सहर मदीना सूरत, तहाँ सेती चले जब।
महाजरों मद्दत करी, जो साथ सेवा में चले तब।।२

तिन मोमिन की सिफत, पहुंची बका में जब।
कुरान हदीसों में कही, सबों ऊपर सिफत अब।।३

सो लिखी लोमोफूज में, कहत अल्ला कलाम।
अग्यारे सें बरस आगूं ही, सब पढ़े खलक आम।।४

श्री धनी देवचन्द्र जी ल्याए, किल्ली अल्ला कलाम।
श्री जी आप जाहिर करी, दिया मोमिनों को ताम।।५

मोमिन सुंनत जमात में, बातें करें बीतक।
हक का प्यार इन पर, ए बात बड़ी बुजरक।।६

Nijanand App

जिनों सेवा करी सनेह सों, तन मन दिया धन।
तो आए इसलाम में, ए खासल खास मोमिन।।७

उतरी अरवाहें अरस से, तिनको ढूंढ़न काज।
और जबरूती फिरस्ते, हुकुम दिया श्री राज।।८

एही थे ब्रज रास में, हुए पूरन नही मनोरथ।
तब तीसरो ए रचनों पड़यो, इने दिखावन अरथ।।९

तीसरो उपजो अक्षर को, जाने तैसा ही इंड।
सब जाने हम वही हैं, काहू खबर न पड़ी ब्रह्मांड।।१०

तामें आई सृष्ट ब्रह्म की, ए जो खासल खास उमत।
ताको जगावें जुगत सों, दावत कर क्यामत।।११

सकुण्डल सकुमार को, चले जगावन काज।
श्री मुख श्री देवचन्द्र जी कही, बुलाए ल्याओ श्री मेहेराज।।१२

कुली कलिंगा दज्जाल सों, जंग करो जाय तुम।
देह बुध छोड़ाय के, ल्याओ बुध आतम।।१३

धरम विरोध धरा मिनें, करता कुली दज्जाल।
ताको मारो सिताब सों, ज्यों होवें सब खुसाल।।१४

एक दीन होए एक का, सब भजन करे भगवान।
देओ वेद कतेब की साहिदी, ज्यों ल्यावें सब ईमान।।१५

Nijanand App

गाजी बनी असराईल, तामें श्री देवचन्द्र जी सिरदार।
लड़े राह खुदाए के वास्ते, ए जो महिने हजार।।१६

तिन से भी बेहतर कही, श्री जी बांधी कमर।
जाहिर करी जगत में, ए लड़ाई सब पर।।१७

तिन लड़ाई के बखत में, जिनों करी मद्दत।
तिनकी मेहनत इन जुबां, करी न जाए सिफत।।१८

तिनके नाम कहत हों, सुनियो चित दे साथ।
कूवत दई कादर ने, पकड़े अपने हाथ।।१६

संग चले सेवन को, ए जो मोमिन खासल खास।
इनको श्री धाम धनी बिना, और न उपजे आस।।२०

प्रकरण।।३२।। चौपाई।।१४८२।।

श्री जी संग श्री बाई जी, और भट्ट गोवरधन।
सेवा करी तन धन सों, तो हुआ साथ में धन धन।।१

भीम भाई भली भांत सों, निकस्या तन ले धन।
सेवा करी उमर लों, गाए प्रेम बचन।।२

नागजी अति नेह सों, छोड़ कुटुम्ब की आस।
तन, मन, धन सब ले चला, पाया खिताब नाम गरीब दास।।३

स्याम भट्ट संग चल्या, रह्या केतेक दिन।
वचन वेदान्त सुनावत, कर न सका बस मन।।४

Nijanand App

नाहना भाई और पाखड़ी, चले श्री राज के साथ।
आखर लों निबाहिया, जाके धनिये पकड़े हाथ।।५

कान जी रामी चला, ले कबीला संग।
आखर लों निबाहिया, कोई रहा न पीछे अंग।।६

जमुनाबाई संग चली, छोड़ कुटुम्ब परिवार।
सेवा करी सनेह सों, जान के परवरदिगार।।७

छबीलदास संग चले, सेवन के सुख काज।
बेटा जमुना का जान के, सेवा दई श्री राज।।८

कोई दिन धारा रहे आए, फेर के जाए पीछे।
पत्रियाँ पहुंचावें साथ मों, ऐ काम इन के।।९

लालबाई संग चली, स्याम बाई को ले।
श्री बाई जी की सेवा मिने, काम जो करती ए।।१०

लाल दास संग चले, खाली लेकर हाथ।
निबहे आखर लों, चले श्री राज के साथ।।११

सुकदेव सूरत से, ले चले संग मानिक।
अपना आपा डारिया, पहुंचे मेरते बुजरक।।१२

प्रेम जी अति प्रेम सों, मारग में मिले धाए।
हाजिर रहे हजूर में, सेवा करी चित ल्याए।।१३

Nijanand App

सूरत सेती चल के, आए पहुंचे गुजरात।
राह खुदाए के वास्ते लड़े, मेटन को जुलमात।।१४

गुजरात के बीच में, चार दिन रहे येह।
तहाँ सेती कूच करके, सिद्धपुर पहुंचे तेह।।१५

लछमन कबीला लेय के, पहुंचे हैं गुजरात।
कबीला भारी भया, कही रहने की बात।।१६

तिस वास्ते रह्या बीच में, माया के सुख काज।
उमर खोई तिन में, फेर सुरत करी श्री राज।।१७

सिद्धपुर के बीच में, रहे बाईस दिन।
भगवान उपाध्या ने सेवा, करी अति मगन।।१८

और भगवान का, रेवादास है नाम।
पहुंचा पालन पुर में, इनके पूरे मनोरथ काम।।१९

ए तीरथ गुरू होए मिलया, कछु न हुई खबर।
एक मोहर दे विदा कियो, फेर लालच करी ऊपर।।२०

तब गोवरधन ने कह्या, करो इन सरूप की पहिचान।
मांगो अलौकिक इन से, तुम को दे ईमान।।२१

तब अरज करी भगवान ने, लगा दोऊ कदम।
परआतम पहिचान के, जगाओ मेरी आतम।।२२

Nijanand App

तब चार सुकन चलते कहे, याद करो निजधाम।
जमुना ताल घाट की, और अक्षर मुकाम।।२३

ब्रज रास में हम थे, भी तीसरे आए इत।
अब खेल देख पीछे फिरें, जाए लगें हम तित।।२४

ए बात चित धर के, फेर आए अपने ठौर।
सोई बात दिल में रखी, काहू न कहवे और।।२५

बोला नही छः मास लों, रहे केसव भट्ट सोहबत।
तिनसों चरचा करते, एक छत्री निकला इत।।२६

तिनने हमें परमोधिया, दो एक कहे बचन।
सोई बचन हम से कहो, तिनके दो एक सुकन।।२७

तब दो एक सुकन, कह दिखाया धाम।
तब केसव पहिचानिया, कहा कहों तुम्हें इस ठाम।।२८

यह तो अक्षरातीत था, तुम न करी पहिचान।
अब मैं उतहीं जात हों, मुझे आया ईमान।।२९

ओ ऐसे ही उत से चल्या, ढूँढ़त फिरे सब ठौर।
ढूंढते दिल्ली पहुंचिया, खोज करी अत जोर।।३०

रामचन्द पंसारी के इंहा से, पाई इने खबर।
लाल दरवाजे आय मिल्या, अति आतुर होए कर।।३१

Nijanand App

कोई दिन तहाँ रह्या, सुने सुकन सुभान।
तारतम नीके जानिया, कछु ज्यादा भई पहिचान।।३२

तब लड़ने दज्जाल सों, बांधी कम्मर जोर।
फेर आये सिद्धपुर में, किया साथ काढ़नें का सोर।।३३

भगवान रेवादास को नसीहत, फेर के दई इने चिन्हार।
तिनको ल्याया साथ में, किया खबरदार।।३४

केसवजी परमोधिया, और द्वारकादास।
धाम लीला दिखाय दई, तब टूट गई सब आस।।३५

ऐ भी घर को छोड़ के, गये श्री राज के पास।
दिल्ली मिने आये मिले, सेवा की दिल आस।।३६

दूजे केसव दास को, दई तारतम सुध।
तब लोक अलोक की, छूट गई सब बुध।।३७

त्रीकम गंगादास नें, चरचा सुनी कान।
तब ए दिल में धरके, पहुंचा ले ईमान।।३८

बीटल चरचा सुनके, कछुक भई पहिचान।
घर कबीला छोड़ के, पहुंचा ले ईमान।।३९

जब जुद्ध भया दज्जाल सों, तब बीटल उपज्या डर।
भाग चला पीठ देय के, पहुंचा अपने घर।।४०

Nijanand App

थाना थाप्या सिद्धपुर में, केसव भट्ट के घर।
धाम चरचा नित होवहीं, साथ रह्या पकर।।४१

अब सिद्धपुर से, मेरते पहुंचे धाय।
लाभानन्द जती सों, चरचा करी बनाय।।४२

दस दिन चरचा में भये, ठौर ठौर हुओ जब बन्ध।
तब कही महातम मेरो गयो, मेरे मारग को परबन्ध।।४३

मारों दाब के पहाड़ में, इनको डारों उलटाय।
सब दैत्यों के मंत्र से, भाँत भाँत किये उपाय।।४४

घर परवत उठो नहीं, तब हार के बैठा ठौर।
फंच वासना सब देव जहाँ खड़े, तहाँ मन्त्र चले क्यों और।।४५

देखाऊं में डगाए के, आसन कर बैठा सुन।
खोज खोज खाली भया, ग्रह के बैठा मुन।।४६

रामचन्द आये मिले, मेरते के ठौर।
सेवा में सामिल रहा, तब आस न रही और।।४७

एक हवेली लेय के, तहां बिराजे श्री राज।
चरचा बड़ी होवहीं, रह्या न कोई काज।।४८

सोर पड़या सहर में, आवत सब खलक।
घेर रहे मध माखी ज्यों, कोई आय बीच हक।।४९

Nijanand App

आया चांपसी चित सों, और आया रघुनाथ।
छोड़ कुटुम्ब कबीला, चला श्री राज के साथ।।५

अगरबारे बनियां मिनें, आया राजा राम।
समेत कबीला आपनें, सेवा करी तमाम।।५

झांझन आया साथ में, लिये कुटुम्ब परिवार।
ल्याया ईमान अरस पर, पहुंचा परवरदिगार।।५२

और आया मकरन्द, और भाई मानसिंघ।
और भाई मोहन मनोहर, ए आये ईमान ले अंग।।५३

और आया सादल, और भाई नन्दराम।
और आया रिखेस्वर, दो जीवन दास नाम।।५४

और आई सरूप दे, एक बाई लखमी।
और आई रंभाबाई, इनों पायी कायमी।।५५

जादी और कुसली, और बाई चाँद तथा मोज।
ए आई इसलाम में, करके बड़ी खोज।।५६

भागबाई और तेजबाई, अनूपो राधा नाम।
बेनबाई मुरलीधर, ये दाखिल निजधाम।।५७

ए आवत चरचा को, बानी सुनत श्रवन।
खुसाल होवे मन में, सिफत सुने मोमिन।।५८

Nijanand App

और इनकी सोहबत से, आया केतेक साथ।
तिनके नाम ना लिखे, पर धनिये पकड़े हाथ।।५९

खरची पाती इनकी, पहुंचत लड़ाई मिने।
पतली कमरी ओढ़न को, आवत थी उत सें।।६०

इत सब साथ में, राजा राम सिरदार।
तारतम बानी सब में, हुआ खबरदार।।६१

और मनाबाई सेवा में, रहवे खबरदार।
पावत है दीदार को, रहे तरफ धनी निरधार।।६२

अब इन समै मेरते मिने, बड़ा जो पड़या सोर।
चरचा और दीदार को, खलक चली आवे इन ठौर।।६३

सुख बड़ो सब साथ को, इत उपजत है नित।
एक मजल जो इन समै, होसी बखत क्यामत।।६४

ये बातें बहुत है, कहा लों कहों बनाय।
जो इत लीला में हाजर, ए अनुभव है ताय।।६५

सुनी बात जब जसवंत की, तब पाती लिखी दोय।
भट्ट गोवरधन ले चले, पैगाम पहुंचावने सोय।।६६

अटक पार पहुंच के, खबर दई उन जाय।
ए अंकूर बिना क्या करें, रहया रस न चरचा ताय।।६७

Nijanand App

तहाँ चार मास लगे, रहे मेरते में इन बखत।
एक दिन बाहिर चलते, मारग खड़े तित।।६८

बांग मुनारे पर चढ़के, दई मुल्ला नें जब।
कानों सुन आवाज को, दिल विचार किया तब।।६९

ऊपर चढ़ कलमा कह्या, ला इलाह इल्लिल्लाह।
महंमद रसूल अल्ला तिनकी, ए खबर कहे अल्लाह।।७०

ला तो नाहीं को कह्या, इलाह तो है हक।
ए अक्षर अछरातीत की, बात बड़ी बुजरक।।७१

ए तो श्री देवचन्द्र जी कही, तहाँ से आये तुम।
दूसरा तो कोई है नही, इनका कौन दावा करे बिना हम।।७२

तहकीक हमारे कासिद, हम वास्ते ल्याये कलाम।
सब खबर हमारी होयगी, ल्याये महम्मद अलेह सलाम।।७३

महामति कहें ए साथ जी, इहाँ लों ईसा का इलम।
अब महम्मद को मिल चला, कहों एक दीन आदम।।७४

प्रकरण।।३३।। चौपाई।।१५५६।।

इहाँ लगे कतेब की, चरचा में न चित।
कलमा से हासिल किया, लिया मुहम्द मता इत।।१

लालदास को कह्या, आज एक बात पाई।
तब अरज करी लालदास ने, ए हमको देओ दिखाई।।२

Nijanand App

तब बात कलमें की, कर दिखाई सब।
मुहम्मद कुरान ल्याये, सब तुमारा मतलब।।३

इत महम्मद सों मिल चले, तब अहमद पाया खिताब।
ईसा और महम्मद मिले, मारे दज्जाल सिताब।।४

अब लड़ाई करने को, जाइये पास सुलतान।
इनको प्रथम दावत करें, ए ल्यावें ईमान।।५

श्री देवचन्द्र जी ने कही थी, आवे सकुण्डल सकुमार।
तब खेल देख पीछे फिरें, पहुंचे परवरदिगार।।६

तिस वास्ते ढूंढ़ काढ़िये, ए लीला होए जाहिर।
कुली दज्जाल को मारिये, करत बदफैली बाहिर।।७

तब साथ सब को, होवेगी खबर।
दौड़ेंगे आप अपनी, आए मिले आखर।।८

ए विचार करके, मेरते से चले जब।
गोकुल मथुरा आगरे, आए पहुंचे तब।।९

कोई दिन तहाँ रह के, दिल्ली पहुंचे धाए।
कितनाक साथ ठठे का, इत पहुंचा आए।।१०

हरि राम चौधरी, और चिन्तामन लालमन।
और रामचन्द्र आये पहुंचे, रहे कोइक दिन।।११

Nijanand App

ईश्वर दास चोबदार, ए रह्या बरस दोए।
पीछे माया लहर में, रह न सक्या सोए।।१२

मलूक चन्द भली भाँत सों, लड़ा दज्जाल सो जोर।
सौंपी अपनी आतम, कछु न आई खोर।।१३

सेखबदल आइया, नीके ग्रहे कदम।
लड़ा दज्जाल सों सनमुख, और न मारी दम।।१४

अनन्तराम आये मिला, लड़ाई के बखत।
सेवा में सामिल रह्या, समय पाया इत।।१५

तुलसी बिहारी दास, और हिरदे राम।
कोइक दिन सामिल रहे, फेंर घरों किया बिसराम।।१६

ए जो हरिराम भाई का, बेटा हीरानन्द।
कोइक दिन रह्या सेवा मिने, पीछे पहुंचा अपने वतन।।१७

भाई श्री मुकुन्ददास ने, सुन्या सूरत में तारतम।
आये पहुंचे सैयद की हवेली में, जाग खड़ी आतम।।१८

रामचन्द्र मेड़ते से, पहुंचा इन सोहबत।
कोइक दिन रहके, फेर घर किया इत।।१९

और साथी केतेक, आए के गये अपने घर।
पर बात न छूटे दिल से, रहे इसलाम ऊपर।।२

Nijanand App

केतेक मुनकर हुये, सो पैठ न सके इसलाम।
जो मुँह नीचा करे साथ, कोई न कहे कलाम।।२१

कोई दिन पीछे आइया, गोवरधन अटक से।
लाल दरवाजे आए रह्या, गंगाराम की दुकान में।।२२

तहां बचन तारतम के, कहे जो गंगाराम।
आसाजीत परबोधिया, तित पाया बिसराम।।२३

नैनसुख महाजन सों, कहें वचन दो चार।
तिनने अपने दिल में, किया बड़ा विचार।।२४

फिरते उर्दू बाजार में, मिले गरीबदास।
धाय के तिनको मिले, पूछी खबर खास।।२५

कहाँ साथ रहत है, श्री जी आप हैं कित।
मैं अपनें साथ को, लेकर आऊं इत।।२६

पूरे विट्ठल गोर के, सैयद की हवेली में।
तहाँ श्री जी रहत हैं, मैं खबर करों इनसें।।२७

गोवरधन अपने घर गया, आया गरीबदास।
खबर करी श्री राज सों, आया गोबरधन खास।।२८

ब्रत समै गोवरधन, ल्याया अपने संगी मिलाए।
सब आए कदमों लगे, बीतक कही बनाए।।२९

Nijanand App

इन हवेली में आप, मास छः रहे।
तहाँ से लाल दरवाजे को, ले चला उत के।।३०

इहाँ आए सकुमार को, पाती लिखी बनाए।
बाईस प्रस्न तिन में, लिखे चित सों ल्याए।।३१

इन पाती लिखने में रहें, श्री जी और लालदास।
रात दिन मेहनत करी, श्री राज सेवन की आस।।३२

ए पाती लेइ के, आये लाल दरवाजे।
हवेली छत्रीय की, तिन में रहे आये।।३३

तहाँ आए बैठ के, बड़ी करी मसलहत।
पूछा विचार सब को, कहा करनो अब इत।।३४

आसाजीत आइया, लगा श्री राज के कदम।
तब ए बिचार पूछिया, कहा करनो अब हम।।३५

तब आसा जीत को, पाती पढ़ सुनाई।
सुनके उन उत्तर दियो, ए पाती क्यों दिखाई।।३६

ऐ तो हिन्दुअन का, हमेसा रहत दुसमन।
प्रात को मुंह ना देखहीं, ए आप कहावत मोमिन।।३७

सो पाती हिन्दवी की, क्यों कर सुने कान।
सरियत है जोरावर, है पोहोरा मुसलमान।।३८

Nijanand App

मास दोय इहाँ रहे, होए चरचा वेद वेदान्त।
ऊपर अटारी के, बैठत हैं एकान्त।।३९

इत सूफी एक आवत, चरचा सुनाई ताए।
मीठी लगी तिन को, लालच को इत आए।।४०

दयाराम दिल प्रेम सों, इत आया तिन ईमान।
ल्याया सबके देखते, है खास सैयों में जान।।४१

दया राम को ल्याईया, ऐ जो भाई नैन सुख।
सुख दयाराम जो पाईया, सो कहो न जाए मुख।।४२

चंचल आगे चरचा, करी जो दया राम।
यह भी ईमान ल्याईया, बड़ा पाया बिसराम।।४३

हरप्रसाद हरकरन, चरचा सुनी न किनके मुख।
इन दोऊ भाइयों को, ल्याया बीच इन सुख।।४४

ए दोऊ भाई प्रेम सों, चरचा छिपके सुनते।
ईमान पूरा ल्याये, पर बड़कों से डरते।।४५

और भिखारी दास नें, कछु चरचा सुनी।
ऊपर की पहचान सों, सेवा करी अपनी।।४६

श्री राज को घरों पधराए के, अरूगाया थाल।
साथ सब की सेवा करी, होए के दिल खुसाल।।४७

Nijanand App

गंगाराम आवत, खाली हाथों ने कब।
पावें भली वस्त बाजार में, राज आगे धरे सब।।४८

दयाराम आवत, ल्यावें मिठाई पकवान।
नये नये मेवे लेय के, ल्यावत दिल ईमान।।४९

चंचल अपनी दूकान से, ल्यावत कर चोरी।
ल्यावें श्री राज के वास्ते, अंग उमंग करी।।५०

कुटुम्ब कबीला लड़ते, बरजत रहे हमेस।
तिनका मोंह मार के, काहू न गिनत खेस।।५१

रामचन्द पंसारी नें, करी उपली पहिचान।
खिजमत अपने माफक, करी ऐसी जान।।५२

महाजन जेठा वेदान्ती, चरचा सुनता कान।
सुकन भले चीनता, पर छूटा न सुंन मकान।।५३

अब ए विचार करने लगे, क्यों ए बात सुने सुलतान।
इत बैठे ना बनत, बड़ा अमल सैतान।।५४

कोइक जागा पकड़ के, लड़े इनसे हम।
वचन इने सुनावनें, कहो इलाज कोई तुम।।५५

ऐसा विचार करके, दिल्ली से चले जब।
साहजहानपुर बोड़िया मिने, आये पहुंचे तब।।५६

Nijanand App

केतेक साथ दिल्ली मिने, राख के आप चले।
हम लेंइगे पीछे ते खबर, जाएंगे उस जगे।।५७

महामत कहें ऐ साथ जी, याद करो धनी तुम।
उतरी मेहर हक से, जगाओ अपनी आतम।।५८

प्रकरण।।३४।। चौपाई।।१६१४।।

इन समय सूरत से, आया लक्ष्मीदास।
रूपा बाई को लेइ के, बेटी जमुना खास।।१

और भाई नारायण दास, और गोविन्द जी दास।
रामबाई को लेइ के, दिल राज चरन की आस।।२

और सभा चंद छत्री, भागवती हरीराम।
केतक दिन संग रहे, पीछे किया माया में विसराम।।३

लछमीदास के घर मिने, उपली दृष्ट भई जोर।
राज दीदार देवहीं, कछु न दिल में खोर।।४

नित आरोगन आवहीं, आवत बड़ा आवेस।
तिस वास्ते माया का, कछु न रह्या लवलेस।।५

और राज के दिल में, हांसी करने का काम।
तिस वास्ते बातां करें, वायदा किया इस ठाम।।६

आज से सकुमार बाई, आवें आठमें दिन।
तब राज बड़ो आदर कियो, कहे बैठाओ जोड़े सैयन।।७

Nijanand App

ऐ श्री राज की कृपा, काहू ऊपर होइ।
सो मेरे आगे होइ, ऐह काम करे सोइ।।८

जो मेरे आगे होइ, या बैठे मेरे जोड़।
जो श्री देवचन्द्र जी सिर पर हैं, तो करों नही चित मोड़।।९

नाहीं तो मेरा पीछा, कोई जिन छोड़ो तुम।
ऐह प्रकास देख के, जगाओ अपनी आतम।।१०

तब कह्या लखमीदास ने, मुझ से आगा ना होए।
पर जोड़े तुमारे बैठोंगां, सकुमार जगाऊं सोए।।११

दिन दो-तीन जोड़े बेठा, फेर आड़े आई सरम।
स्याम भीम ताना मारते, तब हुआ दिल नरम।।१२

जब आठ दिन पूरे भये, श्री राजें दिया दीदार।
तब इनने अरज करी, करो पूरा परवरदिगार।।१३

तब राज हाथ से जुदे हुये, तब हांसी हुई इत।
ए तो नही मुकरर, बखत रोज क्यामत।।१४

फेर विचार करके, दिल्ली से चले जब।
साहजहानपुर बूड़िए, आये पहुंचे तब।।१५

तहां आजूज माजूज नें, बड़ा जो किया सोर।
मरगी पड़ी इन समें, आई थी इत जोर।।१६

Nijanand App

इन समें बूड़िए में, पकड़ा नागजी को।
मलकल मौत झलूविया, तब मारा तिनका मोंह।।१७

श्री धाम दिखाइ के, दिया अपना जोस।
तब काल को मारिया, हो गया फरामोस।।१८

इत सिरदार क्षत्री रहे, तिन करी ऊपर की पहिचान।
सेवा करी तिन माफक, कछु न आया हीसे कान।।१६

इहां से निरमलदास को, और जने जो चार।
खड़कारी राजा पास, भेजे कर विचार।।२०

तहां जाए के देखिया, तो ए जागा नाहीं जोग।
दिन दस एक रहके, फेर आये मिले संजोग।।२१

तब विचार करके, जों सिर पर थे सुकन।
सो सोभा दई महंमद को, पहिचान करे मोमिन।।२२

इन भांत सब्द फेर के, किये जब तैयार।
तब भीम लालदास को कह्या, देओ पैगाम परवरदिगार।।२३

दोनों तैयार होए के, सिर चढ़ाया हुकम।
चले बूड़िए सहर से, आये पहुंचे दिल्ली हम।।२४

पीछे ते जबराईलें, दिया जब इलहाम।
ए पैगाम जो भेजिया, पर होवेगा नहीं काम।।२५

Nijanand App

पीछे से कान जी भाई को, श्री राजें भेजा जब।
पेटे दिल्ली में बराबर, हकीकत ल्याया तब।।२६

तुमको पैगाम देने का, हुकम हुआ मनसूक।
ए तुमको न मानेगा, पड़ेगी इनसे चूक।।२७

हमको उत आवन देओ, आये के करें विचार।
जैसा लाग देखेंगे, तैसा करें करार।।२८

मास एक इत रहे, फेर चले हरद्वार।
आये हरद्वार में, ताको कहों विस्तार।।२९

साका सालवाहन का, सोरह से पूरन।
बैठा साका विजियाभिनन्द का, तब फिराये फिरके सैयन।।३०

विक्रमाजीत के राज से, बरस सत्रह से पैंतीस।
तब जिद्द हुई फिरकान सों, बुद्ध ईस्वरों के ईस।।३१

हरद्वार के मेला में, चार सम्प्रदाय ताहिं।
षट दर्सन भी तहां मिले, दस नाम सन्यासी जाहिं।।३२

चार वर्ण चार आश्रम, सबे भये एक ठौर।
सबने देख श्री राज को, कीनी दिल सक और।।३३

कह्या तुम्हारी राह तो नई है, हम सुनी न देखी कांह।
झारो दीजे आपनों, तुम हम मारग में नांह।।३४

Nijanand App

तब कहे बचन श्री राज नें, तुम प्राचीन पुरातम।
सो कहो हमें समझाय कें, आपनो इष्ट जो धरम।।३५

क्रोध अहम को छोड़के, चितसों कहो समझाय।
कहो यथार्थ वेद ले, सोई ग्रहें हम आय।।३६

अपनो दृढ़ाव जो होय, सो हमको देओ बताय।
तापर सक हमें होवहीं, सो तुम देओ मिटाय।।३७

तब बोले रामानुज, सब सास्त्र वेद मत इष्ट।
कहों अगोचर पन्थ सही, देखो अपनी दृष्ट।।३८

हमारे गुरू धर्म में, कही नाम माला उर माहिं।
अच्युत गोत्र अत सुचि परम, प्रभु अनन्त साखा जो आहिं।।३९

सुकल हमारो वरण है, सब वर्णों से बाहिर।
साम वेद द्वार श्रवना, मुक्त समीपी जाहिर।।४०

मठ बैकुण्ठ है हमारो, सुमेर प्रदखिणा जान।
बीज मंत्र निराकार है, नभ सम ब्रह्म मान।।४१

पद्मनाभ जो क्षेत्र है, मेल कोटा सुख बिलास।
लक्ष्मी इष्ट अत गोप है, उजल अति प्रकास।।४२

ये पद्धत लक्ष्मी से चली, से पद्धत बिन भ्रम आए।
चौदह भवन पर बैकुण्ठ है, सोइ अखाड़ा सुहाए।।४३

Nijanand App

रंगनाथ हम धाम है, नदी काबेरी तीरथ।
देवी है कमला सही, सारे सबे अरथ।।४४

श्री नारायण हैं देवता, विस्णु आचारज होय।
गायत्री है अलख निरंजन, कही पद्धति रामानुज सोय।।४५

सुन पद्धत श्री राज नें, किये प्रस्न जो एह।
कह्यो पंथ अगाध जो, तुम धन्य रामानुज तेह।।४६

जग माहें की कही तुम, कहे वेद जगत को नास।
पिण्ड ब्रह्माण्ड दोऊ प्रलय में, तो कहां जीव को वास।।४७

तब बोले नीमानुज, वेद इस्ट जप धाम।
अपनी सम्प्रदाय सब कहों, मूल ग्रहो बिसराम।।४८

मथुरा है साला सही, धर्म क्षेत्र गोकुल पुनीत।
सुख विलास वृन्दावन में, धाम द्वारका नीत।।४९

नदी गोमती तीरथ, इष्ट रूकमणी होय।
यजुर्वेद हर नाम की माला, टारे छल सब सोय।।५०

वृन्दादेवी मुक्त सरूपी, प्रणव मंत्र ऊंकार।
चली सम्प्रदा सनकादिक से, प्राचीन मत सार।।५१

गोपाल वंस है गायत्री, गोपाल मंत्र है जान।
नारद हैं आचारज, ऋषि दुर्वासा मान।।५२

Nijanand App

विस्णु को वाहन सही, गरूड देवता सोए।
रक्षा करें सदा सन्त की, ए पद्धत नीमानुज होए।।५३

तब किये प्रस्न श्री राज ने, तुममें नहीं विचार।
कछु कही जगत के परे की, कछु जगत मंझार।।५४

सार असार को एक किये, मिले नही मत वेद।
तुम बिन सतगुर क्या करो, छूटे नही भव खेद।।५५

तब विस्णु स्याम अचारज ने, अपनी सम्प्रदा सब।
इस्ट उपासना वेद जाप, कहों सुनो तुम अब।।५६

विस्णु कांची है धर्मसाला, स्वेत गंगा चक्र तीरथ सोए।
सुख विलास इन्द्र दमन मध, जहां निरमल सब होए।।५७

मारकण्ड है तीरथ, परसोतम पुर धाम।
इस्ट लछमी है सही, जगन्नाथ सेवन उपासना नाम।।५८

अथर्व वेद हमरो सही, माला नाम की सार।
अच्युत है गोत्र पुन, त्रिपुरारी साखा धार।।५९

सुकल वर्ण तुम जानियो, तुलसी मंत्र है जाप।
जल बिंव ऋषि हैं देवता, वामदेव आचारज थाप।।६०

ब्रह्म गायत्री जानियो, महादेव से सम्प्रदा आए।
सायुज मुक्त हमने ग्रही, ए विस्णु स्याम सम्प्रदा सुहाए।।६१

Nijanand App

तुम तो ऐ जग में कही, ए कहे बचन श्री राज।
वेद पुराण जग नास कहे, रहे कहां सम्प्रदा विराज।।६२

तब कही माधवाचारज ने, हमारी सम्प्रदा जोए।
गोत्र क्षेत्र इस्ट धाम वेद, सुनों आप तुम सोए।।६३

पुरी अवन्तिका साला सही, नीमखार क्षेत्र होए।
सुख विलास है अंगपात मध, बद्रीनाथ धाम है सोए।।६४

अलखा नदी तीरथ हमारो, विध उपासना जान।
सावित्री तो इस्ट है, आद वेद ऋग मान।।६५

हरनाम की माला उर में, विस्णु गायत्री है गान।
विस्णु हँस रूप मंत्र है, ब्रह्मा आचारज प्रमान।।६६

हंस ऋषि पुनि देवता, ब्रह्मा तें सम्प्रदा आए।
सालोक है मुक्त हमारी, ए पद्धत माधवी सुहाए।।६७

तब कहे प्रस्न श्री राज नें, ए तो कही जग माहिं।
कहे वेद जग भरम है, तब मुक्त कही सो काहिं।।६८

प्रकरण।।३५।। चौपाई।।१६८२।।

अथ दस नाम सन्यासी की विधि

फेर दस नाम सन्यास जो, बोले इस्ट प्रमाण।
मन्या सात मट चार हमारे, परम हंस मत ए जान।।१

Nijanand App

प्रथम मठ मन्या पच्छिम की, मठ सारदा तहां आये।
परम द्वारका क्षेत्र है, सुदेचर देवता सुहाये।।२

भद्रकाली देवी सही, गंगा गोमती तीरथ।
अनुभूति सरूपाचारज, सारे सब अरथ।।३

कीटवार है सम्प्रदा, तीरथ आश्रम दो नाम।
ब्रह्मा विस्नु हैं देवता, ए पच्छिम मन्या विश्राम।।४

दूसरी मन्या है पूरब की, वन आरण्य दो नाम।
भोग गोवर्धन है मठ, भोगवार सम्प्रदा ठाम।।५

पद परसोतम क्षेत्र है, देवता है जगन्नाथ।
बलभद्र और पद्‌माचारज, बिंबलाई देवी साथ।।६

रोहिन्या महोदधि तीरथ, ए पूरब मन्या होए।
इन आचारजन के मुखें, सुनी श्री राज नें सोए।।७

त्रीजी मन्या जो कही, सुनियो ताकी विध।
जोसी मठ आनन्दवार सम्प्रदा, पद बद्रीनाथ आश्रम है सिध।।८

नर नारायण हैं देवता, गिरि परबत सागर नाम।
नरा टोटका आचारज, पुन्यागिरि देवी ठाम।।९

मुक्त क्षेत्र अलखा नदी तीरथ, ए त्रीजी मन्या जान।
इन आचारजों ने कह्‌यो, आपनो सबे प्रमान।।१०

Nijanand App

चौथी मन्या दक्षिण दिसकी, तीन नाम हैं ताहिं।
पुरी भारती सरस्वती, श्रृंगेरी मठ है जाहिं।।११

भूर्वार है सम्प्रदा, पद रामेश्वर क्षेत्र सत।
संकर आद बाराह देवता, कामिक्षा देवी गत।।१२

श्रृंगी ऋषि पृथ्वी धराचारज, टोक भद्रा तीरथ सार।
चौथी मन्या को मतो, सुन्यो सबे विचार।।१३

पांचमी मन्या जो कही, उरधा ताको नाम।
ताको मठ सुमेर है, कासी सम्प्रदा ठाम।।१४

ज्ञान पद कैलास क्षेत्र है, निरंजन देवता सत।
माया को देवी कही, ईस्वर आचारज मत।।१५

मान सरोवर तीरथ, पांचमी मन्या सोए।
सुनके आप चित विचारिया, ए जग बाहिर नहीं कोए।।१६

छठी मन्या की विध जो, बरनत अगम अगाध।
दसों नाम का इष्ट है, भजत बोहोत विध साध।।१७

मन्या छठी कही आतमा, मठ परआतम मूल।
सत सन्तुष्ट कही सम्प्रदा, जोग पद परे न भूल।।१८

नाभि क्षेत्र परमहंस देवता, मनसा देवी उर आन।
चेतन व्यापी आचारज, त्रिकुटी तीरथ जान।।१९

Nijanand App

सरोवर क्षेत्र है सही, छठी मन्या विधि ऐह।
एह बात है साथ की, लेत आप पर तेह।।२०

अब मन्या सुनो सातमी, जंबू दीप भरत खण्ड माहिं।
ब्रह्मपुत्र सिखा सही, सूत्र साखा ताहिं।।२१

यग्यो पवित्र में सूत्र कह्यो, बरने सत मठ चार।
पच्छिम मठ पूरब द्विती, दो उत्तर दक्षिन सार।।२२

चार मठ के चार ब्रह्मचारी, आनन्द सरूप चेतन प्रकास।
हंस परमहंस बोध कुटीचर, सप्तमठ मन्या जास।।२३

सातों मठ के सन्यासी, बोले सबे विचार।
उपदेस बोध दीक्षा कहे आपनी, सो देखो तौल निरधार।।२४

सात मन्या के सात मंत्र हैं, मन्या प्रथम पश्चिम सुहाये।
तीरथ आश्रम दो नाम की दीक्षा, सो देखो चित ल्याये।।२५

(सातों मन्या के मंत्र)

मंत्रः ॐ ह्रीं नीलहंसः सोऽहम् परमहंसः
ॐ सोऽहम् सिद्धान्त भास्करोऽहम्।
स्वदेचर देवता। सोऽहम् ब्रह्मेति।।

पूरब मन्या को मंत्र है, तारन हमारो जोए।
वन आरन दो नाम की, दीक्षा सुनो अब सोय।।२६

Nijanand App

मंत्रः ॐ सोऽहम् मठः प्रतीच्यात्सर्वद्दिड मुखेन नमस्ते करोम्यहम्।
जगन्नाथो देवता। सोऽहम् ब्रह्मेति मन्त्रः।।

उत्तर मन्या के नाम त्रय, गिरि परवत सागर।
तिनकी दीक्षा कहत हों, सुनियो चित आगर।।२७

मंत्रः ॐ सोऽहम् हंसः तत्वमसि अहं ब्रह्मास्मि।
नारायणो देवता। सोऽहम् ब्रह्मेति मन्त्रः।।

तीन आचारज दक्षिन मन्या के, पुरी भारती सरस्वती मत।
तिनकी दीक्षा मंत्र जो, सुनो कहत हों सत।।२८

मंत्र : ॐ भूभुर्वः स्वः ब्रह्म ॐ क्लीं स्मीति सोऽहं
आत्मा तत्वमसि अहं ब्रह्मास्मि सोऽहं हंसः।
आदि वाराहो देवता। सोऽहम् ब्रह्मेति मंत्रः।।

मन्या ऊर्धा पांचमी, मठ सुमेर परवान।
कासी सम्प्रदा ज्ञान पद, तिनकी दीक्षा सुनो जान।।२९

मंत्र : ॐ नीलहंसः परमहंसः सोऽहम् तत्वमसि।
निरञ्जनो देवता। सोऽहम् ब्रह्मेति मंत्रः।।

छठी मन्या आतमा, पर आतम मठ होए।
परमहंस है देवता, तिनकी दीक्षा कहों सोए।।३०

मंत्र : ॐ सोऽहम् हंसः तत्वमसि पदं, ब्रह्मत्वं पद माया असिपदं।
तत्पदं जीवो ब्रह्म्। परमहंसो देवता। सोऽहम् ब्रह्मेति मंत्रः।।

Nijanand App

सातमी मन्या जम्बू दीप में, भरत खण्ड मध आए।
ब्रह्मा पुत्र शिखा सूत्र, तिनकी दीक्षा सुहाए।।३१

मंत्र : ॐ हीं नीलहंसः सोऽहम् परमहंसः।
सच्चिदानन्दो देवता । सोऽहम् ब्रह्मेति मंत्रः।।

या भांत सन्यास मत, दीक्षा मंत्र सब बिद्ध।
और द्वादस परमहंस गायत्री, सुनी सतगुरें ताकी सिद्ध।।३२

मात-पिता उधारण कारण, अपने पिंड और प्राण।
पूरब जनम उद्धारवे को, मत सन्यास प्रवान।।३३

जागृत कुल गुरू चरने बरन्यो, नसे कोट अघपाप।
नारायण की है प्रापती, पारायण सब जग आप।।३४

पच्छिम मन्या के तीरथ आश्रम, पूरब मन्या वन आरन।
उत्तर मन्या गिरि परवत सागर, सबके तरन तारन।।३५

दक्षिण पुरी भारती सरस्वती, यों दस नाम मठ चार।
ए मत जुगान जुग चले आये, जे सुनाये तुम्हें सार।।३६

वेद उक्त सन्यास मत, गुरूदत्त उजास।
परमहंस परिब्राज का, संकर कह्यो प्रकास।।३७

सन्यास मत के आचारज, चारों जुग के जेह।
तिनके नाम कहत हों, सुनियो चित दे तेह।।३८

Nijanand App

ब्रह्मा विस्णु रूद्र सतजुग में, त्रेता जुग में तीन।
वसिस्ट सक्ति परासर, ए देखो तुम चीन।।३९

द्वापर जुग में दो आचरज, व्यास सुकदेव नाम।
कलियुग में पुनि तीन हैं, गौड गोविन्द संकर टाम।।४०

संकराचारज के चार सिष्य भये, तिन में ब्रह्माचारज एक।
दूजे पदमाचारज, तीजे नराटोटकाचारज विसेख।।४१

चौथे श्रृंगी ऋषि कहे, तिन चारों के हैं सिष्य दस।
सोई दस नाम सन्यास हैं, मारग बांध लियो जस।।४२

ब्रह्माचारज के सरूपाचारज, तिनके हैं सिष्य दोय।
एक तीरथ एक आश्रम, देखो दण्डीवान प्रसिद्ध होय।।४३

पदमाचारज के बलभद्र, तिनके वन आरन।
नरा टोटकाचारज, गिरि पर्वत सागर तरन तारन।।४४

श्रृंगी ऋषि के उर्द्धाचारज, तिनके सरस्वती भारती पुरी।
ए दस नाम विस्तार कलिजुग में, सन्यास सम्प्रदा प्रगट करी।।४५

प्रकरण।।३६।। चौपाई।।१७२७।।

अथ षट दर्सन की बिध

षट दर्सन बोले तबे, प्राचीन हम मत।
सो देखो तुम समझके, भगवत प्रापत सत।।१

Nijanand App

चतुर्मुखी ब्रह्मा सदा, चार वेद नित्यान।
अध्ययन अहनिस करें, पूर्व मुखें ऋग जान।।२

अध्ययन उत्तर मुखें, करें अथरवन वेद।
पच्छिम मुख तें बोलहीं, यजुर्वेद के भेद।।३

दखिन मुख ते उचरे, सामवेद नित्यान।
तिनके षट अंग हैं सही, कहों तिनके प्रमान।।४

प्रगट भये मुख पूर्व तें, नैयायिक दरसन।
पच्छिम मुख तें प्रगटे, तिनके कहों बचन।।५

पातांजल और सांख्यमत, वैसेसिक परवान।
पच्छिम मुख तें प्रगटे, तीन सास्त्र ए जान।।६

मीमांसा दरसन चतुर, दखिन मुख तें होए।
अति निरमल वेदान्त मत, उत्तर मुख ते सोए।।७

एह विध खट दरसन भये, तिनके कहों प्रमान।
खट आचारज हैं सही, नाम सुनो तिह ज्ञान।।८

गौतम तें प्रत्यक्ष हुआ, न्याय सास्त्र प्रकास।
मीमांसा दो मिल कही, जैमुन जी और व्यास।।९

कर्म विवेक जैमुन कह्यो, सारीरिक कृत व्यास।
मीमांसा की दोय विधि, कहीं तुम्हें प्रकास।।१०

Nijanand App

कपिल देव तें सांख्य है, पातान्जल मत सेस।
कर्ण देव वैसेसिक, सिव वेदान्त उपदेस।।११

ए आचारज मूल हैं, छेऊ सास्त्र के लेख।
वाद चतुर को करत है, भिन्न भिन्न मत देख।।१२

नैयायिक दरसन की, भेद वाद विध आये।
माया जीव ईस्वर त्रई, भिन्न अनादि सुहाये।।१३

बीस एक परनालिका, सीढ़ी दुख की जौन।
नास होय तब सुख को, प्रापत होवे तौन।।१४

प्रसन कियो श्रीजू तबे, तुममें नही विचार।
ईस्वर जीव विनास है, तुम्हारे बचन मंझार।।१५

बीस एक सीढ़ियां कही, दुख की भारी जौन।
तिन मध्य माया जीव सब, कहो सुख की सो कौन।।१६

सूक्ष्म सरूप नित तुम कह्यो, स्थूल कहत हो नास।
बीस एक सीढ़ियन से, कहां नित को बास।।१७

तब मीमांसा दरसनी, बोले कर्म प्रधान।
कारण करता कर्म है, कर्म इस्ट प्रमान।।१८

जीव ईस्वर ब्रह्म हैं, सब कर्मन को रूप।
कर्म बिना कछु और नहीं, सदा अनादि अनूप।।१९

Nijanand App

श्री जी बोले प्रस्न तब, कर्म विषे हैं भ्रांत।
ब्रह्म अखण्ड सरूप हैं, सदा एक रस जात।।२०

कर्म तहां उपजे खपे, थिरता उनमें नाहिं।
अहंकार मन का अमल, कर्म लगत है ताहिं।।२१

अहंकार मन जीव में, तिहितें कर्मी सोए।
मन पहुंचे नही ब्रह्म को, कर्म तहां क्यों होए।।२२

माया ते पुनि रहित हैं, ब्रह्म सरूप समान।
वेद सास्त्र में यों कह्यो, तुममें ताना तान।।२३

सांख्य सास्त्र के दरसनी, बोले तबै विचार।
प्रकृत पुरूष सबके परे, सबको कारण सार।।२४

प्रकृत पुरूष जब मिलत हैं, जगत प्रगट तब होए।
भिन्न भये मिट जात हैं, हमरो मत यह सोए।।२५

प्रकृत पुरूष तें कहत हो, जगत भयो सब एह।
सूरज दृस्टें तिमिर रहें, एही बड़ो सन्देह।।२६

महाप्रलय सब जगत को, प्रकृत पुरुष लों होए।
रूप रहे नही प्रकृत को, मिले कहां ए दोए।।२७

निराकार के मूर्त है, भेद कहो समझाए।
प्रलय मध्य अस्थान कहां, रहे कहो सब भाए।।२८

Nijanand App

जो तुम अपनी बुद्ध कर, निराकार कहो ताहिं।
तो मिलन कहो कैसे भयो, दोऊ भेद पुनि नाहिं।।२६

वैशेषक दरसन तब बोले, सबको मूल काल मत खोले।
काल पाए उपजत है एही, ख्याल खेलावत सबको तेही।।३०

सबको खाए करत है नासा, एही रूप ब्रह्म को वासा।
श्री जु प्रश्न कियो तब तिनको, मूल कहत हो काल जो सब को।।३१

वेद वाक्य मध्य काल को नास, काल रहित है ब्रह्म प्रकास।
कह्यो श्रुति स्मृति के माहीं, काल तहां पहुंचत है नाहीं।।३२

काल पाये उपजे सो बिनसे, उतपत लीन होय सब तिनसे।
ब्रह्म माहीं उतपत लय नाहीं, सब तें दूर रहे सब माहीं।।३३

कह्यो सरूप ब्रह्म को ऐसो, तुम तो कहत हो सबलिक जैसो।
अंग सबलिक माया माहीं, निर्विकार सब ही में नाहीं।।३४

होय काल मध्य ब्रह्म सो नाहीं, या विध कहयो वेद के माहीं।
निराकार तुम काले कहो, तैसो रूप ब्रह्म को लहो।।३५

तब बोले पातांजल ज्ञानी, व्यापक ब्रह्म सकल मध्य जानी।
एही भवन ब्रह्म को लेखो, व्यापक इतहीं है तुम देखो।।३६

पिण्ड माहिं आठ अंग लेके, खोज कीजिये जब चित दे के।
नाड़ी चक्र सोधिये जबहीं, मिले ब्रह्म आप में तबहीं।।३७

आठ अंग योग के जेही, नाम कहत हों तिनके एही।
आसन प्राणायाम जो कहिये, प्रत्याहार धारणा लहिये।।

ध्यान समाध नेम जप जोई, आठों अंग योग के सोई।
ज्योत रूप तुम ब्रह्म ही मानों, कारण बीज जगत को जानो।।

उपजे उपजावे सब यामें, जगत रहत किरना सम तामें।
बुद्ध विषे लेओ ऐ मत सार, ग्रहो चित में कर निरधार।।

श्री जी पूछयो प्रश्न विवेकें, मेटो आसंका ए चित देके।
ब्रह्म सच्चिदानन्द सरूप, जगत असत जड़ दुख को रूप।।

सत वस्त ते सत ही उपजे, द्रव्य असत तें असत ही निपजे।
इच्छा रहित ब्रह्म श्रुति के माहीं, उपज खपत तामें कछु नाहीं।।

उपज खपत माया तें होई, वेद सास्त्र मध कह्यो जो सोइ।
वेद कहत माया में भास, तातें करत सक्त प्रकास।।

किरना सूरज भेद न आए, माया ब्रह्म बीच बहु भाए।
परस्पर प्रतिवादी दोऊ, एक पात्र मध्य रहे न कोऊ।।

सत असत की जात है न्यारी, यामें रहे विचार बहु भारी।
रहे प्रमान बचन सब केरे, यह विध खोलो प्रस्न जो मेरे।।

फेर वेदान्ती दरसन जेही, ब्रह्म बिना कछु कहत न तेही।
माया को अनाद पुन कहे, माया सदा ब्रह्म मध्य रहे।।

माया माहें ब्रह्म है व्यापक, सर्व देसी है सर्व लायक।
ब्रह्म बिना दूजा जो देखे, तिनको हम अज्ञानी लेखें।।४७

अणु तें तुम हस्ती लों जानों, एक ब्रह्म सब माहिं बखानों।
इच्छा रहित सबन तें न्यारा, करता कर्म न कछु बिचारा।।४८

साक्षीः जो तुम सर्वत्र ब्रह्म कह्यो, तब तो अज्ञान कछुये नाहिं।
तो खट सास्त्र भये काहे को, मोहे ऐसी आवत मन माहिं।।४९

निराकार सब माहीं बिराजे, इच्छा रहित सदा छब छाजे।
होत जगत कौन तें एही, मेटो आसंका तुम अब तेही।।५०

ब्रह्म विषे माया कछु नाहीं, तीन काल रहित नहीं ताहीं।
पुन अनाद माया को कही, ब्रह्म सर्वत्र माया बिध लही।।५१

ब्रह्म मध्य माया कौन विध, तीन काल नहीं आए।
सर्वत्र ब्रह्म किहि बिध लसे, भेद कहो समझाए।।५२

पुन अनाद माया कही, कौन भाँत है सोए।
निराकार साकार के, कहो भेद जो होए।।५३

साखी : भिन्न आत्मा जगत ते, संकर कही प्रकास।
पुन आत्मा सब में कही, कहो भेद प्रकास।।५४

वेदान्तन से वाद बहु, भया जो मेला माहिं।
कहाँ लों कहों बनाए के, देखो हते जो वाहिं।।५५

कोई कहे सबे ब्रह्म है, तब तो अज्ञान कछुए नाहीं।
तो षट सास्त्र भये काहे को, मोहे ऐसी आवत मन माहीं।।५६

ए सबे षट दर्सनी, षट सास्त्र अचारज जोए।
न्यारे न्यारे मत सबे, सुने श्री राज नें सोए।।५७

तब सब मत मारग नें मिलके, कही श्री जी सों विख्यात।
अपने मत हम सब कहे, अब आप कहो साख्यात।।५८

कौन सास्त्र में कहां कही है, सो हमें कहो दे साख।
नई राह है तुम्हारी, सो कहो हमें विध भाख।।५९

(श्री जी का जवाब)

कही व्यास हरवंस में, देखो संत विचार।
जनमेजय राजा प्रते, सुनो विरोध तज सार।।६०

कही अनहोनी व्यासें नृपसों, नृप सुन पूछत सोए।
ब्रह्म रूप मुनि प्रकट हैं, दुर्घट सब थे जोए।।६१

नृप तब पूछी व्यास सों, सनकादिक थें सोए।
तुम लों ऋषि बहु प्रगटे, क्या ब्रह्म रूप तुम ना होए।।६२

तब व्यासें नृप सों कही, वे भये नहीं कोई काल।
हू हैं प्रकट कलयुग में, प्रगट आए के हाल।।६३

उत्तम पुरूष बिन और को, देवी देव न ध्याये।
अकथ कथा नवतन कहे, जग सुन पूजे ताये।।६४

ए व्यासें नृप सों कही, बहुत विध विस्तार।
तिनकी साख जो देत हों, देखो संत विचार।।६५

श्लोक : उक्तम् च हरिवंशे भविष्योत्तरे।।

अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ब्रह्मरूपिणः।
उत्पन्ना ये कलौयुगे, प्रधान पुरूषाश्रयाः।।

कथायोगेन तान्सर्वान् पूजयिष्यन्ति मानवाः।
यस्य पूजा प्रभावेन जीव सृष्टि उद्धारणम्।।

(हरिवंश पुराण भविष्य पर्व अ० ४, श्लोक २१-२२)

या भांत वेद उपनिषद में, विध विध कही बनाए।
और अस्टादस पुराण में, आगम सास्त्र लेखाए।।६६

जो ग्राहक या वस्त को, सो लेवे चित ल्याए।
ताको वेद उपनीषदें, हम सब दे समझाए।।६७

तब सबने चित में लई, ए नहीं कहूं बंधाए।
पूछिए धाम क्षेत्र संप्रदा, तब जवाब नहीं आए।।६८

स्वामी विध संप्रदाए की, कहो साख दे सोए।
ज्यों हम अपनी सब ने कही, त्यों तुम कहो प्रसंन होए।।६९

करके गर्व बोले सबे, प्रस्न विविध विस्तार।
साखा सिखा कहो आपनी, फेर कहो सूत्र विचार।।७०

सेवन अपनो निज कहो, गात्र इस्ट अरू जाप।
साधन मंत्र पुरी कहो, कहो देवी परताप।।७१

साला कहिए अपनी, क्षेत्र होए जो कोए।
सुख विलास रिष देव जो, तीरथ सास्त्र जो होए।।७२

ग्यान कहिए कुल आपनो, फल और द्वार प्रकास।
कहां निवास कौन संप्रदा, कहो उत्तर प्रस्न उजास।।७३

कृपा द्रस्ट बोले तबे, सुनो साध सब कोए।
प्रस्न प्रस्न को उत्तर, तुमको दें हम सोए।।७४

अकथ भेद अदभुत एह, चित दे सुनो तुम सब।
कीजो हिरदे विचार, धरो दोस जिन अब।।७५

श्रुति स्मृति की साख दे, कहों तुमें समझाए।
ग्राहक हो चित दे सुनो, तो कलजुग भ्रम जाए।।७६

(श्री निजानन्द सम्प्रदाय)

सतगुर ब्रह्मानंद है, सूत्र है अक्षर रूप।
सिखा सदा इन सें परे, चेतन चिद जो अनूप।।७७

श्लोक : ब्रह्मानन्दं परम् सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम्,
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम्।
एको नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षि रूपं,
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरं तं नमामि।।

(स्कन्द पुराणे गुरूगीतायाम्)

श्लोक : यदक्षरं परं ब्रह्म तत्सूत्रमिति धारयेत्।
सूचनात्सूत्रमित्याहुः सूत्रं नाम परं पदम्।।
तत्सूत्रं विदितं येन स विप्रो वेदपारगः।

(ब्रह्मोपनिष

श्लोक : शिखा ज्ञानमयी यस्य उपवीतं च तन्मयम्।
ब्राह्मण्यं सकलं तस्य इति ब्रह्मविदो विदुः।।
चिदेव पंचभूतानि चिदेव भुवनत्रयम्।।

(ब्रह्मोपनिषद

श्लोक : आनन्द विज्ञान घन एवास्मि।
तदेव मम् परमं धाम तदैव शिखा तदेवोपवीतं च।।

(परमहंस उपनिषद

सेवन है पुरूषोतम, गोत्र चिदानंद जान।
परम किशोरी इस्ट है, पतिव्रत साधन मान।।७८

श्लोक : द्वाविमो पुरूषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कुटस्थोऽक्षरः उच्यते।।
उत्तमः पुरूषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।

(गीता १५/१६-१७

श्लोक : अनादिमादिं चिदरूपं चिदानन्दं परं विभुः।
वृन्दावनेश्वरं ध्यायेत त्रिगुणस्येक कारणम्।।

(वाराह संहितायाम् गोत्रस्य सार्क्ष

श्लोक : सिद्धिरूपासि चाराध्या राधिका जीवनं मम् ।
ये स्मृत्वा भावयन्ति त्वां तैरहं भावितः सदा ।।
तत्र में वास्तवं रूपं यत्र यत्र भवद्दृशः ।
ममेष्टं च ममात्मा त्वं राधैव राध्यते मया ।।

(पुराण संहिता ६/३६-३८)

श्लोक : नाहं वेदैर्न न तपसा न दानेन न चेज्यया ।
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवं विधोऽर्जुन ।।

(गीता ११/५३,५४)

श्री जुगल किशोर को जाप है, मंत्र तारतम सोए ।
ब्रह्म विद्या देवी सही, पुरी नौतन मम जोए ।।७६

श्लोक : राधया सह श्रीकृष्णं युगलं सिंहासने स्थितम् ।
पूर्वोक्तं रूप लावण्यं दिव्य भूषा श्रृंगम्बरम् ।।

(वाराह संहिता)

श्लोक : स्वकृत विचित्रयोनिषु विशन्निव हेतुतया,
तरतमतश्चकास्स्यनलवत स्वकृतानुकृतिः ।
अथ वितथास्वमूष्ववितथं तव धाम समं,
विरजधियोऽन्वयन्त्यभिविपण्यव एक रसम् ।।

(भागवत १०/८७/१९)

श्लोक : ॐ ब्रह्म विद्या प्रवक्ष्यामि सर्वज्ञानम् उत्तमम् ।
यत्रोत्पत्ति लयं चैव ब्रह्माविष्णु महेश्वराः ।।

(ब्रह्म विद्योपनिषद)

अठोत्तर सौ पख साखा सही, साला है गौलोक ।
सतगुरू चरण को छेत्र है, जहां जाए सब सोक ।।८०

सुख विलास मांहें नित ब्रन्दावन, रिष महाविष्णु है जोए ।
वेद हमारो स्वसं है, तीरथ जमुना सोए ।।८१

सास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुद्ध जागृत को ज्ञान ।
कुल मूल हमारो आनन्द है, फल नित्य विहार प्रमान ।।८२

दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अक्षरातीत निवास ।
निजानन्द है सम्प्रदा, ए उत्तर प्रस्न प्रकास ।।८३

धनी श्री देवचन्द्र जी निजानन्द, तिन प्रगट करी सम्प्रदा ऐह ।
तिनथें हम यह लखी हैं, हम द्वार पावें अब तेह ।।८४

तो या भांत चर्चा बहुत, भई मेला में जान ।
साख दई सब सास्त्र की, अवगत गति जो प्रमान ।।८५

तहाँ पैतीसा के बरस में, भये निसान धूम्रकेत ।
खय भई एक मास की, इन समै जगत भयो अचेत ।।८६

साके विजयाभिनन्द के, पुकारत सब कलाम ।
ताको सबै पढ़त हैं, पर भूली खलक तमाम ।।८७

जीती फौज सिरे संसार की, कारज कारन विस्तार।
तहाँ तमासा देखके, फेर के किया विचार।।८८

दाउद पाण्डे की हवेली में, साथ को छोड़े जब।
हरद्वार से होए के, आए के मिले तब।।८६

इन समें खिजमत में, रहता था गरीब दास।
खान सामा खिताब दीवान का, कह्या कलाम खास।।६०

एह लालदास को, हुआ था हुकम।
इसी वास्ते आगे को, रखता था कदम।।६१

प्रकरण।।३७।। चौपाई।।१८१८।।

फेर श्री राज आए दिल्ली, आए मिले सब साथ।
मास चार इत भये, फेर साथ के पकड़े हाथ।।१

इत विचार करके, राखें एक तरफ सरूप दे।
लड़े छड़े होए के, देखें कैसा काम होवे जेह।।२

तब अनूप सहर को, सब साथ को ले चले।
तहां एक हवेली लेय के, सब साथ को रखे।।३

इत रहत एक पाठक, अनूप सहर का चोधरी।
दो दिन आया दीदार को, तिन सों चरचा करी।।४

सीसा एक गुलाब का, आगे धराया तिन।
उपली कछुक पेहेचान से, और न चीना किन।।५

तहां साथ को राख के, फेर आये दिल्ली में।
उतरे आय साहगंज में, आये बातें करी साथ से।।६

साथ जो दिल्ली का, आये मिला सब धाए।
तिन सबको परियान की, बातें करी बनाए।।७

तहां सेती पाती लिखी, बिहारी जी ऊपर।
एक सकस चलाया, सारी दे खबर।।८

फेर इहां से चले, आए लाल दरवाजे में।
साथ सबे मिल के, परियान किया तिन से।।९

आसाजीत बुलाइया, सुनाए सब कलाम।
सिफत जो तिन में, महम्मद अलेहु सलाम।।१०

नबी और नारायण की, कछु सुनाई पहिचान।
तब ऐ बात सुनके, खड़ भड़ पड़ी ईमान।।११

हिन्दुओं के तरफ की, कछु न रही ठौर।
इनमें तो कछु न रह्या, बड़ा होत है जोर।।१२

मैं देखत हों तुमको, बिन सिर के आदमी।
कानों तो सुने हते, तुमको देखे इन जिमी।।१३

अमल औरंगजेब का, और सरियत का अमल।
तिनसों तुम लड़त हो, इत मोहे न पड़े कल।।१४

तब विचार करके, छोड़ दिया इनको।
विचार अपने साथ में, करे आपुस मों।।१५

कौन नजीकी इनका, करें तिनसे मिलाप।
कहें हकीकत आपनी, इनें छूट जाए सब ताप।।१६

ऐ विचार करके, जाए मिले सेख सलेमान।
तिनसों कहा हमको, मिलाओ सुलतान।।१७

इन मिलाप श्री राज सों, किया था बेर दोए।
इनके दिल में कुफर, कीमियां मांगे सोए।।१८

इनको एक फकीर की, बात कही समझाए।
बैठा फकीर पहाड़ में, तिनके भेजे हम आए।।१९

तुम्हारे दिल के बीच में, जेता कोई मनोरथ।
सो सारे तुम्हारे, पूरे करें अरथ।।२०

एक दीन सब होवहीं, भागे सबरो क्रोध।
आपुस में लड़ मरत हैं, सो मिट जावे क्रोध।।२१

और सब तुम्हारे दुस्मन, आपे होवे जेर।
तुम्हारा सिर ऊंचा होवे, जाय लगे सिर मेर।।२२

और जेता कोई कीमियांगर, करने वाले धात।
ते कदम तुम्हारे पकड़ें, आधीन हो करें बात।।२३

और डर सुलतान के, रहे न कोई कित।
तुमको खुदा करे रसूल का, दीदार होवे इत।।२४

जब ए बात लिख दई, तब डरा सेख सलेमान।
तब इत की पातसाही, कौन करे सुलतान।।२५

तब जवाब इनको दिया, इन फकीर की पातसाही।
हकें दई दीन की, जाहिर की न दिखाई।।२६

जो कोई होवेगा फकीर, हक ताला की तरफ।
सो दुनियां मुरदार की, थूक ना काढ़े हरफ।।२७

ऐह बात सुन के, देहेसत भई दिल में।
ऐ बात बड़ी बुजरक, क्या मालूम होए मुझसे।।२८

महामत कहें ए मोमिनों, याद करो हजरत।
जो लड़ाई तुम करी, कायम करने क्यामत।।२९

प्रकरण।।३८।। चौपाई।।१८४७।।

लाल दरवाजे की हवेली में, श्री राजें किया हुकुम।
लाल गोवरधन को कह्या, जाए मुल्ला पूछो तुम।।१

क्या कुरान में कहत हैं, कैसी हैं मजकूर।
किनको ए ठहरावत, सो मुझ आगे करो जहूर।।२

इन समय काम करन की, उरझ रही सब बात।
कैसे कर पहिचानेगा, अपनी असल जात।।३

लाल गोवरधन गए, एक मुल्ला पास मेहेजद।
बातें सुनत मुल्लां की, आपुस में भई जिद।।४

मुल्ला के बातन की, लालें भई पहचान।
एतो हमारे घर की, तहकीक भया ईमान।।५

गोवरधन के दिल में, डर रहे मुसलमान।
पोहोरा औरंगजेब का, जिन कोई सुने कान।।६

तिस वास्ते झगड़ा भया, लाल बातें करें मिने जोस।
टूक टूक होवे इन बात पर, दुनियां थी फरामोस।।७

दोऊ राह में लड़के, आये लाल दरवाजे सोय।
राज आरोगन को समै, दिन रह्या घड़ी दोय।।८

ऊंचे अटारी पर, बैठे हते श्री राज।
गोवरधन तहां पहुंच के, कही सुनी चरचा जो आज।।९

इतनी बेर में तित-हिं, लालदास आए पहुंचे।
बातें सुनी तिन की, कही गोवरधन जे।।१०

वहां की बातें सुनके, कहने लगा जब।
ए जो लालदास नें, अरज करी तब सब।।११

हमारा इन चटाई पर, मन होत है और।
इहाँ सेती उठ जात हैं, तब चेहेन न रहवे ठौर।।१२

तब भाई गोवरधन को, रीस चढ़ी बनाए।
ऐ सब मोकों कह्या, तुम जानत नाहीं ताए।।१३

दोउ बातां श्री राज देख के, दिल में किया विचार।
इनों की अकल ऊपर, मोहे कैसो इतबार।।१४

इन समै श्री राज को, नूर जोस चढ़ियो जोर।
आए जबराइलें जोरा किया, असराफीलें किया सोर।।१५

मोंह आगे बिजलीय के, चमकत लेहेरां दई।
तब श्री राज के मुख से, ए बातां पुकार कही।।१६

कारखाना कागद का, ए सौंप्या लालदास।
उदयपुर को जावहीं, भीम मुकन्द मोमिन खास।।१७

गोवरधन भट्ट को कह्या, सूरत जाओ तुम।
अनूप सहर हम जात हैं, एह हुआ हुकम।।१८

दई वस्तां जोस में, सेख बदल को हुकम।
कागद लालदास को, मुकन्ददास तारतम।।१९

बुध दई भीम को, गोवरधन को सूरत।
मुकुन्द भीम उदयपुर, हम जात अनूपसहर इत।।२०

भागी सारी उरझन, कोई न रह्या काम।
प्रात को उठ ले चले, अनूप सहर के ठाम।।२१

महिना था आसाढ़ का, बरखत धारा अखण्ड।
पोठी ऊपर बैठ के, पहुंचे अनूप सहर तत खिन।।२२

मारग मिने चलते, दई मानिक औखद।
पेट छूटा तहां जाए के, कछु न रही हद।।२३

इन समय सरीर को, बड़ी भई कसोट।
डर के लालबाई रोई, ले धनी की ओट।।२४

तब आप दिलासा करी, जिन कोई डरो तुम।
फिरी न मेरी सुरत, तब तुम्हें खबर करों हुकम।।२५

उस बखत जबराईलें, बड़ा जो किया जोर।
उतरे कलाम कादर से, करो खेल में सोर।।२६

तौरेत किताब में, उतरी सनंधे तीस।
सब खबर कुरान की, हकें करी बकसीस।।२७

सनंधे लिख तैयार करी, विचार देखे सुकन।
ऐह बानी सुनके, पीछा न हटे मोमिन।।२८

इन मजल ऐसा हुआ, सब कारज भये सिध।
अपने निज वतन की, आई जागृत बुध।।२६

अब ए बानी सुनके, कोई न फिरे ईमान।
जब पहुंचे सकुमार को, टूक टूक होवे सुलतान।।३०

इन बखत पाठक के, कछु दिल में भई सक।
देखी अन्दर विचार के, कैसी बात माफक।।३१

पधराए अपने घरों, बिछौने कर साज।
बातें राजें सब करीं, बीतक अपनी तहाँज।।३२

तब एह सुन के, बहुत हुआ खुसाल।
अरज अपनी करने लगा, माफक अपने हाल।।३३

इहाँ सेती आये के, साथ को दिया दीदार।
तुमको सैंया हुकम, जो भेजा परवरदिगार।।३४

हुआ हुकम हक का, सेख बदल ऊपर।
जाओ तुम सुलतान पे, देओ खुस खबर।।३५

सेख बदल बिदा हुये, चले तरफ सुलतान।
सनंधे सिर पर बांध, ले दिल में ईमान।।३६

पहुंचे दिल्ली सहर में, बखत जुमें निमाज।
ईदगाह चला गया, मैं पैगाम पहुंचाऊं ताए आज।।३७

तहाँ खलक ठाड़ी रहे, चित्त न काहू एक ठौर।
सेख बहुत पुकारिया, देखा दज्जाल का बड़ा जोर।।३८

कोई कहे हिन्दवी मिनें, लिखे एह कलाम।
बातां तो बरहक हैं, पर हमें रवा नहीं इस ठाम।।३९

इन भाँत बातें सुनके, फेर आये अपनें ठौर।
गनीबेग की हवेली में, जाए पहुंचे और।।४०

तहाँ सनंधें बाँचन लगे, बिना एक महम्मद।
तब एक सैयद बोलिया, बात जेहेल की लिए जिद।।४१

क्यों कुफर बोलत हो, है एक महम्मद अलेहु सलाम।
एते पैगम्बर भये, तिन काहू नाहीं नाम।।४२

तब सेख बदल सों, झगड़ा हुआ इत।
उत से पीछे फिरके, घरों आये तित।।४३

दिन दोए चार में, अनूप सहर से आये श्री राज।
बुलाया सेख बदल को, पूछा पैगाम का काज।।४४

तब सेख बदल ने, अपनी कही बीतक।
मैं तो बहुत पुकारिया, इनों पीठ दई तरफ हक।।४५

कोई कलाम हिन्दवी का, ल्यावत है दिल सक।
काहू दिल में कुफर, कोई बात कहे बुजरक।।४६

फेर बैठे विचार को, इन वातां सुनी न कान।
लाल गोवरधन मिल के, जाए कहो सेख सलेमान।।४७

तब फेर उत गये, जाए के किया मिलाप।
सारी हकीकत कही, जाके सुने मिटे सब ताप।।४८

आज मिलाऊं कल मिलाऊं, यों फिरते मास भये दोए।
कबहूं कछु कबहूं कछु, जवाब करत हैं सोए।।४६

कहे पहिले तो इन भेष सों, मिलत नहीं सुलतान।
भेष तुम्हारा बदलो, तो सुलतान सुनाऊं कान।।५०

यों करते विचारते, कछु न देखी साख।
तब आपस में कह्या, अब फिरो इन से आप।।५१

लाल दरवाजा छोड़ के, आए सराए रोहिलाखान।
ए कलाम पारसी में करें, तब होवे पहिचान।।५२

तब एक मुल्ला पारसी का, हुकम हुआ दयाराम।
बुलाय ल्याओ तिनको, लिखे पारसी में कलाम।।५३

तब लड़के काइम को, बुलाय ल्याया दयाराम।
राखा चाकर दे महिना, वास्ते लिखने इन काम।।५४

सेखजी मीराजीय का, लिखया इत संवाद।
तिन में सारी हकीकत, लिखी जो बुनियाद।।५५

इनकी जिल्दें बांध के, रूक्के किये तैयार।
टौर टौर पहुंचाये, जो थे सुलतान के यार।।५६

पुकार करी घर घर, सब देखे मुरदार।
राह खुदाइ के वास्ते, कोई न हुआ खबरदार।।५७

उस्ताद सुलतान का, ए जो सेख निजाम।
कोई दिन इनके इहाँ फिरे, ना लायक देखा इसलाम।।५८

एक सौदागर सूरत का, रहे चांदनी चौक में।
तिन पाया दीदार राज का, मिलाप था तिन सें।।५९

तिन ने कह्या मेरे पास, है दज्जाल नामा।
तुमको मैं दिखाऊंगा, दज्जाल की सामा।।६०

सो लेने के वास्ते, लाल जाए बेर एक।
वह नित वायदा करे, बातें करे अनेक।।६१

केतेक दिन फिराया, तब भया मुनकर।
मेरे तपसीर है हुसैनी, जो बड़ी मातबर।।६२

तब पूछा लालदास नें, उन में क्या खबर।
कुरान अरथ पारसी, है जाहिर सब ऊपर।।६३

ए बात लाल ने आए के, आगे करी श्री राज।
हुकम हुआ लाल को, ले आओ तुम आज।।६४

लाल फेर उनके घर गये, फिरते भए दिन चार।
फेर लालें आए के कह्या, याको झूठो लगत विचार।।६५

उस बखत में हाजिर, बैठा था दयाराम।
तिनने अरज करी, मुझे कहो ए काम।।६६

तब श्री राजें हुकम किया, तुम ल्याओ हुसैनी तपसीर।
बड़ी चाह है हम को, पहुंचे मजल मीर।।६७

तब हुकम श्री राज का, सिर चढ़ाया दयाराम।
अपने अस्नाओं रहत थे, तिनसों कहा ए काम।।६८

हमारे अस्नाओं ने, पाती लिखी हम पर।
हुसैनी मँगाई है, बहुत निहोरा कर।।६९

तब उनने कह्या, मैं करों तुम्हारा काम।
तबहीं सुन हाजिर करी, दई हाथ दयाराम।।७०

लिये चालीस रूपया, तिनमें दिए दो फेर।
खुसाल हुआ दयाराम, जाए लगा सिर मेर।।७१

वहाँ से लेकर धाया, आये पहुंचा पास श्री राज।
ले तपसीर आगे धरी, ऐ हुआ सिध काज।।७२

तपसीर को देख के, श्री राज भये खुसाल।
बातें लगे करनें, आगे गुलाम लाल।।७३

इन समय कायम के, तपसीर दई आगे।
देख इनके मायनें, हमको सुनाओ ऐ।।७४

प्रथम इन्ना इन्जुलना सूरत इन पढ़ी, जामें तीन तकरार।
इसारतें सारी खुलीं, जो लिखीं परवरदिगार।।७५

हम ही थे ब्रज रास में, हम तीसरे आये इत।
ऐ तो वही बात है, जो हम को कही तित।।७६

इन्ना आतेना सूरत, पढ़ी मुल्ला ने जब।
जमुना ताल पाल की, हकीकत पाई तब।।७७

जब चोट लगी श्री राज को, आया ऐसा हाल।
ना रही उठने की ताकत, हुये अत खुसाल।।७८

तीन रोज लग सेज से, उठ ना सके तब।
सुने सुकन तपसीर में, कलाम रब्बानी जब।।७६

साथ आगे बैठ के, चरचा करी बनाए।
हुई खुसाली साथ में, लई साखें मिलाए।।८०

एह खुसाली अपनी, पहुंचाई सब साथ।
एह तो मोमिनों वारसी, जाके हकें पकड़े हाथ।।८१

पाती लिखी उदयपुर को, और साथ सबन।
तुम ठौर ठौर पहुंचाइयो, जो कोई साथ सैयन।।८२

सुनियो भीम मुकुन्द जी, उद्धव केसव स्याम।
हम पाती पढ़ी महम्मद की, सब पाई हकीकत धाम।।८३

अपने घर की इसारतें, और न समझे कोए।
और कोई तो समझें, जो कोई दूसरा होए।।८४

इन भाँत की पातियां, पहुंचाई सब साथ।
खुसाली तिनको दीजियो, जो लड़त दज्जाल सों बाथ।।८५

इन समय नवतन पुरी से, आए पहुंचे प्रेमदास।
नागजी संगजी सामिल, आये प्रमोधनें की आस।।८६

ए आये दिल्ली मिने, सराए हवेली रोहिल्ला खान।
एक दावा ले बैठे ईसे का, इनका तिन पर था ईमान।।८७

थे गिरोह यहूदन में, इनों था मसनन्द का काम।
अकस राखते दीन से, जो बरहक इसलाम।।८८

रसूल साहिब की बात को, कबहू न सुने कान।
खुदा एक महम्मद बरहक, तापर ना ल्यावें ईमान।।८९

ए आये मजलिस मोमिनों की, इहाँ बिना महम्मद और न बात।
ए देख ताज्जुब भये, बड़ी चरचा हुई खुदा की जात।।९०

जब रूबरू भये राज सों, तब बातें करी मिने जोस।
आप आड़े कछु न देखहीं, इलम था फरामोस।।९१

जब चरचा करी हजूर नें, दई श्री देवचन्द्र जी की पहिचान।
श्री महम्मद साहिब का, रोसन किया ईमान।।९२

जो बात कही महम्मद नें, सोई रूह अल्ला कलाम।
मिला दिखाये दोनों इनों को, ए हुआ दीन एक इसलाम।।९३

जब ईसा महम्मद मिल गये, कलमा और तारतम।
भागा दिल का कुफर, जाग देखी आतम।।९४

कहे सुकन जब राज नें, बड़ा देख्या जोस।
तब दीन यहूदन का, सब हुआ फरामोस।।९५

तब अपनी जुबान सों, बातें कही ईमान।
हम श्री देवचन्द्र जी को इत देखें, भई हमको पहिचान।।९६

खुदा एक महम्मद बरहक, हमको रही न सक।
सुनाई सनंध कलस की, ए तो है माफक।।९७

हम तो तहकीक किया, तुम हो बीच इसलाम।
तुम्हारी किताब का, हम लिख पावें कलाम।।९८

हम भी सब साथ को, लिखेंगे सुकन।
हम अब लों भूले थे, है इत बात मोमिन।।९९

श्री धनी देवचन्द्र जी को, हम देखा है इत।
तुम ईमान ल्याईयो, जो कोई होवे जित।।१००

इन भाँत सब साथ को, पाती लिखी बनाये।
सो पाती सब ठौरों को, दई सबों पहुंचाय।।१०१

सेख बदल और नाग जीं, एक ठौर किये जब।
संग जी सामिल होय के, ताम खिलाया तब।।१०२

कुफर सारा दिल का, भाग गयी सब सक।
एक दीन होए मिले, ल्याये ईमान ऊपर हक।।१०३

इन भाँत बाईस दिन, रहे सोहबत में।
प्रेमदास ने देखिया, बात इन किस्से सें।।१०४

कह्या प्रेमदास नें, हम सों बातें करते और।
रूबरू में देखिया, ईमान ल्याये इस ठौर।।१०५

प्रेमदास रह गया, ए दोऊ चले अपने मुकाम।
जिन बात को आये थे, सो कर चले काम।।१०६

जब इत से पीठ दई, तब घेरे सैतान।
बसबसा करने लगा, छीन लिया ईमान।।१०७

साथ में जहां मिले, तहां बातें दुदिली करें।
सब कोई लगे पूछनें, तुम काहे जात फिरे।।१०८

तिन से कछु बातें करें, कछु लगाय के सक।
श्री देवचन्द्र जी बिना, और न कोई हक।।१०९

जब नवतनपुरी पहुंचे, अपने मित्र के पास।
तहां जाय के कह्या, बिन श्री देवचन्द्र जी न आस।।११०

श्री देवचन्द्र जी को हम देखें, बैठे उन मुकाम।
एक दीन करन का, सौंप्या उनको काम।।१११

इतनी बात सुनके, उठ भागा मेहतर।
रहों न पास तुम्हारे, झगड़ा हुआ यों कर।।११२

ए सब मिल पीछे दौड़े, फिराये क्योंए न फिरे जे।
कदमों लाग करें आजजी, बातें भूल के कही हम ऐ।।११३

वे क्यों ऐ कर माने नही, जाए बैटे इक टौर।
समझाये समझे नही, बात न सुने और।।११४

तीन दिन तहां रहे, बात काहू न सुने कान।
बड़ा दुख भया साथ में, सुनके बात ईमान।।११५

ऐ सब ज्यों त्यों करके, ल्याये अपनें घर।
बातें जो इसलाम की, यों उठी दिल ऊपर।।११६

फेर टौर टौर पाती लिखी, अपनें फिरे की।
मत कोई ल्याइयो ईमान, तरफ श्री जी साहिब जी।।११७

ए किस्सा इत का कह्या, जो आया बीच दरम्यान।
अब कहों ए बीतक, जो लड़ाई सुलतान।।११८

महामत कहे सुनो साथ जी, जो तुम में बीतक।
लिखी लोमोफूज में, तुम्हारे ताले हक।।११९

प्रकरण।।३६।। चौपाई।।१६६६।।

रोहिल्ला खान की सराय में, बैट किया विचार।
हमको अब क्या करना, हुकम परवरदिगार।।१

घरों रजवी खान के, फिरे दिन दस बीस।
चरचा बात रसूल की, उम्मेद नही जगदीस।।२

सेख निजाम के घरों, फिरत रहे मास एक।
बातां को उतारनें, कह दिखाई अनेक।।३

इन बात के वास्ते, कछू बात सुने इसलाम।
और आज उनको ए कही, दुनिया तरफ तमाम।।४

सेख बाजिद एक फकीर, सुना ए निगाह रखे इत।
दस बेर उनके गये, बात सुने क्यामत।।५

करी सोहबत सागर मल्ल सों, घरों गये दस बेर।
चरचा सुनाई बीतक, पर हुआ न आगे जेर।।६

पर इनकी सोहबत से, गये बखतावर के घर।
तहां जाय चरचा करी, सुनावने के खातर।।७

यों और कई जागा, फिरे घर घर कहने को।
पर ईमान बोय बिना, क्या करे तिन सों।।८

तब करके बैठक, करनें लगे विचार।
ए पोहरा दज्जाल का, कोई होवे न खबरदार।।९

फरज आपन ऊपर है, पहुंचावने पैगाम।
जो कोई ईमान ल्यावहीं, सो दाखिल होए इसलाम।।१०

तिस वास्ते पैगाम को, पहुंचावना जरूर।
नलुवा लिख पहुंचाइये, तब ए सुने मजकूर।।११

पास रोहिल्लाखान के, रहे मास चार।
चांदनी चौक में आये के, करने लगे विचार।।१२

तहां सेती आए के, रहे हवेली दुलीचन्द के।
भया सोर सराबा उतहीं, टरे उन हवेली से।।१३

तब इत दज्जाल ने, गुलबा किया अति जोर।
काहूं रहने न देवहीं, बहुत करने लगा सोर।।१४

बैठे जाय एक ठौर, करने लगे परियान।
अब कासिद भेजिये, इनको दीजे निसान।।१५

बैठे एकान्त एक ठौर, पांच किये समार।
नलुये पाँच बनाए के, हाजिर किये तैयार।।१६

हकीकत कयामत की, और पहिचान इमाम।
हजरत ईसा आइया, हकीकत दीन इसलाम।।१७

असराफील जबराईल, उतरे अरस से।
और लड़ाई दज्जाल की, सब लिखी उन में।।१८

आजूज माजूज जाहिर, उगा सूर मगरब।
दाभा हुई जाहिर, ए सब लिखे सबब।।१९

राह सरातल मुस्तकीम, रसूलें करी सरत।
सो सबै आये मिले, फरदा रोज क्यामत।।२०

इन भाँत की हकीकत, ए होए एक दीन इसलाम।
इन सेती काफर फिरे, रखे रब्बानी कलाम।।२१

कुरान हदीसों की साहिदी, देके लिखे बनाए।
वास्ते फरज उतारने, ए पहुंचाओ जाए।।२२

कानजी को कासिद कर, नलुये दिये हाथ।
केतिक और सामिल किये, रहियो इनके साथ।।२३

एक नलुआ सेख इसलाम पर, दूजा रजवी खान।
तीसरा सेख निजाम पर, ए किनको होए पहिचान।।२४

चौथा आकिलखान को, पाँचमा सीदी पोलाद।
खबर करो तुम इनको, लिखी तुम्हारी बुनियाद।।२५

काजी ने नलुआ लिया, पूछी फकीर की बात।
कहाँ फकीर रहत हैं, कौन तुम्हारी जात।।२६

हम कासिद पेटारथू, करें खिजमत अपने अरथ।
हम मेहनत तिनकी करें, गाँठ से छोड़के देवें ग्रथ।।२७

पहाड़ से भेजा फकीर नें, तुम्हें पहुंचावने पैगाम।
कह्या और भी काहू पर, के मुझ ही पर इस टाम।।२८

कही चार नलुये और हैं, तिनके लिये नाम।
तिनके डेरे जात हों, पहुंचावने पैगाम।।२९

तब काजी रजा दई, ले के जाओ तुम।
तिनका जवाब ल्याओ, कैसा होत हुकम।।३०

कानजी उहाँ से चले, द्वार आया सेख निजाम।
नलुआ पहुंचाया अन्दर, हम आये ले करो काम।।३१

सेख निजाम बुलाय के, पूछी हकीकत।
तुमको किनने भेजिया, लिख के दौर कयामत।।३२

तब जवाब दिया कानजीयें, हमको भेजा फकीर।
सैयद महम्मद इबन इसलाम, बैठा गोसे एक तीर।।३३

और भी काहू के कागद, के लिखे हमहीं पर।
तब जवाब दिया कानजीयें, हैं पांचों ऊपर।।३४

नाम कह दिखाये तिनके, एक दिया काजी इसलाम।
अब मैं जात औरों घरों, पहुंचावने पैगाम।।३५

तब सेख निजाम ने, दिया एह जवाब।
पहुंचाओ सिताबी तिनको, मिल बिदा करें सिताब।।३६

गया आकिल खान के इहाँ, उन किया इनकार।
न मेरा नाम नलुए पर, हुआ न खबरदार।।३७

फेर दिया नलुये को, लिखी लानत जिन।
वास्ते बहुत पढ़े के, मोहर लिखी कानन।।३८

गया रजवी खान के, नलुआ दिया हाथ।
उनने खबर पूछी तिनकी, केते नलुये तेरे साथ।।३६

तब कान जी भाई ने कहया, पहुंचाये चार पैगाम।
रहया एक सीदी पोलाद का, जात हों तिस ठाम।।४०

तब जवाब इननें दिया, पहुंचाय के आओ तुम।
हम भी जवाब देएंगे, जैसा होवे हुकम।।४१

वहां सेती चलके, आए सीदी पोलाद के घर।
नलुआ दिया हाथ में, सारी कही खबर।।४२

सुनों इनका उत्तर, मैं पाऊं सिताब।
तब कहया सीदीयनें, औरों लेओ जवाब।।४३

पाँचों पैगाम पहुंचाए के, आए मिले मोमिन।
सारों की खबर के, बीतक कहे वचन।।४४

ए हकीकत लेए के, दौड़े पासे श्री राज।
कही सारी बीतक, जो गुजरी है आज।।४५

फेर सवारे पहर में, कान जी फिरा सबन।
एक डारे दूसरे पर, जवाब न दिया किन।।४६

यों करते सबन के, फिरे पन्द्रह दिन।
बोए ईमान है नहीं, बिना खास मोमिन।।४७

जाए झुका सेख निजाम के इहां, मोहे देयो जवाब।
तब जवाब इनने दिया, ए काम नाहीं सिताब।।४८

ए तो इमामत का, दावा ल्याये तुम।
ए तो काम सुलतान का, क्या जवाब देवें हम।।४९

हम सब मिलके, एक ठौर करें जवाब।
इत कै खलक मिलेगी, न होवे काम सिताब।।५०

गया काजी के घरे, किया जवाब तलब।
ना होवे काम एक मुझसे, जो मैं जवाब करों अब।।५१

बात बड़ी ल्याये तुम, ए मुकदमा कयामत।
मैं पढ़त पढ़त आजिज भया, डारा कागद तित।।५२

हम पांचों इकट्ठे मिलके, देवेंगे उत्तर।
तब तुम फकीर को, जाए के देओ खबर।।५३

सीदी पोलाद के घरों, जाए के पहुंचे तित।
तलब करी जवाब की, मुझे फकीर न देवे मेहनत।।५४

सीदी ने जवाब दिया, ए काजी मुल्ला का काम।
मैं क्या जानों कुरान की, हकीकत दीन इसलाम।।५५

तब जवाब कान जी नें, तुम खबर करो सुलतान।
ओ आपहीं जवाब देवेंगे, उन्हें सब पहिचान।।५६

कहया हमारा बुता नही, बात न निकसे मुख।
भूल चूक बचन कहें, तो बड़े पावें दुख।।५७

तहां सेती फेर के, गया रजवी खान।
तहां जाए जवाब को, पुकारा देओ दीवान।।५८

मैं तुम पर ल्याइया, सादी के बचन।
तुम सुन अपनें दिल में, करो खुसाली मन।।५६

तब जवाब इन दिया, क्या सादी करें हम।
आज ही कयामत ल्याया, चाहिये मारया तुम।।६०

अजूं हमारे दिल में, रहे दुनियां की उम्मेद।
जोरू लड़के घर की, छूट जात सब कैद।।६१

हम कछु कहत हैं, लिख देओ दो कलमें।
तो हम जायें फकीर पे, रूजू होवे तिन सें।।६२

एह बात पांचन की, नही अकेले मेरा काम।
ऐह बड़ा मुकदमा, काम दीन इसलाम।।६३

इन भांत आजिज होए के, आया पास श्री राज।
जवाब कोई न देवहीं, बहुत फिरा इन काज।।६४

महामत कहें सुनों मोमिनों, ए नलुओं की बीतक।
अब कहों आगे परियान की, कहों सो हकीकत।।६५

प्रकरण।।४०।। चौपाई।।२०३१।।

रामचन्द्र वकील के, फिरे कोईक दिन।
चरचा सुनाई बहुतक, ना देखा अंकूर मोमिन।।१

उधोव दास गोड़िया, बड़ा भाई गंगा राम।
दोए दिन सेवा करी, उत पाया विसराम।।२

सुन्दरी एक सन्यासिन, मिली रेती में आए।
दीदार कर पीछे फिरी, और नजरों न आया ताए।।३

मास दोए नलुओं मिने, किया गुजरान इत।
पहुंचावनें पैगाम को, दावत जो कयामत।।४

फेर बैठे परियान को, जाए दूर बैठे श्री राज।
आपस में मसलत करी, क्या करना है आज।।५

साथ केताइक दिल्लीय का, और केताइक महाजर।
मसलत करी बाग में, क्यों ए पावें खबर।।६

एक बात दिल में, लेओ तुम्हारी बीतक।
श्री देवचन्द्र जी तुम पर, भेज दिया है हक।।७

और महम्मद साहिब आये, लेकर हक कलाम।
सो ल्याये तुम्हारे वास्ते, कोई और न लेवे नाम।।८

ए कलाम तुम बिना, और न काहू खुलत।
ए मेहर कादर की, हुई तुमको इत।।९

पैगाम को पहुंचावते, ए क्या करे तुम।
जो कदी भेष बदले, तो डर नाहीं हम।।१०

जो कदी मार डारहीं, तो हमें मरनें का नहीं डर।
हम जागें अपने धाम में, हमको नहीं फिकर।।११

ए बात सब दृढ़ करो, दिल के बीच विचार।
जैसा जिने उकले, सो तैसा कहो करार।।१२

कोई कहेगा हमको, पूछी नही मसलत।
तिस वास्ते मैं कहत हों, तुम जवाब करो इत।।१३

ए तो राज के हुकमें, बैठे हैं आपन।
ए तो निश्चे एहज है, हक बुरा न करे मोमिन।।१४

दूसरे अपना अंकूर, ए जो है सकुमार से।
सो जोरा क्यों ए न करे, थे एकठे वतन में।।१५

तिस वास्ते पैगाम पहुंचावना, एही किया परियान।
सबों बात आपस में, एही लिया दिल मान।।१६

महामत कहें ए मोमिनों, ए बीतक कही हम तुम।
आगे जो मजकूर हुआ, सो ऐ बतावें हम।।१७

प्रकरण।।४१।। चौपाई।।२०४८।।

यों करते संझा समे, उठ आये अपने घर।
फेर तहाँ रात को मिलके, बैठे मेहेजद पगथी पर।।१

तहाँ जाए के सनंधे, गावत हैं कलाम।
जोस भरे न देखहीं, दुस्मन खलक जो आम।।२

नित ही उत जाए के, गावत हैं बानी।
सक दिल में न आवहीं, करें सब अपनी मानी।।३

जोस धनी सिर ऊपर, नजर नही संसार।
निसंक चरचा करत हैं, परवाह नहीं लगार।।४

नन्दलाल घड़यालची, ल्याया कबीले समेत ईमान।
खिजमत में ठाढ़ा रहे, रहती थी पहिचान।।५

और राजा राम जो, और बेटा सिवराम।
दरसन को आवें नित, करें चरचा में आराम।।६

मिल भाइयों मसलत करी, रूक्का लिख सुनावें कान।
घड़यालची ले जायेंगे, चोहोड़े दरवाजे गुसलखान।।७

तिन रूक्के में लिखा, जो कोई मुसलमान।
तिनको खबर करत हों, तुम ल्याइयो ईमान।।८

रूह अल्ला मिसल गाजियों, आये अरस से उतर।
रसूल इनके सामिल, आये अपने वायदे पर।।९

और असराफील आइया, जोस जबराईल आये संग।
सो उतरे अरस अजीम से, खुद खसम के अंग।।१०

सुन सावचेत होइयो, जिन करो गफलत।
जो कौल तुम सों किया था, सो आया फरदा रोज कयामत।।११

बिन सुने इन रूक्के को, जो बैठे इन दरबार।
तिनको लानत खुदाए की, पहुंचे न परवरदिगार।।१२

हम अपने सिर का, उतारत हैं फरज।
सो हमको ढूंढ लीजियो, जाको होए गरज।।१३

एह रूक्का लिख के, दिया हाथ नन्द लाल।
गोंद लगाए रात को चोहोड़ियों, होए के दिल खुसाल।।१४

तब घड़यालची ने, सिर चढ़ाया हुकम।
रात को रूक्का चोहोड़िया, कछु न खाया गम।।१५

जब हो गई फजर, हुआ रूक्का जाहिर।
रूक्का पढ़ के पैठहीं, जो आवते थे बाहिर।।१६

यों करते पढ़ते पढ़ते, दिन हुआ पहर एक।
बांचत बांचत रूक्के को, कै पढ़ पढ़ गये अनेक।।१७

सोर भया दरबार में, भई खबर सुलतान।
मंगाए लिया रूक्के को, तब भई पहिचान।।१८

खिजमत सेख सलेमान की, रूक्का पहुंचावत जब।
गुस्सा किया सुलतान ने, सलेमान पर तब।।१९

क्यों ए रूक्का आइया, तें न करी खबर।
इन रूक्के से मालूम भई, ए फरियाद तुझ ऊपर।।२०

पहिले तेरे घर में, भटक फिरे हैं जब।
तें कानों जब न सुनी, उन रूक्का चोहोड़ा तब।।२१

तोकों मैं जो रख्या था, इसी काम ऊपर।
जिन इतमाम को करे, सबकी दे खबर।।२२

दूर करों खिजमत से, है नही कामिल।
दोस दे मन सों काढ़िया, इन में नही अकल।।२३

एह खिजमत इन से, तबहीं लई छुड़ाए।
बेटा अब्दुल्ला सेख निजाम का, दई खिजमत ताए।।२४

ढंढोरा ए फिराइया, होय फरियाद जो कोए।
मैं जाऊं जुम्मे निमाज को, आये हाजिर होवे सोए।।२५

जब निकला जुमे निमाज को, खड़ा अब्दुल्ला आए।
रूक्के जो फरियाद के, सब के लेता जाए।।२६

आप खड़ा देखत, भये फरियादु अनेक।
तामें लाल निरमलदास, ले गये अपना रूक्का एक।।२७

रूक्का लेते बखत, अपना लिया इन।
पढ़ रूक्का फाड़ डारिया, ऐ ना सुनों कानन।।२८

एह रूक्का फार के, ले डारा बीच जेब।
एह तो बात मोमिन की, करनी हैं मोहे गैब।।२९

बहुत पुकारे मोमिन, क्योंए न सुने कान।
एह हमारे वास्ते, खड़ा है सुलतान।।३०

रूक्का चोहोड़न वाले हम हैं, ऊपर गुसलखान।
गुस्सा हम वास्ते किया, ऊपर सलेमान।।३१

क्यों तुम ऐसा करत हो, डरते नही खुदाए।
दिल मोहोर आँख ऊपर, क्यों अकल आवे ताए।।३२

एक दोए तीर लगे, चले घोड़े पीछे घसेट।
तब विचार किया मोमिनों, ए बात न सुने नेठ।।३३

एह खबर श्री राज को, लिख के भेजी उत।
हम पैगाम पहुंचावनें, कमी करी ना तित।।३४

पर हम इत क्या करें, पोहोरा बड़ा दज्जाल।
बात हमारी ना सुनें, सब परे बस दज्जाल के हाल।।३५

जिन भांत हम गए, सब लिख भेजी बीतक।
पर हम इनको न छोड़हीं, तुम सिर पर खड़े हो हक।।३६

एक लड़ाई हमारी, अब देखियो श्री राज।
हुकम तुम्हारे से करें, पैगाम का हम काज।।३७

अब हम लड़ने जात हैं, तुम रहियो हुसियार।
तुम सिर पर हमारे खड़े, समरथ परवरदिगार।।३८

ए क्या करे हमको, हम ग्रहे तुम्हारे कदम।
तो इनको हम मारत हैं, कोई हटें न पीछे दम।।३९

एह पाती लिखके, दई भाई कान जी के साथ।
कान जी जाए के पहुंचिया, दई पाती हाथ।।४०

श्री राज पाती लिख के, भेजा तुरत जवाब।
तुम आकले न होइयो, मैं आवत हों सिताब।।४१

मोसों मिलाप करके, तुम कीजो एह काम।
फेर बैठ मसलत करें, एक जागा इन ठाम।।४२

पाती पहुंची आए के, मिल बांची सब साथ।
राह देखें श्री राज की, यहाँ लेनी दज्जाल सों बाथ।।४३

यों करते दूसरे दिन, आए पहुंचे श्री राज।
चांदनी चौक की हवेली, छत्री के घर इन काज।।४४

रहत लालबाई इनमें, तहां आए कियो मिलाप।
साथ बैठ मसलत करी, तब जवाब किए आप।।४५

अब तुम्हें क्या करना, पहुंचावने पैगाम।
साथियों जवाब दिया जोस में, हम टूक टूक होवें इन काम।।४६

कोई बात की फिकर, हमारे मन में नाहें।
जो डरे इन बात से, एक तरफ हो जाए।।४७

हमको एक हुकम, तुम्हारा दरकार।
और बात न जानहीं, बिना तुम परवरदिगार।।४८

हम तो अपने वजूद को करें, कुरबान ऊपर इसलाम।
हमको और न सूझहीं, बिना करे एह काम।।४६

जोस इनों का देखके, श्री राज भए खुसाल।
तब दिलासा दई बड़ी, देख मोमिनों हाल।।५०

इनों को देखे आसिक, ऊपर दीन इसलाम।
एह बकसीस हक की, नाहीं और का काम।।५१

बातें करें जोस में, एक पे एक सरस।
हुए मगन दीन में, करते हैं हंस हंस।।५२

रसोई कर श्री राज को, अरूगाया इत।
स्याम बाई राम राए, कदमों लागे इन बखत।।५३

कोई ल्यावत मिठाई को, कोई और और साज।
सब खुसाल होए के, अरूगावत हैं श्री राज।।५४

इत खुसाल होए के, रजा दई श्री राज।
जाए पधारो एकान्त, अब देखो हमारा काज।।५५

महामत कहें ऐ मोमिनों, सुनियों एह बीतक।
अब आगे तुमको कहों, जो हुआ हुकम हक।।५६

प्रकरण।।४२।। चौपाई।।२१०४।।

साथ सबे मिल बैठ के, लगे करने परियान।
अब हमको क्या करना, ए क्यों ल्यावे ईमान।।१

बिना आपा दिए, और ना लिया जाए।
एही दिल में विचारिया, और नही उपाए।।२

काएरों के दिल में, बड़ा जो पैठा डर।
दिल में मुनाफकी थी, बनाए बातें करें ऊपर।।३

एक आसिक इन भांत के, आगे धरे कदम।
पीछे खड़े रहने वाले, सौंपी अपनी आतम।।४

एक आसिक इन भांत के, तन मन दिया वार।
कुरबानी एह सुनते, ऊपर परवरदिगार।।५

एक लखमन इनमें, और सेख बदल।
सिताब करें पहुंचावने, इनको न परे कल।।६

और मुल्ला काइम, चाकर पैसों का।
इनको उपली पहिचान, ए था नानिया फिरका।।७

और भीम भाई रहें, सूरत के महाजर।
छोड़ कबीला संग रहे, थे फिदा इसलाम पर।।८

भाई सोम जी खंभात से, आए मिले थे इत।
घर इनके खंभात में, है कुरबान ऊपर बखत।।९

नागजी सूरत से, चले छोड़ कबीला खास।
इनको धाम धनी बिना, और न थी दिल आस।।१०

खिमाई बुन्देलखण्ड से, आया ले ईमान।
खिजमत करी तन धन सों, पूरी भई पहिचान।।११

दयाराम दिल्ली मिनें, था ईमान लिए जोस।
सेवा खिजमत में रहे, कबहूं ना थी फरामोस।।१२

चिन्तामन ठटे मिने, ल्याए थे ईमान।
खिजमत करी तन धन सों, पूरी भई पहिचान।।१३

चंचल बड़े ईमान सों, रहे खिजमत में हुसियार।
आस कबीला छोड़ के, मिला परवरदिगार।।१४

रहे दुकान अपनी, एह जो गंगा राम।
ईमान से खिजमत करे, रहें सेवा के काम।।१५

बनारसी उगाही करें, ताजा ल्याया ईमान।
आया ये खिजमत में, कर धनी की पहिचान।।१६

और साथ बहुत है, कोई ईमान कोई मुनाफक।
बैठे ए परियान को, पहुंचावने पैगाम हक।।१७

आपस में मसलत करी, जाए जुमें मेहेजद।
तहाँ जाए सनंधे पढ़िए, सिफत जो महम्मद।।१८

तब पुकार आपस में पड़े, सुनेगा सुलतान।
तब हमकों बुलावेगा, तब पैगाम सुनावें कान।।१६

यह मसलत करके, जाए खड़े मेहेजद में।
गावत सनंधे जोस में, आसिक होनें सें।।२०

इमाम जो मेहेजद का, तिनने सुनी पुकार।
उतर आया ऊपर से, सुनी सिफत परवरदिगार।।२१

नाम सुनत इमाम का, बहुत हुआ खुसाल।
मोमिनों मुख देख के, जोस भरे लिए हाल।।२२

देखे तारा दीन के, नजर करी आसमान।
रहमत रहमत करके, हुई हक सुभान।।२३

मैं जाऊं सुलतान पे, लेके अपने साथ।
बात तुम्हारी मैं कहों, ले चला पकड़ के हाथ।।२४

अन्दर जाए के ये कही, आया पैगाम इमाम।
मैं ल्याया लोग तिनके, तुम आइयो एह काम।।२५

मोहोल में से सुनके, निकल आया सुलतान।
हुआ ठाढ़ा चबूतरे पर, हाथ आसा एक सुने कान।।२६

मोमिन तले चबूतरे, खड़े जाए निकट।
जो लिखा लोमोफूज में, और भई खट पट।।२७

तब पूछा सुलतान ने, इसारत स[illegible]।
तब बोले इत मोमिन, कलमा जुबान चलाए।।२८

फेर इसारत करी सुलतान ने, क्या मतलब है तुम।
तब इनने जवाब दिया, दीन इसलाम के आसिक हम।।२९

कछु मतलब अपना कहो, कछु मांगो मुझ से।
कहया एक बात हम मांगत, रूबरू बातें करें तुम से।।३०

हमारी बातों मिने, आवे न कोई दरम्यान।
पूछो सुनो तुम हमसे, और न सुनावें कान।।३१

फेर मोमिनों से पूछिया, कछु और कहो सबब।
तुम्हें तो कह सुनाया, हमें नाहीं मुरदार का मतलब।।३२

आसा लेके चूमियां, तीन बेर सुलतान।
तब मोमिन बोले जोस में, हम चौड़ा रूक्का सुनाया कान।।३३

पांच नलुए पाँचन पर, भेजे तुम खातर।
एक काजी सेख निजाम पर, और रजवी खान पर।।३४

चौथा सीदी पोलाद पर, ना लिया आकिल खान।
सो सब तुम्हारे वास्ते, सुनो तुम सुलतान।।३५

इत खड़े सेख सलेमान, कांपे आगे खड़ा सुलतान।
जिन ए मेरी बात को, अब सुनावें कान।।३६

तब पूछा सुलतान नें, है तुम पे किताब।
तब इन यारों कह्या, हम मंगावे सिताब।।३७

फेर सुलतान नें कह्या, कछु मांगत हो तुम।
कह्या मांगें दीन महम्मदी, और न चाहें हम।।३८

मोमिन बोले अपने जोस में, डर दिल भया सुलतान।
और दूर खड़े सब कांपत, सुन सखत कलाम दरम्यान।।३९

इन में दस तन एक खिलके, दो तन मुसलमान।
तब इसारत ए करी, घर पहुंचाओ पोलाद खान।।४०

तब मोमिन दुदले भए, आया गुरजबरदार।
तिनने कह्या कोतवाल को, सुनो एह विचार।।४१

तब से आज दिन लों, ऐसा सखत न बोल्या कोए।
सुलतान के मुंह पर, ऐसा मजाल न काहू होए।।४२

इनों बातें करते करते, कोई न आया दृष्ट।
इनकी बातां सुनते, काँपत सारी सृष्टि।।४३

ओ तो कह पीछा फिरा, इसारत भई सीदी पोलाद।
तुम इनकी बातां सुनियो, पूछ देखो बुनियाद।।४४

इनों को नीके राखियो, खाने पीने की खिजमत।
दिलगीर होने न पावहीं, मैं सौंपे तुमको इत।।४५

इन समै दिल्ली मिने, घर घर पड़ी खड़ भड़।
जिनके घर के संग थे, तिने भया बड़ा डर।।४६

दयाराम के घर में, बड़ा जो हुआ सोर।
दयाराम के बदले, हम पहुंचावें और।।४७

खाने पीने की बात जो, पुछाई कोतवाल इनों से।
मोमिनों मन बिचारिया, करें परियान आपस में।।४८

दस तन को लेए के, किए दो तन बराबर।
संझा के समय मिनें, तब जाहिर हुई खबर।।४९

एह खबर सुनी काजीए नें, दिन दूसरे सेख इसलाम।
तब बुलाए अदालत में, पूछी बात तमाम।।५०

काफरों नें सुलतान को, सक ल्याए बीच ईमान।
तुमको ऐसा न चाहिए, जो रूबरू बातां सुनो कान।।५१

क्या जाने किसी फन्द पर, भेजे होए दुस्मन।
तुम तिनसों बातें क्यों करो, रूबरू अपने तन।।५२

पूछाओ बात गुलाम सों, वह कहेगा आए तुम।
जब मालूम होएगा, तब देखेंगे हम।।५३

जो साहजहां के अमल में, कोई ऐसा ल्यावे तोफान।
तो तबहीं मारे गर्दन, और बात न सुने कान।।५४

इनको तो रहे उम्मेद, देखने को इमाम।
तिस वास्ते चुगली न सुनी, बात रद्द करी तमाम।।५५

रूबरू बात करने का, मान लिया सुकन।
पाजी का पाजी भेज के, हकीकत पूछी मोमिन।।५६

तब इन बात सों, हुए मोमिन हुसियार।
श्री राज के टौर को, किया न खबरदार।।५७

तब सेख इसलाम सों, जब हुआ मजकूर।
तब तिनों से कही, देओ जवाब कर सहूर।।५८

हमारे पैगम्बर नें, क्यों ए फुरमाया तुम।
हदीसा कुरान में यों कहया, जो दीजे कसाला गुम।।५९

जो खुदाए और रसूल पर, ल्याया होए ईमान।
तापर कसाला पहुंचत, सुनो कलमा कान।।६०

सुनके काजी रोइया, हमारे पैगम्बर कहया नाम।
तब खलास करके, लगाए नेक काम।।६१

ना हम काहू का धन लिया, ना कछु किया छिनार।
चोरी भी हम ना करी, तो तुम ऐसा किया क्यों खार।।६२

हम न सोहबत करें सुलतान की, न जाएं उनके घर।
हम रहेंगे तुम पे, सुनो तुम खबर।।६३

इन्ना इन्जुल्ना सूरत, पूछे तिनके माएनें।
बताए दिए तिन को, राजी हुआ जान पने।।६४

तब उनने सुलतान सों, कराई ए अरज।
इनों की खिजमत मैं करों, सुनो मेरी गरज।।६५

तबहीं हुकुम हुआ, ले जाओ अपने पास।
इनों की खिजमत कीजियो, दिल से छूटी आस।।६६

उनने इसी बखत में कह्या, मंगाए मलीदे देवो इन।
खिजमत करो इनकी, ना दिलगीर होए आपन।।६७

ले गया अपनें घरों, रहनें को दई ठौर।
ऊपर चौकी रहे सुलतान की, लोग बातां करें और।।६८

दिन दूसरे बुलाए के, किया काजी मजकूर।
तहां बातां लगा पूछने, सब कहने लगे जहूर।।६९

भाई काजी के घर गए, जोस जोर हुआ बदल को।
तिनका जहूर देखके, भागा अपनें घरमों।।७०

फेर दिन तीसरे काजीएं, बुलाए अपने पास।
दई किताब एक हदीस की, जिनमें मजकूर खास।।७१

तब काजी कहने लगा, ए किताब बनाई तुम।
तुम्हारी हकीकत सब लिखी, ए जो पढ़त हैं हम।।७२

तब जवाब मोमिनों दिया, ए हमसे ना होए।
तुम तो स्याने बहुत हो, क्यों न बिचारो सोए।।७३

हम उर्दू बाजार से, ल्याए हदिया दे।
ते बैटे हैं जाहिर, जाए पूछो उनसे।।७४

तब काजी न बोलिया, पूछने लगा और बात।
एक पहिले दिन का किस्सा, कर देओ विख्यात।।७५

खिलवत अन्दर बैठ के, सुनी संनधे दोए।
बिना एक महम्मद की, नेक कहों दोजक की सोए।।७६

तब राजी होएके, कहे फेर फेर गाओ सोए।
खड़ा दारोगा बेतल माल का, सो नागर जात का होए।।७७

तिनको प्यार करके, कहया सुनो ए कान।
देखो तुम्हारे खिलके में, कैसा ल्याए ईमान।।७८

ओ भागा इन भांत सों, जाने पैठों जिमी में।
मों ऊपर जुलम भया, कहा कहों इन सें।।७९

बड़ी दिलगिरी करके, भागा अपने ठौर।
छोड़ दिया काजीए नें, बड़ा जो हुआ सोर।।८०

अब लगा बातें पूछने, क्यों कहिए कयामत।
दसहीं अग्यारहीं बारहीं लों, लिखी किन सरत।।८१

तब जवाब मोमिनों दिया, ए बात बरहक।
मिने दसहीं अग्यारहीं बारमी, है लिखी इसारतें हक।।८२

तेरहीं में तहकीक, सब माइनें साबित।
ए हादी से पाइए, खोल दे हकीकत।।८३

तब एक दूसरे कों, सामें लगे देखन।
ए तो बड़ा मुकदमा, बीच गिरोह मोमिन।।८४

सवाल एक सक्सें किया, तुमको एते दिन बीच दीन।
क्यों न करी निमाज़ को, ल्याए थे आकीन।।८५

तब जवाब मोमिनों दिया, हमारी निमाज़ कजा न होए।
जो मतलब दुनिया वास्ते, काम किया होए सोए।।८६

तब निमाज़ कजा होवे, जो हम पकड़े मुरदार।
हम वास्ते दीन इसलाम के, काम करें परवरदिगार।।८७

तब हमारी निमाज़ को, कबहूं ना होए नुकसान।
बैठे उठे चले बातें करें, सो सब निमाज़ ही जान।।८८

तब कह्या एक दूसरे सों, देओ इनको जवाब।
मोंह वाए सारे रहे, मोंगे रहे विचार किताब।।८६

फेर तीसरे दिन को, बुलाए पूछी बात।
सुनाओ मोहे सनंधे, हम पावें अपनी जात।।६०

लखमन भीम बैठ के, सुनाई एक सनंध।
इमाम के मिलाप की, पर देखें ना हिरदे अंध।।६१

मिलाप हुआ मेंहदी सों, तब कहया महामती नाम।
अब मैं हुई जाहिर, देखा वतन श्री धाम।।६२

एह बात सुनके, कहया अब रखो किताब।
तीन बेर फेर फेर के, पूछा इनके बाब।।६३

मिलाप भया इमाम सों, एह बात बरहक।
हम तो उमेदवार हैं, तिन में नाहीं सक।।६४

पर अब बात तुम छिपाओ, जिन करो जाहिर पहिचान।
जब जाहिर होएंगे, तब हम कदम ग्रहें ले ईमान।।६५

मोमिन तो हैं गरीब, बकरी जेता बल।
पढ़े बाघ ज्यों बोलहीं, ए सीधे निरमल।।६६

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए काजी के घर की बीतक बात।
अब कहों हादीए की, जिन खबर सुनी विख्यात।।६७

प्रकरण।।४३।। चौपाई।।२२०१।।

मुलाकात सुलतान की, सुनी श्री राज नें जब।
कान जी पहुंचा उसी दिन, बहुत गुस्से हुए जब।।१

भेजे इनों तिनको, दिया कसाला जोर।
अब लिए कहां जात हैं, मारों इस ही सोर।।२

मैं भेजे मोमिन को, दे अपना पैगाम।
तो गुना बैठा इनों पर, कोई न बचावे इन काम।।३

जैसा मारना पैगम्बर, तैसा तिनके दोस्त।
जाहिर होसी जहान में, इनों ऊपर अफसोस।।४

सबों की लानत इनों पर, लिखी अल्ला कलाम।
महम्मद से मुनकर हुए, इनों छोड़ा दीन इसलाम।।५

पर इत ए क्या करें, जो लिखी लोमोफूज।
तिसी माफक होत हैं, और न आवे बूझ।।६

पहिले सिपारे मिने, पाने बासठ में बयान।
वरक तपसीर का चौदमां, तहां लिखी ए पहिचान।।७

आयतः मा यवदुल्ल जीन कफरू।

मायनेः खुदाए न दोस्त तिनका, के जो हैं काफर।
जिनने ढांप्या हक को, किया परदा सब ऊपर।।८

आयतः मिन् अहलिल् किताबि व लल् मुशरिकीन।

मायनेः ए जो एहेल किताब है, बीच गिरो जहूदन।
ना मुसरक कहिए तिनको, खुदाए भेजे तुम पर इन।।९

आयतः अैंयुनज्जल अलैकुम मिन्खैरिम्भिर्रब्बिकुम।

मायनेः भेजे उन जहूदन को, ऊपर पैगाम इसलाम।
बड़ी नेकी ए जानियो, पावे राह खलक तमाम।।१०

इन सेती नजीक, होवे परवरदिगार।
ए वही मुराद महम्मद की, ए हुज्जत कुरान उस्तवार।।११

जाए जमा सब चीजों का, ए जो रबानी कलाम।
जहूद तिनके दुस्मन, बिन एहेल किताब तमाम।।१२

करें जहूद लड़ाई मुझ सों, दूजे सरियत मुसलमान।
मैं पाई सिफत महम्मद की, अब छोड़ों नही फिरकान।।१३

एह झगड़ा दीन का, मसनन्द पैगम्बर।
बाजे इसलाम की नकल करें, देवें ता ऊपर।।१४

और मुसरिकों के दिल में, खाइस थी कछु और।
पैगम्बर की वारसी, बलीद मुगीर के पहुंचे ठोर।।१५

आयतः वल्लाहु यख्तस्सु बिरहमतिह मैंयशाअु।

मायनेः देवे खुदा खासतर, वही अपनी पैगम्बरी।
जिन किसी को चाहे, तिन ऊपर उतरी।।१६

आयतः वल्लाहु जुल्फ जलिल अजीमि।

मायनेः खुदा बुजरक साहेब, चाहे जिस दे फजीलत।
दे पैगम्बरी तिन को, भांत करामात अजमत।।१७

बुजरकी जो इसकी, न आवे बीच सुमार।
मेहरबानगी उसकी, जादां गिनती पार।।१८

आयतः मा नन्सख मिन् आयतिन् औ नुनसिहा नअति
बिखैरिम्मिनहा औ मिसलिहा अलम तऽलम।

मायनेः जिनको मैं रद करों, ले माएने कुरान से।
ऊपर माफक मसलत, होसी खलकों में ।।१६

और माफक जमाने उसके, भुलावना करे उनको।
निकाले इनों के दिल से, फरामोस होवे इन मों।।२०

ल्याऊं बेहतर उससे, मनसूक जो आइतें।
तिनका दृष्टान्त देत हों, तुम सुनियो चित दे।।२१

एक गाजी मानिन्द, साथ दस तन के।
तिन दसों को रद्द करके, किए दो तन बराबर ए।।२२

मैं ल्याऊं मानिन्द उनके, और करुं मैं रद्द।
वास्ते नफे मोमिन के, माफक सवाब इनके कद्द।।२३

साथ रिवायत मसलत के, ए फिरना किबले का।
बेतल मुकद्दस से, तरफ काबे के हुआ।।२४

ना जानत लोग सरियत के, खिताब मुनकरों का रद्द।
ए मुनकरी करी पैगम्बर से, तो हुए स्याह मुंह जरद।।२५

बीच रद्द करनें जहूदों के, काफर लड़ाई करते।
होवे इन बात से पसेमान, खुदा परवाह नही इनके।।२६

ए है हिकमत इलाही, करी पातसाह मसलत।
जो गाफिल हुकुम पैगाम से, सो रद्द बीच कयामत।।२७

फुरमाया खुदाए नें, ए थे भूलन वाले।
तो ए हुए मुनकर, तैयार हुए लड़ने के।।२८

नही रखते हो मालूम, अब जानोगे तुम।
जब खराब होओगे, हक के हुकुम।।२९

आयतः अन्नल्लाह अला कुल्लि शैअिन कदीरून्।

मायनेः नेस्त करने ऊपर, इनों के ताई खुदाए।
है सब चीजों पर साबती, कादर है इप्तदाए।।३०

चाहे ताको रद्द करे, करे चाहे नही पैदाए।
है सत्ता सब ऊपर, जो चाहे सो करे खुदाए।।३१

आयतः अलम् तऽलम् अन्नल्लाह लह
मुल्कुस्समा वाति वल् अर्जि।

मायनेः साथ मोमिनों के तहकीक, है बेसक खुदाए।
सब लायकी तिनको, ए लिखा इप्तदाए।।३२

पातसाही जिमी आसमान की, है उनको सजावार।
जैसा चाहे तैसा करे, कोई न बरजन हार।।३३

आयतः व मा लकुम् मिन् दूनिल्लहि
मिंव्वलीयिंव्व ला नसीरिन्।

मायनेः छूट खुदाए तुमको, कोई न दोस्त होए।
नफा पहुंचावे दीन में, ढूंढा पाइये न कोए।।३४

महामत कहें ऐ मोमिनों, ए कुरान की साख।
ए तुमारी बीतक, कै भांतों लिखी लाख।।३५

प्रकरण।।४४।। चौपाई।।२२३६।।

"लैल-तुल-कद्र"

ऐसी साहेदियां कई, हैं बीच अल्लाह कलाम।
सब बातें एही लिखी, अब सब पढ़ेंगें इसलाम।।१

ए जो किस्से कुरान के, अलफ लाम मीम से लेकर।
सो जहां लो खतम हुआ, सिपारे आम लो एही खबर।।२

छत्तीसमी सूरत लों, कुल अऊज बिरब्बनास।
जहाँ कुरान खतम हुआ, सब किस्से मोमिनों के खास।।३

ए साहिदी इन्ना इन्जुलना, लिखी बीच इन सूरत।
रसूल साहिब बातां करते, आगे असहाबों के इत।।४

एक गाजी बनी असराईल नें, लोहा बांधा महिनें हजार।
बीच राह खुदाए के, तरफ परवरदिगार।।५

तब यार ताज्जुब भये, या रसूल अलेहु सलाम।
इम छोटी उमर से, क्यों पहुंचे इसलाम।।६

एह सकस कौन था, जिनका एह मरातब।
तब जवाब रसूलें दिया, जबराईल एह सूरत लाया तब।।७

आयतः अिन्ना अन्जलनाहु फी लैलतिल कदरि(१)
व मा अद्राक मा लैल तुल कद्रि(२)
लैल तुल कदरि खैरूम मिन् अल्फि शहरिन्(३)
तनज्जलुल-मलाअिकतु वर्रूहु फीहा
बिअजनि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन(४)
सलामुन हिय हत्ता मतलअिल फजरि(५)

मायनेः मैं उतारे बीच रात के, करो तुम विचार।
किए साथ लैल तुल कदर में, ब्रज रास में विहार।।८

फेर तीसरे लैल तुल कदर कही, सो तीसरा तकरार।
हजार महिने से बेहतर, बांधे इने हथियार।।९

हजार महिने के तेरासी बरस, भए महिना ऊपर चार।
इन तें कहे बेहेतर, ताको मोमिन करो बिचार।।१०

इनों लोहा बांधिया, एक सौ बीस बरस।
दो नाजी गिरोह नाजल भई, आई उतर अजीम अरस।।११

एक गिरोह मलायक नूर से, आई रूहें अरस अजीम।
तामें सिरदार तीनों सूरत, कही अलिफ लाम मीम।।१२

नव सै नब्बे नव मास से, रूह अल्ला जनम का नाम।
तहाँ से एक सौ बीस बरस लों, लड़ाई करी तमाम।।१३

इन लड़ाई के बीच में, मोमिन मुतकै दरम्यान।
लड़ाई करी दज्जाल सों, लेकर दृढ़ ईमान।।१४

तिन लड़ाई के किस्से कुरान में, लिखके भेजे हक।
सो खोलें अपने आप ही, या तीन सूरत रसूल बुजरक।।१५

रसूल मुहम्मद रूह अल्ला, और मेंहदी इमाम।
ए चारों एकै तन हैं, ताको नाम इसलाम।।१६

इन सेती जुदा पड़े, सोई है मुसरक।
जो कोई इनों से लड़े, सोई दज्जाल बेसक।।१७

उतरी गिरोह अरस से, इनों के रब हुकुम।
कुल आमर इसलाम की, दई हक सुभान इन कुम।।१८

जहाँ लों इनकी आमर, सो अखण्ड होए हैयात।
सो लैल मेट फजर करें, सो पहुंचे असल जात।।१९

इन लैल को सब कोई, ढूंढत चौदह तबक।
सो किने न पाई आज लों, सो मोमिन खोलें मेहर हक।।२०

सबों पहुंचाए कदमों, खोलें भिस्त के द्वार।
सब दौड़ी खलक टिड्डी ज्यों, तिनों पाया परवरदिगार।।२१

एही सिफत मोमिनों की, सो आवत नही जुबान।
कह कह के केता कहूं, नहीं ताकत सुनने कान।।२२

देख अपनी आँख सों, सब पुकारेगी आम।
उठा परदा मुँह मुसाफ से, सबों खोले अल्ला कलाम।।२३

जुध किया दज्जाल ने, जाहिर हुआ सोए।
तुमसों मैं केता कहों, अब सब में जाहिर होए।।२४

महामत कहे ऐ मोमिनों, नेक साहिदी दई तुम।
अब तुमको बीतक कहों, तुम याद करो मिल कुम।।२५

प्रकरण।।४५।। चौपाई।।२२६१।।

अब तुम सुनियो मोमिनों, कहों जो बीतक तुम।
लड़ाई करी दज्जाल सों, जमा एक ठौर थे हम।।१

जब सरे तोरे को, हम ले गए पैगाम।
तब ढांका जिन गिरोह नें, मरातबा इमाम।।२

खुदा लानत है जिनको, तापर फिरस्ते फेरे लानत।
सब मोमिनों की लानत, हुई बखत कयामत।।३

सब आम लानत देवहीं, जिन इस इसलाम।
हुई ख्वारी सब में, पुकारत खलक तमाम।।४।

लिखी सिपारे दूसरे, सयकूल जाको नाम।
दज्जाल बैठा दिल पर, भानी राह इसलाम।।५

सब खलक राह पावती, जो ए फेरत ना पैगाम।
दीदार होता दुनी को, पढ़ों भान दिया वह काम।।६

कानों तो बहरे कहे, भई आँखों ऊपर मोहोर।
दीदे दिल अंधे कहे, तो सुन्या न एता सोर।।७

मोमिन फरज उतारिया, पहुंचावते पैगाम।
हुआ मसरक मगरब जाहिर, सब सुन्या खलक आम।।८

तो भी ए ना देखहीं, दज्जाल में नाहीं विचार।
के हमसे क्या गया अरू क्या रहया, ए न हुए खबरदार।।९

बेत अल्ला पुकारही, सो भी सुने न कान।
वसीयत नामें चार आए, ताकी भी न करें पहिचान।।१०

वास्ते मतलब दुनी के, छोड़ दिया इसलाम।
पैगम्बर को पीठ दई, रहे बीच दुनी के काम।।११

मोमिनों ऊपर कसाला, किया इनों ने जोर।
उन लड़ाई के बखत में, किया दज्जाले सोर।।१२

तिस बखत हादीए ने, लिख भेजी पाती उत।
सुनियो सो हकीकत, नेक कहों मैं इत।।१३

जब थे कोतवाल के हवाले, तब लिख भेजे खास कलाम।
वास्ते दिलासा मोमिनों, जिन दलगीर होवे इन काम।।१४

ऐ पेंगमर हक का, तुमे भेजे ऊपर इसलाम।
तो इनों मारा पैगाम को, तो हुई लानत तमाम।।१५

अब ए होत सरमिंदे, गरम होत दोजक।
तुम पर मेहर हादीए की, है नजीक तुमारे हक।।१६

तुम बैठे नजीक हक के, तुमें पलक न करें दूर।
तुमारे मूल सरूप सों, जो हमेसा था मजकूर।।१७

तिस वास्ते तुमको, अजमावत हैं इत।
दिखाए बलाए कसाले, ए मुकदमा कयामत।।१८

जो लड़ाई तुम करी, सो होसी रोसन चौदह तबक।
मौत दज्जाल की इन में, सो तुमहीं भानी सब सक।।१६

ए भूले तुमको देख के, ले मायने ऊपर के।
अबलीस रान्या इन से, ले ऊपर के अरथे।।२०

सूरत देखी आदम की, बीच निसबत थी हक।
तासों रह्या गाफिल, हुई लानत ऊपर सक।।२१

सो अबलीस सबों दिल पर, करत पातसाही।
तो इलहाम फेरा हक का, दुस्मनी से आई।।२२

जान बूझ आपको, बुरा न चाहे कोए।
पर ए काम अबलीस के, मारी राह इसलाम की सोए।।२३

लिख्या लोमोफूज में, जो सेजदा आदम पर।
सो अबलीसे ना किया, आप को बड़ा जान्या यों कर।।२४

सेजदा सब जिमी पर, किया ऊपर खुदाए।
सो सारे सेजदे रद्द हुए, तोख लानत गले हुआ ताए।।२५

देखो कौन आदम कौन अबलीस, सब जिमी सेजदा किया तित।
बची न दो अंगुल जिमी, सो कहां जिमी है इत।।२६

ए विचार देखो दिल से, कौन आदम बिना रसूल।
सेजदा ना किया किननें, किन नें भान्या एह सूल।।२७

महामत कहे ऐ मोमिनों, यह बीतक सरियत।
हुए स्याह मुंह सरमिंदे, हुआ दौर कयामत।।२८

प्रकरण।।४६।। चौपाई।।२२९६।।

आगे आपने पत्री लिखी सो शुरू

अब कहो मैं मजल की, जो हुई लड़ाई सरियत।
भया कसाला मोमिनों पर, साबित करने कयामत।।१

तब पाती लिखी हादीए नें, करने खातिर जमा मोमिन।
सिखापन सब विध की, सुनियो दिल रोसन।।२

ए पाती दिल्ली मिने, थे कैद में हम।
तिस वखत ले आइया, कान जी बदल हुकुम।।३

लड़ाई के बखत में, उलटी भई फते।
तब दिलासा सैयन को, पाती लिखी एह।।४

अपने हाथे दस्तखत, लिखे मिने कलाम।
तिनकी नकल कहत हों, सुनियों मोमिन इसलाम।।५

मेरे प्राण के प्रीतम, साथ मेरे सिरदार।
आतम के आधार हो, जीव के जीवन उस्तवार।।६

मेरे प्रेम भीने श्री साथ जी, मेरे सांचे सूर धीर।
पांव भर दिखावत रूहों को, तुम बैठे हो हक के तीर।।७

जिन लज्जा वैराट बांधिया, तिन लज्जा दिया सिर भान।
सब साथ का सिर ऊंचा किया, सो हुई तुमें पहिचान।।८

आपोपा निसंक डारिया, मेरे साथ सब सोभा जोग।
एक दूजे से सिरोमन, आगे कदम धरे इन भोग।।९

साथ समस्त भाई लखमन, भाई भीम नागजी दोए।
चिंतामन दयाराम, ए चारों कहे सोए।।१०

चंचल गंगाराम जो, बनारसी जो सोम।
और भाई खिमाई, ए दसों दाखिल बीच कोम।।११

और भाई अनन्त राम, तुम सांचे सूर धीर।
लालबाई स्यामबाई रामराए, तुम रहत हो तीर।।१२

तथा साथ समस्त सूर धीर, और जो लड़ने वाले इन समे।
और जो कोई आसा करे, ए कह्या तिन सें।।१३

वे सब श्री राज के चरण तले, रहियो आरोग तुम।
सुख समाधान आनन्द मंगल की, ए पाती लिखी हम।।१४

दृष्टि तुम पर श्री राज की, हूजो सदा सनकूल।
लिखी वे जो मजलें, सो साथ का मूल।।१५

इन्द्रावती की वासना, मैं लिखे प्रणाम कोटान कोट।
अविधारियो तिन को, लीजो धनी की ओट।।१६

ए श्री राज की दया से, मिल भेला होयेगा साथ।
तब सुख समाधान आनन्द होए, धनी ऐं पकड़े हाथ।।१७

तुम्हारे सुख समाधान आनन्द की, पाती को चाह जे।
तुमारी हकीकत सब, कही भाई बदले।।१८

ए जो मूल से कही, सो भई सब मालूम।
बड़ा जुध किया दज्जालें, तैसा लिखा रसूलें वास्ते तुम।।१९

तैसा ही ए जुध भया, और भी होएगा इत।
लिखे माफक होएगा, ए जानो मुकदमा कयामत।।२०

और आखर को तुमारा, ऊपर होएगा बोल।
रसूलें भी यों लिख्या, कुरान हदीसों कौल।।२१

हकीकत ऐ समझियो, आपन माया सों हुए बेजार।
सिताबी काम क्यों न होत है, सब मिल क्यों न होत तैयार।।२२

पर भाई एह काम, बोहोत बड़ा तुम जान।
जो दिन जिन भांत लिखा है, सो तेती होए पहिचान।।२३

तुम सूर धीर पना किया, सो तुम जिन जानों किया हम।
ए हकें सोभा दई तुमको, ए होए न बिना हुकम।।२४

ए काम बहुत बड़ा हुआ, अजू भास्या न तुमारे मन।
तुमको हलका लगत है, है बात बड़ी मोमिन।।२५

एते दिन इन जहान में, बोहोत डरते लेते नाम।
हमको गरदन मारेगा, लेते नाम इमाम।।२६

आपन छिप छिप रल झलते, फिरते थे सब ठौर।
अब तुम जाहिर भए, लसकर महम्मदी करो सोर।।२७

अब तुम इन जैसे होए के, पैठे इन अन्दर।
थाना मेंहदी का थापिया, बैठे इनके मंदिर।।२८

जब जाहिर तुम करी, अपना जो लसकर।
गाम गाम सहर सहर, थाने थाने जाहिर होवे इन पर।।२९

अब तुमारो तेज, दिन दिन बढ़ता जाए।
बढ़ती बढ़ती रोसनी, सब खलकों को पहुंचाए।।३०

और दज्जाल की कला, दिन दिन पल पल।
घटती घटती घटहीं, उड़ जासी ख्वाब अकल।।३१

दृष्ट दज्जाल की बाहिर, तुम को दई दृष्ट अंदर।
तुम ऊपर उतरा असराफील, सब्दों इन ऊपर।।३२

तुम जुध करते रहियो, तुमको लोचन दिये अनन्त।
और दज्जाल की एक आँख, आखर इनको अन्त।।३३

और एक समझियो, तुम दज्जाल सें।
जुध किया भली भाँत सों, सो सब हुआ हुकमें।।३४

दज्जाल की लड़ाई में, ज्यों पहिली सुअर की चोट।
त्यों लड़ाई इन सों, आखर धनी की ओट।।३५

सो चोट पहिले बचाइए, पीछे घाव मारो पीठ पर।
मरोर न सके कांध को, लड़ ना सके क्यों ए कर।।३६

तिस वास्ते ए यों कह्या, सब जानवर के कांध में संध।
इनके एकै नली गले मिने, हक तरफ है अंध।।३७

एह बात तुम समझियो, बचाइए सामी चोट।
सोतो तुम बचाए लई, अब होए तुमारे कदमों लोट पोट।।३८

दाभतुल अरज का, मजकूर लिखा अलेहु सलाम।
तहां छाती लिखी सेर की, सींग पहाड़ी बैल इस ठाम।।३९

और पीठ लिखी गीदड़ की, तुम लड़ना तिन से।
ए सूरत सब ब्रह्मांड की, तिस वास्ते लिख्या तुमें।।४०

तिस वास्ते तुम इनसों, छले करना जुध।
तिस वास्ते ऐसा लिखा, बस न होए बिना बुध।।४१

पहिले इनके रूचता, तुम बोलियो जुबान।
इनके होए इन्हें बस करो, रूचता ही करो बयान।।४२

इनके गुलाम होए के, तुम करियो उत काम।
ए थोड़ी इसारत लिखी, वास्ते दीन इसलाम।।४३

पीछे तो तुम बुधवान हो, खिजमत के भांत दिखाइयो रंग।
बचन चोखा कहियो, हम रहे तुमारे संग।।४४

जो खैरात पातसाही, लेते हैं फकीर।
हम गुजराने तिन पर, तुम हमारे मुरब्बी मीर।।४५

तिस वास्ते तुमारे कदम, छोड़े ना दम हम।
तुमको कछू देने कहे, तो मांगियो हवेली तुम।।४६

खाने को पेट माफक, और मुल्ला पढ़ावने कलाम।
और कागद बेतलमाल से, होए रसूल अलेहुसलाम।।४७

सो तुम इनसों मांगियो, हमको दे तालीम।
हमको तरबियत करो, जो कलाम अरस अजीम।।४८

जो तुमको न देवहीं, अपनें जान पने।
पर तुम खिजमत न छोड़ियो, ज्यों चाह होए इने।।४९

इनका रूचता नाचियो, रिझाइयो भली भांत।
इतनी अरज कीजियो, बात कहें एकान्त।।५०

कोई लड़काई बुध सों, राखियो नही सोहबत।
भारी कर बुलाइयो, जब तुमें पूछें इत।।५१

ज्यों बुलाओ अपने लड़के को, एह जवाब करो तुम।
जो सवाब तुम लेत हो, तो अरज सुनावे हम।।५२

जब कहें के कहो तुम, तब काजी हजरत।
तिनसे तुम यों ही कहो, बात सुनो हमारी एकान्त।।५३

जो कोई आवे हमारा, ताए सुनावें सनंधें कुरान।
ओ आकीन ल्यावे रसूल पर, जिनको होए पहिचान।।५४

जिन भांत हमको, आकीन दिया श्री मेहराज।
त्यों हम रसूल दिखाए के, यों करें इसलाम का काज।।५५

हमसों मुलाकात करे, खाए पिए हम में।
साफ दिल होए रसूल पर, होए आकीदा इसलाम से।।५६

तब कलमा कहे मुख से, मांगे नही तुम से।
आस तुमारी ना करें, ना डर दिखाओ उने।।५७

और जो तुम जाहिरी, खिलाने लगो गोस्त उन्हें।
तो ढिग ना आवे तुमारे, बड़ा दोस होवे इनसें।।५८

एक ठौर लेके, जागा होने देओ तुम।
जब होवे उने पहिचान, तब फुरमाया करें सब कुम।।५९

तब रसूल ऊपर आकीन, ल्यावेंगे सब कोए।
तब फुरमाया क्यों ना करें, आवे हुकम तले सब सोए।।६०

हम पेहले मिलाप किया, सेख सलेमान से।
तब भी हम ए ही कह्या, पर ओ बात ना सुने।।६१

हम हाथ सेख सलेमान के, ए बात कहलाई सुलतान।
रखो हमारे भेष को, तब सब खलक सुनें कान।।६२

तो हम बोहोत खलक को, समझावें कलाम।
तब कलमा कहे रसूल का, ए सब खलक तमाम।।६३

पीछे हलके हलके सब कोई, कोई न फेरे फुरमान।
कबूल करेंगे तहकीक, तब इनों होए पहिचान।।६४

पर तब सेख सलेमान नें, सुनाई नहीं सुलतान।
अब पातसाह को सुनाए के, जो आवे इनें पेहेचान।।६५

पीछे तुम निकलोगे, हटे ना कोई पीछे।
सब दौड़ेंगे आपे से, पैठने इसलाम में।।६६

जो फुरमाया रसूल का, सिर चढ़ावते तब।
हमारा साथ बोहोत है, आवे दौड़ के सब।।६७

श्री मेहराजें तिन को, दिया रसूल पर ईमान।
पर हम पर कसाला पड़ा, ताथे हटे न ल्यावें पहिचान।।६८

खुद को पूछ के, काजी मनावें तुमारा मन।
तुम जानो त्यों समझाओ, ज्यों दाखिल होवे इन।।६९

तिन पर जोर जुलम न करें, न पकड़े कलमें को।
हदीसां देखे होवे, कलमा कहने मों।।७०

कोई पकड़ काहू की ना करे, ठौर ठौर समझावें सेर।
तिनको कुरान से, सब करे हम जेर।।७१

ठौर ल्यावें सबन को, तब आवें श्री मेहराज।
तब आवे वह फकीर, जहां खड़े तुम आज।।७२

ए भी वही इसलाम है, हम खड़े उन पर सब।
तुम चाहत दीन महम्मद का, बड़ी करत तलब।।७३

चाहिये कूवत हक सुभान की, फकीर करत जो काम।
सो तो सब हिकमत से, रास होवे इन ठाम।।७४

जोर से कीजे मुसलमान, तो साफ न होए दिल उन।
राजी न होवे इन पर, तो क्यों पावे कदम मोमिन।।७५

तिस वास्ते एती तुम, जब कह के बुलाओ लड़के।
तब समझाओ तिन को, पीछे बुध माफक करियो ऐ।।७६

और बोहोत कह के, मता न जानो तुम।
थोड़ा थोड़ा कहियो, फेर लिख कर भेजें हम।।७७

पर एक बात बड़ी हुई, जो करे तुमारा विस्वास।
अपना भी भेष राख के, काम करने की थी आस।।७८

और हिन्दू के भेस से, होए नही ए काम।
इन भेस सों मजलिस, परतीत न करे इसलाम।।७९

ना इनें आवे परतीत, ना मजलिस बैटे।
सो तो होने का नहीं, ना इन्हें विस्वास जेटे।।८०

तिस वास्ते तुम इन के, होए के सेवक।
एक मित्र पना करो इनों सों, तब ए पहिचानेंगे हक।।८१

तुम होवोगे मुरीद उनके, सिध होवे सब काम।
पर ए आस्ते आस्ते होवहीं, दाखिल इन इसलाम।।८२

जब एती बात को, कबूल करे मुख से।
तुम बुलाइयो लड़के, भेले रहियो इन में।।८३

तुम हिन्दुओं के भेस से, जिन करो सरम।
पहिलेई तुम सिर भान्या सरम का, तुम जानत एह मरम।।८४

कोई तुमको मिले, ताए चोखा दीजो जवाब।
देखो सब सास्त्रों को, क्या लिखा इन के बाब।।८५

तीन काण्ड वेद वेदान्त के, वल्लभाचारज के मत।
संकराचारज नें क्या कह्या, क्या कह्या गीता में इत।।८६

अदित पुरान भागवत में, जैसा लिखा कलाम।
तिन ऊपर तुम चलो, बीच दीन इसलाम।।८७

तोलो मत सबन की, और अलेह सलाम।
ज्यादा कम है किन की, सब मिल बैटे इन टाम।।८८

नबी नारायण की, सनंध मारियो मोंहों पर।
तब होवेंगे सरमिंदे, तुम करो चरचा यों कर।।८६

ए तो सब में रसमें, लड़त हैं अहंकार।
जब फुरमान के मायने, जाहिर खोले परवरदिगार।।९०

तब सब सरमिंदे होएंगे, रहे न काहू को गुमान।
जो बसबसा छाती पर, करत है सैतान।।९१

पकड़ बैठे अन्धेर को, और बढ़ता गुमान।
सो सबे गल जाएंगे, और मारेगा सैतान।।९२

तब सिर नीचा करके, आवेंगे भेड़ो न्यांत।
अब सब जमा होत हैं, पर इन उल्टी ग्रही सब बात।।९३

दरवाजा इसलाम का, कुंजी गंज खुदाए।
सो हकें मेहर कर, दई तुमको पहुंचाए।।९४

तुम सिर ऊंचो देखियो, जिन नीचा देखो तुम।
जो तुम पर एक दोस बंदले, तो दावा लेते कुम।।९५

गोविन्द भेड़ा तुम जानत, ताको बल न चले लगार।
एक पाच बरस को बालक, ऐ ताए न सके मार।।९६

तुम साथी सिरोमन, एक दूजे थे सिरदार।
गोविन्द भेड़ा तुमें क्या करे, हकें पहिले किए खबरदार।।९७

अब तुम तो जने बार हो, और भागे तुम सों।
सो अब ही आन मिलत है, सब एक होए तुम में।।९८

अब तो तुम बार हो, तुम मिलसी बारे हजार।
और ताबे तुमारे होएंगे, तुमहीं हो सिरदार।।९९

तुम अपने सुकन को, अब जाहिर करो तुम।
तामें तुमारा आवेस, इस्क जाहिर होए बीच कुम।।१००

गाम गाम देस देस, हिन्दू मुसलमान।
कदम तुमारे बन्दहीं, करके पहिचान।।१०१

अब तुम तुमारी नजर को, जिन करो तुम और।
जो कदी तुमें दिल में, आवे नही एह ठौर।।१०२

तो हम और ठौर जाए के, मारें मोरचा फेर।
लड़ाई करे दज्जाल सों, फेर आवें दूसरी बेर।।१०३

एह विचार तो करें, जो तुमें उल्टे होए।
जेते कोई मुसलमान, सब चरन बन्देंगे सोए।।१०४

तुमको सब कोई धन धन, करेगा संसार।
जो बानी इस्क देखेंगे, एह तरफ परवरदिगार।।१०५

जो जोस तुमारा देखहीं, तो मारे बिना मरे।
जोलों तुमारी बात को, सुलतान चितसों ना धरे।।१०६

सो भी इस वास्ते, सुलतान न दिया कान।
एक तो नजर ऊपर की, दूजी बातून की ना पहिचान।।१०७

और इनके दिल में, हुआ है चौकस।
जो हम पर दगा करनें, आए मेटन मेरा जस।।१०८

और तीसरा एह, जो जाहिर होत इमाम।
तब सरा तोरा दोऊ उठे, तोको न पकड़े काम।।१०६

और बाहिर के अरथ में, मेंहदी ईसा दज्जाल।
पकड़ेंगे वजूद को, मिट जासी सब हाल।।११०

वे लड़ेंगे तलवार सों, बड़ा जुध होए दारून।
सत्तर हजार काफरों को, मारेंगे मोमिन।।१११

लोहू सब वैराट में, होए जाएगा सब।
हाथियों के खरिहान, ए जुध होवे जब।।११२

ना दाना पानी रहेगा, ना कछु रहेगा घास।
तिस वास्ते इनको अरथ उपलो, जानत नाहीं खास।।११३

और जो कयामत की, बड़ी जानी दहसत।
करामात मेरे सरूप पर, मुझे आदमी देखे इत।।११४

जैसे और आदमी, मोहे देखे तिन माफक।
तो क्यों कर आवे ईमान, भागे क्यों कर सक।।११५

जब तुमारे सुकन, अब फेर करो पुकार।
तुमको इस ही वास्ते, किए बाहिर खबरदार।।१११६

अब तुम छिपे ना रहो, बड़े उमराव होवें आधीन।
सो तुम सों तालीम लेइंगे, जिन चिन्ता करो बीच दीन।।१११७

और कहूं नजर जिन करो, ना बैठक कीजो बन्ध।
तुमारी बात छिपी ना रहे, बड़े ठौर मिल हुए अन्ध।।१११८

जैसे काम पर गए हो, सो तैसा ही दिखाइयो बल।
ना तो सक आवेगा इनको, वही राखियो कल।।१११९

मैं तुमारे सिर पर, खड़ा हों एक पाए।
और दिस हिन्दुअन की, नीके राखियो बनाए।।१९२०

जो तुमारे बल सों, उत मेरा जोरा होए।
और बल मेरे से, ए तुम को माने सोए।।१९२१

सब भला होएगा, तुम जिन होओ दिलगीर।
जो मोरचा तुम लिया, सो हकें दिया कर धीर।।१९२२

जरा तुम मन में, दगदगा ल्याओ जिन।
ए लड़ाई है बचनों की, सो करनी ले आक़ीन।।१९२३

अब वस्त प्रकासहीं, अपनें ही बल से।
पर एह बात जो, ना होए सिताबी से।।१९२४

माया छल रूप है, ताको छल ही से जीताए।
आगे भगवान के, बल बोहोत कहलाए।।१२५

तो भी असुरन सों, जीते हैं छल से।
हर जी ब्यास सों जुध किया, सो तुम जानत हो दिल में।।१२६

एक बचन हर जी कहे, मैं दस बेर लागों चरन।
जब लाग आयो, तब उठाए कियो मरन।।१२७

तब फेर तिन नें, पकड़े मेरे कदम।
तिस वास्ते तुम बारहों, सब सरे सौंप्या तुम।।१२८

जैसा बाजा बजे, तैसा ही कीजो निरत।
पर बड़ी एह बात हैं, हिल मिल एक रस होना इत।।१२९

पीछे तुमको सब, आप ही खुल जाए।
आस्ते आस्ते होएगा, आप ही हक बताए।।१३०

पहिले ए सुचित कर, सुनने बैठे जब।
सो उनके हिरदे, बचन लगे तब।।१३१

तब उनें दया उपजे, जब वह घाएल होए।
तब चित दे इनों सुने, और तुम पर अनेक आवे सोए।।१३२

तिनको तुम बचन कहो, तब मिट जाय अन्तराए।
जाको होवे प्रकास, सो आपे ही जग जाए।।१३३

तुम आकले होए ना उरझियो, सब काम दुरस्ती से होए।
आकले काम सैतान के, ठंडे हक से होवे सोए।।१३४

भाई बदल कानजी, भेजे हैं तुम पास।
तुम परियान पक्का कीजियो, कानजी पास राखियो खास।।१३५

जो होए तुमारी आज्ञा, तो हम पड़ें बाहिर।
जो सकड़ाई में रखोगे, तो हम रहें जाहिर।।१३६

पर हम उरझे रहेंगे, उपराला तुमें न सकें कर।
आपना ना पाल सकें, तब काम होवे क्यों कर।।१३७

जो तुम ए मोरचा, सिर ले ढाया।
सखत दिल करके, तुमने पसारा किया।।१३८

जैसे चित तुमारे, मेहेजद गए थे जब।
फेर उस ही चितसों, सरीखी करो अब।।१३९

और मोरचे की तलास, मैं भेजों तुमारे पास।
या भेजों खुद पे, वे आए करें बात।।१४०

ओ फकीर महम्मद, और उनके आवे कलाम।
पीछे तें जैसी तुम लिखो, तिन ऊपर चले हमारा काम।।१४१

जो मैं टौर उहाँ करों, तो तुमारा उपराला होए।
तुमको कहने को होए, तुमको मिलने चाहे सोए।।१४२

जिस वास्ते हुई इनायत, सो ल्यावते थे तुम पे।
पर तुम पीछे फिरे, इसलाम पर खड़े ऐ।।१४३

और तुम भी इसलाम पर, ए पे तुम करो क्या।
जो दिन रसूलें फुरमाया, सो ढील बीच देख्या।।१४४

तो इनों ने अब, पीठ दई तुमें।
अब होए रसूल का हुकम, हम जाए पास उनें।।१४५

भी हक सुभान ने जिनको, सोभा देने वाले हैं और।
हमको तहां खेंच के, पहुंचावे उनके ठौर।।१४६

इन भांत का तुम भी, जनम का चाह किया।
ऐसा जान हम तुम पर, एह मता दिल लिया।।१४७

सांची सोई होवहीं, जो हक के दिल में होए।
जो हमारा सोर सराबा सुने, तो आँख उनकी भी खुले सोए।।१४८

और तुमको कहने को, होवे इसकी ठौर।
तिस वास्ते विचार के, सिताब पत्री लिखियो और।।१४६

आज इस ठौर में, हमारा नही फिरनें का दिन।
पर क्या करें हक को, एही गमता है मन।।१५०

तो हमारा क्या चलत, भया तहकीक ऐ।
महामत कहे ऐ मोमिनों, और कहो हकीकत जें।।१५१

प्रकरण।।४७।। चौपाई।।२४४०।।

आगे छोटी पत्री वोही में पुरजी

ऐ समाचार सुनियो, हम सूरत और सिद्ध पुर।
और उदय पुर मेरते, लिखे आये हम पर।।१

साथ भाई बदल के, लिख कर कहे बचन।
पाती भी लिखी इत, विध करत हों रोसन।।२

हम सकुमार बाई की, बात का किया विचार।
ये तो साहिबी बोहोत बड़ी, घूना घून नाहीं सुमार।।३

धुर लगे मजलिस, कर ना सके कोए।
और अपनी बात को, क्यों समझे संदेसे सोए।।४

जो संदेसा देए के, पीछे फिरिए घर।
जोलो घूटन घूटन सों बांध के, सुनावे ना इन पर।।५

एह बात तो तब होए, तिस वास्ते लिख्या तुम।
ज्यों ब्राह्मण गायत्री सूद्र को, कहे सुनावे नाहीं हम।।६

त्यों कुरान का मजकूर, हिन्दुओं न सुनावें कान।।
न उनकी बात आप सुने, तो क्यों कर होए पहिचान।।७

तिस वास्ते आपन को, जात भेस उपले।
सब गोविन्द भेड़े की तुमको, पहिचान जात भेख के।।८

सो तो सास्त्र वेदान्त, साध पंथ पैड़ों में।
सब कोई उड़ावे इनको, सब है चरचा इन में।।९

कुरान देखे पीछे, बात महम्मद अलेहु सलाम।
सब कड़ी हमारे घर की, है हमेसा दीन इसलाम।।१०

तो हम जात भेख का, क्यों ना भानें सिर।
संकुच करों किस वास्ते, ए भेख बदला यों कर।।११

ऐसा जान हम बारह जने, पैठे बीच दरबार।
सो हमको सकुमार ने, कहया मजलिसे यों कर।।१२

धन धन कहे सब हमको, पीछे उनके मन में।
हमारा भासा अवगुन, क्यों हिन्दू मुसलमान ऐसे।।१३

किन ने भेजे आए हैं, कछू दगा है इन मन।
ऐसा जान के साथ को, किए कोतवाल हवाले मोमिन।।१४

काजीएं कह्या कोतवाल को, जो सांच झूट देखो तुम।
ए कौन है कहां से आए, तुम चरचा कहो हम।।१५

बहुत बातें हमसों करी, तिस पीछे कह्या सुलतान।
जो ए झूटे नही दगा नही, है मोमिन खास ईमान।।१६

तब चौकी बैठाई थी, ताको दिए उठाए।
हवेली का हुकम हुआ, इनों दिए बैठाए।।१७

विकार इनके मन में, आया था सो गया।
अब हम रहे हैं, काम सुचत का भया।।१८

जिन सनंधे समझेगा, त्यों समझावें हम।
अब हमारे काजी सों, मिलाप कर दिया तुम।।१६

कोतवाल सों भी भया है, कागद सब सुलताने।
मंगाये अपने पास, जमा किये अपने।।२०

अब ए उच्चार करेगा, जेती बात जाहिर।
सो समझावते खलक में, पड़ेगी बाहिर।।२१

और बात की हम सों, जब करेंगे तलब।
तब हम तुमको लिखेंगे, तुम एकान्त बैठो अब।।२२

अब तो हम जाहिर, लसगर है इमाम।
थाना थिर कर बैठे, ऐते दिन छाना करते काम।।२३

सुलतान की जान में, होए बैठे जाहिर।
अब तो हमको लखे, लख किए बाहिर।।२४

तिस वास्ते हम भी, एक ही तरफ होयेंगे।
तुमको दिल्ली के परवाने, खप होए तो भेजेंगे।।२५

जब लों इन चरचा का, लगेगा बेसक।
ऐसे कागद और दिलासा, लिख भेजें हुकम हक।।२६

योंकर इन साथ को, ना उपजे विकार।
गम दिल में ना होवहीं, रहे सनमुख परवरदिगार।।२७

तुम भी पाती उनको, लिख भेजो निसंक कर।
सिरे तुम सब साथ के, सामें हुए यों कर।।२८

और बड़े मोहोरें मोहबड़के, आए लगे तुम।
तिस वास्ते सब साथ को, पाव भरे हक हुकम।।२६

अपना आपा निसंक, तुम डारयो सब साथ।
तिस वास्ते लाहा ल्योगे तुम, पर हकें पकड़े हाथ।।३०

दज्जाल के घाव तुमको, मोहों सिर पर लगे।
आपन जुध कहते हते, सो तुम जुध किए ए।।३१

औरों को कहने की पाती का, ए जो हुआ अब जोए।
तुमारे कहने का, एह करने का होए।।३२

सो तो तुम किया, अब खबर राखियो तुम।
इन मोरचे खबर, एह लिखते हैं हम।।३३

तुम भेला जो कोई मिले, तिनकी कीजो तलास।
जेती वस्त तुम पास है, जैसे धनी की है आस।।३४

जैसे तुम आप हो, तैसा फुरमाया धाम।
तैसे भारी हूजियो, तैसे कीजो काम।।३५

जैसा कलामों में है, तैसा ही भरयो पाए।
एते दिन तुम मिने, आकार पकड़ बैठाए।।३६

तिस वास्ते मेरा, चला जात मुलाज।
अब मरजादा चलियो, राखियो मेरी लाज।।३७

अब तुम एक दूजे से, भारी हूजियो तुम।
अपने गुन बस कीजियो, बड़े मोहरे को लगे तुम।।३८

तिस वास्ते नया जो आवेगा, तुमारी वानी चाल देख के।
तिस वास्ते भारी होइयो, चाल भारी दिखाइयो ऐ।।३६

हो तुम जान सिरोमन, जो तुम साथ समस्त।
तुम बुधवान विचष्यन, तुम पे बड़ी वस्त।।४०

तुम बड़ी बुध के खावन्द, क्या बहुत लिखिए तुम।
अजान को लिखिएत हैं, तिस वास्ते बेर बेर कहा लिखें हम।।४१

चार दिना आपन को, है पत्री से मिलाप।
आकार मिलाप ना होवहीं, तिस वास्ते जानो आप।।४२

दोए सुकन तिस वास्ते, चांप के लिखे कलाम।
हमको चार दिना जाना पड़े, वास्ते इसहीं काम।।४३

सो भी कारज कारन, जान परत आगे।
नातो हमारा जाना न होए, सो जानो तुम ए।।४४

तुम पाती लिखियो, सब साथ ऊपर।
और नवतनपुरी, तथा खंभालिए पर।।४५

तथा पोरबन्दर, तथा मंडई ठठे।
तथा सूरत खंभात, तथा अहमदाबाद के।।४६

और भरूच सिद्धपुर, तथा उदयपुर मेरते।
सब साथ ऊपर, पाती लिखते रहियो ऐ।।४७

बोहोत खुसाल होए के, वस्त का दिखाइयो बोझ।
महम्मद ईसा इमाम, बड़ा बोझ दिखाइयो खोज।।४८

सब को वस्त दिखाए के, खण्डनी लिखियो तुम।
गल गलते रोते जिन लिखो, कहो चोखा लिखत हैं हम।।४६

जो कोई तुमको, उत देवे दुख।
तिसका सिर हम भान के, उत देवें सुख।।५०

अथवा कोई साथ में, उलटा होए देवे कसोट।
सो तुम हमको लिखियो, ताए बांध मंगाये करें चोट।।५१

हम जो भेख बदल के, पैठे बीच दरबार।
सों उलटों सीधा करनें, तरफ परवर दिगार।।५२

मुसलमान सों हम तो डरें, जो श्री देवचन्द्र जी परखी न होए।
खोजी रई बाई बासना परखी, सब साथ जानत हैं सोए।।५३

जात भेस जो तुम रख्या, ताको श्री देवचन्द्र जी भान्या सिर।
सो ना सकते जाहिर कर, अब समझे फिरके बहत्तर।।५४

तो हम राज की आज्ञा से, जाहिर किए चौदे तबक।
विकार सारी विस्व का, मेट दई सब सक।।५५

ऐसी पाती लिख के, उठाए खड़े करो।
चार बचन जिन भांत के, तैसे तहां धरो।।५६

तैसे ही तिन ऊपर, लिख के भेजो तुम।
जिनको जैसा घटता, ताको पाती लिखो सब कुंम।।५७

तैसी बिहारी जी को, और नागजी अखई।
नवतनपुरी भेजियो, जवाब आवत क्यों कर सही।।५८

देखें बिहारी जी क्या लिखते, ए जवाब लेओ सिताब।
ए पत्रियां लिख के, दुरूस्त करो अब किताब।।५९

अब तो तुम केसरी सिंह हो, ऊपर पहिरी पाखर।
काहू मुलाहजा जिन करो, कासिद को भेजी आखर।।६०

कासिद तहां लों भेजियो, उनके दिल की ल्याओ खबर।
कोई तुम से आप छिपावहीं, सो मालूम होवे इन पर।।६१

जो जैसा तैसी तिनों, लिखियों तुम कलाम।
ज्यों आगे अगिन के, मोम पिघलत तमाम।।६२

और दयाराम के भाइयों नें, आगे आए दरबार।
बातें इन भांते करी, ताए हम रूपैया देवें चार हजार।।६३

जो इनको मार डारहीं, ऐसी बात सुनाई कान।
हमारी सरम जाएगी, जो होएगा मुसलमान।।६४

तिस वास्ते इहां इनको, गोविन्द भेड़े की निसबत।
मार डारत भाई को, पैसे दे के इत।।६५

वास्ते अपनी सरम के, सब में एही स्वारथ।
गोविन्द भेड़े इन भांत के, ए नजर में राखियों अरथ।।६६

ऐसो होए स्वारथी, गोविन्द भेड़ा चौदे तबक।
एह बचन दृष्टान्त वास्ते, लिखा बेसक।।६७

तुम जान सिरोमन हो, भूलोगे न तुम।
सब बात का बोझ जो, उठाए के लीजो कुंम।।६८

तुम साथ मिने सिरदार, छाती काढ़ के कहे सुकन।
वेद बन्ध की मरजाद, ताका सिर भाना मोमिन।।६९

लोक मरजादा छोड़ के, मोरचा ढहाए मिने पैठे।
तिन साथ में से, रहियो एक जागा के।।७०

तुम जुदे इनसे जिन पड़ो, नातो चेहरा होए तुमे।
पीछे कहोगे ना कह्या, तुम समझो इन से।।७१

जब लाग देखूंगा, तब मैं लेऊं बुलाए।
या बुलाओ मुझको, बैठो साथ मिलाए।।७२

बिना मसलत, जिन करो कोई काम।
सब परियाने कीजियो, देख अपना धाम।।७३

हम तुमारी पाती का, करेंगे विचार।
जब तुम जवाब लिखोगे, तब हम चलें बाहर।।७४

हंस खेल हरख के, बांधोगे कमर।
तुम लीजो बोझ उठाए के, रहो दिल दृढ़ कर।।७५

जो कदी आकार से, मैं जुदा रहों दो दिन।
अन्तर गत दृष्टान्त, हुआ इलहाम रोसन।।७६

तिस वास्ते भीम भाई की, खबर पूछियो उदयपुर।
अजूं भी न समझया, तिनका कहा करों क्यों कर।।७७

तिनसे क्या समझेंगा, नींद अन्तर हैं जोर।
ए राज के हुकमें भई, ताए क्यों ए ना सकें मरोर।।७८

तिस वास्ते एह भोम, है हांसी का ठौर।
कोई न होवे जागृत, बिना हुकम कोई और।।७९

अनेक भांत के मोहजल, नये नये उठत तरंग।
इन में जो सावचेत, कोइक है धनी का अंग।।८०

मेरे तांई तो इन समें, लिया है मोल तुम।
तिस वास्ते तुमारी आतम से, मेरी होए न जुदी आतम।।८१

ए निश्चे सत जानियो, मुतफे कुंन अलेह।
आपोपा जरूर संभारना, बोझ आया सिर पर ऐह।।८२

इहां की हकीकत, भाई सेख बदल कहेंगे।
ताको सही जानियो, सुनियो कानों से।।८३

सेख बदल आए पीछे, हमको बड़ो भयो सुख।
हम तुमको मिलेंगे, तब हंस के भाने दुख।।८४

हमको बड़ा हरख है, सब सुख में रहियो कुंम।
दिन जागनी के आए नजीक, स्याबास लालबाई तुम।।८५

तुम सूर धीर पना किया, आगे धरे कदम।
अब सेख बदल आये सुख, पावे तुमारी आतम।।८६

सुख समाधान आनन्द की, रहो लिखते पाती।
सब साथ को परणाम, लालबाई को कहती।।८७

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए पाती की हकीकत।
अब मुकदमा कहों, फरदा रोज कयामत।।८८

प्रकरण।।४८।। चौपाई।।२५२८।।

अब दिल्ली छोड़ उदेपुर आए

कामा पहाड़ी से होए, आए बीच आमेर।
दिन एक दोए रह के, पीछे आए सांगानेर।।१

थे मुकुन्ददास उदयपुर, उहां से आए सांगानेर।
तहां चरचा करने लगे, सुना सोर लड़ाई का जोर।।२

तब उहां से चले, आए पोहोंच आमेर।
उहां श्री जी साहिब जी की खबर सुनी, फेर आए सांगानेर।।३

तहां राह बीच में, सेख बदल मिले।
तिनसों मिल चल के, आए पेंडे मवासियों के।।४

तिनों ताके मारनें, थे पैसे बीच कम्मर।
डर लगा बोहोतक, भागे उतथें फेर कर।।५

तहां से आए पुर में, तहां एक दुकान पर।
श्री जी साहिब जी बैठे देखे, एक खाट ऊपर।।६

छबील दास आगे खड़ा, और मलूकचन्द नाम।
दोऊ दुखी पड़े हते, छुदा जोर थी इस ठाम।।७

घर में कछु न पाइए, जो मंगावे बाजार से।
पहिचाने सेख बदल नें, कदमों लागे इन समें।।८

मुकुन्द दास आए मिले, थे बसनी रूपैये सौ चार।
मोल मंगाए बाजार से, चला कार वेहेवार।।९

थे पैसे सेख की गिरह में, रूपैया सौ तीन।
उन आए आगे रखे, लगे बातें करने आकीन।।१०

किया परियान रात को, मुकुन्ददास मिल के।
मुकुन्ददास के मन में, खेद हुआ दिल से।।११

श्री जी साहिब जी के दिल की, लगे बातें पूछन।
देखें कैसी मसलत करत हैं, हुआ कसाला ऊपर मोमिन।।१२

तब श्री जी साहिब जीएं कह्या, अब ना छोड़ों इनें।
और इलाज कर मारहों, जड़ उखाड़ों बुनियाद पने।।१३

जोर देखी हिम्मत, श्री जी साहिब जी के मन में।
अब कहां को जाएंगे, विचार कहो हम सें।।१४

इत जरगा पंथी बोहोत हैं, तहां आदमी मिले लाख।
धनी बाबे का पंथ है, ए अपनी पूरे साख।।१५

ए बात सुनके, मुकुन्ददास पर हुआ हुकम।
तू देख बातें करके, उत बुलाओ हम।।१६

मुकुन्द दास मलूक चन्द, चले उहाँ से जब।
भील दौड़े तिन पर, भाग के छूटे तब।।१७

मुकुन्द दास विचार के, आया उदयपुर गया लाधू।
मसानी के इहां, करी श्री जी साहिब जी की फिकर।।१८

उनसों जाए बातां करी, श्री जी साहिब जी के मिलाप।
कबूल करी उननें, बुलाए ल्याओ तुम आप।।१६

इन समें बनमाली दास, आए खंभात से।
संग राम बाई गोदावरी, आए पहुंची इन समे।।२०

मुलाकात करी इनों ने, तन मन दिया धन।
मेला मोमिनों का हो चला, खुसाल हुआ मन।।२१

श्री बाई जी और साथ, रहें आगरे में।
मुकुन्ददास आए पोहोंचे, पाई खबर उनसे।।२२

लाधू मसानी आइया, बीच दीन इसलाम।
तिनने बुलाए तब, दई जगा रहने की ठाम।।२३

तब श्री बाई जी को बुलाए, आप चले उदयपुर।
साथ सब संग चले, पीछे दज्जालें किया सोर।।२४

लाधू भाई के आए, उतरे उनके घर में।
आदर भाव उन किया, हुई सेवा भली उनसे।।२५

फेर लाधू मसानी के इहां, मुकुन्ददास दई खबर।
उनसों मुलाकात करी, उन दिल में भई असर।।२६

तब उन हवेली दई, उतरे उन ठौर।
तहां चरचा होने लगी, रही बात न हक बिन और।।२७

नया मंडान होए चला, साथ आवत बीच इसलाम।
हुई वेद कतेब की चरचा, इत पाया विसराम।।२८

इत चरचा होने लगी, जहां तहां हुई खबर।
सब दीदार को आवत, चरचा सुनने पर।।२६

अपने साथ के लोग जो, ताके चित भए सनमुख।
दीदार श्री जी साहिब जी के, बड़ो जो पायो सुख।।३०

दोए राजपूत हवेली मिने, तिन उत बैठे सुनी बान।
तिनों को तारतम की, कछुक भई पहिचान।।३१

इन समें नूर महम्मद सों, होए गई मुलाकात।
गला चरचा सुन के, नीके सुनी बात।।३२

इत एक सैयद बारात से, सुनी चरचा दीन इसलाम।
ईमान ल्याया इन समें, देख मोमिनों काम।।३३

और भीखू सोनी आइया, और राधा रूकमन।
और सुन्दर सोना, आई कदमों मोमिन।।३४

इहां मयाराम वास देव, और सुकदेव देरासरी।
ए आए साथ में, श्री राज की मेहर उतरी।।३५

इत जगीसा अमोला, इत आया केतेक साथ।
चरचा उच्छव करत हैं, जाके धनीएं पकड़े हाथ।।३६

यों मास चार भए, जो साथ लड़े संग सुलतान।
तिनों ने अरज करी, लिखी ए पहिचान।।३७

ए सरियत सों हम लड़े, देख आए नैनों निदान।
बिना सोंटे इन पर, ए क्योंए न ल्यावें ईमान।।३८

ए नीके हम देखिया, इनको नही ईमान।
तो पैगाम को फेरिया, सुन्या न हुकम सुभान।।३६

अब हम राह देखत हैं, जो हमको आवे हुकम।
तिन माफक हम करें, जैसा लिख भेजो तुम।।४०

तब पाती लिखी उन पर, उठके आइयो तुम।
इन पर सोंटा होएगा, कादर के हुकम।।४१

पाती सेख बदल ल्याइया, दिल्ली बीच मोमिन।
सुनके सुख पाइया, दिल हुआ रोसन।।४२

जाए सेख इसलाम पे, हमको रजा देओ तुम।
हम जावेंगे अपने ठौर, हमको करो हुकम।।४३

तब काजी ने कहया, मैं रजा कराऊं सुलतान।
तुम परसों आइयो, आम खास सुनाऊं कान।।४४

तब एक दिन बीच डार के, ले चला हजूर।
सुलतान सामे ठाढ़े किए, आप हजूर किया मजकूर।।४५

ए बिदा होत हैं, जात अपनी ठौर को।
ए वही लोग हैं, जिन लड़ाई करी सरे मों।।४६

तब काजी ने कहया, एही मोमिन उस दिन।
तुमसों जिन मजकूर किया, ल्याए ईमान मोमिन।।४७

देख्या सामें सुलतान ने, तीन बेर फेर फेर।
सिर नवाए देखिया, दे खुदा इनों खेर।।४८

एक सौ रूपैया खरच, देने का किया हुकम।
सिताबी ले दौड़िया, लेओ मोमिनों तुम।।४६

जब रजा दई सुलतान ने, तब राजी हुए मोमिन।
बिदा होए के चले, रहे एक दूसरे दिन।।५०

आए पोहोंचे उदयपुर, मुलाकात करी श्री राज।
भेख बदल सामिल भए, भए इसलाम के काज।।५१

एक लखमन भीम भाई, स्याम दास खिमाई।
सामलदास गरीबदास, और संग लालबाई।।५२

स्यामबाई राम राए, ए आए पोहोंचे कदम।
मिलते ही सुख पाइया, इनों सौंपी आतम।।५३

इन समें उदयपुर में, बड़ो भया चरचा को पूर।
दरसन राज के होवहीं, बड़ा रोसन हुआ जहूर।।५४

साथ आहेड़ का आइया, और मोटी बाई।
मसकरी राज सों करें, खुसखबरी राज सों पाई।।५५

रांणे ने ए बात सुनी, अपनी मजलिस में।
नित्य लोग आए कहें, अस्तुत निंदा सुनें।।५६

कोई कहे बड़े साध हैं, इनके अनन्त लोचन।
कोई कहे ए ठग हैं, इनों भेख धरा मोमिन।।५७

कोई कहे मुसलमान हैं, भेजे हैं सुलतान।
तुमको मुसलमान करनें, कहे वचन बिन पहिचान।।५८

कोई कहे कुरान पढ़त हैं, कोई कहें वेद कतेब।
इन भांत राणे आगे, बातां बतावें ऐब।।५९

राणें पंडित भेज दिए, जाए के देखो तुम।
उहां कैसी चरचा होत है, सुनाओ सारी हम।।६०

वे तो आए पेटारथू, इनों नाहीं काम आतम।
देखी तो चरचा बड़ी, क्या जवाब देओ तुम।।६१

और चालीस प्रस्न भागवत के, पन्द्रह वेदान्त के सुनाए कान।
इन प्रस्नों की हमको, कर देओ पहिचान।।६२

जवाब न आवे उनको, दिया न जाए उत्तर।
तब सब मिलके विचारहीं, करने लगे फिकर।।६३

ए तो बुरे वैरागी, हमारा भानेंगे रूजगार।
इनकी निंदा कीजिए, तुम सब मिल होवो खबरदार।।६४

इनका बड़का ब्रह्मा, जब गर्भ अस्तुत करी।
फेर परीक्षा आया देखनें, भूल बड़ी दिल धरी।।६५

गर्भ में पहिचानिया, भूल गया बाहिर।
सो भूल आज लों, सब में भई जाहिर।।६६

दूसरे ऋषेस्वर, करते थे जगन।
अन्न मांग्या तिन पे, वे रहे कर्म में मगन।।६७

पहिचाना इनकी स्त्रियों ने, भई सोभा तिन।
आज लों ब्रह्माण्ड में, चरचा होत आगे मोमिन।।६८

भृगु बड़का इनका, लात मारी छाती भगवान।
ए तिनकी नसल, होए असल माफक पहिचान।।६९

इनों जाए राणें आगे, लगे निंदा करने।
ए वैरागी किसी न काम के, कबहूं न देखिए इने।।७०

और दूसरे अंकूर, तैसी आवत बुध।
तिस वास्ते राणें को, कछु न भई सुध।।७१

यों करते एक दिन, राणा चला ताल पर।
श्री जी साहिब जी तहां चले, श्री बाई जी रहे साथ खातर।।७२

तहां जाए एक हवेली में, डेरा किया तित।
लोग आवे चरचा को, हुआ आनन्द बड़ा इत।।७३

इन समें अवगुन साथ के, ताको लेने लगे हिसाब।
सब साथ पर खण्डनी, जोर हुई इनके बाब।।७४

भेख बदलाये सबन के, श्रवनी पहिनाई कानन।
और साज सब फकीरी, सो दिया हाथ मोमिन।।७५

रोए धोए राजी भये, नाच कूद हुए खुसाल।
काढ़े अपने अवगुन, ले जबराईल संग हाल।।७६

इन समें दया राम, चंचल गंगाराम।
और बनारसी आइया, सो आए पहुंचे इस ठाम।।७७

सूरत से मोहन चतुर्भुज, आए लगे कदम।
और साथी आए केतेक, तिनों सौंपी आतम।।७८

इन समें पठान सौदागर, इनायत खान नाम।
दूसरा मुराद खान, अब्दुलनवी उस ठाम।।७९

और अलादाद खान, और यार खान।
इलयास खान नवाबकर, और मिहीन को भई पहिचान।।८०

उसमान हसन खान, और अहमद खान।
ए आए दीदार को, अव्वलखाँ को भई पहिचान।।८१

दीदार पाया राह में, थे घोड़े पर असवार।
आगे जलेब में चले, वैरागी थे खबरदार।।८२

अव्वल खान पूछिया, जो है महम्मद नूर।
मोको खबर तुम देओ, इन वैरागी का मजकूर।।८३

जो तूं छिपावेगा मुझको, तो होऊंगा दावनगीर।
ए कौन है कहा से आइया, ए कैसा फकीर।।८४

तब नूर महम्मदें कह्या, हैं सामिल दीन इसलाम।
है कलमा कुरान इन पे, कमर बांधी दीन के काम।।८५

ए तो हकुल आकीन था, सुनते इ ल्याया ईमान।
आया उत दीदार को, कर दई अपनी पहिचान।।८६

चाबुक अपने हाथ लेए के, मारत अपनें अंग।
तब मने किया राज नें, आए बैठो हमारे संग।।८७

उहाँ पट का काम चले, लिखावें बैठे राज।
मुकुन्द दास दारोगा रहे, बैठा था इन काज।।८८

आए पटान मिल के, करने को दीदार।
होने लगी चरचा, सवाल किया परवरदिगार।।८९

हमारे तुम कहो, कलमा रसूल का।
तो हम होवें तुमारे, एता चाहता था।।६०

जबराईल इन समें, श्री जी को बैठा जोस।
मेरे महम्मद बीच में, कौन आवे बड़ा अफसोस।।६१

अव्वलखान की रूह पर, आए जबराइलें किया जोर।
जोस देख काफर डरे, करने लगे सोर।।६२

तब उठ खड़े रहे, बिदा मांगी सबन।
घरों जाए सोर किया, लगे निंदा करने मोमिन।।६३

एक दिन किरंतन में, राणा आया करन दीदार।
मोंह छिपाए ठाढ़ा रह्या, देखा रासलीला बिहार।।६४

इतना ही था अंकूर, तेता लिया फल।
आज्ञा थी तोलों रह्या, भई तेती आतम निरमल।।६५

इनों के दिल में सक रहे, ल्याया ईमान अब्बल खान।
तिनसों मसकरी करें, भई इनको पूरी पहिचान।।६६

इन समें अमरा जी, वह पहिले ल्याया ईमान।
रामसिंह गंगा के घर में रहे, कछु इनको भई पहिचान।।६७

और भोगी दास जो, ए आया करन दीदार।
मीठी लगी चरचा, पहिचाना परवरदिगार।।६८

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए तलाब करो याद।
फेर कहों उदयपुर की, जो बीतक बुनियाद।।६६

प्रकरण।।४६।। चौपाई।।२६२७।।

उदयपुर

फेर उहां से आये उदयपुर, उतरे हवेली में।
साथ सब आये मिल्या, सुख पाया मिलाप से।।१

इन समें गोवरधन भट्ट, सूरत से आया।
धोली बाई साथ थी, तिन को संग ल्याया।।२

ए दोऊ आए कदमों लगे, साथ सों किया मिलाप।
बातें सुनी इत उत की, लगे चर्चा करनें आप।।३

इन समें पातसाह ने, करी मुहींम राणे पर।
आये अजमेर से भेजिया, मथुरिया इन पर।।४

आओ मेरे दीन में, ल्याओ तुम ईमान।
पांच परगने देऊं तुमें, जो होवे मुसलमान।।५

गरीब दास पुरोहित को, आग्या करी तिन।
सो ले गया राजसिंह पे, कही कानों लाग कानन।।६

सुनते ही रीस करी, तुझे ना छोड़ता मैं।
पर क्या करों पुरोहित भया, अब भाग जा इत से।।७

देओ धक्के इन दूत को, जो ऐसी बात सुनावे कान।
दलगीर हुआ दिल में, मन में बड़ा गुमान।।८

ओ तो दूत फिर गया, इत खड़ भड़ पड़ी जोर।
इन समें दज्जाल नें, किया जो बड़ा सोर।।९

तब श्री जी साहिब जी कहलाइया, हम रदबदल करें इत।
दौर नजीक पहुंचिया, बखत रोज कयामत।।१०

तुम कछू ना बोलियो, रद बदल करें हम।
इन राह से दीन की, ए आवें तले हुकम।।११

ए बात राणें सुनी, हम ऐसे नही पात्र।
जो रदबदल करें दीन की, ऐसे नहीं हमारे गात्र।।१२

हम से बोझ पातसाहों का, क्यों कर उठाया जाए।
हम सुनत बात डरत हैं, ए हमसे न होए उपाए।।१३

तब हजूर दज्जाल था, सो निंदा करने लगा जोर।
हम आगे ही तुझ से कही, वे करने लगे सोर।।१४

निकाल छोड़ो इन को, कोई कहे लूट लेओ तुम।
सब राणा सुनत है, पर कछू न किया हुकम।।१५

राणा भीमसेन पासे था, इन सुनी बातें कान।
इन ठौर वैरागी लूट लेओगे, तो हम होवें बदनाम।।१६

भेज दिया कोतवाल को, तुम बिदा होओ चार दिन।
सब सुख समाधान होवहीं, फेर आइयो साधुजन।।१७

लसकर चारों तरफों, दज्जालें फैलाया चोफेर।
पावे न कोई निकसनें, बड़ा जो किया सोर।।१८

श्री जी साहिब जी ने बिचारिया, हुआ हमको हुकम।
ए आज्ञा है राज की, इहां से उठो तुम।।१६

ऐह सामा सूत हम संग, निबहे नहीं लगार।
इतही बांट दीजिये, ऐसा किया विचार।।२०

फेर कोतवाल आइया, ल्याया हुकम दूसरी बेर।
रानें रजा दई तुमको, यों कर कह्या फेर।।२१

अब इत रहने का, धरम न रह्या लगार।
हमारा जो अखत्यार, है हाथ परवरदिगार।।२२

एही हमको काढ़त, छुड़ाए दियो ए ठौर।
जहां खेंचे तहां जायेंगे, अब ढूंढों ठौर और।।२३

इन समें महा सिंह, करने आया दीदार।
पहिनाया सिरोपाव इनको, अब तुम हूजो खबरदार।।२४

हम तो बिदा होत हैं, तुमारे मुलक से।
तुम बैठ ना सकोगे, बैरान होओ इनमें।।२५

और जेते उमराउ, और जेते पासवान।
और साथ आपना, जाको थी पहिचान।।२६

तिन सबों को सिरोपाव, घरों दिए पोहोंचाए।
निरगुन भेख पेहेरन का, मोमिनों दिया बताए।।२७

पहने चीरक बस्तर, सब सरगुन दिया डार।
हुए चलने को तैयार, छोड़ा कार वेहेवार।।२८

बासन बस्तर सरगुन, बख्स दिया सबन।
तूंबा कूबड़ी गोदड़ी, ए भेख पहना मोमिन।।२६

अब कहूं साथ उदयपुर का, जिन सौंपी आतम।
आए दीन इसलाम में, सिर चढ़ाया हुकम।।३०

एक तो लाधू मसानी, और अमरा जी नाम।
और आया देवजी, हर सुन्दर आया इसलाम।।३१

और भाई मंगलजी, और आया गिरधर।
गेहेला मना हिम्मत, ए आये मुहब्बत पर।।३२

आए केसवदास बेनीदास, और आए सोभा भीमा।
और भोगी बीर जी आये, इनों भास्या सुख जमा।।३३

और आये प्रेमदास जगन्नाथ, और पीछे आए लखमीदास।
और सोनी नारायण, ले धाम धनी की आस।।३४

और साथ समस्त में, एक भाई वासुदेव।
इनकी माता सहुद्रा, पलेवास में पाया भेव।।३५

मोटी बाई कुंजा बाई, कमला बाई नाम।
और खुसाली कही, ए आए इस ठाम।।३६

और आई लाल बाई, और आई नागर।
और भूरो भतू, तजी माया राज खातर।।३७

केसर और भानाबाई, और गंगाबाई गंगी।
और आई लाड़बाई, ल्याई दीन में अपने संगी।।३८

कृष्णा बाई लाल बाई, और सोना फूला नाम।
जीवी और देवबाई, ए दाखिल इसलाम।।३६

सहू और गंगाबाई, और जगू बाई तारू।
बछू बाई फूलबाई, किया राजें उपरारू।।४०

भोगन और मथुरी, आई गोरी और मनू।
पीठ दई दुनियां को, नीके जानो सुपनू।।४१

अमेखी और दानी खेती, और मनी बेरानी नाम।
नानी बाई गोमा बाई, ए पीछे आई इसलाम।।४२

गोमा और वीर बाई, और नाथी लखी।
भाग बाई तारा बाई, खेली ब्रज रास में सखी।।४३

अनदू और मनी बाई, पूर बाई और गंग।
भाना बाई अमृत बाई, सुख पावे राज के संग।।४४

अमृत दे करमा बाई, और चीमा सहोदरी।
और कान बाई मना दे, मेहर राज की उतरी।।४५

चीमा बाई सजनी, और दीपा बाई नाम।
और साथ समस्त सब, उदेयपुर के ठाम।।४६

यामें कोई आगे कोई पीछे, आए बीच इसलाम।
कोई तो समझन के पख, कोई दीदार के विश्राम।।४७

जब सुलतान चढ़ा राणे पर, तब भागा सारा देस।
तब उहां से निकलने पड़ा, जुदे पड़े दरवेस।।४८

उहां सेती चल के, आए रामपुर के गाम।
पासे पुरा दुधलाई, पूरनदास के ठाम।।४९

महामत कहें ऐ मोमिनों, ए उदेयपुर की बीतक।
अब कहों मन्दसोर की, जो बीतक हुकम हक।।५०

प्रकरण।।५०।। चौपाई।।२६७७।।

मन्दसोर की बीतक

अब कहों मन्दसोर की, आये उदेयपुर से चल।
जब नौरंग चढ़ा राने पर, हुआ मुलक चल विचल।।१

सम्बत् सत्रह सै छत्तीसा, लगा सैंतीसा जब।
मन्दसोर के बीच में, आए पोहोंचे तब।।२

इन समें फकीरी का, भेख धरा अनूप।
सोभा छब सरूप की, बारों कोटक रूप।।३

गोटा सोभे सिर पर, ऊपर कनढपी।
दोए पुरत लोइ धागे भरी, ए पेहेनत हैं टोपी।।४

अति सुन्दर तिलक बन्यो, दोए रेखा बीच बिन्द।
गोपी चन्दन सुपेत का, मुख सोभित मानों चन्द।।५

जे श्रवनी सोभे कानों मिने, दोए बाले कंचन के।
अत राजत छब प्यार की, लगा प्यार फकीरी से।।६

पेहेनी कण्ठी तुलसी की, और बड़ी माला चार।
अति सोभित अंग मेखली, लोइ धागे भरी सुमार।।७

और गोदड़ी ओढ़न की, हाथों लई बनाए।
सेली सुमरनी मुत्तका, अंग सोभित हैं ताए।।

उपरनी धोती अंगोछा, पहरे और बांधें कम्मर।
एह छबि ब्रह्मांड में, सोभा सब ऊपर।।९

एक पात्र तूंबे का, और तूंबा कम्मर।
साज सबे झोली मिने, राखत कांध ऊपर।।१०

पेहेनी पांव में पनहीं, चलत चटकनी चाल।
संग केतेक मोमिन, चलत होत खुसाल।।११

सबों ने भेख पेहेन्या, देख अपनें साहिब।
चाह खेल देखन की, हुई बड़ी खुसाली तब।।१२

श्री बाई जी भेख बनाइया, सोभित हैं निरगुन।
साज फकीरी राखत, जंग दज्जाल से करें मोमिन।।१३

राह बीच राम पुरा, तहां निकट चारन का गाम।
तहां उठाई हवेली, लगे ईंटें पारने के काम।।१४

बनाए टाढ़ी हवेली करी, सरूप रहें तिन में।
पूरनमल चारन, वह गाम था उनसे।।१५

रही उनकी माता खिजमत में, करे उपली पेहेचान।
इनके सरूप देख के, उपला था ईमान।।१६

जब दज्जाल नें जोरा किया, दिल बैठा बेरीसाल।
वह भाई राजा का था, हुआ दज्जाल का हाल।।१७

बुरी नजर करी साथ पर, लूट लेऊं फकीरन।
तब चारन के घरों गए, फरियाद करी मोमिन।।१८

तब चारन की माता ने, बांधी जोर कम्मर।
इन वैरागियों सामी देखे, मारों तिनें खर।।१९

या तों मैं मरों तिन पर, हत्या देऊं उन।
इनसे बुरा क्यों देखे, मेरे घर आए साधुजन।।२०

तब स्याह मोंह ले पीछे फिरे, उत से बेरीसाल।
चला न कछुये तिन का, बुरा हुआ हवाल।।२१

वह हवेली छोड़ के, आए मन्दसोर।
तहां आए के बैठे, हरपरसाद घरों ठौर।।२२

तहां पातसाही लसगर, रहे मन्दसोर के गिरदवाए।
गावत सनंधे तहां बेठ के, कोई कोई सुनने को आए।।२३

इत सुनने को आवत, पठान दौलत खान।
सुन सनंधे घायल भया, भला ल्याया ईमान।।२४

और सेरखान कोहटी, सुनी सनंधे कान।
संग केतेक पठान, तबहीं ल्याए ईमान।।२५

बिना एक महम्मद की, सनंध पढ़ी जब।
दौलत खान पठान को, जोस आया तब।।२६

बिना एक महम्मद है, और न काढ़े बोल।
फेर फेर एही कहे, एही काढ़त मुख कौल ।।२७

किरपाराम इत आइया, तहां पाती ले पुकार।
उदेयपुर का साथ पहाड़ों मिने, हुआ विलाप करन हार।।२८

विलाप इनका सुन के, दिल में हुआ दरद।
मुंह दरगाह बीच करके, पुकार करी महम्मद।।२९

पांच किरंतन करके, फेर दाखिल किए कलाम।
तबहीं पोहोंची हक को, हुई मेहर ऊपर इसलाम।।३०

इन समें इबराइम, करने आया दीदार।
सोहोबतें राजी भया, फेर आया दूसरी बार।।३१

तब लाल की सोहोबत सें, बातें हुई इस ठाम।
एक किस्सा कुरान का, करो हमारा काम।।३२

तब उनने उतराइया, सूरत एक कुरान।
तिनमें केतिक आयतें, श्री जी यें सुनी कान।।३३

सुनते ही सुख उपज्या, यामें बात हमारी सब।
जो उतरावे तुम को, तो बड़ा काम होवे अब।।३४

तब उनसों बातें करी, कहे मैं उतराऊं कलाम।
कछुक लोभ दिखाया, राजी हुआ इस ठाम।।३५

प्रात को आए खड़ा हुआ, सुरू हुआ सिपारा सोलमा।
दो जुज उतराए दिए हाथ में, बड़ी राज को हुई तमा।।३६

इत एक मजिल भई, बड़ी खुसाली दिल।
बीतक अपनी बांच के, होत दिल निरमल।।३७

एक ठौर रात को बंगले, उतारत हैं कुरान।
लाल इबराइम बैठत, राज पासे पौढ़े सुने कान।।३८

उतरावते एक सुकन, पढ़ा इबराईम नें।
ए तो कोई रावसी, कलम मारी उननें।।३६

तब श्री जी ऐ कह्या, फेरके पढ़ो सुकन।
ए तुम क्या कह्या, फेर हमें सुनाओ कानन।।४०

तब कह्या इबराइम नें, जो सुनी मुसलमान।
महम्मद की उम्मत के, अरजी न पहुंचे कान।।४१

कोई पोहोंच ना सके, मरातबा मोमिन।
तुम हरफ न फिराओ इनका, जैसा लिखा होए सुकन।।४२

और वाही सुकन को, समझत नाहीं तुम।
कोई क्या जाने उन क्या लिख्या, सो समझत नाहीं हम।।४३

लगता एक चबूतरा, तहां पढ़नें बैठे श्री राज।
बीतक देख राजी हुये, भए पूरन मनोरथ काज।।४४

अब अपनी बात के, सब बिध भए कारज।
अब तुमें करना कछु ना पड़े, रही न कोई गरज।।४५

अब ए सब साथ को, लिखो खुस खबर।
मेहर भई श्री राज की, सो लिखी तुम ऊपर।।४६

लिखने बैठे संझा को, सो जहां लों अरूण उदे।
इबराइम जाए अपने घरों, लाल दातुन पानी करे।।४७

यों करते उतरे, सिपारे जो चार।
सोलह सत्रह अठारह उन्नीस, ताको करनें लगे विचार।।४८

फेर सिपारा तीसमा, जाकी छत्तीसमी सूरत।
सो लिया उतार के, फेर लगे अलिफ लाम मीमसे इत ॥ ४९

फेर दूसरो तीसरो, लगे चौथो उतारन।
पांचमा सरू हुआ, उतार चले मोमिन।।५०

तब इबराइम के दिल में, आए बैठा दज्जाल।
लेऊं तपसीर छीन के, तो मन को करों खुसाल।।५१

तब लगा खरखसा करने, बीच बैठावे साहिद।
मोमिन गरीब देख के, देवे डर सरियत हद।।५२

मांगने लगा तपसीर को, मैं ले जाऊं अपनें घर।
तब लालें पेहेचानियां, दज्जाल की नजर।।५३

फितुवा उठावनें कों, करता है ए काम।
मैं तपसीर इनको क्यों देऊं, ए फिरा दीन इसलाम।।५४

तब श्री जीएं जानिया, उनके मन की बात।
तब जवाब चोखा दिया, करी तोफान की विख्यात।।५५

मोमिन दिल दलगीर भए, ए बात सुनी कान।
अब क्या करना इनसे, भई न इन्हें पहेचान।।५६

ए बात सुनी पठान नें, दौड़ के आया कदम।
देखे श्री जी साहिब जी को दलगीर, उन सौंपी थी आतम।।५७

सो काहे भए आप दलगीर, सो बात सुनाई कान।
इबराइम उठाया फितना, जो गरीब लोग ईमान।।५८

सुन सुकन मुहब्बत खान, बोहोत हुआ गुस्से।
सिर भानों इबराइम का, मन्दसोर के बीच में।।५९

इहां से उठ धाइया, गया इबराइम के घर।
कुतका लिया कांध पे, जाए सवाल किया जोरू पर।।६०

कहां गया इबराइम, दई गाल जुबान।
तब वह मुनकर भई, गए निकाह सुनावनें कान।।६१

ए चला गया तहां ही, जाए के किया सोर।
इबराइम निकल आया, क्यों एता मुझ पर जोर।।६२

मैं तो तुम्हारा गुलाम, करों फुरमाया सोए।
तें क्यों दुख दिया हादीय को, ऐसा झूठ तुझसे होए।।६३

तें मेरे आगे कह्या, ए मेरे मुरब्बी।
मैं गुलाम इनका, अब तें क्यों फेरी अपनी सबी।।६४

मार डांरू तुझको, द्वा रसूल की ना छोड़ों क्यों ए कर।
तब लगा उनके कदमों, आगे गीदड़ हुआ इन पर।।६५

जाए कदमों लाग उनके, जाए राजी कर मोमिन ।
नातो तुझे ना छोड़हों, हुए दलगीर दिल रोसन।।६६

प्रात समें उठ के, इबराइम आया धाए।
आए श्री जी के कदमों लगा, सिर ना उठाया जाए।।६७

तब नूर मुहम्मद बोलिया, उठ खड़ा हो मुरदार।
मारों कटारी पेट में, इतही हो जाए सुमार।।६८

पर क्या करों डरता हूं हादी से, इनका हुकम नाहे।
एती बेअदबी करके, फेर जीवता उठ के जाए।।६९

कहया मैं तुम्हारा गुलाम, मुझसे भई भूल।
अब तुम माफ करो, मैं तुमसे किया न सूल।।७०

मैं ग्रहे तुम्हारे कदम, सो मैं ना छोड़ों कब।
सब मोमिनों के कदमों लगा, वाको माफ किया तब।।७१

तब उनके भाई नें, पांचमा सिपारा।
वह लिखावनें लगा, हुआ जो पूरा।।७२

इन समें दज्जाल नें, सोर किया जोर।
रहे साथी सब जुदे जुदे, काहू चित ना हुआ मरोर।।७३

छिप रहे जुदे जुदे, आवे दीदार को एक बेर।
झोरी भर के ल्यावहीं, टुकड़े मांगे फेर।।७४

श्री राज आरोगत हेतसों, ए किनकी झोरी के।
सो बतावत अपने, ए ल्याया मैं।।७५

राजी होवें तिन पर, बातें हंस हंस करें बनाए।
मैं अजमावत तुम को, इन मजलों पहुंचाए।।७६

मोमिन राजी होए के, बातां करें खुस दिल।
ए दिन हम कब पावहीं, रहे एक दूजे हिलमिल।।७७

तुम सिर भाना दज्जाल का, कुटम्ब कबीला आस।
रहे बोहोत बल सूरत में, संग जोस जबराईल खास।।७८

श्री बाई जी नें इन समें, सेवा करी मोमिन।
दिल बनाए आगे धरें, हमेसा दिल रोसन।।७९

एक दूजे को सेवहीं, हर भांत कर चित।
हेत करें मिनों मिनें, कहूं सक न पैठत।।८०

नान्हा भाई चलया, मन्दसोर के में।
ताले माफक ए रहया, उतने ही सुख सें।।८१

मुकुन्द दास को उत थें, भेजे भावसिंह पास।
तुम जाए उनकी खबर लेओ, है जीवता कछु आस।।८२

जो हमको उत बुलावहीं, तो हम आवें उत।
तहां जाए के लिखियो, जैसा देखो तित।।८३

मुकुन्द दास जाए पोहोंचे, भावसिंह सों किया मिलाप।
चरचा उनसों रस पड़ी, उन कबूल किया आप।।८४

तब उहाँ से कासद, भेज दिया सिताब।
मन्दसोर आए पोहोंचिया, पाती ले किताब।।८५

उनमें भली भांत के, लिखे थे सुकन।
पढ़ के आप राजी भए, सब साथ मोमिन।।८६

अब मन्दसोर से, चलने का किया उपाय।
साथ हुए सब तैयार, खबर सबों पोहोंचाए।।८७

सब साथ भेले भए, हुए चलनें को हुसियार।
आठ महीने इत रहे, हुआ हुकम परवरदिगार।।८८

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए मन्दसोर की बीतक।
अब इहां से आगे चले, सो कहों हुकम हक।।८९

प्रकरण।।५१।। चौपाई।।२७६६।।

उज्जैन की बीतक

इहां से आए सीतामऊ, तहां से नोलाई।
तहां से आए उज्जैन, अटाईस मजलें भई।।१

भादों सुदी छठ को, रहे धनबाई के घर।
भाई भगवान चौधरी, ईमान ल्याया इन पर।।२

इनों ने उच्छव किया, बाबू जी है नाम।
नान जी बेटा तिनका, राज पधारे मेडी ठाम।।३

बूला बेटा भगवान का, कान जी भाई मन।
दामोदर दास धनबाई के, ल्याए ईमान मोमिन।।४

लालजी इत आइया, बूला बेटा इनका।
और कान जी दूसरा, बेनी भाई आया इनका।।५

लालजीएं उच्छव किया, पधराये श्री राज।
मोहन के घर उच्छव, पूरे मनोरथ काज।।६

ए जोसी राम आइया, आया धन जी इस ठाम।
श्री राज पधारे इनके घर, भए पूरन मनोरथ काम।।७

कान जी के घरों, दई रसोई इन।
हाव भाव बोहोत किया, बिना अंकूर न होए मोमिन।।८

जीवली के घरों, पधारे श्री राज।
रसोई भली भाँत सों, करी श्री राज के काज।।९

ऊका धन जी के घरों, करी रसोई भली भाँत।
श्री राज को पधराए के, रसोई अरूगाई कर खांत।।१०

बाल बाई रसोई करके, श्री राज पधराए घरों।
दरसन किया बुलाये के, मन में हरख धरों।।११

भूदर फूल बाई नें, राज पधराए इन।
राम बाई के घरों, किए पूरे मनोरथ मन।।१२

कान जी के घरों, पधराए कर हेत।
मुरली आनन्द स्याम जी, उनने बुलाए तित।।१३

पधारे मोहन के घरों, और साहूकारों के।
भले भाव सों पधराए, साहूकारों के नए नए।।१४

फेर तेईसमें दिन इहां से, नोलाई आन पोहोंचे।
एक दिन तहां रह के, पोहोंचे नुनेरे।।१५

तहां एक दिन रह के, पोहोंचे बुढ़ानपुर में।
तहां एक दिन रह के, चले मजल इत सें।।१६

तहां से आए औरंगाबाद, भावसिंह के घर।
तहां की बीतक कहों, जिन भांत इन पर।।१७

महामत कहें ऐ मोमिनों, ए मन्दसोर से बीतक।
आगे औरंगाबाद की, बात बड़ी बुजरक।।१८

प्रकरण।।५२।। चौपाई।।२७८४।।

राणा के मुलक से, आए रामपुरे के ठौर।
दूधलाई डेरा किया, तहां किया दज्जाले सोर।।१

तब वहां से मुकुन्ददास को, और केसवदास।
खिमाई और वल्लभ, भेजे भावसिंह पास।।२

गये भावसिंह के उत, केसव वल्लभ बैठे दुकान।
खिमाई भाई संग रहें, मुकुन्द दास निरगुन जान।।३

केतेक महीने फिरे, भेख राख्यो निरगुन।
वेदान्त को पख खोजिया, रहे बीच निरगुन।।४

जब लगे मुरकने, तब दिल में किया विचार।
मैं फिरा काहे जाऊं, जनाऊं जित बेहेवार।।५

भीख मांगे दोऊ सरूप, ताके लिये बस्तर।
थेलिया रेसमी बनाए के, प्रसाद थैली करी तत्पर।।६

प्रस्न भागवत वेदान्त के, ले डारे थैली में।
एक प्रसाद की थैली कर, किया मिलाप तिन सें।।७

महन्त राम दास रहे, तिन देखे बीच बाजार।
मिलाप मुकुन्द दास को, पहुंचाया नाले पार।।८

जो औरंगाबाद रहेगा, तो हम मारेंगे फेर।
जो बदराह करे भावसिंह को, तो हम मारें दूसरी बेर।।९

यों करके जब छोड़िया, तब मुकुन्द दास कियो विचार।
दज्जाल मिलने न देवहीं, मैं होऊं खबरदार।।१०

एक देहुरा देवी का, मैं बैठूं तिन में।
उत भावसिंह आवत, पाती देऊं हाथ सें।।११

ऐसा विचार करके, जाय छिप के बैठे उत।
जब भावसिंह आइया, पाती प्रसाद दिया तित।।१२

भावसिंहे सिर चढ़ाए के, लई थैली उस बखत।
भीतर जाए के बुलाए, मुकुन्द दास को तित।।१३

पूछी हकीकत राज की, कहां हैं स्वामी कृष्ण दास।
तुमको क्यों कर भेजिया, कहो अपनी दिल आस ।।१४

खोल पाती पढ़ने लगा, मिने प्रस्न भागवत।
और लिखे वेदान्त के, विचार होने लगा तित।।१५

तहां दज्जाल बैठा था, राम दास महन्त।
तिन ईरषा के वचन कहे, सरूप बे बिराजत।।१६

ए दोए कृष्ण बतावत, जो कहू न सास्त्रों में।
इनका मुख न देखिए, चरचा कैसी इनसे।।१७

तब भावसिंहे बोलिया, ऐसी काहे कहो तुम।
एतो भला बतावत है, निज सरूप बतावत हम।।१८

भावसिंहे जानिया, ए दज्जाल हराम खोर।
ए हैं इनके दुसमन, तो करत हैं सोर।।१९

ठौर देओ मुकुन्द दास को, हमारी हवेली पास।
तब रामदास बोलिया, इनकी सेवा की मुझे आस।।२०

उतारें हम अपने घरों, तब मुकुन्द दास कहे वचन।
इन सेवा हमारी भली करी, पीठ दिखाई इन।।२१

देख पीट भावसिंह को, बड़ा जो हुआ दुख।
धक्का दे उठाया दज्जाल, बुरी गारी दई मुख।।२२

जो मेरे इहां आवत, ताकी ऐसी सेवा करत।
निकसो हमारे डेरा से, जाओ देस में तित।।२३

मुकुन्द दास की निसां करी, प्रस्न पूछे पण्डितन।
करो इनका जवाब, होए दिल रोसन।।२४

आया ना जवाब उनों को, निन्दा लगे करनें।
भावसिंहे बरजिया, आवत ना जवाब तुम्हें।।२५

कहया मुकुन्द दास नें, पंडित पूछें जो प्रस्न।
मैं ताको उत्तर देऊं, इनका मनाऊं मन।।२६

मैं पूछों जो इनको, ए ताको दें बताए।
जो हारे दोऊ मिने, सो पनही बांध के फिराए।।२७

प्रस्न असी पंडितन लिखे, तेईस मुकुन्द दास।
पन्द्रह दिन मोहलत दई, क्यों ए होए विस्वास।।२८

पंडित रोज पावत, रूपैया दस बीस।
जब उत्तर देओगे प्रस्न का, तब हम करें बगसीस।।२९

मुकुन्ददास ने उसी दिन, प्रस्न खोल किए साफ।
देओ उत्तर हमारे प्रस्न का, करो भावसिंह इन्साफ।।३०

उत्तर तो आवे नही, तब रात को किया विचार।
चल आए मुकुन्द दास पे, कहे हम पर होत है मार।।३१

जो स्वामी जीयें यों ही कहया, के रोटी भानों पंडितन।
तो हमारा क्या चारा, सन्तोष पकड़ें मन।।३२

ना तो हमारा छुटकारा करो, हम हारे दस बेर।
तब मुकुन्ददास नें कहया, हम कहेंगे फेर।।३३

तब कहया भावसिंह को, क्या ए उत्तर दें प्रस्न।
ए तो लीला अखण्ड की, इनका ना पोहोंचे मन।।३४

तब आधा रोज छेकिया, आधे का हुआ हुकम।
प्रात को मिल के कहया, ए काम किया तुमारा हम।।३५

दिन दूसरे तीसरे, नीके दिए कान।
तारतम नीके सुनिया, होए गई पहिचान।।३६

बुलाओ श्री जी साहिबजीय को, असवारी लेओ तुम।
लेओ हथिनी बूंदीय से, और घोड़ा देत हैं हम।।३७

एक हवेली बूंदी में, रहनें को लिख दई।
तहां श्री बाई जी को राखियो, इन भांत सिखापन दई।।३८

मुकुन्द दास बिदा होए के, लई असवारी साथ।
तहां से पोहोंचे मन्दसोर, खरची दई थी हाथ।।३६

आए मिले मन्दसोर में, ले चले श्री जी को।
आए पोहोंचे औरंगाबाद, भई मुलाकात हवेली मों।।४०

भावसिंह आए के, लगा दोऊ कदम।
देख दीदार इन समें, कृत कृत जानी आतम।।४१

लगा सेवा करनें, उच्छव रसोई जब।
दई जागा हवेली अपनी, भई सेवा इनकी तब।।४२

सुन नरसैयां के सब्द कीर्तन, तित हुआ मगन।
आप लगा नाचने, ज्यों करें मोमिन।।४३

भगत भाव जोर रहे, सेवे परमेस्वर।
सक कछु न आवहीं, भगत भाव ऊपर।।४४

तिन अपने अंदर, पधरावत श्री राज।
रास लीला के किरंतन, राजी होवे इन काज।।४५

जब बात कही कुरान की, तब इन किया विचार।
ए साहिदी क्यों पावहीं, इनका करो करार।।४६

ए मुसलमान चार हैं, मेरे चाकर इत।
तिनको तुम समझाओ, मुकदमा कयामत।।४७

तब मैं औरंगजेब सों, बांध के कमर।
लड़ों वास्ते दीन के, सिर सोंप्या इन बात पर।।४८

तब श्री जी साहिब जी ऐं कह्या, सोंपो हमको मुसलमान।
तिनको हम समझावहीं, वे ल्यावे ईमान।।४६

वे कहें तुमको तहकीक, तुम्हारा इसलाम।
कुरान तरफ तुम्हारे, तुम कम्मर बांधो दीन के काम।।५०

ए बात मानी भावसिंह ने, मेरे मन बरहक।
तुम इन पर मेहनत करो, ए बात बड़ी बुजरक।।५१

ए तहकीक कर उठे, होने लगी चरचा तिन से।
नित आवें दोए बखत, रहे इन काम में।।५२

इन समें भट्ट भवानी, था उदेयपुर का मिलाप।
सो इत आए मिल्या, थीं भवानी प्रसन्न आप।।५३

बुधगीता बुध स्तोत्र, ए ल्याया दखिण से।
इन समें मुजरा किया, सुख पाया इन में।।५४

नित चरचा में बांचन, आवे करन दीदार।
कछुक पेहेचान तारतम, दई धनी निरधार।।५५

इन समें अव्वल खान, करने आया दीदार।
था उदेयपुर का मिलाप, इन पेहेचाने परवरदिगार।।५६

जहान महम्मद मिहीन खाँ, ए तिनको सुनाई कान।
तिनको बुलाए ल्याइया, और करने लगे पेहेचान।।५७

मिहीन को ईमान आइया, ए ताबे हुआ तब।
दज्जाल सों लड़ने लगा, चाही लेने सोभा अब।।५८

कहार बानों में पठान, चली चरचा तिन में।
सनंधें सुनी जहान महम्मदें, क्यों ए पेहेचान होए इनसें।।५६

एक जहान महम्मद को, असलू अंकूर ईमान।
था आप तमाम तपसीर, पढों में आरबी खान।।६०

देता तालीम सबन को, जेते रहें पठान।
किन किन सुनी हकीकत, कहे बुरा भला अनुमान।।६१

भवानी भट्ट डेढ़ पहर लों, कथा कह होऐ फारग।
तब श्री राज आरोग के, पौंढे सेज बुरजक।।६२

जब दिन पीछला, घड़ी रहत है सात।
तब श्री राज उठत है, करें साथ सों बात।।६३

चरचा होए अत बड़ी, हुआ सिनगार का बखत।
संझा को आरती होवहीं, सब साथ खड़ा देखत।।६४

एक तरफ लाल दास, दूजी भवानी भट्ट।
चरचा कुरान भागवत की, होत है लट पट।।६५

श्री राज करत हैं मायनें, सुनने वाला साथ।
कोई सवाल करत हैं, कोई बानी लेवें हाथ।।६६

अब्बलखां ले आइया, जहान महम्मद को।
चरचा सुनी मास दोए लों, घायल भया तिन मों।।६७

पर था अरध पक्का, सुनी लीला फिरी सुरत।
लाल उत्तम सुनाई, लड़ाई भई उन बखत।।६८

जात रहया घर को, कबहूं ना लेऊं जल।
मैं दो मास मेहनत करी, भई ना रूह निरमल।।६९

उत्तमदास अरज करी, बुलाए ल्याऊं महम्मद जहान।
बरजा श्री जी साहिब जी ऐं, इनने सुनी चरचा कान।।७०

सो दुचती होए गई, रहि ना सके घर में।
प्रात को उठ दौड़ेगा, करने लगे दिल सें।।७१

दिन दूसरे आइया, श्री जी साहिब जी के पास।
मुझे क्यों न समझावत, मुझे है कदमों की आस।।७२

तब श्री जी साहिब जीयें कहया, एक आठ दिन देओ चित।
सो भी एक पहर, देख कैसा होवे इत।।७३

आया चरचा सुनने, सवाल किया एक इत।
मुरदे क्यों कर उठेंगे, बखत रोज कयामत।।७४

दिया जवाब श्री जी साहिब जी ने, काढ़ दिखाया बीच फिरकान।
दुनी करी किन वास्ते, सो कर दई पेहेचान।।७५

इसक रबद के वास्ते, उतर आए मोमिन।
नूर जलालें मांगिया, देखों इस्क रूहन।।७६

तिस वास्ते दिखाइया, दो तकरार दो बेर।
प्रात को ए तीसरा, रचा इण्ड जो फेर।।७७

रास लीला खेल के, आए बरारब स्याम।
सो कागद कलाम अल्लाह का, ल्याया महम्मद अलेहु सलाम।।७८

करी सरत दसहीं ग्यारहीं, हम आवेंगे फेर।
जो रूहें थी ब्रज रास में, सो आवें दूजी बेर।।७६

तब काजी होए के, हिसाब लेवें हक।
सिफायत जो मोमिन की, करें महम्मद बुजरक।।८०

अकलें भई लोक में, सब होवे एक दीन।
चौदह तबकों मिनें, सब ल्यावें आकीन।।८१

अक्षर अक्षरातीत बिन, रहे न कोई और।
नूर और नूरतजल्ला, जाहिर होवे सब ठौर।।८२

जब नींद उड़ी नूरजलाल की, उठ बैठे अक्षर।
तब धाम को याद करें, चित चुभे योंकर।।८३

मोमिन मिलावे को, जब ए करें याद।
तब आठों भिस्त की, उठ बैठी बुनियाद।।८४

जो ईमान ल्याए के, सोवे बीच कबर।
सो चुभे नूर के चित में, भूले नही क्यों ए कर।।८५

यों उठेंगे मुरदे, कबरों से कयामत।
तिन समें की रामत, करी महम्मद इत।।८६

ए दरवाजा खोलते, जोस आया जोर।
तब दज्जाल कांपया, करनें लगा सोर।।८७

ल्याया दिन तीसरे, जहान महम्मद ईमान।
हकीकत मारफत की, होए गई पेहेचान।।८८

आवत जहान महम्मद, और अव्वल खान।
और मिहीन आवहीं, बैठे चरचा में नित्यान।।८९

और मुसलमान आवहीं, सब चरचा सुने।
तामें जहान महम्मद को, जोस आवे इन समें।।९०

श्री राज पकड़े इनको, सिर पर धरे हाथ।
दिलासा बड़ी करे, तूं है हमारा साथ।।९१

फेर सावधान होवहीं, जब सुने नाम लाहूत।
तब फेर गिरे जोस में, याद करे कयामत।।९२

यों चरचा रात को होवहीं, जब रहे पीछली घड़ी चार।
तब साथ की बिदा होए, फेर करे विचार।।९३

तब श्री राज आरोग के, हिंडोले खाट पोढ़त।
पीछे साथी इन समें, रास की रामतें गावत।।६४

यों करते भोर होवहीं, लीला भई मास चार।
नित्याने उच्छव कीर्तन, हुआ साथ अंग करार।।६५

पठान फते महम्मद, ए बात सुनी कान।
कह्या जहान महम्मद को, कर दे वैरागी की पेहचान।।६६

चालीस हदीसें लिख दई, जो इनके करे मायने।
तो तहकीक जानियो, होवे खाविंद जमाने।।६७

ल्याया हदीसें जहान महम्मद, कही आगे श्री जी साहिब।
तूं ही कर इनके मायनें, किल्ली रूह अल्ला की पावे जब।।६८

जब इनने तलब करी, किल्ली अल्ला कलाम।
तब जहान महम्मद को, भई पेहेचान इसलाम।।६९

तब सब खुल गई, हकीकत मारफत द्वार।
नजर भई बका मिने, किया दीदार परवरदिगार।।१७००

तब गया फते महम्मद पे, एक पूछत तुमें सवाल।
जो इनका दे जवाब, होवे तेरा मुझ पर भाल।।१७०१

खुदाए की सूरत का, मुझे दे उत्तर।
फरमाया फरमान हदीसों, कर मेरी जमा खातर।।१७०२

रूयेतरवी फिल लैलतुलम्याराज, ए कलाम बरहक।
के दिल तुमारे सक है, देओ जबाब माफक।।१०३

तब फते महम्मद कह्या, इनमें ना कछु सक।
जाहिर कर हम ना सकें, सरा जाहिर परस्त बुजरक।।१०४

सो हमको मारत, तिन वास्ते कह्यो न जाए।
हदीसों भए मायने, अब तुमारा क्या बसाए।।१०५

तब फते महम्मदें फेर कह्या, जोलो पातसाह न आवे बीच दीन।
तोलों आगा हम क्यों करें, पहले क्यों ल्यावे आकीन।।१०६

तब जहान महम्मदें कह्या, तुमारा ईमान ऊपर सुलतान।
ऐसा तुम क्यों कहों, जब देखो हक पेहेचान।।१०७

ए खटपट भई आपस में, तब इनने छोड़ दिए पठान।
तुम मने करो जहान महम्मद, उत जावें नही निदान।।१०८

मिल पठानो मनें किया, जहान महम्मद को सबन।
तूं क्यों वैरागी के कदमों लगे, तें क्या जान्या मोमिन।।१०९

लड़ाई होने लगी, सुनी श्री जी साहिब जी नें बात।
तब बरजा जहान महम्मद को, जिन तुम जिद करनें जात।।११०

एतो अमल दज्जाल, सो तो जाहिलों का बाप।
इनसों छले छूटिए, तुम जिन जोरा करो आप।।१११

तब जहान महम्मदे कहया, मोहे दज्जाल लगा बरजन।
मैं तिनका कहया क्यों करूं, ईमान खतरा होवे मोमिन।।११२

मैं तो साहिब देखिया, जाहिर अपने नैन।
तहां खतरा होत है, ए मुखथे कहो न बेन।।११३

पठानो परियान किया, जहान महम्मद डारे मार।
इन हमारे दीन से, छोड़ दिया वेहेवार।।११४

पहले तो बैरागी से, करे लड़ाई जोर।
आपुस में सब मिल के, करने लगे सोर।।११५

तब रात को मिलके, आए जने दस बार।
श्री जी साहेब जी बैठे हते, आगे हुसेनी बचे उस्तवार।।११६

इत बैठी मजलस, भर के बाजू दोए।
मोमिनों आगे किताबें, रेहलों पर धरी सोए।।११७

दोऊ बाजू दीवी पीतल की, है बड़ी जोत रोसन।
चरचा आपुस में करें, श्री जी संग मोमिन।।११८

देख दज्जाल मजलस, करने लगा सोर।
ए भगत जी क्या है, हम करें लड़ाई जोर।।११९

तुम टीका माला पेहेनत, और क्यों पढ़त कुरान।
एह रवा है नही, जो तुम कहो सुनों कान।।१२०

तब श्री जीयें कहया, हम बरजत हैं तुम।
खुदाए और रसूल की मुहब्बत, बांधत आपस में हम।।१२१

तिनको तुम ढाँपत हो, ए तुम्हें किन फुरमाए।
तब जहान महम्मद बोलिया, तुम्हें किने ए बताए।।१२२

मैं तो तुम्हारा उस्ताद, तुम लेते तालीम।
अब बातें करने लगे, बड़े होत अजीम।।१२३

यों करते जोस मिहीन को, जबराईल हुआ जोर।
आया जोस गाजी खान को, दज्जाल डरा देख सोर।।१२४

आया जोस अव्वल खान को, और जहान महम्मद।
यारो उठो जिमी फिरी, इत उड़ गई सब हद।।१२५

ए भगत जी हम जात हैं, हमको कीजे माफ।
हमतो अब जात हैं, हमारे दिल हुए साफ।।१२६

उठ भागे यों कह के, जाए सिपाह में किया सोर।
यारो बड़ा जादूगर, हमारा कछू न चल्या जोर।।१२७

इन समें भावसिंह का, वाका हुआ जब।
तब जोर किया दज्जाल नें, सोर बड़ा हुआ तब।।१२८

फते महम्मद ने तिन समें, किया चाकरों को हुकम।
ढूंढ काढ़ो बैरागी, दे कैद में हम।।१२९

श्री जी साहिब जी उनके पुरे, रहें जाए हवेली पास।
उत मुल्ला के घर, करते न काहू विस्वास।।१३०

लगे कुरान उतारने, लोभ दिखाया तिन।
ओतो राजी भया, बैटे लालदास चरन।।१३१

तीन दिन तहाँ रहे, ए ढूंढे सहर में ठौर।
भवानी भट्ट्ट मिला, किया तिन पर जोर।।१३२

बरयाए के भाग के छूटा, ए जो भट भवानी।
हमें दिखाओ बैरागी, हम ढूंढ थके अपनी।।१३३

तब भड़कल दरवाजे, लोकों दिया जवाब।
वेरागी तो जात रहे, तुम जिन भटको इन बाब।।१३४

जहान महम्मद आइया, फतू अल्ला के घर।
तहां वेरागी देख के, पूछी श्री जी की खबर।।१३५

श्री जी साहिब जी बैटे हैं, इस हवेली में।
ए तो ठौर दज्जाल की, तुम डरत नही इनसें।।१३६

इनके आदमी तुमको, ढूंढत फिरत सब ठौर।
ए मुहल्ला फतू अल्ला का, ए लड़ेगा तुमसे जोर।।१३७

सिताब निकलो यहां से, मोहे दिखाओ श्री जी साहिब।
साथ ल्याए कदमों, हकीकत कही तब।।१३८

जब तक लगा दिन डूबने, श्री जी साहिब जी भेले लालदास।
तपसीर लिखते मुल्ला के, छोड़ी तिनकी आस।।१३६

बुलाए ल्याए चरन दास को, तपसीर छोड़ी तिन ठौर।
सात कोस चले गये, भया भावसिंह लसकर भोर।।१४०

तहां से राह चल के, मिला राह में भीमसेन।
तिनको ल्याए बुढ़ान पुर, कही बीतक सब ऐन।।१४१

मैं आया तुम्हारे दीदार को, कोईक दिन रहया कदम।
तिनसे सवाल लिखाए कुरान के, ले जाओ मलूकचन्द तुम।।१४२

भेजे औरंगाबाद, फतू अल्ला पर।
एक हिदायतुला काजी पर, एक दीवान खातर।।१४३

तीन जिल्दें तीनों पर, और लिखी हकीकत।
रूक्का दलेल खान पर, दई हकीकत कयामत।।१४४

वीरजी पठवायो औरंगाबाद, सेखबदल लाल खान।
इनें आकोट से बिदा किए, क्योंए होए पहिचान।।१४५

महामत कहें ऐ मोमिनों, ए औरंगाबाद की बीतक।
अब आकोट की कहों, जो बीतक है बुजरक।।१४६

प्रकरण।।५३।। चौपाई।।२६३०।।

शुक्राना-आकोट

अब तुम सुनियो साथ जी, सुकराना करो याद।
एक बातून तुम ऊपर, दिखाऊं तुमें बुनियाद।।१

इन जिमी में आज लों, वेद कतेबों करी खोज।
पर ठौर अक्षर न पाइया, त्रिगुन थके खोज ले बोझ।।२

और जो कोई खोजत, ले तिनके सुकन।
जिनों नेत नेत पुकारिया, खबर नही त्रिगुन।।३

जो तिन की खोज से, मकसूद न होवे इन।
सो सारे जाहिर कर, बैठाए इत मोमिन।।४

अक्षर अक्षरातीत की, काहू नही पहिचान।
सो कर पकर बताइया, दृढ़ कर दिया ईमान।।५

दे गुन पख इन्द्री साहिदी, और सास्त्रों के वचन।
और भाखा सब साधों की, सिफत करे मोमिन।।६

जो नहीं अक्षर जागृत में, धाम अंदर की सुध।
सो सैयों को दई, जागृत हृदय बुध।।७

तिन बुध संग तारतम, सब कही हकीकत धाम।
सो वतन सैयन का, जाहिर किया इस ठाम।।८

धाम अन्दर की बीतक, संग मूल सरूप बिहार।
जो बात मूल सरूप के चित्त में, ताको सैयां खबरदार।।९

जो अक्षर पावे नही, सो त्रिगुन पास क्यों होए।
सो सुपन के जीवों को, सब ठौर बताया सोए।।१०

ए मेहर मोमिनों पर, सबों पाई इनों सोहोबत।
एह समें हकें किया, फरदा रोज कयामत।।११

इन भांत मेहर मोमिनों पर, कै अलेखे अपार।
सो इन जुबां केती कहों, दिए बातून खोल के द्वार।।१२

अग्यारे सौ साल का, लिख भेजा अल्ला कलाम।
खोज करी सब सृष्ट नें, पाया न काहू निजधाम।।१३

सो आमर इसलाम की, सब हाथ दई मोमिन।
खुली हकीकत मारफत, सब तले इनके इजन।।१४

जो आए इनके हुकम तले, सो आए बीच इसलाम।
सो सब उसका हो चुका, जिन खुले रब्बानी कलाम।।१५

एह तो बातून की, मेहर है ऊपर रूहन।
और ऊपर मेहर वजूद के, सो जाहिर देखो मोमिन।।१६

पहले मूल बृज मिने, तित पड़े बिघन।
सो सारे दफे हुए, हुए संसार में धन धन।।१७

आज लों ब्रह्मांड में, सब बन्दे बृज रेंन।
पावत नही ब्रह्मादिक, तित थे मोमिन बीच चेंन।।१८

फेर आए बीच रास के, कहया दूसरा दिन।
ना ताकत सुनने त्रिगुन को, तहां खेले मोमिन।।१९

सब कोई वांछे तिनको, पावे नही खबर।
अटकले अखण्ड की, पावे न कोई फजर।।२०

रास रात ढूंढन की, अटकल करें अनेक।
हाथ कछू न आवही, बिन मोमिन न पावे एक।।२१

रास लीला खेल के, आए बरारब स्याम।
सो वास्ते मोमिन के, पूरे किए मनोरथ काम।।२२

एह दिन तीसरा, कहया माजजे देखाए अनेक।
अग्यारे सै बरस आगे कहया, कोई अरथ न पावे हरफ एक।।२३

दिन चौथे मिने, धरा रसूलें कदम।
तिन पांउ सूझ ना किया, जागें न कोई आतम।।२४

ए हकीकत रूहअल्ला की, सौ बरस रखी छिपाए।
धरा कदम दूसरा, दई रुहों को पोहोंचाए।।२५

एह दिन पांचमा, इमाम की इमामत।
सो दरवाजा जाहिर किया, फरदा रोज कयामत।।२६

ए चीन्हों सूरत रसूल की, वास्ते काम किए मोमिन।
कै लोकों दिखाए माजजे, तोहे न पतीजे मन।।२७

अब छठा दिन जुम्मे का, तहां मोमिन जमा भए।
ए सब होत तिन वास्ते, सुकन जबराईलें कहे।।२८

ए माजजे मोमिन देखहीं, सब पांचों दिन के।
होय वारस बेटे बाप के, सब मता आया इन पे।।२९

सो जाहिर करत हैं, करनें को पहिचान।
पहिले मोमिन ईमान ल्याए, पीछे सब खलक सुने कान।।३०

महम्मद के माजजे, सो जाने इसलाम।
बातून मोमिन जानहीं, और जाहिर खलक आम।।३१

कई काफरों गुलबा किया, मानें नहीं पैगाम।
तिन सबों के सिर भान के, ल्याया जाहिर इसलाम।।३२

जो मिल्या जिन भांत सों, तिन सों मिले तिन विध।
अन्दर मेहर जाहेर कहर, ए भई महम्मद की सिध।।३३

नबी की नबूबत, बैठे जानी ना किन।
तो ए लड़ने को सामें खड़े, आकीन न आया जिन।।३४

जब बोए आई इसलाम की, वोही आए बीच दीन।
तिनकी नसल जो बढ़ी, ताए बढ़ता गया आकीन।।३५

बढ़ते बढ़ते बढ़या, आम आए बीच दीन।
तेही महम्मद के वास्ते, लड़े काफरों से ले आकीन।।३६

अग्यारे सैं साल लों, बढ़ा दीन इसलाम।
किया था वायदा तिन सों, हक फेर आवेंगे तिन ठाम।।३७

मेरी तीन सूरत को, पेहेचानियो अब तुम।
बसरी मलकी हकी, तुमें दिखावें हम।।३८

ए पोहोंचे नजदीक खुदाए के, तित काहू की ना गम।
न फिरस्ते नजीकी न मुरसद, ल्याइयो ईमान तुम।।३९

गिरोह रब्बानी उतरे, हम आवें तिन वास्ते।
तुम उम्मेदवार तिनके, तुम पेहेचानियो मुझे।।४०

ए कलाम रब्बानी उतरे, सो वास्ते मोमिन।
तिन कौल कोई न ले सके, बिना मेरे दिल रोसन।।४१

इन बात से जानियो, एही मोमिन सके पहिचान।
जिनकी असल अरस में, हकें दिया ईमान।।४२

और कोई न समझे, पहिले न आवे ईमान।
बिना अंकूर क्या करें, आवे नही पहिचान।।४३

हकीकत मारफत के, खोल दिए दरबार।
देखत अचरज पावहीं, पोहोंचे न परवरदिगार।।४४

सातों निसान कयामत के, लिखे बीच बातून।
मोमिन देखें जाहिर, हुए जिनके दिल रोसन।।४५

हजरत ईसा आइया, ल्याया किल्ली गंज कलाम।
पहिचान भई मोमिन को, आए बीच इसलाम।।४६

आया दसमी सदी मिने, बातून हुई जाहिर।
रहे बरस चौहत्तर, चीन्हे न कोई बाहिर।।४७

कई माजजे तिन के, हुए बीच जिमीन।
इलम लुंदनी ल्याइया, पड़ा न काहू चीन।।४८

सोर किया दज्जाल नें, नाजल के बखत।
एह मोकों मारेगा, बखत फरदा रोज कयामत।।४९

पेहेना जामा दूसरा, आए बैटे बीच इमाम।
तब दज्जाल ने जानिया, इनें मेरे मारनें का काम।।५०

तब इनके सामने, लड़ने हुआ तैयार।
मोमिन मोसों छुड़ाए के, पोहोंचावे परवरदिगार।।५१

मेरा जोरा इन से, चलत नही लगार।
तिस वास्ते छोड़ हों, चार फौज करों तैयार।।५२

एक बेईमान औरत, और बाजे बजावन हार।
तीसरे पढ़नें वाले इलम के, चौथे जादूगर होसियार।।५३

जहां कहूं पावे मोमिन, खैंचे अपनी तरफ।
जिनमें ईमान असल का, सो सुने न एक हरफ।।५४

लगा सूर फूंकने, असराफील करना ए।
सन एक हजार नब्बे, सुन सैंया दोड़ के आए।।५५

काफरों के दिल बैठ के, बड़ा जो किया सोर।
मोमिन उतरे अरस से, ताको चित्त न हुआ मरोर।।५६

खेस कबीला कुटुम्ब, सब दज्जाल को लसगर।
तिन में से छुड़ाए के, पहुंचाए अपने घर।।५७

निगहबानी जबराईलें, करी ऊपर रूहन।
साफ रखे सबों अंगों, दिल रहे हमेसा रोसन।।५८

जब याद करने फजर को, लगा पोहोंचावने पैगाम।
तब दज्जाल ने चीन्हया, ए मारे मुझे इमाम।।५९

तिन से लड़ने को, बांधी कम्मर जोर।
तब पैगाम पोहोंचाईया, किया बड़ा सोर।।६०

छुड़ावने ईमान को, करने लगा जुलम।
पैठ अपने लसकर में, सक सुभे उठावे कुंम।।६१

परवरदिगारें देखिया, लड़ाई के बखत।
बुलाया बेतुल्लाह को, साहिदी बखत कयामत।।६२

सरियत के सिरे से, लिखे वसीयत नामें चार।
तिनमें खबर कयामत की, पर काफर करे न विचार।।६३

दज्जाल दिल सबन के, जोर बैठा दुसमन।
जब पोहोंचे नामें वसीयत, धोए डारे सबन।।६४

जब इमाम साहिब ने, पोहोंचाया पैगाम।
तब दज्जाल कम्मर बांध के, लड़ा सामें इसलाम।।६५

ऐसे समय में मेरते से, भेजे पैगम्बर।
राठौर जसवंत सिंह सों, जाए कहो खबर।।६६

जब पैगाम गया उन पे, सुन्या नाहीं कान।
आजूज माजूज जो मारिया, बिना देखे ईमान।।६७

फेर आए दिल्ली सहर में, तब भई सामी सरियत।
ए आया हमें उठावने, फरदा रोज कयामत।।६८

बात न सुनें इनकी, अपनी सुहबत में।
घेर लिया सुलतान को, बात न करें इन से।।६९

जो पैगाम पोहोंचावहीं, तिनको डारे मार।
ताबे सब दज्जाल के, हुए ना खबरदार।।७०

जब सुलतानें सुनी, दौड़ा तरफ ईमान।
तब दज्जाल आड़े आए के, भान दई पहिचान।।७१

बसबसा करने लगा, ऊपर छाती के।
छूटत तुम से साहिबी, क्यों मानत हो ऐ।।७२

जो मेरे ताबे रहोगे, तो करो पातसाही तुम।
जो ताबे होत इमाम के, तो तुम पर होवे जुलम।।७३

इत दज्जालें आए के, कहया मोमिन सें।
मेरी पातसाही मिने, क्यों खड़ भड़ पाड़ी तुमें।।७४

इहाँ से जाओ भाग के, ना कैद में करो तुम।
मोमिन डरे तिन से, ताबे हुए हक हुकम।।७५

दज्जाल गुस्से होए के, पैगाम दिया भान।
मोमिन कैद करके, फेरी दृष्ट सुलतान।।७६

तब हक सुभाने देखिया, तखत से दिया उठाए।
सहे कै कसाले मोमिन, पनाह में लिए बचाए।।७७

उदेयपुर आए पोहोंचे, दिया राणे को पैगाम।
तित दज्जाल बैठा था, लड़ा साथ इमाम।।७८

पीछे सुलतान आए के, मार उठाया तिन।
राखे पनाह में इनको, पोहोंचे मन्दसोर मोमिन।।७९

तब हक सुभान सों, इनों करी अरज।
सोर दज्जाल का देख के, वास्ते उम्मत के गरज।।८०

अरज सुनी सुभान नें, जबराईल भेज दिया।
दे दस सिपारे कुरान के, बोहोत खुसाल किया।।८१

तहां से उज्जैन में, रहे केतेक दिन।
वास्ते दीन इसलाम के, थे कोई कोई मोमिन।।८२

बुढ़ानपुर से होए के, पोहोंचे औरंगाबाद।
बुलाए भावसिंह ने, हुआ कछुक इन्हें स्वाद।।८३

अपने अंकुर माफक, लाभ हुआ इने।
लगा माजजा मांगने, वाका हुआ तिन सें।।८४

इन समें इत दज्जाल नें, बड़ी करी तलास।
राखे मोमिनों को पनाह में, भानी दज्जाल की आस।।८५

भेजा संदेसा खुदाए नें, बनी असराईल करो याद।
तुम पीछे खबर फेरून की, सो मैं खबर दई बुनियाद।।८६

दई तुमकों मैं कुलजम, इनको किया गरक।
पढ़ो मेरे कलाम को, भागे सारी सक।।८७

महामत कहे ऐ मोमिनों, सुकराना ल्याओ बजाए।
दज्जाल सों लड़ाई, और क्यों कर लिये बचाए।।८८

प्रकरण।।५४।। चौपाई।।३०१८।।

लाल दास लसकर (दिल्ली काजियों के पास) को गए

उहां से आए बुढ़ानपुर, फेर पहुंचाया पैगाम।
भई लड़ाई सरीयत सों, बीच दीन इसलाम।।१

लाल पैगाम लेइ के, गया उत सरियत।
करी काजी सों मुलाकात, लिख के भेजी तित।।२

काजी अन्दर बुलाए के, पूछनें लगा कलाम।
कहा हते क्यों कर आए, जवाब दिया इस ठाम।।३

हमको हादी भेजिया, तुम पर सेख इसलाम।
हमको जवाब दीजियो, जो भेजे तुम पर कलाम।।४

पहिले तुम पर ल्याइया, मलूक चन्द अजमेर।
सवाल कलाम अल्लाह के, ताको जवाब करो इन बेर।।५

तब सेख इसलामें कह्या, ए तुमें खुले कलाम।
हम कहें तुमको, ए यार था इस ठाम।।६

प्रात समें तुम आइयो, तुमकों कहें हम।
अब तो हम जात हैं, प्रात को कहियो तुम।।७

दिन दूसरे प्रात को, गए लाल नूर महम्मद।
जाए के मुलाकात करी, जो साहिब सरियत हद।।८

भई बातें सेख इसलाम सों, तहां बैठे थे यार।
मंगाए किताब सवाल की, करनें बैठे विचार।।९

बोले लोग सरियत के, एतो लिखी गलत।
तब लालें जवाब दिया, कहा कहें तुमें इत।।१०

हदीसां कुरान की, तुम नाम धरत इत।
तो हम तुमसों क्या कहें, दावा रोज कयामत।।११

तब सेख इसलामें कहया, हम ना कहेंगे गलत।
ए लिखनें में चूक है, है उमियों के दसकत।।१२

तब लालें जवाब दिया, इनका दोस कछू नाहीं।
तुम मायना लेओ अन्दर का, होए पहिचान तासों ताही।।१३

लई किताब जो हाथ में, बैठा दिल पर दुसमन।
तिने दिल फिराइया, तित लड़े साथ मोमिन।।१४

जवाब न होवे सवाल का, पोहोंचे ना हकीकत।
तब गुस्सा लेए के, बात कही मोंह सखत।।१५

फेर नवां किताब में, तिन बीच अल्ला कलाम।
तुम एतो बात झूठी लिखी, ल्याए कीना इसलाम।।१६

बड़ा डर किताब का, यों बोलन लगे सब।
लाल को गुस्सा चढ़या, लई हाथ से किताब तब।।१७

फेर काजी ने कहया, ए किताब राखें हम।
लई लाल के हाथ से, दई अपने खादम।।१८

तब काजी झुक के, करने लगा जवाब।
अब तुम कहा कहत हो, हमको इनके बाब।।१९

तब लालें देखिया, फिरी द्रस्ट जो इन।
इन मारने का मन में लिया, ए बात ना सुने कान।।२०

तब झुक के काजी ने कहया, मन में धर के रोस।
तुम हमसों कहा कहत हो, हुआ इन पर बड़ा अफसोस।।२१

तुम दावा करत हो, हमसों इमामत।
एही बात फेर फेर कहे, लालें जवाब दिया इत।।२२

हम तुम सों कहा कहें, कहावत हो हजरत तुम।
एही बात कहत हैं, एता कहत हैं हम।।२३

तब बोला सेख इसलाम, उन राह पाई नाहें।
तब लाल गुस्से भया, ना चाहिए काढ़ो जुबाएं।।२४

अब हम तुमको, कबहुं ना दें पैगाम।
अब हम फेर जात हैं, ले अपने घरों इसलाम।।२५

पीछे लगे बुलावने, सोहोबत के सब जन।
निकसी मुख थें मुनकरी, कबहूं मुख ना देखें तिन।।२६

इहां से चलके आए, घर मुफती अब्दुल रेहेमान।
जिनसों मिलाप करके, कहया पैगाम सुभान।।२७

कही हकीकत सरिएत, जो भई सेख इसलाम।
करी मुनकरी इनने, हम पहुंचाया पैगाम।।२८

अब हम तुमको कहत हैं, जो हमें आवे कछू दोस।
तुम कहोगे हमको ना कहया, पीछे बड़े होसी अफसोस।।२९

हम तुम एक वतन के, तिस वास्ते उमेटत हैं कान।
हम देखा रसूल खुदाए का, तुम ल्याओ तिन पर ईमान।।३०

तब जवाब मुफतें दिया, रसूल आवे बखत कयामत।
सो तो अजू दूर है, तुम आज ल्याए क्या इत।।३१

क्यों तुम जान्या दूर है, बीच किताब इकतलाफ।
समझ हमें कछू ना पड़े, क्यो दिल होवे साफ।।३२

तब जवाब लालें दिया, ल्याओ किताब तुम।
सब तारीखें समझाए के, एह बतावें हम।।३३

सवाल दिखाए कुरान के, ताको दिया जवाब।
ए तो आगे हो गये, ताके किस्से लिखे किताब।।३४

बड़ी भूल तुम बीच में, ले डारत किस्से कुरान।
वे रद जमाने हो गए, तुमको एही पहिचान।।३५

ए सारे किस्से आज के, रसूल आए इत।
सरत लिखी सो भई, फरदा रोज कयामत।।३६

आए असहाब रसूल के, जाहिर भए मोमिन।
आज तुमसो हम कहत हैं, हमें दोस दीजो कोई जिन।।३७

तीन दिन सोहोबत भई, आया हादी का हुकम।
अब तुम उत जिन रहियो, ए पाती लिखी हम।।३८

नारायण दास ले आइया, सुन्या हक हुकम।
उते पानी ना पीजियो, सिताब बुलाए तुम।।३९

ए तो लोग सरियत के, जिन तुम पर डारे तोहमत।
पोहोरा ए दज्जाल का, ए दुस्मन कयामत।।४०

सुन पाती लालदास, संग चला नारायण।
नूर महम्मद आए मिला, सरिएत कबहूं ना ल्यावे ईमान।।४१

चले पीछे दिन तीसरे, पोहोंचे हादी कदम।
मिलाप कर बातें करी, जो बीतक भई हम।।४२

तब सुकराना राज का, बड़ा जो देखा इत।
काल के मुख थें काढ़ के, राखे पनाह में साबित।।४३

महामत कहे ए मोमिनों, ए बीतक बुढ़ानपुर।
अब कहों आकोट की, राखे पनाह में ज्योंकर।।४४

प्रकरण।।५५।। चौपाई।।३०६२।।

सिपारे दसमें मिनें, पाने सत्ताईस मिनें बयान।
किया मोमिनों मजकूर, सरे के सैतान।।१

मेहेतर था कीनान का, काजी सरे का जेह।
रसूल की दावत से, मुनकर हुआ एह।।२

जब मिला मिलावा मोमिनों, रूजू हुई सब जहान।
दिन छठा जुमें का, हुई पहिचान ईमाम।।३

बैठे बातां करने, जिनमें जो बीतक।
दई साहिदी मोमिनों, गुझ खिलवत जहूर हक।।४

तब काजी हुआ मुनकर, मोसों नहीं मजकूर।
रूबरू ए मोमिनों, सब बोलत झूठा जहूर।।५

सबों ने दई लानत, सरे के सैतान।
दुनियां में जाहिर भई, इन मारी राह सुभान।।६

तो सरे के सैतान पर, सब को हुई लानत।
हमको लेने न दई, हकीकत जो मारफत।।७

महामत कहे ए मोमिनों, ए लिखा बीच फुरमान।
मोहर करी दिल आंख पर, और जुबान कान कुफरान।।८

प्रकरण।।५६।। चौपाई।।३०७०।।

बुढ़ानपुर से आकोट, तहां रहे महिने चार।
खबर लई सब साथ की, करने लगे विचार।।१

एक लिखी फतूअल्ला पर, रहे बीच औरंगाबाद।
तिनको सवाल कुरान के, लिख भेजे हैं आद।।२

और हकीकत लिखी, तुम लड़ने बांधी कमर।
होत एक दीन महम्मदी, तुम आड़े भए इन पर।।३

आवते थे इसलाम में, तिन मारी सबन की राह।
बिन समझे बातें करी, दुसमन हुए खुदाए।।४

अब सवाल पठाए हैं, तिनको दीजो जवाब।
जो पढ़े तुम आरफ हो, तो कहो इनके बाब।।५

हम आवत है दीन में, हमको करो मुसलमान।
दीन महम्मद के दाखिल करो, होए तुमारे गुलाम सुने कान।।६

हमको समझाओ तुम, रब्बानी कलाम।
जो लिखा सो सब करें, करो दाखिल बीच इसलाम।।७

तब तोड़ी तुम को, खाना पीना हराम।
जोलों हमारी निसां ना भई, तोलों जिन करो कोई काम।।८

हम लाखों कबीले हिन्दुअन के, होत दाखिल दीन इसलाम।
एह काम छोड़ के, कहा करो इस ठाम।।९

जो सिफत कुरान में, लिखी नाजी फिरके की।
जो तुम हो उन में, तो कहो खबर वही उतरी।।१०

जो रूहें दरगाह मिनें, कही महम्मद बारे हजार।
जो तुम हो तिन में, तो करो हमको खबरदार।।११

जिन रूहों का मरातबा, लिखा अमेत सालून।
तिन मानंद कोई नहीं, तुम देओ जवाब हो कौन।।१२

मोमिन नूर बिलंद से, उतरे दुनियां में।
जो तुम हो उन कौम में, तो करो जवाब हम सों।।१३

बीच नसारों के गिरोह में, लाहूत का निसान।
जो तुम हो तिन में, तो कर देओ हमें पहिचान।।१४

जो लिखी सिफत यहूदन की, बीच अल्ला कलाम।
जिन बीच में महम्मद, करे पातसाही तमाम।।१५

जो तुम हो तिन में, तो हमको देओ खबर।
गिरोह बनी असराईल की, जो है सब ऊपर।।१६

जो तुम हो उन में, तो कर देओ हमें पहिचान।
बांध्या बनी असराईलें, कयामत का निसान।।१७

जो तुम हो तिन में, सो निसां करो तुम।
जो जवाब न आवे तुम को, तो बताये देवें हम।।१८

इन भांत के निसान, लिख भेजे उन ऊपर।
जवाब न आवे तिन को, सरमिंदे हुए यों कर।।१९

यों ही एक लिखा काजी पर, हिदा तुल्ला जाको नाम।
एक लिखा अमानत खां दीवान पर, रूक्का बहादुर खान इस ठाम।।२०

यों बैठ के आकोट में, पोहोंचाए पैगाम।
पर दिल मुरदे न पावहीं, पहिचान दीन इसलाम।।२१

इहाँ भाई से भाग के, आया अब्बल खान।
रह न सके माया मिने, जाको हक पहिचान।।२२

बोहोत दिलासा करी, बीच तरीकत इसलाम।
तुमको दुनिया न लगे, हम जब बैठें एक ठाम।।२३

तब तुमें बुलावेंगे, जिन तुम होवो दलगीर।
तुम हमारी आत्मा, सांचे तुम सूर धीर।।२४

तुम चार दिन रहो भाइयों भेले, अब रोसन होत है काम।
तुम बैठे अरस अजीम में, निज वतन जो धाम।।२५

आकोट के चौधरी, ताको भई पहिचान।
ज्यों लौकिक गुरू मानिए, इतना था ईमान।।२६

बार दो चार अपने घर, बुलाए करी मनुहार।
अरूगाए भली भाँत सों, कर आचार विचार।।२७

साथ सबको बुलाए, प्रसाद लेवे को।
साथ राज के संग, बैठाए कबीले मों।।२८

चरचा किरंतन सेवा को, लियो सुख माफक अंकूर।
तहां रहे तिन माफक, उत तैसा हुआ मजकूर।।२९

उत आया एक ब्राह्मण, सुनने को चरचा।
परगने बराड़ के, हाकिम का गुमास्ता।।३०

तिन सुनी चरचा कबीर की, लगे कलेजे घाव।
खुल्या द्वार हकीकत का, ऐसा लगा आए दाव।।३१

भूल गया सरीर को, नजर पहुंची बका में।
और सान कछू न रही, हुआ सब तुमही सें।।३२

घरों जाए पीछे फिरे, ज्यों ताना कोरी के।
आवें जाए फिर फिर फिरे, नजर भई इनें ए।।३३

जो बात कहे उनको, तो कहे तुमही हो तुम।
और न मुंह से काढ़हीं, तुम पे आए हम।।३४

जो चरचा कर समझाइये, तो बोल न निकसे और।
चित उनका लगा, मूल अक्षर के ठौर।।३५

पीछे फिरता ही रहे, समें प्रात के नदी पार।
श्री राज दातौन करत हैं, पैठा नदी में हुसियार।।३६

समेत कपड़े चला गया, गिर पड़ा बीच में।
सुध न सान सरीर की, गिरी पाग उतर उन सें।।३७

पैठे साथी दौड़ के, निकाला नदी से।
कपड़े सुखाए पहिनाए, कछू सुध न रही इने।।३८

पूछा उनें रसोई का, कहया चौका भए दिन तीन।
मैं जानत नहीं कछुए, ए लोगों कहया आकीन।।३९

ए भांत इनका फेर, पीछा हटाया चित।
फिराया फिरे नहीं, उनके भाई बुलाए इत।।४०

डोली में बैठाए के, पहुंचाया अपने ठौर।
अंकूर माफक उन लिया, पावे न ज्यादा और।।४१

सुकदेव ब्राह्मण था, मुलक उदेयपुर का।
आतम सौंपी कदमों, अंकूर जेता तेता सुख लिया।।४२

फेर उहां से चले, आए कापस्तानी।
तहां बैठ चरचा करी, गिरोह जान अपनी।।४३

तहां ईमान ल्याइया, दगड़ा और दत्ता।
अमराजी आइया, सुन थोड़ी सी चरचा।।४४

और कुटुंब कबीला अपना, ल्याया बीच दीन।
तामे अमराजी रह गया, जिनका बका आकीन।।४५

फेर दिन दस पांच रह के, आए एलचपुर पोंहोंचे।
तहां एक परसाजी ने, खिजमत करी ए।।४६

जो तुम इते रहो, तो मैं सेवों तुमें।
ज्वारी मेरे बहुत हैं, मैं सेवा करों तिन सें।।४७

तीन चार दिन सेवा करी, उच्छव रसोई।
फेर तहां से चले, केतिक मजलें राह में भई।।४८

मिला फकीर संग का, तिन साखियां दे करी सेव।
सुन चरचा गलित भया, पाया नहीं भेव।।४९

तहाँ से आए देवगढ़, तहाँ रहे दिन चार।
राम टेक का राजा था, तहां किया ना किन विचार।।५०

उहां से चलके, आए राम नगर।
भई मजलें दरम्यान में, ए सुख सब ऊपर।।५१

एक समद घोड़ा, असवारी को हाजर।
श्री राज तापर विराजत, संग मोमिनों का लसगर।।५२

तहां मांगत टूंका चलहीं, झोरी भर ल्यावें।
श्री राज को अरूगाए के, साथ को बांट देवें।।५३

सब साज फकीरी का, सोभित सब सनंध।
मोमिनों भेख पहिचानिया, क्या पहिचाने अंध।।५४

एक लड़ाई राह में, दज्जालें करी दरम्यान।
भई गोंडों के गांव मिने, करी बिन पहिचान।।५५

रामनगर आए पहुंचे, रहे केतकी पर।
तहां अस्तल बनाए के, गणेस महन्त के बराबर।।५६

पहिले आए छतई मिले, अपने कबीले समेत।
और आया सुकई, और चूरामन इत।।५७

और कुंजा वीर जी, और राम रतन।
और गंगा सन्ता बेटी, कुसल्या जातमाल मोमिन।।५८

और सूरत आइया, अपने तन मन धन।
और देवकी नन्दन ईमान से, और स्तुति देत श्रवन।।५९

और जगन्नाथ जातमाल, ए आए एचदे से।
मकरन्द दास जातमाल, और कबीला दाखिल इनमें।।६०

गोकल दास जातमाल, ले कबीला समेत।
और सुन्दर दास आए, ईमान मुख कहत।।६१

जयंतीदास जातमाल, और कबीला ल्याया।
फेर पीछे से बुलाया, पहिले आपको ईमान आया।।६२

और हरि राम भाई, और लड़ेती आई।
चन्दा ईमान ल्याए के, कबीला पीछे ल्याई।।६३

और आया सुन्दर, था नानक पन्थ में।
और ननियां आई, बाई लाली आस इन सें।।६४

और मूसे खां पठान, आया बुढ़ानपुर से।
ईमान ल्याए घर गया, रहया कबीले में।।६५

और रंचो बढ़ई, जयंति काके उपली पहिचान।
आवत है दीदार को, ले दिल में ईमान।।६६

मुरलीधर राह में, सुनके ए ल्याए ईमान।
उनको असल अक्रूर की, उतहीं हुई पहिचान।।६७

कानजी आहेड़ का, सो गया एचदे में।
गोकुलदास मकरन्द को, आए इसलाम तारतम सुनके।।६८

कौसल्या ने सुनी, और देमां मथुरी।
और श्री राम राजाराम, और भागो भाग भरी।।६९

राजू और भंडारिन, और राई कुंवर।
इनों सुन्या तारतम, देखा पटन्तर।।७०

हिमोती और खेमाबाई, और आसबाई।
संभू और मन्ना, और राम कुंअर आई।।७१

जीवनदास और नवलदास, और आए भाई कल्यान।
और महासिंह चौधरी, और दौलत खां पटान।।७२

और पूरन नाऊ, और आसा राम।
और एक आसा लल्लू, और परसराम।।७३

और आए सेख खिदर, और अब्दुल रेहेमान।
और भिखारी दास, ले कबीले समेत ईमान।।७४

और आए भाई रघुनाथ, कबीला इनका आया।
ए रामनगर की मजल, ए तो हिस्से माफक सुख पाया।।७५

और बुढ़ानपुर से, आया बृन्दावन।
और नारायन दास, और बराड़ का साथ मोमिन।।७६

लच्छीदास खेमकरन, और आया कंनड. जे।
और हरकृष्ण सुकदेव, और गिरधर बेकैद ऐ।।७७

और खरगो माता उनकी, और आए जगरूप।
चरचा सुनत श्री राज की, सुन्दर रूप अनूप।।७८

और आया रामनगर में, ए जो गंगा राम।
और जो आया बदले, उन पाया आराम।।७९

पतिराम मोदी, और केसवदास।
और बल्लभदास संग, और मनिया खास।।८०

और गिरधर बसन्त, और दयाल हसन।
और बिहारी फरास, और बिहारी रोसन।।८१

और गिरधर दरजी, और सूरज मल।
और गोविन्द राए ईमान, और लालमन निरमल।।८२

और देवराम, और पहाड़ी जाको नाम।
माता खेमकरन की, आई जातमाल के काम।।८३

और देवी दास आइया, और आए भगवान।
सिद्धपुर पाटन से, दामोदर परवान।।८४

और तिवारी उदई, थी लौकिक पहिचान।
श्री राज को घरों पधराए के, रसोई कराई प्रमान।।८५

चांद खान आइया, चरचा सुनने को।
दौड़ता ईमान को, रहा रामनगर मों।।८६

महामत कहें ऐ मोमिनों, ए कही रामनगर की तुम।
और आगे अजूं बहुत, कहों हक के हुकम।।८७

प्रकरण।।५७।। चौपाई।।३१५७।।

ए बात हरिसिंह सुनी, करने आया दीदार।
सुजान साह की सोहोबत, किया सूरत सिंह खबरदार।।१

सुनी चरचा आए के, बोहोत हुआ खुसाल।
घरों जाए न्योता किया, खबर पोहोंचाई हाल।।२

तुम मेरे घर पधारो, मैं सेवा करों तुम।
बात उनकी सुन के, भया उसे हुकम।।३

हम आवेंगे तुम्हारे, जाए रसोई करो तैयार।
उनका भाव देख के, बातें करी मुनहार।।४

रोज दूसरे उनने, बुलाए अपनें घर।
बड़ी बैठक करके, पधराए बिछौनों पर।।५

सब साथ आए पोहोंचे, बैटाई चौकी पर।
आप धोती पेहेन के, रह्या प्रीसने पर।।६

जुगतें बैठाए श्री राज को, भली बैठक ऊपर।
साथ बैठा दोए पगथिए, करें सेवा दिल धर।।७

पातर लगे प्रीसने, आप ऊपर ढोले बाए।
जुगते अंन जो प्रीसही, सब सामा पोहोंचाए।।८

ऊपरा ऊपर प्रीसही, मेवा मिटाई पकवान।
कई जुगते अथानें, थी ऊपर की पहिचान।।९

श्री राज आरोगे साथ सब, हुए है त्रिपत।
ऊपर बीड़ी तम्बोल की, ले आगे धरी इत।।१०

ले गए अटारी पर, श्री राज को एक टौर।
तहां बैठ बिनती करी, हाव-भाव अत जोर।।११

मैं तुम्हारा दास हूं, मुझ पर करी मेहेनत।
मैं उदास हुआ इतसें, ए होए मुझसे जेर इत।।१२

हुकम हुआ तिनसे, तेरा कारज होए सिध।
एह बात अंकूर की, आवे न जाग्रत बुध।।१३

जेता था उनका हिस्सा, तेता लिया उन सुख।
बिदा होए चला दरबार को, तब पड़ा कसाला दुख।।१४

और किसोरी कुंवर नें, एह बात सुनी कान।
तब ऊपर की पहिचान से, ले आया ईमान।।१५

अन्दर उनके महल में, केतेक ल्याई ईमान।
पर बंध दज्जाल के, सो कर न सके पहिचान।।१६

किसोर सिंह ने अपना, न्योता पठवाए दिया।
पधरावें हम राज को, चित्त को चौकस किया।।१७

उठ आया दीदार को, चरचा सुनी कान।
दिल में बोहोत राजी भया, ज्यादा भया ईमान।।१८

कोइक दिन पीछे, पधराऐ श्री राज।
साथी सब संग चले, कहे धन धन दिन है आज।।१९

रसोई बनाई जुगत सों, बैठाए श्री राज।
साथी गिरद घेर के, बैटे इनके काज।।२०

मेवा मिठाई पकवान, श्री राज आगे थाल धरी।
साथ सबों को प्रीस के, सेवा भली करी।।२१

भाव दिखाया भली भांत सों, हुआ सेवा को सनमुख।
अंकूर माफक अपने, इन भी लिया सुख।।२२

एक दासी उनकी आवती, फेर वह ल्याई ईमान।
देख दीदार हक का, कछुक भई पहिचान।।२३

नित आवे दीदार को, कछुक सामा ल्याए।
मुजरा कर पीछे फिरे, ताको दई पहुंचाए।।२४

आसाराम आइया, था कबीर पंथ में।
चरचा को आवे नित, सुनता ईमान से।।२५

एक उच्छव इन किया, दिल में होए खुसाल।
मैं तुमारे कदमों रहो, मुझे बकसो ए हाल।।२६

इन समें दज्जाल, जोरा लगा करनें।
आजूज माजूज उतरे, साथी लगे खेंचनें।।२७

राम नगर में हुआ, साथियों का चलना।
सुनियों नाम तिनके, जिन सोंप्या अपना।।२८

ईस्वरदास उदयपुर का, ले चला कबीला संग।
इन सौंपी आतम अपनी, पहुंचा संग कर जंग।।२६

तूंगा बेटा उनका, था लड़का छोटा।
भोम लिया अपना, आए धनी की ओटा।।३०

और धनियानी रूकमा, रही कोईक दिन।
पीछे अपने अंकूर पे, जाए मिली गोवरधन।।३१

और कानजी रामी चलिया, आया सूरत सें।
उन सौंपी आतम अपनी, रह्या छबीला बेटा इनमें।।३२

सामल दास चलिया, जाको चिन्तामन नाम।
था ठटे के साथ में, पोहोंचा अपने धाम।।३३

निरमल दास चलिया, था महाजरों मिनें।
आया सूरत वतन से, सो पोहोंचा ठौर अपने।।३४

दामोदर पाटन से, सौंपी अपनी आतम।
रहया अंकूर माफक सोहोबत, याको कछु न भई कुंम।।३५

संग रहया कोइक दिन, ए जो फकीर मासूम।
सो चला इतहीं, ठौर पहुंचा इन कदम।।३६

मलूक चन्द चलिया, था रजपूत राठौर।
इन लड़ाई करी दज्जाल सों, हक बिना न रखे और।।३७

जोरू जो गुलजीय की, हमों उसका नाम।
ओ भी चली उन समें, छोड़ कार वेहेवार का काम।।३८

मथुरी बुढ़ानपुर की, चली छोड़ कुटुम्ब परिवार।
रही अंकूर माफक सोहोबत, पहुंची परवरदिगार।।३९

गरीब फकीर बुढ़ानपुर से, चला बेटा उनका।
उन हिस्सा लिया अपना, जो सुख अंकूर में था।।४०

लाड़ कुंवर दिल्ली की, थी जोरू बनारसी।
रही हुकम माफक, जाए अपने सुख रची।।४१

मानबाई माता नन्द राम की, थी राज की सेवा में।
सुख लिया ताले माफक, नन्दराम की सोहोबत से।।४२

स्याम बाई बेटी लालबाई की, गढ़े में छोड़या आकार।
सुख लिया अंकूर माफक, फेर चली इन करार।।४३

गोमा खेमदास की, राह मिने चली।
रही अंकूर माफक सोहोबत, जाए अपने ठौर मिली।।४४

सदानन्द त्रिलोकदास, उदयपुर से आए रहे।
सोहोबत सेवा मिने, ठौर अपने पोहोंचे ए।।४५

इन भांत दज्जाल ने, साथी लिए छिनाए।
एक को मजल पहुंचावें, तोलों दूजो रहने न पाए।।४६

कोइक दिन ऐसा रह्या, फेर दबा हुकम से।
साथ सब दुदला भया, रहे विचार करने में।।४७

इन समें सुलतान का, हुआ हुकम पुरदलखान।
रहे राम नगर एक वेंरागी, तिनकी तुम करियो पहिचान।।४८

ए कौन हैं कहां से आए, हैं इनका मतलब कौन।
इन सुन हुकम खिदर को, भेजा ऊपर मोमिन।।४६

आया अहदी होए के, करता बड़ा सोर।
गढ़े से पुकारिया, किया राजा ऊपर जोर।।५०

में आया फकीरों पर, पकड़ देओ मेरे हाथ।
ना तो मुहिम तुम पर, ए चलें मेरे साथ।।५१

हुकम पातसाह के, हम आए तुम पर।
जो ढील करो इन बात में, तो होत गुनाह तुम पर।।५२

ए बात राजा सुनके, भेज दिया कोतवाल।
तुम कहो जाए स्वामी कृष्णदास सों, ऐसा हुआ हवाल।।५३

एक चार दिन तुम इहाँ से, बैठो जाए जागा और।
फेर के तुम आइयो, बैठियो अपनें ठौर।।५४

पर पातसाही दबदबा, सहे न सकें हम।
एक लाठी आवे उनकी, सो फेर न सकें हुकम।।५५

ताको श्री जी साहिब जी ने, झुक के दिया जवाब।
हम न डरें पातसाह से, आवे क्यों न सिताब।।५६

हम तो राह देखत हैं, क्यों ए कर बोलावे हम।
बैठे रहो घर अपने, जिन उपराला करो तुम।।५७

तब कोतवाल जाए के, करी राजा सों अरज।
बैरागी तो यों कहें, हम ना डरें इन गरज।।५८

आवन देओ उनको, हम समझेंगे उनसे।
तुम हमारे उपराले, ना रहियो मदत में।।५९

तब राजा ने फेर पठवाया, तुम जाए कहो यों कर।
हम तुम सों कहत हैं, अरज दूसरी बेर।।६०

हम अपने धरम को, इसी वास्ते डरात।
पकड़ ले आवें तुमको, तो सरम हमारी जात।।६१

तुम दस बीस कोस, छिप के बैठो जाए।
फेर के इत आइयो, हम लेवेंगे बोलाए।।६२

फेर के कोतवाल नें, आए करी अरज।
राजा यों कहत हैं, अपने स्वारथ गरज।।६३

तब जवाब दिया श्री जी ऐं, तुम कछू न करो फिकर।
हम समझ लेएंगे इनको, आवने देओ हमारी नजर।।६४

कछू न चले इनका, जोरा हम ऊपर।
देखत ही गल जायेंगे, बानी सुन पटन्तर।।६५

जिन तुम अपने दिल में, ल्याओ दग दगा कोए।
ए आसान होएगा, आज्ञा से जेर होए।।६६

फेर गया कोतवाल राजा पे, सब कही बीतक।
राजा सुन अचरज भया, इन्हें कछू न आवे सक।।६७

जाए सुवंसराए तुम कहो, क्यों डरत नहीं तुम।
पातसाही लोकन से, पीछे क्या करेंगे हम।।६८

जब तुम को पकड़ के, ले जाएं हजूर सुलतान।
तब हमारे दिल में, होए बदनामी सुने कान।।६९

सुवंसराए सुन आइया, कही श्री जी साहिब जी से बात।
राजा को कहलाई थी, ताकी करी विख्यात।।७०

तब श्री जी साहिब जी ऐं कह्या, जिन डरो मन में।
अपना बल दिखाइया, कर चरचा उन से।।७१

उन जाए कही राजा सों, काहे को कहो तुम।
बिना मार अपनी, सब डर बताया हम।।७२

जहां लग अपना कहना, सो कह के चुके सब।
अब इनके दिल में जो आवे, सो करेंगे तब।।७३

यों करते दिन दूसरे, शेख खिदर पहुंचे धाए।
मुलाकात राजा सों करी, पहिले एही बताए।।७४

हम आए तिन काम को, पकड़ देओ बेंरागी तुम।
हजूर में ले जाएंगे, हमको है हुकम।।७५

जो तुम इनकी रक्षा करो, तो है मुहिम तुम पर।
केतो इनें पकड़ देओ, नातो बाँधो कमर।।७६

तब राजा बोलिया, हम सों न कछू काम।
तुम जाए पकड़ो उनको, ले जाओ अपने ठाम।।७७

जो तुम आए हम पर, ले सुलतान हुकम।
सो हम चढ़ाया सिर पर, ले जाओ बेंरागी तुम।।७८

उहाँ से फेर उठके, आए उतरे हवेली में।
भिखारी दास दीवान, बात करी उन सें।।७९

अब हमें क्या करना, क्यों कर पकड़े हम।
तब भिखारी दासें कहया, पहले हमें पठाओ तुम।।८०

खबर ले उनकी, क्या है उनकी बात।
वाकिफ उनके होए के, पकड़ लेएंगे जात।।८१

भिखारीदास बिदा होए के, आए हादी कदम।
कदमों लाग सेजदा किया, हम आए ऊपर तुम।।८२

क्या तुमारी खबर है, आया पातसाही फुरमान।
हम आए तुमें पकड़ने, ले जाएं पास सुलतान।।८३

तब हादी ने कह्या, हमको तो एही चाह।
जो हमको ए याद करें, कोई हमको उत पहुंचाए।।८४

तुम लेओ हमारी खबर, वाकिफ होवो हकीकत।
सुनावें चरचा तुमको, सब समझो तुम इत।।८५

कही हकीकत उनको, बात मूल की सब।
सवाल भागवत कुरान के, मिलाए दिखाए तब।।८६

जवाब करो तुम इनका, जो तुमे समझी जाए।
यातो सुनो हम पे, सब देवें बताए।।८७

तब भिखारी दासें कहया, हमें समझाओ तुम।
हम तो ल्याए ईमान, तुमारे कदम न छोड़ें हम।।८८

तीन रात और तीन दिन, कहया तारतम समझाए।
सवाल कुरान भागवत के, सब ठौर दिए बताए।।८६

विरोध सारा भान के, बताया एक दीन।
मारा सक सैतान को, तबही ल्याया आकीन।।६०

गया सेख खिदर पे, कही हकीकत सब।
मैं देख्या हादी जमाने का, सेंख खिदरें पूछया तब।।६१

ए कैसी बात तुम कही, तुमें क्यों कर भई पहिचान।
सो मेरे आगे कहो, हादी आवने के निसान।।६२

तब सवाल कहे कुरान के, और भागवत के प्रस्न।
इनको खोल के, कर दिया दिल रोसन।।६३

या सातों निसान क्यामत के, करी तिनकी चरचा जोर।
एक दाभतल अरज, और दिखाया दज्जाल का सोर।।६४

और आजूज माजूज, आए ईसा हजरत।
असराफीलें सूर फूंकिया, सब बताए दिए इत।।६५

सूरज ऊगा मगरब, जाहिर हुए इमाम।
ऐसे माएने खोल के, बताए दिए तमाम।।६६

हुआ एक दीन सबमें, भानी सारी सक।
राह सरातल मुस्तकीम, दिखाई मारफत हक।।६७

हकीकत मारफत के, खोल दिये सब द्वार।
तब सेख की सुध गई, करने लगा विचार।।९८

सैयद अब्दुल रेहेमान, और रघुनाथ था संग।
तिन साहिदी सब दई, भागा दज्जाल का जंग।।९९

तुम चलो उतहीं, करावें दीदार।
जो देखो हकीकत उनकी, तो पाओ परवरदिगार।।१००

सेख वैसे ही उठिया, असवारी करी तैयार।
आगे तें खबर करी, हम आवत करन दीदार।।१०१

सेख आए के पहुंचिया, ले भीर अपनी।
देख दीदार कदमों लगा, पाए अपनी वतनी।।१०२

होने लगी चरचा, कयामत का मजकूर।
सनंधे सुनी तिनने, सब देखा हक जहूर।।१०३

इन समें दज्जाल नें, किया बड़ा सोर।
रहत मुसलमान बेदड़े, तिनों किया अति जोर।।१०४

उनों जान्या सेख पुकारता, आया पकड़ने को।
तो हम जावें मदत, होवे काम दीन के मों।।१०५

उहां कुरान तपसीर धरी थी, करने लगा जिद्द।
ए हिन्दुओं को रवा नहीं, तुम क्यों चरचा करो महम्मद।।१०६

तब सेख को गुस्सा चढ़ा, इन्हें उठाए देओ मुडदक।
देओ धक्के इनको, करने लगा हरकत हक।।१०७

सबों ने दई लानत, उठाया मजलस सें।
स्याह मोंह ले उठिया, बैठा दज्जाल इन में।।१०८

सेख सब साथ सों, ले आया ईमान।
फेर आया डेरे को, करके पूरी पहिचान।।१०९

दिन दूसरे गया, राजा की सोहोबत।
हैफ हे राजा तुझको, ऐसा पहलवान रहे इत।।११०

तूं तिनके दीदार को, गया नाहीं कब।
तो मैं तुझको क्या कहों, तुझे पहिचान ना भई लों अब।।१११

तब राजा बोलिया, अबहीं तुम करते पुकार।
भली भई तुमहीं फिरे, तुमहीं करने लगे करार।।११२

तब सेख बोलिया, हमें ना कछू खबर।
हम भेजे आए उनके, इन काम ऊपर।।११३

जब हम देखा हादीए को, ए तहकीक बरहक।
हमको भई पहिचान, हमारी सारी भानी सक।।११४

अब हम उनके गुलाम, जो हमको ए फुरमाए।
सो सब हमें करना, दें पैगाम पहुंचाए।।११५

तब लोगों ने कह्या, राजा सों सुकन।
है इनके पास भुरकी, सो हाथ रहे मोमिन।।११६

जो कोई जात है, सिर पर डारत तिनके।
सोई उनका होत है, तुम समझियो सोहोबत में।।११७

राजा कहे मैं जाऊंगा, बैठों ना सोहोबत।
दूर से दीदार करूंगा, वास्ते सेख खिदर के इत।।११८

दिन दूसरे राजा ने, न्योता किया सबन।
बाग में आप आए के, दीदार किया मोमिन।।११९

हादी के सनमुख, खड़ा रहा ना बैठा जे।
दिल में दहसत इनको, जिन अपने करें ए।।१२०

ओ ऐसे ही पीछा फिरा, सुनी न चरचा कान।
बिन अंकूरे क्या करे, कर ना सका पहिचान।।१२१

फेर सेख खिदरें मांगिया, हमको करो हुकम।
तैसा हम हजूर में, लिखा करें बाब तुम।।१२२

तब कह्या हादी नें, तुमको क्या कहें हम।
जैसा तुमारी अकलें, देखा होए हमें तुम।।१२३

तैसा तुम लिखा करो, पहुंचाओ पुरदल खान।
वह भेजे सुलतान को, होए अंकूर पहिचान।।१२४

कलसनामा

केतेक दिन सेख रहया, लिख भेजी पहिचान।
केतेक लोग सेख के रह गए, जिनको जोर ईमान।।१९२५

भिखारी दास सेख पहुंचाए के, फेर आए कदमों।
कबीला अपना ल्याइया, सब सोंप्या हादी को।।१९२६

फेर अहदी गुलाम महम्मद, दौड़ा धमोनी से।
तिनने सुनी बातें, वास्ते लोभ के।।१९२७

था खेस पुरदल खान का, पुकार किया उत सें।
राजा से जाए कहो, वैंरागी पकड़ देओ हमें।।१९२८

तब राजा डरिया, इन पर दबदबा पातसाही।
इन्हें हम अपने गांव क्यों रखें, बदी बदकारों बताई।।१९२९

तब राजा ने भेजे, गुमास्ते अपनें।
तुम जाओ हमारे देस से, हम न सह सकें खरखसे।।१९३०

देखी नजर राजा की, दहसत भरी कहर।
तब उहाँ से उठ चले, जिमी देखी जहर।।१९३१

सम्वत् सत्रह सै उन्तालीसे, मास अगहन सुदी दस में।
चले रामनगर से, फेर आए चौदस गढ़े में।।१९३२

तब उतरे जाऐ बाग में, अहदी पहुंचा धाए।
सो तो गया रामनगर, पाँच अपने पहुंचाए।।१९३३

तिनने रोके बाग में, तब आए पहुंचे देवकरन।
तिनसे बातें होने लगी, लड़े चार पहर मोमिन।।१३४

सनंधे हादी ने कही, सुनते ही हुए जेर।
दिन उगते पहिले भगे, बड़ी हुई हमें खेर।।१३५

एतो बली खुदाए का, हमसे बेअदबी कछू होए।
तो होता बुरा हमारा, हम ठौर न पावें सोए।।१३६

हादी वहां से चल के, गढ़े पहुंचे धाए।
वहां भगवन्त राए का, बेटा हाकिम ताए।।१३७

उनने दिल में यों लिया, लूट लेऊं वेंरागिन।
एही हराम खोरी के, लोकों आगे कहे सुकन।।१३८

ए सुनी गंगाराम बाजपेई, उहां था आसन।
आया बार दोए दीदार को, जान सनमन्ध आपन।।१३९

तिन जाए बरज्या उनको, क्यों एह करने लगा काम।
वेरागियों को लूटते, होएगा बदनाम।।१४०

और ए ऐसे नहीं जो कोई लूट ले, मरे मारेंगे तुम।
काहे को भूल के सुकन, मुंह से काढ़ दिखाओ हम।।१४१

लागी लानत गढ़े को, उस दिन से हुआ खुवार।
सो रोज कयामत लों, ठौर न आवे लगार।।१४२

महामत कहे ऐ साथ जी, ए गढ़े की बीतक।
कछुक पीछे रही है, सो कहों हुकम हक।।१४३

प्रकरण।।५८।। चौपाई।।३३००।।

गढ़े की मजल में, आया याद रामनगर।
तिनकी मजल कहत हों, सुनियो साथ खबर।।१

सूरत सिंह ईमान ल्याइया, देख के दीदार।
सक मन में ना रही, देखा धनी निरधार।।२

सुनिया तारतम इनने, देखी हक सूरत।
ए बात मैं किनसों कहों, कौन ल्यावे प्रतीत इत।।३

गया दीवान देवकरन पे, एक सुनी मैं बात।
तुमारे आगे कहत हों, मैं देखी हक जात।।४

चलो मेरे साथ तुम, मैं कराऊं दीदार।
केतकी पर रहत हैं, देखो धनी निरधार।।५

ल्याए दीवान देवकरन को, देख के लगे कदम।
सक कछू ना ल्याइया, सिर पर चढ़ाया हुकम।।६

थोड़ी चरचा सुन के, दिल की भागी सक।
मैं महाराज सों कहों, ओ ईमान ल्यावें बेसक।।७

अब सेवा के साथी कहों, जो रामनगर में।
मोदी खाने की सेवा दई, सो हुई पतिराम सें।।८

केसवदास और जेनती, हुए सामिल पतिराम के।
और जेनती पानी पिलावत, साथ की सेवा करी ऐ।।९

हाट से सौदा ल्यावत, इन समें गोकुलदास।
कुल अखत्यार खान सामा को, था गरीबदास खास।।१०

रसोई में खेमदास, और गंगाराम।
और सन्त दास गोवरधन, पीछे सूरजमलें किया काम।।११

इन सबों पर दरोगा, रहता वृन्दावन।
लकड़ी जंगल की टहल, रहें बराड़ी साथ सबन।।१२

गावनें में रहत हैं, ए जो निरमल दास।
तिन सेती सामिल रहे, भाई मुकुन्द दास खास।।१३

श्री बाई जी गावनें में रहें, संग गोदावरी।
बुआबाई हमो गावें, सनंधां जो उत्तरी।।१४

और चौकी दो जिनस की, ए गावें बारे अपनें।
निरमल दास नित्याने, रिझावें राज सब में।।१५

और आरती में रहत हैं, लाल मुकुन्द दास।
उत्तम दास पखावज में, सब सिरे निरमल दास।।१६

और बनमालीदास सामिल, रहें आरती में तैयार।
सेवा अपनी मिनें, नए नए करें विचार।।१७

खिमाईदास ताल बजावत, कनड़ गावने में।
कल्याण कला जमावत, ए सेवे आरती समें।।१८

और साथ सब ठाढ़ा रहे, छबीलदास बजावें संख।
आरती संझा समें होत है, करे मगन होए निसंक।।१९

अग्यारह उच्छव कौसल्या के, पधराए घरों राज।
सेवा करी भली भांत सों, पूरे मनोरथ काज।।२०

दोए उच्छव तिवारी उदई, घरों पधराए अपने।
एक भतीजा घासी, जान गुरू वेरागी पने।।२१

रामजनी भगवती, तिनकी महतारी ने।
उच्छव कर पधराए, जान पने अपने।।२२

मकरन्द ने उच्छव किया, तन मन धन सोंपे।
कदमों लाग ठाढ़ा रहे, कछू रख्या ना पीछे।।२३

अमरा दत्ता दगड़ा, आए बराड़ से।
किया उच्छव उमंग सों, सनमुख हुए साथ में।।२४

देवी काका जयन्ति, इन किया उच्छव ए।
श्री राज पधराए इन घरों, संग लिए सेवे।।२५

हीरामन बढ़ई नें, करी उच्छव रसोई।
श्री राज साथ को बुलाए, सेवा इनसे भली भई।।२६

सातमी मजल आए गढ़े, एक मास तेरह दिन।
हुकम हुआ श्री राज का, जाओ सुलतान पे मोमिन।।२७

गढ़े में आए मिली, बाई धरमा डोकरी।
ईमान ल्याई सुनते, कछू सक ना इन करी।।२८

अनन्त राम आइया, और आया घनस्याम।
हरबाई संग इनके, और सदानन्द इस ठाम।।२६

गंगाराम उज्जैन का, और वासू केसर।
उदैती खिमोती दयाली, मोहन धनबाई इन पर।।३०

फकीरा बेनी बेहेन थी, करमेती परवान।
मानिक और पूर बहू, और लखमी आई जान।।३१

और गोवरधन, और भट्ट मुकुन्द जी।
देवीदास हरखो गढ़ा में, आए रूह कदमों दी।।३२

बिन्दा बिहारी सन्त दास, वैस्य दुरजन सिंह जे।
खांडेराए रूप सिंह, कीरत सिंह कदमों पहुंचे।।३३

दरसा धरमोल रतन, और कुसल सिंह मधुकर।
मयाराम वैद्य उहां का, लालसिंह भदोरिया योकर।।३४

इन समें लालदास को, हुआ हजूर का हुकम।
जाए कहो सुलतान को, ल्याए फेर पैगाम ऊपर तुम।।३५

पूस सुद पांच को, बीरजू दई खबर।
राम नगर राजा नें, अस्तल खोद्यो भली तर।।३६

सुन कान दुःख पाइया, हुआ गढ़ा खराब।
ज्यों खोदो अस्तल को, ताको रहे न पकड़ो ताब।।३७

जब देवकरन विदा भए, जब पूछी श्री राज नें बात।
तुम अपना ठौर छोड़ के, और मुलक क्यों जात।।३८

तब दीवानें ए कही, एक बात पर आए रिसाए।
तबसे इहां रह गए, उहां जाने न पाए।।३६

तब श्री राज नें कहया, तुम आए इन काज।
एह वस्त लेए के, पहुंचावने महाराज।।४०

हम सब राजा देखे, पै काहू न देखा अंकूर।
सकुण्डल इन्हें परखी, तो इनसों होसी मजकूर।।४१

जब लाल को हुकम हुआ, तब जाए देख्या कुरान।
सोलह सिपारे मिनें, मूसे हारून का बयान।।४२

तहां लिखा मूसे ने, खुदायसों करी अरज।
मैं क्यों कर लड़ो फेरून सों, जोलों मेरी न करो गरज।।४३

मैं फकीर ओ पातसाह, मैं पहुंच न सकों तिन।
जो मेरा भाई देओ मुझको, तो लड़ों साथ मोमिन।।४४

तब खुदाए ने दिया, मूसे को भाई हारून।
अब फेरून का ना चले, कर ना सके खून।।४५

एह आएत राज को, देखाई लालदास।
आपन को एक राजा मिले, सो चाहिए मोमिन खास।।४६

एह विचार करते, लाल रह्या लसकर सें।
चरन दास गरीबदास, पहुंचाए लसकर में।।४७

धरमा मिली लाल को, राह में जाते।
तुम्हारी बात देव जी ने, करी छत्रसाल आगे।।४८

एह बात सुन लाल नें, आए आगे करी श्री राज के।
बात अपनी होने लगी, छत्रसाल आगे।।४६

तब देवजी पास पटाए, सन्त दास धरम दास।
पाती लिख पहुंचाई, कहियो संदेसो खास।।५०

फेर अगरिए से भेजे, लाल उत्तम जीवन।
और गोविन्द दास को, भेजे ऊपर मोमिन।।५१

बूढी बूढा मों आई, कमलावती रतन।
राघव दास रेवादास, ए चारों मिल मोमिन।।५२

लखीराम ने परने, लिखाया नाम अपना।
मैं तुम्हारे साथ आऊं, मैं जहान जाना सुपना।।५३

रामदास नें उच्छव किया, मिने रहमतर।
तिनें कहया मैं हों तुम्हारा, जग सुपना दिया कर।।५४

संतावरी दीपा मिली, गोकुल दास की माँ।
अग्यारह दिन बिलहरी रहे, सब चले होए जमां।।५५

महामत कहे ए मोमिनों, ए गढ़ा की बीतक।
आगे कहो परना की, जो है हुकम हक।।५६

प्रकरण।।५६।। चौपाई।।३३५६।।

श्री जी वा महाराजा जी की भेंट

पहिले सूरत सिंह सुनी, बीच राम नगर।
देवजी को दिखाइया, तो कहया पैगम्बर।।१

आए राज रामनगर, तहां बिराजे बरस दोए।
मिले दीवान देवकरन, ईमान ल्याए सोए।।२

उमंग अंग में आइया, कहों जाए छत्रसाल।
एह हकीकत सुनके, होवेगा खुसाल।।३

इन वास्ते रामनगर से, चल के मऊ आए।
खबर करी महाराज को, दिया पैगाम पोहोंचाए।।४

नौरंग अकस राखत है, है लड़ाई इसलाम।
दावत सब ठौरों करी, बुलाओ अपने ठाम।।५

अंकूर असल का, सुनत ही करे चेतन।
बलदीवान के आगे, बात करी देवकरन।।६

दिल में विचारते, लालदास पहुंचे।
आए उत्तम दास आनन्द सों, बानी राज की गावते।।७

सुने स्लोक महाराज नें, भागवत के कहे लालदास।
तब श्री जी साहिब के चरन की, दिल में लई आस।।८

श्री जी साहिब जी को बुलावने, जाओ देवजी तुम।
लाल उत्तम को ले जाओ, सामे आए बुलावन हम।।९

तहां से विदा होए के, आए अगरिए पहुंचे।
रिझाए मिलते राज को, सेवा करी समेत कबीले।।१०

चले अगरिए से, परने पहुंचे आए।
डेरा किया अमराई में, ठौर झंडे की चित्त ल्याए।।११

नदी किलकिला तीर पे, उतरे परमहंस आए।
तिन में सिरदार अक्षरातीत, देख अपना ठौर सुख पाए।।१२

डेरा करत परना के, दौड़े देखत गोंड़ लोक और।
साध वेरागी कोऊ आए उतरे, देखें हम जाए वा ठौर।।१३

सब ने आए दरसन करे, कही सुनो सब साध।
या नदी को जल न पीजियो, याके पिए जाए प्राण व्याध।।१४

तब सब साथ ने मिल के, धोयो चरण अंगूठा राज।
डारयो चरणामृत नदी में, पीछे नहायो सकल समाज।।१५

भेजी खबर महाराज को, आप पोहोंचे आए इत।
कह भेजी महाराज नें, मोहे बने न आवत तित।।१६

साथ सरूप दे को छोड़ के, आप छड़े पधारें इत।
तो कारज सब सिध होवहीं, हम पावें सुख नित।।१७

तब चले आप परने से, मऊ पहुंचे जाए।
श्री बाई जी साथ सरूप दे, छोड़ चले सब आहें।।१८

मऊ में तिदुंनी दरवाजे, डेरा किया वाहिं।
राजा भेख बदल के, दरसन कियो ताहिं।।१६

फेर दूजी बेर भेख बदल के, कर सिकार को साज।
साथ सबों के बीच में, बैठे थे श्री राज।।२०

तहां जाए ठाड़े भए, तरह मूढ़ की ल्याए।
कही बाबा जू राम राम, बाबा बैठो इत आए।।२१

आए बैठे बिछौने पर, बहुत किनारे दूर।
कही बाबा और आगे आओ, बैठो इत हजूर।।२२

तहां से उठ आगे गए, तो भी बुलाए आगे।
कही अब तो परे तुम फंद में, अब कहाँ जाओ भागे।।२३

तब कही महाराज नें, नहीं ऐसो ब्रह्मांड में कोए।
जो हम पर फन्दा डारहीं, ए काम बुध जी से होए।।२४

उनके हम चाकर हैं, बारह बरस से।
तिनकी छाप के रूपैया, देखो तुम हम से।।२५

एह हकीकत कह के, उठे उत थें महाराज।
गए अपने महल में, कही भई बीतक जो आज।।२६

अन्दर जाए के ए कही, जिन्हें करना होए दीदार।
सो सबहीं कीजियो, आया परवरदिगार।।२७

रानी देवकुंवर थी मऊ में, उन सुनी महाराज मुख एह।
ब्राह्मणियों में भेस बदल के, दरसन कियो इने तेह।।२८

फेर जाहिर होए के, आगे भीर चलाए।
बलदिवान महाराज ने, भेंट करी बनाए।।२६

वह बखत महाराज को, थी महूम अफगान।
भई असवारी तैयार, आए लगे चरन।।३०

श्री राज रूमाल लेए के, सिर पर धरा महाराज।
हाथ धरा सिर ऊपर, होए पूरन मनोरथ काज।।३१

इन समै लोग लसकर के कहें, जो हम ए पावें फते।
तो एही हमारा हक हैं, लोक मांगे ए माजजे।।३२

जब उससे फते करके, आए श्री महाराज।
तब लोकों ने कह्या, बिना श्री राज ना होए ए काज।।३३

फेर श्री महाराजें देखिया, पट जो तारतम।
अब बहेवार छुटत मुझसे, जाग खड़ी आतम।।३४

मऊ सेती परना मिने, पहुंचे श्री जी साहिब।
मंझली नें पहिचानिया, सेवा करी तब।।३५

और सब अन्दर की, रहे पीछे तिन।
जब महाराज आए पहुंचे, सबों बातां करी आगे इन।।३६

गिरे दंडवत आए के, सनमुख साथ में पास।
सीस धरयो दोऊ चरन पर, दीनो जगत निकास।।३७

आए महाराज उत से, रसोई के बखत।
अस्नान कर ठाढ़े हते, श्री जी साहिब जी तित।।३८

कनातें ठाढ़ी करीं, बैठे श्री महाराज।
थाल श्री बाई जी ल्याई, आगे धरी श्री राज।।३९

चार जने महाराज संग, लिया इत प्रसाद।
ईमान ल्याए अरस पर, ए सेवा करी आद।।४०

कुली दज्जाल कांपिया, किया बड़ा सोर।
ए निहचें मोकों मारेंगे, इन दोऊ से चले न मेरा जोर।।४१

काहू काहू के दिल में, कलयुग आए बैठा।
बदफैली दिल में करी, जो था सेना में जेठा।।४२

डगावने महाराज को, बहुत करी दज्जाल।
ना भए राज तरफ दलगीर, हमेसा रहे खुसहाल।।४३

हिंमत परवत सिंह, और साह रूप।
और नारायन दास, और सकत सिंह अनूप।।४४

और ईमान ल्याइया, ए जो दुरग भान।
जगत सिंह सुन दौड़िया, ए ल्याया ईमान।।४५

सम्बत सत्रह से चालीसे, पधारे परना में।
सेवा श्री महाराजें करी, क्यों कहूं इन जुबां सें।।४६

काहू करी ना करसी, ए जब को उपज्यो इण्ड।
सब की सेवा सास्त्रों में, लिखी है जो ब्रह्मांड।।४७

जैसे जिन पगले भरे, तैसा ही लिखा तिन।
इन हिसाब कर देखियो, खास गिरोह मोमिन।।४८

चौपड़े की हवेली मिने, तहां पधराए श्री राज।
चले आप सुखपाल ले, कांध पर कुंवर महाराज।।४९

सुखपाल धरी जाए द्वार में, अत उछरंग होए।
चले आप भीतर को, दिन मान्यो सुफल जो सोए।।५०

भीतर जाते द्वार में, रानी मझली ने आए।
किया पांवड़ो साडी को, अत प्रेम दिल में ल्याए।।५१

तब महाराजे ए कही, तू मेरे आगे क्यों होए।
यों कहि उठाई साड़ी को, कियो पांवड़ों पाग को सोए।।५२

पलंग बीच में जाएगा, रही कछुक पास।
तहां बिछाई साड़ी को, बैठे सिंहासन खास।।५३

अपनो आपा सब दियो, और दियो सब साज।
आरती निछावर करके, कही धन धन दिन है आज।।५४

एही टीका एही पांवड़ो, एही निछावर आए।
श्री प्राणनाथ के चरन पर, छत्ता बलि बलि जाए।।५५

श्री बाई जी को जोड़े राज के, बैठाए कर सनेह।
कहनी में न आवहीं, लगो जुगल सों नेह।।५६

साथ समस्त के बीच में, जुगल धनी बैठाए।
कही तुम साक्षात अक्षरातीत हो, हम चीन्हा तुमें बनाए।।५७

श्री ठकुरानी जी साथ संग ले, पधारे मेरे घर।
धनी बिना तुम्हें और देखे, सो नही मिसल मातवर।।५८

अब तो कछू ना हमारो, दे चुके हम सीस।
आपा रहयो न आप बस, करो जानों सो बकसीस।।५९

तब बोले श्री राज जी, देखे राणा पातसाह सब।
पर जो कछू करनी अंकूर की, सो इत देखी हम सब।।६०

आगे साध सन्तों ने, कह्‌यो गुरू सिस्य को धरम।
सोतो अब इहाँ भयो, उड़यो सबों को भरम।।६१

पहिले दाता हम भए, गुरू को दीनों सीस।
पीछे दाता गुरू भए, सब कछु कियो बकसीस।।६२

साखी : बीतेगा उनतालीसा दगेगा चालीसा, तब कोई
होसी मरद मरद का चेला।
नानक गुरू दिखावे सांई, सच सच दी वेला।।

बिजिया अभिनन्द बुध जी, ब्रह्म सृष्ट सिरताज।
हाथ हुकम छत्रसाल के, दियो सो आपनो राज।।६३

साखी कहके थाल ले, तिलक करयो श्री राज।
भाल माहिं छत्रसाल के, कही आप बैठो महाराज।।६४

बजी बधाई नृपत के, करी आरती प्रान।
कही सब जन महाराज जू, करयो प्रणाम प्रमान।।६५

सकुण्डल सोभा भई, प्रगट भई पहिचान।
छत्रसाल छत्ता हुआ, छिपे सबे सुलतान।।६६

छत्रसाल छत्ता हुआ, कह्या सुन्दर बाई जोए।
आप दिखावत आपनी, कही सकुण्डल सोए।।६७

अरूगावने श्री राज को, मेवा मिठाई पकवान।
आनन्द इन सुख को, कह्यो न जाए परमान।।६८

फेर और बेर बुलाए, भीतर लई सुखपाल।
एक तरफ आप उठाए, एक तरफ ठकुरानी होए खुसाल।।६९

पधराए अपने घरों, अत हेत कर प्यार।
भूषन पेहेराए भली भांत सों, कियो बड़ो मनुहार।।७०

चीन पेहेराई नवघरी, ले धरी आगे।
हीरा मानिक चूनी, तले पहुंची लटके।।७१

और दुगदुगी सांकर, तले हीरा मानिक।
पहुंची जड़ाव हीरे की, रीझ पेहेनाई हक।।७२

और भूषन कई भांत के, ले आगे धरे आए।
और मंझली ने अपने भूषन, श्री बाई जी को पहिनाए।।७३

और साथ ने इतहीं, सेवा करी बनाए।
सो इन जुबां केती कहों, कहनी में न आए।।७४

तन मन धन सों, कियो सब निछावर।
हाथ जोड़ ठाढ़े भए, सिफत भई सब पर।।७५

पहिचान पूरी करी, सेवे धनी कर धाम।
साथ जो अन्दर रहे, तिन सेवा करी तमाम।।७६

देखा देखी महाराज के, ल्याया जो ईमान।
बस बसा छाती पर, करता था सैतान।।७७

बात छिपाई कुरान की, आवते महाराज सो आप।
सो पहिचान के वास्ते, इनको प्रकट करने प्रताप।।७८

बैठे आप बंगले मिने, बांचे लाल किताब।
आप करत है माएनें, भाई दो चार बैठे हिसाब।।७९

बैठे सब एकान्त में, ऐसे में आए महाराज।
दूर बैठ मन बिचारिया, यों क्यों बैठे हैं आज।।८०

बुलाए के लालदास को, पूछी राजा ने एह।
तुम कहा गुप्त बांचत हो, हमको कहिए तेह।।८१

तब कह्या उत लाल नें, हमको हुकम नाहिं।
पूछें जाए हजूर में, तब कहें तुमें आहिं।।८२

जाए लालें पूछी हजूर में, तब बुलाए हजूर महाराज।
कही ए जो बात कुरान की, तुम सों छिपाई लों आज।।८३

सो ए अब कहत हैं, इनमें बात अपनी है सब।
महम्मद साहिब कुरान ल्याए, सो सब अपनो सबब।।८४

यामें अपनी बीतक सब है, श्री देवचन्द्र जी को मेरे तेरो नाम।
जा दिन जो बीती हम तीनों में, सो सब लिखी तमाम।।८५

ए बात सुनत महाराज को, जोस जो बढ़यो जोर।
ए वस्त प्रकट करके, करों खेल में सोर।।८६

बात हमारे घर की, क्यों छिपावे हम।
मुसलमान हमें कहा करें, ल्यावें तले तुमारे हुकम।।८७

बांधी तरवार साह सों, सो तुमारे चाकर होए।
हक हादी मोमिन बिना, और न देखे कोए।।८८

और बात हमारी ए सुनो, जो ए बात सुन ल्यावे ईमान।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान।।८६

ए बात सुन राजा की, आप हुए खुसाल।
जाहिर किया दीन को, बकसी किताब हाल।।६०

ए बात राजा के घर में, कोई कोई कों न आई नजर।
परचो लीजे इनको, ए हिन्दू बांचे क्यों कर।।६१

तब बुलाए बलदीवान ने, काजी मुल्ला पण्डित।
तिन सों तहकीक करने, चरचा कराई इत।।६२

आया काजी महोबे का, नाम अब्दुल रसूल।
तिन सेती चरचा भई, कुरान की मकबूल।।६३

तिन सेती पूछाइया, कुरान का सवाल एक।
एकै जबाब दीजियो, जिन बोलो जवाब अनेक।।६४

मेरे आगे कुरान की, कोई मार न सके दम।
उमी होए पूछत हो, कुरान की बातें तुम।।९५

कुरान तमाम तपसीर, मुझको रहे याद।
मुझ सेती कई खलक, पढ़के पहुंची मुराद।।९६

तिस वास्ते तुमको डरत हैं, कोई न ल्यावे ताब।
हम सवाल पूछत हैं, तिनका देओ जबाब।।९७

क्यों दुनियां की पैदाइस, लिखी बीच कुरान।
समझ जवाब दीजिओ, है बात बड़ी फिरकान।।९८

तब जवाब काजीएं दिया, हम क्यों कर कहें खिलाफ।
बूढ़े हुए पढ़ते, हमारे दिल हैं साफ।।९९

जो कदी ए कुरान, और भांत बोलें।
तो तुम आगे हारहीं, दम ना मार सकें।।१००

पांच भांत की पैदाईस, लिखी अल्ला कलाम।
खबर कोई ना पावहीं, पढ़ी खलक तमाम।।१०१

तब कुरान आगे धरी, खोल देखो किताब।
तिलकर रसूल में लिखा, आया नहीं जवाब।।१०२

कुंन सेती पैदा भई, ए जो आम खलक।
एक कहे एक हाथ से, दो हाथों कहे हक।।१०३

और एक जमात को, ले आए उठाए इप्तदाए।
और एक खिलकत और से, ए पांचों की पैदाए।।१०४

तब पूछा अब्दुल रसूल को, तुम हो किन में।
अब सांच बोलियो, तुम पैदाइस जिनसें।।१०५

तब काजी के दिल में, भई जो दुदली।
तब जवाब आया नहीं, तब बात कही बिचली।।१०६

तब बलदिवान नें, कही ऐ मियाँ तुम।
भूल के बात करत हो, छूटा वह हुकम।।१०७

तब काजी कदमों लगा, किया सेजदा हक।
हम तहकीक पहचानिया, ए बात बड़ी बुजरक।।१०८

तब बल दिवान नें, काजी सों पूछी ए।
मुसाफ सिर पर धर कहो, सांच बताओ जे।।१०९

तब जवाब काजी दिया, मुसाफ सिर हमारे।
जो हम झूठ बोलहीं, तो ए ही हमको मारे।।११०

ए तहकीक जमाने का खाविन्द, जो करी थी सरत।
सो सरत आए पहुंची, फरदा रोज कयामत।।१११

तब बलदिवान के, कछू सांच आई दिल में।
पण्डितों से तो पूछ देखों, कोई चरचा करे इनसें।।११२

तब सुन्दर बल्लभ बद्री, और बुलाए पण्डित।
तिनको लगा पूछने, ए बात कैसी इत।।११३

बद्री को बुलाए के, महाराजें पूछी बात खरी।
ए जो सवाल भागवत के, चित दे चरचा करी।।११४

तब बद्रीदास ने, प्रसन सुनें दे कान।
ए बात श्री कृष्ण की, होए ना बिना भगवान।।११५

तब श्री महाराज नें, पाया बद्री पर सुख।
रस रहया चरचा मिने, कहया न जाए मुख।।११६

आधी रात उपरान्त, घरों गया बद्री जब।
सब पण्डितों मिल के, बातें पूछी तब।।११७

कैसी तुम चरचा करी, कैसा दिया जवाब।
मैं जथारथ बोलिया, उड़ाए दिया ए ख्वाब।।११८

इन ख्वाब के आज लों, है तुमारे घर।
फिटकार सबों नें दई, क्यों ना गए तुम मर।।११९

जब बात रोपी तुम इनकी, फिर है तुमारा कोई ठौर।
अब मारो उलटाए के, बात करो जाए और।।१२०

हम देत सवाल बनाए के, लेके जाओ तुम।
जाए के खंत करो, आवें मद्दत हम।।१२१

सवाल बनाए रात में, बिना जाने निसान।
परियान कर उठे, प्रात करें पहिचान।।१२२

प्रात समय उठके, आया बद्री दरबार।
बल दीवान को बात से, किया खबरदार।।१२३

भई भेंट महाराज सों, अबही बातॉं करते और।
तब पूछा महाराज ने, रात की बात गई किस ठौर।।१२४

ऐ प्रस्न भागवत के, हम तो सब जानत।
झूटी बातें बनाए के, करने लगे इत।।१२५

तब उस महाराज को, चढ़ी बड़ी रीस।
कही बुन्देला इने गुरू ना करें, कोई न नवावें सीस।।१२६

इनकी पटी सिर पर, अब बांधियों जिन कोए।
बुन्देलों की जात में, इनको उठो न सोए।।१२७

सुंदर बल्लभ बद्री, भले मिले कल माहिं।
चौदह विद्या निपुन हैं, पर एकौ जानत नाहिं।।१२८

फेर बलदीवान आगे, भई जो चरचा जोर।
सब पण्डितों मिलके, मेरा चित दिया मरोर।।१२९

जेर भए सब पण्डित, फते भई इसलाम।
काफर स्याह मोंह होए के, ले गए अपने ठाम।।१३०

एक बात इत और भई, सब कुंवर ठाकुरों में।
खरच राज की बकसीस देख के, धोखा भया मन में।।१३१

खरच इतसे पहुंचे नहीं, ए उठत है कहाँ से।
है इनके पास रसायन, ए सबों जानी मन में।।१३२

सिवाए एक महाराज के, सबके मन में बस गई।
बरस तीन बीत गए, तब लग खरच की खबर ना भई।।१३३

तब एक दिन महाराज ने, पूछी श्री राज से एह।
सबके मन में धोखो है, ए खरच होत है जेह।।१३४

तब फुरमाई श्री राज ने, आवत खरच साथ में सें।
मेरता को साथ है, सो भेजत है हमें।।१३५

तब महाराजा मन में, बहुत दलगीर भए।
हम ब्रह्मसृष्ट के साथ में, अजूं भए ना सही नए।।१३६

बहुत दलगिरी आई दिल में, माने न आपको साथ।
अजहूं काम दीन का, आया न मेरे हाथ।।१३७

विचार किया मन में, ए बात कहों जाए कित।
दलगीर होए के प्रात से, पौढ़े घरों जाए तित।।१३८

जब हो गए दो पहर, घर में रसोई भई तैयार।
रानी तो उठाए ना सके, कह भेजी बलदिवान सो बाहर।।१३९

आए बलदीवान चल के, जगाए श्री महाराज।
तुम काहे होत दलगीर, सो कहो हमें आज।।१४०

तब कही महाराज ने, नही कहवे की बात।
तब कही बलदीवान ने, ए कही चाहिए साख्यात।।१४१

तब महाराजे ए कही, हमारे मन में रहे एह।
है इन पास रसायन, आज तहकीक करी हम तेह।।१४२

ए आवत खरच साथ में से, ए सुन भयो दरद।
हम कैसे सेवक इनके, हम पर गजब की रही न हद।।१४३

तब बोले बलदिवान, ए बात है सहल।
एक जागा मारिए, ताकी चौथ दीजे सब मिल।।१४४

ए बात पक्की करके, लिखाए लई महाराज।
तब सब साथ में आए के, अरज करी आगे श्री राज।।१४५

आवे साथ परदेस को, और रहे जो इत।
तिन सब की सेवा की, मोहे है गरज करों नित।।१४६

और करी अरज हजूर में, करो इलाज बाहिर निकलने को।
सब ठाकुरों मिल विचार कियो, एक जागा मारने को।।१४७

हमको बड़ी उम्मीद है, आप होओ असवार।
चले आगे असवारी में, हम जलेब में खबरदार।।१४८

सम्बत सत्रह सौ तेतालीसे, असवारी करी जब।
हस्ती पर चढ़ाए के, आगे सेना चलाई तब।।१४६

राठ खड़ोत जलालपुर, नजीक कालपी पहुंचे।
इत मुल्ला काजी सैयद, सब जमा किए।।१५०

तिनसों कुरान हदीसों की, चरचा करी जब।
जेर हुए इसलाम में, सबों मेहेजर लिख दिया तब।।१५१

ए हम तहकीक किया, खाविन्द जमाने का।
हम अपनी आंखों देखिया, जो कुरान हदीसों लिखा।।१५२

सो पहुंचाया सरे तोरे को, कानों सुन्या सुलतान।
सुनके सिर नीचा किया, छूटा नहीं गुमान।।१५३

मुनकरी रसूल सों, लिखी बीच कुरान।
सो क्यों ईमान ल्यावहीं, जो मोहर लिखी दोऊ कान।।१५४

सातों निसान कयामत के, जाहिर किए जब।
सुन के सिर नीचा किया, मुनकर हुए तब।।१५५

दाभा हुई जाहिर, उगा सूर मगरब।
लड़ा दज्जाल अहम्मद सों, बिन बातिन न देखा तब।।१५६

हुए आजूज माजूज जाहिर, बेटे याफिस के।
खाने लगे सब को, मरगी पहुंची ए।।१५७

जब इमाम जाहिर भए, हजरत ईसा साथ।
मोमिन बन्ध छुड़ाए के, पकड़े नीके हाथ।।१५८

असराफीलें आए के, गाया इत कुरान।
नीके मोमिन सुनत है, इनों भई पहिचान।।१५९

हकीकत मारफत के, खोल दिए दरबार।
ए मेहर मोमिनों पर, सो आवे नहीं सुमार।।१६०

इहां से असवारी करके, सिंउड़े पहुंचे जब।
बसन्त सुरखी आए मिल्या, कदमों लगा तब।।१६१

चित्रकूट को ले चल्या, पर जुदा रख्या आप।
तो संसार की लहर का, कबूल हुआ ताप।।१६२

श्री राज चले चित्रकूट को, लिया महाराजे दिल में।
सेवा में भंग होत है, कोई इलाज करो इनसें।।१६३

तब सेवा के वास्ते, पहुंचाया सब साथ।
कुंवर ठकुराइने सबे, सोंपे श्री राज के हाथ।।१६४

एक बरस तहां रहे, इत खोले अल्ला कलाम।
श्री राज रोसनी जाहिर करी, खुल गए सब ठाम।।१६५

तब श्री राजें लिया दिल में, ए खबर करी महाराज।
चाहिए इन मेहर से, खुसाल होवें आज।।१६६

तब ओरछे के राजा ने, लिया खटोला ए।
लगी फिटकार तिनको, मौत हुआ तिन से।।१६७

फेर मिठू पीरजादे ने, बुरी करी नजर।
पांच हजार असवार ले दौड़ा, राह में भई फजर।।१६८

तिनको मारा चमारों ने, फिरा मोंह स्याह ले।
हुई लानत संसार में, काफर होने के।।१६९

और पुन जिन जिन करी, तिन तित ही पाई सजा।
ए काफर लिखे कुरान में, एही लिखी ताले कजा।।१७०

महामत कहें सुनो साथ जी, यह कीमत की बात।
जब आए तुम परना मिने, तब की ए विख्यात।।१७१

प्रकरण।।६०।। चौपाई।।३५२७।।

अब कहूं बीतक परना की, जब बैठे इत आए।
दज्जाल लगा पुकारने, सो तुमें कहूं बनाए।।१

जब आए रामनगर से, तब पुरदल खान।
कुफर दिल में लेय के, जाए कहो राजा के कान।।२

लिख भेजी पातीय को, तुम क्यों कहत कयामत।
उनकी मुदत दूर है, आज क्यों बताओ इत।।३

ताकी पाती को जवाब, लिखो श्री जी साहब।
तुम दूर कौन किताब से, तहकीक किया अब।।४

सो बताओ हमको, जो लिखी बीच फिरकान।
ओतो हुए जाहिर, सात कयामत के निसान।।५

सूरज ऊगा मगरब, बिन रोसनी का अंधेर।
तुम आंखों ना देखिया, अब नजर करो फेर।।६

दाभा हुई जाहिर, किया दज्जाल जोर।
ईमान लिया छीन के, पड़ा दीन में सोर।।७

तुम राह देखत हो, आजूज माजूज भए जाहिर।
देखा लोकों इसलाम के, खाई खलक बाहिर।।८

असराफीलें गाइया, कुरान के सुकन।
सो नीके सुनत हैं, खास गिरोह मोमिन।।९

हजरत ईसा उतरे, आए दावत करी इमाम।
सो कागद चारों खूंटों, सबको पहुंचाए तमाम।।१०

आज तुम सूते नींद में, तो ऐसा लिखा सुकन।
बिन नसीब तुम क्या करो, ए काम ईमान मोमिन।।११

अब तुमें जाहिर होएगी, हकीकत कयामत।
आई नजीक तुम पर, जो कही कुरानें साइत।।१२

तुमारे अहदी आए थे, बीच रामनगर।
सो तहकीक कर गए हैं, तुमें तहां भी न पड़ी खबर।।१३

अब तुम हलके बहुत हो, बिना वाउ उड़े ज्यों तूल।
सो हाल तुमारा होत है, कछू न रहेगा सूल।।१४

ए लिख भेजी पाती को, सुनावने जवाब।
फेर के उत्तर ना दिया, बिन अंकूर न पावे सवाब।।१५

जब मारी ललत पुर, तब हुआ असवार।
आवत भेंटा राह में, तब भागा हुआ खुवार।।१६

बाईस असवारों मारी, फौज तीन हजार।
भागा जाए भेड़ ज्यों, बिना तेज देखा खुवार।।१७

फौज लेके आइया, गौर सों करी मुलाकात।
लड़ाई सफजंग की, नाम निसान ना रही कछू आस।।१८

ज्यों फेरून दुआ मूसे की, रोंद नील में हुआ गरक।
त्यों औरंगजेब पर, फेरा फुरमान हक।।१९

त्यों ही मिट्ठू दौड़िया, मारा उन्हें चमार।
खुवार हुआ दुनियां मिने, छूट गया अख्तयार।।२०

भई मुहिम खटोला की, आए ओरछे के।
उतहीं पटका हुकमें, जड़ समेत उखड़े।।२१

फेर जेतपुर के राजा ने, मुहिम करी।
ताको खुवार ऐसा किया, पूरी लानत उतरी।।२२

फेर ओरछे के राजा का, आया दौवा खटोला पर।
खुवार हुआ भली भाँत सों, फिरया स्याह मोंह लेकर।।२३

फेर राजा के मुलक लिए की, पहुंची खबर नौरंगाबाद।
सुन साह ने रणमस्त खां को, फौज लेके भेजा विवाद।।२४

पीछे से पीरजादे में होए के, भई ईसारत रसूल की जब।
तां समें विचार करके, लिखा किया साह ने तब।।२५

सात मजल रनमस्त खां, गया था चल के ले हुकम।
लिखा परवाने में तुमको, उहां से फेर आइयो तुम।।२६

फेर रनमस्त खां ने, पातसाह के हुकम।
सात मजल आइया, लिखा के फेर आओ तुम।।२७

फेर पंडित ओरछे के, चढ़ आए लड़ने।
तब मारा मुलक ओरछे का, मुस्किल हुआ रखना अपने।।२८

दौआ और पंडित पर, भया कसाला जोर।
विघन पड़े उतहीं, किया दज्जालें सोर।।२९

फेर राणा परताप सिंह नें, बुरी करी नजर।
तो ख्वारी आपस में भई, है कयामत की फजर।।३०

जिनों जिनों जैसी करी, तिन सजा पाई तित।
जैसी जैसी जिनों करी, ताए मारा उसी बखत।।३१

मरनें के बखत में, दज्जाल पटकत हाथ।
खुवार किया संसार को, जादा जो उनके साथ।।३२

दज्जाल की छाती कही, दूध पीवे तिन सें।
सो खुवारी उन से, रहे परेसानी में।।३३

उजाड़ सब सहरों का, काहू होए न आराम।
सब परेसान होएंगे, अपने अपने काम।।३४

बलाए जो उतरी, सो दफे होए मोमिनों की बरकत।
सो टंडी हो जात है, पड़े उम्मत दज्जाल तित।।३५

पनाह बीच मोमिन रहे, हक सुभान नजर।
इनों को लेलत कदर की, होए गई फजर।।३६

ए बैठे अपने ठौर में, करते हैं जिकर।
फिरस्ते चौकी देत हैं, बलाए उड़ावें कर फिकर।।३७

हकें दई मोमिनों को, अपनी जो पहिचान।
नबूबत रसालत इनको, पूरा पाया ईमान।।३८

एही सुंनत जमात हैं, गिरोह रब्बानी जे।
इनको दाना हकें किया, अपना इलम दे।।३९

साहिदी खुदाए की, कही गिरोह देवन हार।
एही अरस अजीम से, ए सब खबरदार।।४०

जबराईल वकीली, करत सब ऊपर।
साफ दिल रखे इनको, सब पावत ए पटन्तर।।४१

सात निसान बड़े कहे, जिनसे होए कयामत।
सो इतसे पावे खलक, जो इत कादर बकसत।।४२

विरोध सारी विस्व का, भान किया एक दीन।
सबकी सबों समझाए के, एही देवे आकीन।।४३

रूहें फिरस्ते उतरे, सोई अरस वारस।
बानी अक्षरातीत की, इनों से सुने सरस।।४४

आठों भिस्त आखर की, पाई इनों की बरकत।
आखर खाविन्द करेगा, इन खातर उठे कयामत।।४५

इनों की सिफत सब्द में, आवत नहीं जुबाए।
त्रिगुन रोए पीछे फिरे, इन की खूबी सुन श्रवनाए।।४६

महामत कहें ए मोमिनों, याद करो सुकराना।
मेहर करी तुम ऊपर, तुम्हारी सिफत करे सुभाना।।४७

प्रकरण।।६१।। चौपाई।।३५७४।।

नौतनपुरी से लेकर पद्मावती पुरी तक बीतक सम्पूर्ण हुई।

मंगलाचरण

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।

श्री-श्री जी की आठ पहर की वृत्त जो श्री पद्मावती पुरी में भई सो सुरू।

अब्बल हक के दिल में, खेल दिखाऊं रूहन।
इस्क रबद खिलवत की, बातां करें सैयन।।१

चाह करें खेल देखने, मैं बरजो तीन बेर।
त्यों त्यों मांगे फेर फेर, रबद चढ़ी सिर मेर।।२

देख्या ब्रजरास को, तीसरे जो हिसाब।
आए मेरे आगे बातें करे, लेकर बड़ा सवाब।।३

तब लिया हकें दिल में, ए जो चौदह तबक।
तिन में जम्बूद्वीप में, भरत खण्ड बुजरक।।४

तिनमें विसेख देख के, ए जो खण्ड बुन्देल।
काएम सिफत तिनकी, जो तीसरा तकरार लेल।।५

तामें सिरे सिरदार की, ए जो परना टौर।
तिनमें सिफत छत्रसाल की, नहीं पटन्तर और।।६

मिलावा सैयन का, तामें हुकम सिरदार।
हकी सूरत धनीए की, करें ब्रह्मसृष्टि सों प्यार।।७

इन सरूप की इन जुबां, कही न जाए सिफत।
सब्दातीत के पार की, सों कहनी जुबां हद इत।।८

सागर सुख अनगिनती, पल पल लेत सैयन।
जो सेवा में सामिल, करते जो इन तन।।९

एक पल सेवन की, सुख आवे न इन जुबान।
लिखा अग्यारह सौ बरस का, ए लिया जिन ईमान।।१०

तिन सैयों की सिफत, क्यों सके कोई कर।
पर हुकम कहेवे धनी का, ए सिफत सब ऊपर।।११

तामें सेवा कर जो संग चले, ताकी सुमार न आवे सिफत।
एतो भई बका मिने, ए कहनी जुबां हद इत।।१२

पर आज्ञा कहावत है, इत मैं तें कछुए नाहिं।
सैयन मिलावे मिने, याद ल्यावें दिल माहिं।।१३

जो याद करें यकीन सों, सो बैठे बका बीच धाम।
सो दोऊ लोक में सिफत, होवे पूरन मनोरथ काम।।१४

साका विजियाभिनन्द का, बरस एक हजार नव्वे।
सम्बत सत्रह से पैंतीस में, पहुंची सरत जो ए।।१५

साके पांच परना मिनें, हुक्म स्यामा जी श्री देवचन्द्र जी सामिल।
दावत करी जाहिर, भई सकुण्डल सामिल।।१६

बेवरा तीन सूरत का, जुदे हवाले जुदे काम।
एक हुकम जोस एक आतम, पहुंचे एके बखत मुकाम।।१७

धनी हजूर पहुंचे तीनों, भई मजकूर तिन से।
सुने हरफ नब्बे हजार के, सब रोसनी इनमें।।१८

बसरी मलकी और हकी, ए हुकम तीन सूरत।
तिन दई हैयाती दुनी को, करी सैयन वास्ते सरत।।१९

आई एक हजारें, सूरत जो बसरी।
दूसरी दसमी सदी मिने, निजधाम से उतरी।।२०

तीसरी जो हकी कही, तिन आई वारसी दोए।
मता तीन सूरत का, किया हुकमें जाहिर सोए।।२१

हुकम देवचन्द्र जी स्यामा जी, ए तीनों के फैल हाल।
सारा मुदा इनों पर, ना कोई इन मिसाल।।२२

रोसनी तीन सूरत की, तीनों के जुदे जहूर।
बैठक बका बारीकियां, किए जाहिर तीनों नूर।।२३

हुकम जोस बसरी पर, आए निजधाम से दोए।
जिने देख्या सो जाहिर किया, इन बिना जाने न कोए।।२४

रूह फूंकी मलकी मिने, रूह अपना दिया खिताब।
सो कुंजी फुरमान की, सबों दिखाया हैयाती आब।।२५

हक हिकमत हकी मिने, जित आई अकल नूर।
तिन मता लिया सबन का, जाहिर किया बका जहूर।।२६

दुनी पैदा जुलमत से, हिरस हवा सैतान।
सो पहुंचे पेड़े लों, चढ़े न चौथे आसमान।।२७

तीन वजह की पैदाइस, लिखी अपने कलाम।
और लिखा सास्त्रों मिनें, पावे न खलक आम।।२८

कहों तीनों का बेवरा, लाहूत जबरूत मलकूत।
फैल तीनों करत हैं, बीच जिमी नासूत।।२६

सैंया वाहेदत में असल, तिनके फैल तिन माफक।
सो समझे अपनी जात को, निजधाम जिनका हक।।३०

और गिरोह जबरूती, आए लगी इन सोहोबत।
सो आई नूर अकल बीच, जो अक्षर की निसबत।।३१

और आम खलक जो तीसरी, मलकूती अकल।
ए आगे ना चल सके, नकल की नकल।।३२

हुकम के अमल में, ना कोई उतरे मोमिन।
हकीकत मारफत की, किन आगे करें रोसन।।३३

तब हरफ करमकाण्ड के, कहे तीस हजार।
होसी हकीकत मारफत जाहिर, बीच सैंया बारे हजार।।३४

चढ़ नासूत मलकूत, छोड़ सुंन ला मकान।
और देखा नूर मकान, छोड़ी रोसनी इन आसमान।।३५

इतथें आया इसक, बैठे तिन तखत।
पहुंचे अरस अजीम में, तहां देखी हक सूरत।।३६

देखा मिलावा धनी का, रुहें बारे हजार।
और देखा अरस अजीम को, चौथा नूर के पार।।३७

होज जोए बाग जानवर, देखी हक मोहलात।
पाई माफक साहिदी, जो जाहिर करी बात।।३८

कहे दो तकरार लेल के, उतरे रूहें फिरस्ते जित।
सो फेर आवेंगे आखरत, करी बातें साबित।।३९

इत आवन को आगम, बातां करी बनाए।
ए खेल देख सैयां पीछे फिरें, रहीतामें सक न कांए।।४०

सेवा सिफत मोमिन की, पहुंचत है सब हक।
इन समान बन्दगी, नहीं कोई बुजरक।।४१

और सुंनत जमात की, जो बातें हक सोहोबत।
तिनको दीदार जो करे, ताकी न आवे जुबां सिफत।।४२

तो इन जमात की क्यों कहों, सोभा सत इन मुख।
ए सोभा सब्दातीत की, कहयो न जाए ये सुख।।४३

इनकी सिफत सुक जी कहें, और सास्त्रों वेद व्यास।
त्रिगुन अपने चित में, रज की राखें आस।।४४

और नाम केते लेऊं, ब्रह्मांड के धनी ऊपर।
सब कोई सेवे सनेह सों, अपना इष्ट चित धर।।४५

अब तो इत कहवे को, रहयो न कोई ठौर।
रही बात बका अरस की, सो सिफत हैं जोर।।४६

अक्षर ठौर अखण्ड जो, जाके पल थें पैदा कई इण्ड।
सो उपज फना हो जात हैं, त्रिगुन समेत ब्रह्मांड।।४७

ईस्वर महाविष्णु प्रकृति, पल फिरें होत है नास।
सो अक्षर इन सैयन की, करें दीदार की आस।।४८

ए तो कही वेद की, और लिखी सिफत कुरान।
सो सब सैंया पावहीं, कर देवें पहिचान।।४९

बीच किताबों में कही, सैयों की सिफत।
सबमें रोसनी होएगी, फरदा रोज कयामत।।५०

हुकम नूर खुदाए का, जो है नूर जलाल।
दाएम आवे दीदार को, फिरे मुजरा कर नूरजमाल।।५१

तहां पैदा फना होत है, ए जो चौदह तबक।
जहां जबराईल रहत है, पहुंच ना सक्या हक।।५२

तिन हक का मेहेबूब, महम्मद अलेहु सलाम।
सो आया गिरोह वास्ते, रसूल अपना नाम।।५३

रब्बानी गिरोह रब्ब से, किए दाना आप।
सिफत सुभान इनकी करे, रहे हजूर हमेसा मिलाप।।५४

एही औलिया लिल्ला कहे, खुदा के दोस्त ए।
सो रहे हमेसा हजूर, वास्ते बंदगी के।।५५

इनकी जो बीतक भई, ताकी नेक कहों जहूर।
ए सागर सुख अनगिनती, सो कहयो न जावे नूर।।५६

ए कहावे हक का हुकम, करे वास्ते याद मोमिन।
जिनकी पहुंची बंदगी, सौंप चले अपना तन मन।।५७

विकार सारी विस्व का, मिटसी इन खुसबोए।
सुनत सब्द संसार में, बिन मेहनत एक सृष्ट होए।।५८

ए जो मासूक जबरूत का, कहियत है लाहूत।
सो इत हुआ जाहिर, ऊपर मसनन्द मलकूत।।५९

हुई जाहिर सब में, काढ्या कुली दज्जाल।
सरतें सब आए मिली, मोमिन भए खुसाल।।६०

तब सोर पड़ा आलम में, दौड़ी सब खलक।
खोले द्वार मारफत के, पाया सबों ने हक।।६१

एक पहिले आए पहुंचे, किया रसूल दीदार।
तिनको द्वार जो भिस्त का, खोला परवरदिगार।।६२

ता पीछे सफ दूसरी, आए मिले असहाब।
ताको दिया हक सुभान ने, हैयाती का जो आब।।६३

तीसरी सफ जो आई, तिन पूछा असहाब देखन हार।
तिनको खोला खालिक नें, भिस्त का दरबार।।६४

सोर पड़ा संसार में, तब भया ए ख्याल।
फिरस्ते सब पीछे फिरे, नींद उड़ी नूरजलाल।।६५

तब याद किया सुपन को, उठी आठों भिस्त।
नूर की नजरों चढ़े, करके याद जो कस्त।।६६

सैयां अपने महल में, पहुंचे नूर जमाल।
खेल देख पीछे फिरे, होए इत खुसाल।।६७

महामत कहे ऐ मोमिनों, सुनियो मंगलाचरन।
अपनी बीतक देखियो, सुनियों दोए श्रवन।।६८

प्रकरण।।६२।। चौपाई।।३६४२।।

अष्ट पोहोर की सेवा

पहला पहर

सुन्दर सेज सरूप की, अति प्यारी भरी नूर।
तिनकी सिफत इन जुबां, क्यों कर कहों जहूर।।१

अत प्यारा लाल पलंग, पचरंगी पाटी मिहीं भर।
प्रेम प्रीत सों सेवहीं, सिरदार साथ सुन्दर।।२

सेज तलाई कोमल, मिहीं चादर धरी नरम।
सिराने गाल मसुरीए, ए जाने सैंया दिल मरम।।३

चारों पाए सेज बन्ध, बांधे सनंध कर अत।
लटके फुमक रेसमी, पचरंग तरंग झलकत।।४

चादर रजाई ओढ़ने, रूत समें सेवा होए।
लाल डंडे चार नूर के, क्यों कहों छत्री सोए।।५

परदे झालर झलकत, लवाजमें नाहीं सुमार।
सेवे प्रेमदास जोस में, द्वारका दास खबरदार।।६

पलंग उठाए बिछावत, नाराएन हर नन्दन।
कोई दिन नाथे करी, करते थे रात दिन।।७

फेर के चित दे करी, मथुरा गंगादास।
परमानन्द भी संग रहे, सेवे धाम धनी लिए आस।।८

स्याम जी सामिल रहे, सेज सेवा के संग।
ए चारों चित सों करें, जान धाम धनी अरधंग।।९

मानिक सेवे सनेह सों, सब सेवा में खबरदार।
हजूर हाजिर रात दिन, सब सेवा में सिरदार।।१०

छबीला जो सेवा करे, जो पहिले करी जमुना।
ए वारसी इनको दई, जान बेटा अपना।।११

जल अरूगावें छबीलदास, पीछली रात रहे घड़ी दोए।
उठे पीउ पलंग से, आरोगत हैं सोए।।१२

पूरबाई को राज नें, रीझ के सेवा दई एह।
पीछली रात को अरूगावने, ल्यावे लोटा जल के।।१३

पाव दाबन प्रात को, आवे अगरदास गुलजी।
कबहूं कबहूं माव जी, दावने की सेवा करी।।१४

और सेवा में आवत, रामबाई दाबत।
कोई दिन खेमदास, पीछे रात जादी आवत।।१५

उठत पीउ पलंग से, बखत अरूण उदे।
सब हजूरी हाजिर रहें, सो सेवा करें ऐ।।१६

अंगीठी इन समें, ल्यावें बिहारी दास।
तपावें श्री राज को इन समें, ए सेवा है खास।।१७

रूमाल रतन बाई का, भिजाइ ताते जल।
श्री राज नेत्र पोंछत, ए सेवें दिल निरमल।।१८

धनजी और तारा बाई, कन्नड और गंगाराम।
धाम धनी तीजी भोम से, प्रात उठे इन ठाम।।१९

ए नित गावत हैं, और साथी गावे कोई कोई।
रिझावत हैं श्री राज को, बानी गावत सोई।।२०

पहिले प्रेम दास करी, भी रामचन्द नन्द राम।
आखर को वल्लभ करी, बस्तर पहिनाए के काम।।२१

बिहारी दास सेवा करी, ले आवें अंगीठी भर।
रात प्रात तपावत, बस्तर ताजे अंग पर।।२२

पहिले चरना पेहेर के, फेर गोटा कन ढपी।
चित दे चोंपसो सेवहीं, पहिनत हैं साहिब जी।।२३

पहिले मोजे पहिनावत, प्रेमदास चित ल्याए।
पीछे वल्लभ दास ने, सेवा करी बनाए।।२४

कबहूं पहिनें कुरती, जरी बूटे के संग।
पटुका जरी जड़ाव जो, दो थुरमे सुपेत रंग।।२५

प्रेमदास बस्तर में, पहिनावत हैं सिनगार।
नन्दराम सामिल रहे, संग लाल कस बांधनहार।।२६

लालबाई कस बांधत, मकरन्द दास रहे भेले।
लाल दास के बदले, सेवा में रहे ए।।२७

जब पहुंचे इत महाराज, पहिनावत सिनगार।
सेवा करे सनेह सों, जान के धनी निरधार।।२८

बल्लभ जीवी प्रेमबाई, बांधे चन्द्रवा सेतखान।
ए सेवा नित करें, एही लई इनों मान।।२९

प्रात समें पधारत, हरबंस के घर।
पावड़े बिछावत प्रेम सों, लाल बाई सेवा पर।।३०

सेतखानों घन स्याम को, था हरबंस के पास।
फेर अपने ढिग किया, ए सेवा करी इनों खास।।३१

चरन दासी पनहीं, पहिले रखी दास नारायन।
कोई दिन मोहन रखी, फेर लई खिमाई जान।।३२

फेर श्री राजें रीझ के, दई वल्लभ दास।
कोईक दिन खिमाई सामिल, फेर आई वल्लभ पास।।३३

पांवड़े बिछावत बकाई, और सेवा करे किसनी।
चलते सैंया बिछावहीं, ए सेवा की निसानी।।३४

लोटा भर के ल्यावहीं, ए जो भाई सिवराम।
दोनों बखत राखत, ए सेवा के काम।।३५

सेवा डब्बा रूमाल की, लाल बाई धरे।
बदले लाल बाई के, दयाली जो करे।।३६

इत पलास के वृक्ष तले, हरवंस देवकी रहें।
साथी जो संग आवत, ताकी सेवा जुगतें करें।।३७

करत ताते जल को, बड़े माट भर धरे।
जल झारी दातोन, साथ आगे धरे।।३८

कोई दिन सेवा करी, गुल मुहम्मद दौलत।
नित राज पधारत, साथ सेवा करें इत।।३६

सूरज मुखी लिए खड़ा, हाथ पकड़े बदले।
सूरज सामी करत हैं, बदले यों सेवे।।४०

अमोला प्रभावती, प्रात लिए मोरछल ये।
करत ऊपर राज के, जोलों केसव न पहुंचे।।४१

दोनों बाजू मोरछल, केसव संकर लिए हाथ।
नन्दराम सामिल रहे, चलत राज के साथ।।४२

छत्र सिर पर फेरत, बल्लभ चले पीछे।
ए सेवे सनेह सों, खड़ा रहे पकड़ के।।४३

हरबंस के घर से फिरे, चले पांवड़े पर।
हंसे हंसावे साथ को, पहुंचावे मानिक गादी पर।।४४

एक बिछावें धन बाई, एक बिछावें घनस्याम।
हरबंस के घर से फिरे, तब इने सेवा का ए काम।।४५

हिम्मत जब आइया, बिछावत पांवड़े।
मांग लिया लालबाई से, सेवा करे नित ए।।४६

हाथ पकड़ बैठावत, धन बाई रामकुंवर।
जब चरन पखालत, बैठें कुरसी या पलंग पर।।४७

चरण प्रछाल के तखत से, उतर के उतारे वस्तर।
बैठे चन्दन चौकी पर, मरदन होत फुलेल अतर।।४८

कबहूं बैठे पलंग पर, लवाजमें दन्त धावन।
ले रूमाल ठाढ़े दोऊ बाजू, नारायन केसव सैयन।।४६

छबीला अत छबसों, ल्याया कंचन मढ्यो दातोन।
जल ताता सीरा समें, करे सेवा दे मन।।५०

चिलमची हाथ में, नन्दराम पकड़ बैठत।
श्री राज हाथ पखालत, संकर बांटत चरणामृत।।५१

श्री राज अस्नान करके, तिलक चन्दन का समीर मिलाए।
भाल में आप देए के, कर चितवन साथ को दिखाए।।५२

तहां से आए तखत पर, धरे दोऊ कदम।
साथ खड़ा सेवन को, जान अपनी आतम।।५३

फुलमा बनावत, भर ल्यावत डब्बी।
नूर महम्मद सेवत है, गुल महम्मद को दी।।५४

रूपा बाई को रीझ के, सेवा दई श्री राज।
नित हरड़े अरूगावहीं, रहे इन सेवा के काज।।५५

पांखड़ी छबील दास सामिल, सेवत है दिन रात।
अमल ल्याई अरूगावने, मीटी बातें करें विख्यात।।५६

आए मकुन्ददास हाजिर, चीरा बंधावें चौपदे चित।
कानढपी तिन ऊपर, गोदावरी बांधत।।५७

तुर्रा कलंगी परन की, राखत मकुन्ददास।
चीरा बंधावने बखत हाजिर करें, लटकत तुर्रा खास।।५८

सिर पाग बांधें चतुराई सों, हक पेंच हाथ में ले।
भाव दिल में लेए के, सुख क्यों कहुं बिध ए।।५६

मकुन्ददास के सामिल, आए मकुन्द दास पहुंचे।
छेड़ा पकड़ ठाढ़ा रहे, आए सेवा करे ये।।६०

अगरदास ठाढ़ा रहें, ले हाथ में दरपन।
सेवा करे समार की, ए सेवे चित दे मन।।६१

तामें सामिल सीताराम, और गुल महम्मद।
बंसी भी सेवा मिने, मन में धरे आनन्द।।६२

नित ल्यावे दरपन को, ए जो अगरदास।
सिर पेंच बखत हाजिर करें, ए सेवे दिल खास।।६३

केते दिन सेवा करी, ऊधो दास तिलक।
पीछे लई छबीलदास ने, करें प्रेम सों हक।।६४

चन्द्रिका लटकें सिर पर, हीरा जोत अपार।
चारों तरफों किरना उठें, तले मोती लटकत हार।।६५

बैठत चीरा बांध के, ऊका ल्याया कलंगी।
हेतें हाथों बनावहीं, ये सेवा इनकी।।६६

फूलहार बनावत, रामदास धरमा।
ढोला पहुंचावत हैं, बोले ललिता राज खंमा।।६७

झोली मया राम की, सब फकीरी साज।
गोदड़ी पेबंद की, ओढ़ावत हैं राज।।६८

सुमरनी कपूर की, ल्याए के देवें हाथ।
चिप्पी सेली मुतका, माला ल्यावें गोदरी साथ।।६९

सुई तागा कोकड़ी, और केतेक सुए बड़े।
अजमा सोंठ पीपर, मसाला गंधियान केते।।७०

काम पड़े मंगावत, बुलाओ मयाराम।
झोली में से ल्याए के, हाजिर करें तमाम।।७१

इत महाराजा आवत, पहनावत हैं सिनगार।
पहिनावत बीटी बदले, दई अपने हाथ उतार।।७२

भूखन श्री बाई जी ल्यावत, उमंग में दे चित्त।
ए जो गोदावरी रूकमनी, संग आवत इत।।७३

रकेबी रूपे की, भर ल्यावत भूखन।
रूमाल ढाँप के ल्यावत, महाराजा पहिनावत मोमिन।।७४

माला दो मोतिन की, जड़ाव मुंदरी कंचन।
सोने की दो सांकली, दुगदुगी मानिक रोसन।।७५

और सांकली दोहोरी, चंपकली नवसर।
तापर कंठी बिराजत, तीन सरी ऊपर।।७६

और कंठी मोतिन की, तले मानिक मोती लटकत।
श्री राज कण्ठ विराजत, रोसन ज्यों झलकत।।७७

पहनाए भूखन पीछे फिरें, श्री बाई जी अपने मंदिर।
राज भोग अरूगावत, सेवा रसोई पर।।७८

आई जी अरूगावने, ल्याई बाल भोग।
रतन बाई मूंग ल्याई, आए पहुंची संजोग।।७९

ले ले दौड़े और कोई, सो केती कहों बात।
आरोगत हैं हेत सों, कोई प्रेम बरते कर बिख्यात।।८०

इन समें छबीलदास, जल देवें कटोरा भर।
बात पूछे कोई बीच में, ताको देत उत्तर।।८१

आसबाई अर्ज करे, पधारो घर मानिक।
श्री राज रीझ के बोलत, आई बाई बुजरक।।८२

पनही जोड़े जड़ाव की, ल्याया बल्लभदास।
छत्र सिर पर फेरत, ए मोमिन हैं खास।।८३

पांव तले पांवड़ा, लालबाई बिछावत।
और बिछावत किसनी, लेकर दिल में हित।।८४

उठत पलंग पर से, धनबाई लेवें हाथ।
दूजी तरफ लालदास, सेवा हाथ पकड़ने खास।।८५

हाथ आसा गंगादास के, दूजी तरफ दास लाल।
मकरन्द रहे सामिल, हाथ पकड़ने की चाल।।८६

जब महाराजा पहुंचहीं, उठावत पकड़ हाथ।
लालदास बदले लालबाई, कोई समें पकड़ चलें हाथ।।८७

हंसावत हैं राज को, जरा सेवा में।
आड़ी आए टाढ़ी रहे, राज रीझे तिन से।।८८

लटके मटके चलत, संग वानी गावनहार।
संग संकर दास के, और साथ सिरदार।।८९

मानिक मंदिर अपने, करें बिछौने जे।
चारों तरफों चन्द्रवा, और रखे गादी तकिए ए।।९०

सुआ को सेवा दई, अन्दर उतारन।
नित्याने हजूर रहे, करत अपने तन।।९१

जोड़े मंदिर गंगादास का, तहां बिछौने सब साज।
तहां राज बिराजत, सब पूरे मनोरथ काज।।९२

मोदी बड़ा बूलचन्द, चले राज संग ए।
ठौर पहुंचे बोलहीं, धाम धनी की जै।।९३

गौर बाई रहत है, हाथ उठावने सेवा में।
हाथ पकड़ बैठावत, करे सेवा खुसाली में।।९४

पहिले मोरछल में, रहता था नंद राम।
दूजी तरफ केसवदास, करत एही काम।।९५

यों करते मानिक के, घर से फिरे जब।
मोरछल हाथ में लेए के, सेवा करे तब।।९६

और दूजा मोरछल, संकर लिए हाथ।
और चौंरी जड़ाव की, लिए बल्लभदास के साथ।।९७

सामिल बल्लभ दास के, खुसाल बखतावर।
हजूर हमेसा रहे, सेवा करे चित धर।।९८

बल्लभ दास के सामिल, रहे महम्मद खान।
मेहनत सेवा मिने, करे दिल में ले ईमान।।९९

लटके मटके चलत, फेर बैठे पलंग आए।
सामे मुरलीधर आसन किया, श्रवना देत बनाए।।१००

ऊपर पहर दिन के, आए मानिक के घर से।
पधारत पलंग पर, हुआ चरचा समें।।१०१

महामत कहे सुनों साथ जी, ए पोहोर एक की बिरत।
जो होत है ता पर, सोए बताऊं जुगत।।१०२

प्रकरण।।६३।। चौपाई।।३७४४।।

दूसरा पहर

अब कहों दूसरे पहर की, सेवा साथ की जे।
जिन भांत जो होत है, हक मेहर उतरी ए।।१

दोऊ बाजू पलंग के, बैठत लाल केसवदास।
फुरमान हदीसां पढ़न की, राज रिझावन आस।।२

धनी धाम के देत हैं, निजधाम के निसान।
लेवें मोमिन मिल के, अरस सुख सुभान।।३

राज हेत कर कहत हैं, काका बुलाओ सिताब।
दोऊ बाजू रेहेलां धरें, तापर धरें किताब।।४

किताब खाना रखत हैं, संदूका सब साज।
सेवा करे सनेह सों, श्री राज रिझावन काज।।५

हजूर हमेसा रहत हैं, थैलियें पैसे।
हुकम होये ताए देवहीं, काका सेवा करें ए।।६

बाघजी ले आवत, आगे धरें जंगोटा।
श्री राज रीझ के लेवत, वास्ते बैठक ओटा।।७

पंजा वनमाली दास का, देवे श्री राज के हाथ।
सुंदर सुभग सोभित, खजोले सुख पात।।८

दुंदराए तपसीर ले, सुनावत अल्ला कलाम।
हजूर हमेसा बैठत, इनका एही काम।।६

खुसखत किताब लिखके, पहुंचावत पैगाम।
वास्ते फरज उतारने, पहुंचाया खलक तमाम।।१०

कोई दिन गोविन्द राए, और रहत टेकचन्द।
गाजी बनी असराईल की, बीतक बांचे श्री देवचन्द।।११

और बद्री दास बैठत, वाका लिखा बरस एक।
सेवा है इनकी, और काम किए अनेक।।१२

पोहोकर बद्री सामिल, सेवा करत जो ए।
देवीदास बानी लिखें, पढ़ राज रिझावें जे।।१३

और बानी साथ ले खड़े, ए जो लिखन हार।
तथा मथुरा और तिमर, परसराम खबरदार।।१४

पदमियां और बीरिया, और सूरत सिंह।
मकनिया लिखत हैं, जुगते कलाम सनंध।।१५

हीरामन हेत सों, लिखत बानी सार।
और अपनी अपनी ले खड़े, ए हजूर बैठन हार।।१६

मोहना अत मोह सों, लिखे पढ़े भली भांत।
भवन अडग बैठत, गिरधर सुने एही बात।।१७

हरिदास बैठत, बानी लिखने काज।
पुस्तक लिख घर में धरें, कोई ताले वाले के काज।।१८

भागवत गीता के, रहस्य काढ़ दिखावें राज।
हजूर हमेसा रहत हैं, मिसर गोविन्द जी इन काज।।१६

श्री महाराजा आवत, बैठत चरचा में।
श्रवना देत सनेह सों, नफा पावे खलक इन सें।।२०

श्री मुख से चरचा करें, अत मीठी रसाएन बैन।
दे साख वेद कतेब की, अत देत सुख चैन।।२१

सनमुख श्रवना देत हैं, मुरली धर बनाए।
ना आसन नेत्र डगावहीं, रहें दृस्टें दृस्ट जुड़ाए।।२२

दिल दरियाव खुलत है, कई लहरां उठत तरंग।
श्रवना देत जो साथ जी, कई उपजत अंग उमंग।।२३

कई लहरें सुख धाम के, बरनन होत रसाल।
श्री महाराजा रीझत, होत दिल खुसाल।।२४

कई साखें सास्त्रन की, और भागवत बचन।
प्रसन चालीसों खोलते, सैयां होत मगन।।२५

और साखें कई बारीकी, खोज के कीरंतन।
ब्रह्मांड सुंन पार के, पहुंचे अक्षर वतन।।२६

ए साहिदियां देत हैं, कई पुरावत साख।
और जो साधों की, भाख भाख कै लाख।।२७

वेद और कतेब को, दोऊ करत हैं एक।
आज लों कबहूं न हुई, कई उपजे खपे ब्रह्मांड अनेक।।२८

चरचा चित दे होत है, श्रवना देत सब साथ।
हेत कर कहत हैं, पकड़ के सैयां हाथ।।२९

ब्रज नैन और चंचल, रहत चरचा में।
मोंगे होके सुनत हैं, और न होए इनसें।।३०

मीठी रसना रस भरी, अत सुन्दर हैं बोल।
चैन होत है चित को, कोई नाहीं ए सुख तोल।।३१

कहा कहों इन जुबान की, जो हेत कर फुरमाए।
अहनिस जुगल सरूप को, बरनन कर दिखाए।।३२

धाम धनी निजधाम को, और न दाता कोए।
ये लेने वाले साथ हैं, और न समझे सोए।।३३

सुख बतावत धाम को, दुःख बतावत खेल।
जगावत हैं जुगत से, तीसरे तकरार लेल।।३४

तुम नाहीं इन खेल के, याद करो निज धाम।
दो बेर दो तकरार में, पूरे हुए न मनोरथ काम।।३५

तिस वास्ते ए तीसरा, दिखाया तुमको ये।
मेरी तीनों सूरत, खेल में आई जे।।३६

पहिले ल्याया कलाम को, इसारतें रमूजें हक।
रूह अल्ला किल्ली ल्याइया, इमाम खोल दिखाया बुजरक।।३७

पांचों रोज रब्ब के, दिखावत कर प्यार।
अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो हुसियार।।३८

दिन कयामत के कहे थे, सो आई सरत सुभान।
ए बात मोमिन जानहीं, जाए देवे हक ईमान।।३९

सात निसान बड़े कहे, होसी रोसन वखत कयामत।
कह्या अग्यारह सौ सन के, सो आए पहुंची सरत।।४०

चारों वसीयतनामें का, सोर पड़ा संसार।
आप दावत जाहिर करी, हूजो खलक खबरदार।।४१

आजूज माजूज जाहिर भए, ऊग्या सूरज मगरब।
दाभा हुई जाहिर, देखेगी दुनियां अब।।४२

भई लड़ाई दज्जाल सों, करी मोमिनों और इमाम।
सो अब होसी जाहिर, देखसी खलक तमाम।।४३

ईसा और इमाम, लड़े दज्जाल सों जोर।
मरते दज्जाल पुकारिया, पड़ा खलक में सोर।।४४

असराफील आए के, गावे अल्ला कलाम।
सूर फूंका संसार में, होए चालीस बरसों तमाम।।४५

ए नसीहत गिरोह पर, होत है रात दिन।
ए विचार समझहीं, खास गिरोह सैयन।।४६

अरस इलाही खजाना, करते है सरफ।
जिन ताले लिखा सो पावहीं, और ना लेवे एक हरफ।।४७

इन चरचा में बोलन की, काहू ना रहे मजाल।
भानने को ठाड़ा रहे, सोई करत दज्जाल।।४८

महामत कहें ए साथ जी, सुनियो चित दे तुम।
अब आरोगन के वखत का, हुआ है हुकम।।४६

प्रकरण।।६४।। चौपाई।।३७६३।।

अब कहूं आरोगन की, उठत समें झीलन।
पीछे आरोगन की, कहों सेवा जो सैंयन।।१

दो घड़ी दोए पहर में, बाकी रही जब।
बाई हनमन्त अरज करें, थाल ल्यावन की तब।।२

हुकम किया हक ने, जाए के ल्याओ थाल।
आए बाई जी सों कहया, होए के खुसाल।।३

अरज की सेवा मिने, पहिले कमलावती।
तिस पीछे लाड़बाई, पीछे हनुमन्त करती।।४

हुकम हुआ श्री राज का, ल्याओ धोती पोती तेल।
सेवा के सामिल मिलो, तब आऊं तुमारी गैल।।५

तबलों मोकों चरचा से, काहे करत हो भंग।
तब साथी सेवा के कहें, श्री बाई जी अरज करें अर्धंग।।६

जेनतीदास आए के, बातें करी बीच कान।
अरज खास गिरोह की, देत कर पहिचान।।७

उठत राज झीलन को, बैठत चौकी पर।
सखियां तेल लगावत, चारों तरफों फिर।।८

तेल की सेवा मिने, गोदावरी गंगाराम।
कटोरी भर के ल्यावहीं, इनका इन सेवा में विसराम।।९

अस्नान के समय में, होत तेल मरदन।
अगरदास गुल जी करे, साथी जो सेवन।।१०

इन सेवा में सामिल, बंसी सीताराम।
और सेवा करें सब, सबको देवें आराम।।११

तेल प्रसादी बांटने, करत सेवा गंगाराम।
साथ की सेवा मिने, करें मनुहार तमाम।।१२

धोती पोती पीताम्बर, लालदास इत ल्याए।
मानक ताते जल को, ल्याई कर बनाए।।१३

जल समोवने ल्याइया, गंगाराम भगवान।
झीलण की सेवा मिने, दिल में नहीं गुमान।।१४

झीलण रंग सुहामणा, गावें कन्नड़ गंगाराम।
बाई तारा सामी झीलत, गावें केतेक साथ तमाम।।१५

चौकी ल्याई अस्नान को, ए जो बाई मान।
तिन आगे पटली धरी, रतन बाई परवान।।१६

पावड़ियां चंदन की, ल्याई बाई राम।
तले पांवड़ा चादर पटली पर, ए रतन बाई का काम।।१७

चन्द्रवा ऊपर तानत, ए जो बाई रतन।
चौकी ऊपर चादर, ल्याई मानिक बाई बिछावन।।१८

मानक नहवावें सनेह सों, जल के लोटे भर।
लालदास सामिल रहें, जल डारे उमंग कर।।१९

छबीलदास वृन्दावन, अंग पोंछत समें झीलन।
लाल बाई देत हैं, करें सेवा होए मगन।।२०

इन समें आए पहुंचे, श्री महाराजा जब।
अंग पोंछन हाथ पकड़न की, सेवा करत हैं तब।।२१

रूमाल ल्याई लालबाई, श्री बाई जी पोंछत अंग ।
प्रेमदास सामिल रहे, कई सखियां सेवे संग।।२२

घेर के ठाढ़ी रहें, फिरत हैं गिर्दवाए।
जल लोटा ललिता पर, सब कपड़े दिए भिगाए।।२३

हांसी होवे इन समें, सब सैंया करें कलोल।
श्री राज रसना सों, मीठे कहत हैं बोल।।२४

सोभादास झीलन में, लोट पोट होवें जल।
निरगुन भेख रहत हैं, साफ दिल निरमल।।२५

औलिया लिल्ला जो कहे, नफस के दुसमन।
सो सिफत है इनमें, जो कही मोमिन।।२६

केसवदास बानी ले, बांचत समें इन।
लालदास कुरान की, आएत करें रोसन।।२७

पीताम्बर पहिनावत, लाल प्रेमदास।
महाराजा दो थुरमें, ओढ़ावत हैं खास।।२८

पीउ पावड़े चलत, रतन बाई के।
पनही जोड़े जड़ाव की, धरी बल्लभदास आगे।।२६

एक पांवड़ा रेसमी, दीपा बिछावत।
राज चलत ता ऊपर, रसोई के बखत।।३०

पांवड़े बकाई के, चलत लटकनी चाल।
संग सैयां घेर के, बानी गावें रसाल।।३१

दोना पातर बनावत, ए जो खेमदास।
सीताराम के संग रहे, सेवे कर विस्वास।।३२

थाल ऊपर चन्द्रवा, चार जनी पकड़े।
ए सेवा धनबाई की, आवे रसोई के समे।।३३

थाल बड़ी रूपे की, आसबाई बनाई कर हेत।
धोए रूमाल सों पोंछ के, बाई जी अपने हाथों लेत।।३४

कटोरे कंचन चांदीए के, दस धरे फिरते।
धोए पोंछे रूमाल सों, वास्ते तरकारी के।।३५

और राज भोग थाल में, धरत हेत कर प्यार।
और कटोरी सैयन की, कहे हूजो खबरदार।।३६

श्री बाई जी आवत अरूगावने, मध्यान को ले थाल।
तुलसी राधा रूकमनी, सैयां घेर चलें खुसाल।।३७

श्री बाई जी के आगे पांवड़ा, बिछावत करना।
गादी बिहारी दास धरें, करे सेवा जान अपना।।३८

बिहारी दास बिछाईया, आगे तखत के।
गादी चाकले रेसमी, और दोऊ बाजू तकिए।।३९

तिन पर आन बिराजत, दोऊ बाजू बैठावनहार।
एक बाजू लालबाई, दूजी धन बाई खबरदार।।४०

इत खंमा ललिता बोलत, इनकी सेवा ए।
और सनमुख गावन को, मुकुन्द दास बैठे।।४१

कन्नड़ इनके साथ हैं, परमानन्द प्रवीन।
बिंदा भी सामिल रहे, गावे गंगाराम आकीन।।४२

मान बाई अत मान सों, चौकी आगे धरत।
धरया झालर लग्या रूमाल, ऊपर बिछावत।।४३

थाल धरी ता ऊपर, श्री बाई जी बैठत पास।
आई जी सनमुख बैठत, थाल ल्यावें कर बिस्वास।।४४

लई मानक चिलमची, श्री बाई जी हाथ पखालत।
रूमाल सों लेइके, लाल बाई लोबत।।४५

सैयन मिलावें गिरोह सें, आवत आरोगने थाल।
संकर सेवा में हाजिर, राज आरोगत दिल खुसाल।।४६

मिलावे सैयन के, जेनती दास सिरदार।
सेवा करें सब साथ की, उपली टहल को खबरदार।।४७

सूरजमन रसोई में, रहता था दिन रात।
साथ की सेवा करे, फेर मिला अपनी जात।।४८

रूमाल कसीदल सिर पर, मानक बांधे कर हेत।
श्री राज बातां करें गुझ सों, मीठी रसना कर देत।।४९

रूमाल कसीदे का, आरोगते उठावे।
लालबाई सेवा करें, ओढ़त इन समे।।५०

मथुरी अत मोह से, रूमाल देवें भिगोए गुलाब।
बिंदी करें तिलक बीच, श्री राज देत हैयाती आब।।५१

मथुरी हिमोती थाल ल्यावत, बारे अपने अपने।
सेवा में दोऊ सामिल, कछू चूक ना जान पने।।५२

हमेसा ढिग बैठत, श्री बाई जी सेवा में।
रूच के श्री राज मांगत, कहवत श्री बाई जी इन समें।।५३

हाथ करके हेत सों, श्री बाई जी परसन हार।
साक तरकारी अथाने, आरोगत बात विहार।।५४

लाल केसव बैठत, दोनों बाजू के।
चौपाई लिखे चितसों, आरोगत फुरमावें जे।।५५

गोकुल हाजर इन समें, बातां करें बनाए।
इलम हदीसां साहिदी, कहत हैं चित ल्याए।।५६

आरोगते प्रथम देत है, बाइयों को प्रसाद।
राजाराम हेत सों, पावे इनको स्वाद।।५७

रतनबाई मूंग ले आई, ल्याई पूरबाई प्रवीन।
और साथ सब ल्यावत, सब सेवा में आधीन।।५८

सुआ और सीताबाई, और प्रेमबाई।
रूमाल हाथ डुलावत, आरोगने बखत आई।।५९

छत्र लिए ठाढ़ा रहें, ए वल्लभ दास करी।
रूमाल ठाढ़ो डुलावत, ए सेवा करी बिहारी।।६०

धरम पालें बाई धरमा, रोटी अरूगावने ल्यावत।
रसोई में श्री राज आरोगत, ए ल्यावत कोमल चित।।६१

दाऐं बाऐं बैठत, खरगो हनमन्त भंडारन।
श्री बाई जी वस्तां मंगावत, दौड़ ल्यावे दिल दे मन।।६२

सखियां गिरद घेर के, केतिक रहें खड़ी।
केतिक सनमुख बैठत, इत ठौर ना कछू रही।।६३

जल अध बीच में, देवे छबील दास।
पीक दानी तले धरत, वल्लभ मोमिन खास।।६४

हजूर में हमेसा, दोए रहें पीकदान।
ठाढ़े रहें हजूर में, सन्त संकर बड़ा ईमान।।६५

और संकर सामिल, राघव जी रहत।
तंबोल प्रसादी लेए के, साथ को पहुंचावत।।६६

संग रहे संकर के, सेवत मुरली धर।
पीकदान और मोरछल, करत राज ऊपर।।६७

केसवदास लालदास, दोऊ बाजू बैठत।
चौपाई लिखें चित सों, श्री राज को रिझावत।।६८

और साथ केता कहों, दांए बांए बैठन हार।
सखीदास ठाढ़ा रहे, सेवा में खबरदार।।६९

मयाराम आवत, ले चिप्पी में चने।
समारत सनेह सों, श्री राज आरोगे चुटकी से।।७०

दूध दधि सिखरन, श्री बाई जी अरूगावत कर हेत।
आरोग रहे पीछे, बांटने को कवल देत।।७१

ए सेवा लाल बाई की, देत प्रसाद श्री राज।
वास्ते सब दुलहिन के, और आवे सबके काज।।७२

आरोग रहे पीछे, धरे रूमाल आगे ये।
रामबाई सेवा करे, आरोगे पीछे जे।।७३

हरबाई ठाढ़ी रही, लेके हाथ रूमाल।
आरोगे पीछे देत, होत मन खुसाल।।७४

सुपारी गीगा ल्याइया, और देवे मानक।
और छबीलदास छबसों, सबसे पहिले दें हक।।७५

और जो तम्बोल को, ले आया प्रहलाद।
कल्यान सेवा करत हैं, प्रहलाद के आद।।७६

प्रहलाद के सामिल, रहत हैं संपत।
तम्बोल सेवा मिने, ए करत हैं नित।।७७

पान पोंछने को काढ़त, लगाए काथो चूना जुगत।
लवंग जावन्त्री जायफल, श्री बाई जी बनावत।।७८

कपूरदानी राखत है, ए जो मुकुन्द दास।
अरूगावने बीड़ी मिने, ए मोमिन हैं खास।।७९

बीड़ी वालें श्री बाई जी, देत राज के हाथ।
लोंग इलाएची देत हैं, इन बीड़ी के साथ।।८०

महाराजा अरूगावहीं, अपने हाथ तम्बोल।
श्री राज रीझ के कहत हैं, कोई नहीं सेवा इन तोल।।८१

पहिले गिरधर सोंनी, सेवा करी तम्बोल की।
पीछे छोड़ी इनने, साथ जब खेंच करी।।८२

कस्तूरी को राखत, बेनी दास कोई दिन।
श्री राज आरोगत पान में, सेवत है दे मन।।८३

आरोगत आनन्द सों, बातें करत बनाए।
सेज समारी पौढ़न की, सखियां सेवन को इत आए।।८४

इत पांवडे बिछावत, पधारत घर मानक।
हाथ पकड़ उठावहीं, लछिदास बुजरक।।८५

आसा ले हाजिर किया, गंगादास इत ल्याय।
लटके मटके चलत, मीठी बातां करें बनाय।।८६

जब महाराजा आवत, तब हाथ पकड़े ए।
दूजी तरफ लालदास को, श्री राज हाथ दे।।८७

फिरती बखत हाथ पकड़े, लेत प्रेमदास लाल।
मकरन्द इनके सामिल, सेवत दिल खुसाल।।८८

सेज बिछाई सनेह सों, ए जो द्वारका दास।
प्रेमदास दूजी तरफ, और सेवे साथ जो खास।।८९

चारों तरफ बिछाए पांवड़े, परदछना के गिरद।
लटके मटके चलत, मोमिन सेवें कर मरद।।९०

संग जुत्थ सैयन के, घेर के चले साथ।
गावें बानी श्री राज की, जाके राजें पकड़े हाथ।।९१

सैयां राज रिझावत, बचन मीठे बोल।
श्री राज रिझावें सैयन को, कोई नहीं इन सुख तोल।।९२

कबहूं बानी रास की, गावत हैं कर प्रेम।
कबहूं ब्रजलीला मिने, कबहूं न लेवें नेम।।९३

कबहूं अरस अजीम को, गावत देकर चित।
श्री राज रीझ के तिन पर, बहुत करत है हित।।९४

बाई जी के गादी तकिए, सेवा करती ए।
राज आरोग पलंग बैठत, आगे आवें धरने के।।९५

सुख देत सनेह सों, कई भांतों कर हेत।
अत मीठी रसना बोलत, धाम धनी सुख देत।।९६

इन समें सनेह की, कहां लो कहों ए सुख।
ए तो सैंया जानहीं, कहयो न जाए मुख।।९७

सेज सुरंगी नूर की, अति प्यारी भरी नूर।
इन सेवा के लवाजमें, क्यों कर कहो जहूर।।९८

सेवत अत सनेह सों, साथ गिर्दवाए घेर।
सखियां गिरद घेर के, चरनों लागें बेर बेर।।९९

लटके मटके चलत, आए बिराजे पलंग।
चरनों लाग पीछे फिरी, श्री जी की अरधंग।।१००

इत दोए पहर पूरन भए, हुआ तीसरे का अमल जब।
तिनकी बीतक कहत हों, सुनियो सेवा की विध तब।।१०१

महामत कहे ए साथ जी, ए बात बड़ी बुजरक।
एक जरा मैं न कह सकों, लाल कहया गजे माफक।।१०२

प्रकरण।।६५।। चौपाई।।३८६५।।

तीसरा पहर

अब कहूं तीसरे पहर की, बीतक जो सैंयन।
सो तुम सुनियो नीके कर, दिल के रे कानन।।१

चरना लेके आइया, प्रेमदास पहिनावन।
नन्दराम पीछे खड़ा, ले गोटा कनढपी खलीतन।।२

पिउ पौढ़े पलंग पर, सैयां सेवन को सनमुख।
मीठी बात रसना सों करें, देत निजधाम के सुख।।३

सेवा अंग परस की, वीरो आन करत।
सैयां चरनों लाग के, मंदिर अपनें फिरत।।४

जीजी सिर आगे धरें, श्री राज मारो टपले।
पौढ़न बखत पलंग पर, इन समें आन पहुंचे।।५

इन समें राधाबाई, श्री राज के पकड़े हाथ।
सिर को खुजलावने, बैठे सेज सेवा के साथ।।६

गुलजी और अगरदास, आवत पांव दाबन।
इन सेवा मिने ये, रहते थे मगन।।७

मयाराम इत आए के, बानी सुनावत धाम।
श्री राज राजी होए के, सब पूरें मनोरथ काम।।८

तमूरा में तांत सों, गावें जगन्नाथ जुगत।
धाम बरनन सुनत हैं, पौढ़ने के बखत।।९

गजपत गहरा पन सों, गजरत हैं मुख बान।
साखी कहवे साख को, ले दरद खड़ा ईमान।।१०

समय सब पौढ़न के, रिझावत हैं राज।
अखंड बानी धाम की, जाके गाए होत सब काज।।११

गजपत चरने राज के, तन मन सौंप्या चित।
कुरबान हुआ श्री राज पर, पीछे कछू न रख्या वित्त।१२

चन्द्रावली रिझावत, गाए के पंजाब के बचन।
दरद उपजावे दिल को, स्याबास कहिए तिन।।१३

नन्दू नित दोए बखत, गावत आगे पलंग के।
तब लों तंबूरा बजावत, जोलों बारी वाले न पहुंचे।।१४

बदले आया गावने, अपने साथ संगी ले।
संभु स्वर पूरत, और सन्त दास सेवे।।१५

बखतावर अमृत कुण्डली, सम्पत सेवे सनेह।
गावत हैं अत हेतसों, श्री राज रिझावे।।१६

बानी मेरे पीऊ की, गावत अति रसाल।
सुनते सुख उपजे, होत दिल खुसाल।।१७

साथ फेरे सब अपनो, इत बानी सुनन का दाव।
श्री राज सुने सनेह सों, दिल में बड़ी चाव।।१८

और भी साथ सुनत हैं, जान धाम धनी सों नेह।
प्यार करें पिउ तिन सों, राखत बड़ा सनेह।।१९

अब कहों गावन की, जो बारी में गावें।
फिरती फिरती आवत, गाए के रिझावें।।२०

वारी में गावत हैं, चौदह आवत फिरती।
कलाम वहदानियत के, वहीयां जो उतरी।।२१

ये कलाम रब्बानी, जो सुने रसूल अलेहु सलाम।
तीस हजार जाहिर किए, तीस हजार जो लिखे कलाम।।२२

और तीस हजार कानों सुने, पर चढ़े नहीं फुरमान।
सो हरफ सिफायत के, जो मुहम्मद सुने कान।।२३

सो ए कलाम इत आए के, कहे वास्ते पहिचान।
ए दावत कयामत की, ल्यावे खलक ईमान।।२४

जिन बानी गाए से, होत है दीदार हक।
ए सिफत महम्मद की, होत है इनसे बुजरक।।२५

ए आठों पहर में, गावत समें समें।
एक प्रात मध्यान को, गावत हैं चित से।।२६

और समय चितवनी के, जब रहे दिन घड़ी चार।
और संझा समें, मोमिन करें विचार।।२७

और समें पोढ़न के, जब रात जाए पहर दोए।
तब गावने बैठत है, ताके नाम कहत हों सोए।।२८

एक बारी बदले की, तहां संग संभु गावन हार।
कबहुंक थानू बैठत, करे सन्तदास मनुहार।।२६

और सामिल गावहीं, ए जो बखतावर।
अमृत कुण्डली गावहीं, बानी सुन्दर वर।।३०

और दूसरी बारी मिने, मना और रतनी।
असाई भागो धन बाई, सब वारी रिझावे अपनी।।३१

और तीसरी बारी मिने, दयाली गावें।
और खिमोती दमोती, जसिया भी आवे।।३२

चौथी में लछो आवत, संग असाई मना।
और सब हाजिर रहें, जान राज अपना।।३३

जहूरा गौरी बारी मिने, गावत बाई प्रेम।
खेम बाई सामिल रहें, गुलो गावें लिए नेम।।३४

सब की बारी मिने, चन्द्रावली देत मदत।
श्री राज रीझत तिन पर, गावने के बखत।।३५

जीजी की बारी मिने, गावत है अगरी।
बड़ी जीजी सामिल रहें, और गावत हैं मथुरी।।३६

करमेती के सामिल, गावैं हरखों बाई गोर।
लालो रतो लड़ेती, ए गावत हैं जोर।।३७

और लछो ललिता, और सुआ संता द्रोपती।
केसर लखमीं आवत, राज बड़ी रीझ करी।।३८

आठमी बारी मिने, हर कुंअर सिरदार।
पांखड़ी सूजा कासी, गावत खबरदार।।३९

नवमी जसा की बारी मिने, गावें भीगू चंगाई।
वीरो किसनी सामिल, ए गावने को आई।।४०

भागीरथी के भाग में, गावत हैं मोहन दे।
लड़ेती लछो सुआ रहे, पटेलन जेंनती के।।४१

और सन्ता गावें सनेह सों, लाली लालो इनमें।
अपनी बारी गावहीं, रहे खुसाली सें।।४२

अग्यारमी भानी की बारी मिने, गावे हिमोती गोमा।
रामबाई तहां गावत, हक आवत करें उपमा।।४३

खरगो खिमोती रहे, ए गावे अल्ला कलाम।
श्री राज रीझ के कहत हैं, इन्हें देओ बैठने का ठाम।।४४

खेमबाई की बारी मिने, गावें साहो हंसों जादी।
करमाबाई आवत, रीझ राजें वारी दी।।४५

गुलो की बारी मिने, गावे जान मानवंती।
दयंती मनिया गौरबाई, गावत सुख देतीं।।४६

दो पहर की बारी मिने, गावत हैं सिवराम।
संझा समें भी सामिल, ए पावत विसराम।।४७

सदानन्दन गावहीं, भाई जो सिवराम।
और अमृत कुण्डली, और बखतावर को काम।।४८

बनमाली की बारी मिनें, गावे दो पहर संझा समें।
संग सन्ता प्रेम जीजली, राम बाई सूरत से।।४६

ए बारी वाले गावहीं, आठ पहर रात दिन।
एह नित सुनत है, खास गिरोह मोमिन।।५०

और आवत हैं बहुत, मढ़े फिरत दोऊ कान।
बिना अंकूरे क्या करे, पावें ना सुख सुभान।।५१

नातो बुरा न चाहे कोई आपको, पर ना सुनने ताकत।
लज्जत तिनको न आवहीं, तो क्यों कर बैटे तित।।५२

ताबे रहे सैतान के, सो खैंचे अपनी तरफ।
दिखावे दुनीय को, तो पावे ना एक हरफ।।५३

जो कदी कानों सुने, काहू की सोहोबत।
पर दिल की आंखे फूटियां, ताथें न पावे लज्जत।।५४

ए जिनके ताले लिखे, सो गावे सुने सुकन।
जोस फिरे जबरूत लों, नजर लाहूत में मोमिन।।५५

तिनके वास्ते खेल को, बनाया खालक।
रसूल को उन इनों पर, भेज दिया है हक।।५६

सुने न कुरान को, इनके कहे न कान।
कलाम रब्बानी उतरे, वास्ते मोमिनों पहिचान।।५७

सो वानी सिफायत की, किन वास्ते उतरी।
हक मेहर करत हैं, सो मोमिनों दिल धरी।।५८

पांचों चीज बका से, उतरी वास्ते मोमिन।
जबराईल जोस धनी का, करत सदा रोसन।।५९

असराफील आइया, नूर मकान से।
गावत हैं कुरान को, बैठ बीच मोमिनों में।।६०

करनाइ फूंकन को, देखत है राह हुकम।
पीठ कूबड़ी करके, बीच सांस ना लेवे दम।।६१

और हुकम आया हक का, ऊपर करने काम।
मोमिनों को खेल दिखाए के, पहुंचावे वतन निजधाम।।६२

उतरी रूहें अरस अजीम से, ए सामिल है पांचे।
सब कारज होवे इन से, एक ठौर होए के।।६३

ए सब वास्ते मोमिन के, करत हैं सुभान।
सब सिफत लिखी इनकी, इनको दिया ईमान।।६४

भागवत गीता मिने, और वेद वेदान्त।
सास्त्र इन वास्ते हुआ, हकें करी सब कर खान्त।।६५

उपनिषद इन वास्ते, बोलत है अद्वैत।
सुनत चरचा इनकी, उड़ जात सब द्वैत।।६६

वेद कुरान कहेवहीं, सो कह्या वास्ते मोमिन।
हकीकत मारफत के, द्वार खोल दिये सब इन।।६७

पैगाम जो उतरे, सो वास्ते मोमिनों के।
सब गवाही देवे इनकी, और सिफत कहे ए।।६८

मुकदमा कयामत का, सो इनों वास्ते होए।
मुरदे किये जीवते, इनों वास्ते किया सोए।।६९

राह जो इसलाम की, पावे सब खलक।
मेहर बड़ी जो उतरी, सो भेजी इन वास्ते हक।।७०

और बाते केती कहों, सब हुआ इन वास्ते।
सो तुम जाहिर देखोगे, दिल अपनी नजर से ये।।७१

महामत कहे ए साथ जी, सुनो जिकर सुभान।
ए सिफत ईमान की, लाल जिनको भई पहिचान।।७२

प्रकरण।।६६।। चौपाई।।३६६७।।

चौथा पहर

अब कहूं पोहोर चौथे की, बीतक जो सैयन।
सो दिल के कानों सुनियो, करत हों रोसन।।१

इत एक पहर पिउ पौढ़त, आये सेवन को सब साथ।
जल लोटा भर ल्याइया, छबीलदास अपने हाथ।।२

श्री राज कोगला करत हैं, डारत हैं पीक दान।
संकर आगे धरत हैं, संग सन्तदास परवान।।३

मानक दौड़े इन समें, हजूर पहुंची आए।
ए सब सेवा में सामिल, कछू अरज पहुंचाए।।४

श्री राज रजा देत हैं, आए हजूरी सब।
संकर सेवे सनेह सों, मोरछल लिए तब।।५

हजूर हमेसा रहे, ए जो केसव दास।
कंचन मूठे मोरछल, सनेह सों सेवा खास।।६

बल्लभ गंगादास जो, रहत हजूर हमेस।
निरगुन हो के रहत हैं, माया नहीं लवलेस।।७

बिहारीदास हमेसा, रहे हजूर हक।
सब कामों में दौड़त, बड़ी सेवा बुजरक।।८

लालदास हजूर में, मकरन्द इनके साथ।
नीमा पहिनाया प्रेमदास, कस बांधे दोऊ हाथ।।९

धरत हैं सिर पर, गोटा पहिनावत नन्द राम।
गोस पेंच सिर ऊपर, आये मुकुन्द दास इन ठाम।।१०

दुता सुपेत कंचन का, पहिनावत ऊपर।
रामचन्द्र हैं सामिल, सेवा नन्दराम यों कर।।११

पटका कमर सों बांधत, जरी किनारी झलकत।
थुरमा ओढ़े कुरती पर, सोभे सुनहरी बूटे इत।।१२

तकिए मखमली ल्याइया, ए जो बिहारी दास।
कोई दिन सेवा करी, मिल बन्दे फरास।।१३

मेघा इनके संग रहे, और सुकाली सेवे।
गोविन्ददास बदले, और बिसंभर सेवा करें।।१४

भाई बनमाली दास नें, ए जो बनाया तखत।
हवाले रहे बिहारी दास के, गादी तकिए धरें इत।।१५

धनजी गावने में रहे, बनमाली दास के संग।
तखत कुरसी सेज सेवा, करें सामिल हो उछरंग।।१६

सेज पर से उठके, कोई दिन घर जावे घनस्याम।
तहां पांवड़े आगे बिछावत, ए लाल बाई का काम।।१७

और बिछावत किसनी, एक पाँवड़ा जित।
फुम्मक चंद्रवा बांधत, मानिक बाई तित।।१८

तिन सेवा के सामिल, गंगादास सोभादास।
इन सेवा बराबरी, कोई न पहुंचे खास।।१६

इत हाथ पकड़ के, लच्छीदास ल्यावे।
पीछे फिरते हाथ दे, लालदास पहुंचावें।।२०

प्रेमदास चिंता गले लिए, सेवन को सब साज।
बातें करें बनाए के, सबे राज के काज।।२१

लटके मटके चलते, आए बैठे गादिए।
ए सेवा बिहारीदास की, बिछाई है भर के।।२२

धरे दोऊ बाजू तकिए, ऊपर पाँवड़े चलत।
पगथिए चरन धर के, आए कुरसी बिराजत।।२३

चरन पखालनें को छबीलदास, ल्यावत सुन्दर जल।
मुकन्द दास खास पखालत, ए सेवत दिल निरमल।।२४

दूजा पखालें प्रेमदास, पीछे केसव रूमाल ले।
नारायण ता ऊपर, रूमाल देवें कर सनेह।।२५

दोइ बाजू पिंडुरी, पकड़त बनमाली दास।
लालदास सामल, लिए सेवन की दिल आस।।२६

इत चिलमची धर के, बैठत हैं नन्द राम।
जल प्रसादी बांटत, संकर को ए काम।।२७

हाथ पखालत हेत सों, छबीलदास रेड़े जल।
हाथ पोंछावे रूमाल सों, प्रेमदास निरमल।।२८

अमल आरोगें इन समें, इत छबीलदास देवे।
फोफल आरोगन को, मानक ले पहुंचावें।।२६

कुरसी गिरद घेर के, अम्बो और गौरी।
और मानवंती मान सों, और गोदावरी।।३०

दुरगी ललिता आइयो, सुआ खिमाई सांम।
लच्छी और मन गमता, मातेन जहूर इस ठाम।।३१

और बाजू सखियां खड़ी, कुरसी को घेर के।
संकर मथुरा गावत, गंगादास बिहारी झीलें।।३२

कासी हाथ पकड़त, बैठत कुरसी बखत।
ओका कलंगी हाजिर करे, जब बैठे श्री राज तखत।।३३

इत बिहार कई भांत के, आवे नहीं जुबान।
सैयों को सुख देत हैं, कराए अपनी पहिचान।।३४

बल्लभ छत्र पकड़ के, फेरत सिर ऊपर।
हाथ पकड़ उठावत, दास लाल इन पर।।३५

इन तखत के गोफने, बांधत मानक इस ठाम।
दोए लाल बाई बांधत, एक बांधत घनस्याम।।३६

मानक सामिल रहत हैं, फूलबाई सुदामापुर से।
सो फूलबाई रहत है, सरीख सब सेवा में।।३७

तखत साज सोने रूपे का, राखत हैं बुधसेन।
सब सेवा में ठाढ़ा रहे, आवे जाए लेन देन।।३८

सेवा लिखन हार की, स्याही देत बनाए।
कूजा भरके पुकारहीं, कोई लेवे जो दिल चाह।।३९

लटके मटके राज चलके, आये बिराजे तखत।
केसव संकर ले खड़े, मोरछल इन वखत।।४०

पीछला बाकी दिन, रह्या घड़ी चार।
धाम वतन चलन की, मोमिन करें विचार।।४१

दोऊ बाजू भरके, आए के बैठा साथ।
अरस अजीम पहुंचावने, हकें पकड़ें हाथ।।४२

श्री महाराजा आवत, सब सेवा में सामिल।
अत सनेह सों सेवा करें, पाक दिल निरमल।।४३

जो सेवा सकुण्डल करी, अपने तन मन धन।
अपना तन धन सोंप्या, तो कह्या अमीरूल मोमिन।।४४

अरस की निमाज का, आए पहुंचा बखत।
गोकुल अरज करत हैं, सामें होए तखत।।४५

हम को इन खेल से, सिताब काढ़ो श्री राज।
भए मनोरथ पूरन, रहया ना कोई काज।।४६

श्री धाम धनी सुनत हैं, ए बानी जो मकबूल।
दाए जो मोमिनों की, होत है कबूल।।४७

अरज करी एक भांत साथ नें, कई भांत धनी दिए सुख।
खेल सम्मेत बैठाए के धाम में, दोऊ ठौर धन धन किए सनमुख।।४८

खास ढाल तलवार जो, दई पहिले मुरलीधर।
कोई दिन भिखारी दास, कोई दिन गिरधर रहे पकर।।४९

फेर दई लालदास को, सन्तदास खड़ा रहे ले।
कबहूं दूजा भिखारी दास, पीछे बुध सेन करे।।५०

सूरत सिंह राखत हैं, तरकस तीर कमान।
बरछी घनस्याम राखत हैं, करे खिजमत रेहेमान।।५१

श्री बाई जी पटे देत हैं, हाथ मकरन्द के।
श्री राज के वास्ते भूषन, ल्यावत है नित ये।।५२

रकेबी रूपे की, भर ल्याए भूखन।
महाराजा पहिनावत, लिए पकड़े हाथ मोमिन।।५३

माला दो मोतिन की, और उतरी कंचन।
दोए सांकली सोने की, झलकत हीरा रोसन।।५४

दुग दुगी दो जड़ाव की, करे मानक जोत अपार।
महाराजा पहिनावत, ताकों क्यों कर कहूं सुमार।।५५

चन्द्रहार झलकत, चंपकली सिर नूर।
कण्ठी पर कण्ठी सोहे, सो क्यों कर कहूं जहूर।।५६

मोतिन की कण्ठी बनी, तले मोती ऊपर मानक।
चौखूना सोने मढो, सोभित है कण्ठ हक।।५७

गिरद चन्द्रिका कमल ज्यों, लटकत पाग ऊपर।
सिरे मोती लटकत, धरे हीरा जोत सिर पर।।५८

महाराजा पहिनावत, पोहोंची बांधी इन ठाम।
हीरा मानक झलकत, ए महाराजा का काम।।५९

और अंगुरियों मुंदरी, आगे सब धरी।
माफक बैठत अंगुरी, सो अंगीकार करी।।६०

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए चौथे पहर की विरत।
अब कहूं पोहोर पांचमां, सुनियो तन मन हित।।६१

प्रकरण।।६७।। चौपाई।।४०२८।।

पांचमा पहर

अब कहूं पहर पांचमा, आया जब बखत।
हुआ समें बैठन का, ऊपर इन तखत।।१

लच्छो अरज करत हैं, राज पधारो कौन घाट।
श्री राज उत्तर देत हैं, आज पधारें पाट।।२

तखत बिछौने होत हैं, बिछावत बिहारी दास।
तलाई ओछाड़ सूजनी, तकिए धरे मखमली खास।।३

इत जोड़े तखत के, गादी बिछौने होए।
चारे गमा ते तान के, बिहारी दास धरें सोए।।४

दीपक सेवा में खड़ी, मानक करमेती।
श्री राज को रिझावत, सब विध सुख देती।।५

सुखपाल में बैठ के, श्री बाई जी आवत।
अरज आरोगन की, मीठी बातें करत।।६

इत थाल आरोगन की, ल्याई मथुरी और हिंमत।
साक तरकारी कटोरी, लेके आगे धरत।।७

श्री महाराजा बाई जी, बैटत अरूगावने थाल।
हाथ पखालत प्रेम सों, मानक सेवा करें खुसाल।।८

हाथ पोंछने को दिया, रूमाल श्री महाराज।
एक मुंह आड़े अपने बांध के, अरूगावत श्री राज।।६

आरोगत अत हेत सों, सो कहां लो कहों मैं ए।
राज भोग सामग्री लवाजमें, सब साक तरकारी के।।१०

इत रूमाल आड़े डार के, सेवे बिहारी दास।
सखियां सब ठाढ़ी रहे, मन में सेवन की आस।।११

थाल ले आगे धरी, बैटे पकड़ महाराज।
मीठी रसना सों बातें करें, रीझ रीझ के राज।।१२

आरोगत अत हेत सों, बातें करें बनाए।
धाम धनी गाए रिझावहीं, कवल देत हैं ताए।।१३

बाई जी बातां करत है, आरोगने के बखत।
श्री राज रीझ के कहत हैं, ऊपर बैठ इन तखत।।१४

जल छबील दास ल्याइया, आरोगने को हक।
कंचन कटोरे सुन्दर, जल बाए देत माफक।।१५

कोई वस्त अरूगावने, मसाला ल्यावें घर से।
मेवा मिटाई पकवान, राज हेत कर आरोगते।।१६

श्री राज रहे आरोग के, सैयां उठाई थाल।
चुल्लू करावें चोपसों, सकुण्डल दिल खुसाल।।१७

कहवा आरोगने को, ले आई मानक।
भरके देवे हाथ में, ए जो गंगादास बुजरक।।१८

फूल सुपारी बीड़ी मिनें, अरूगावे कल्याण।
ऐ सेवा श्री बाई जी की, दई सेवक अपना जान।।१९

बीड़ी वालत श्री बाई जी, महाराजा अपनी।
दे सुपारी मानक छबीला, और सेवत महारानी।।२०

हार कलंगी आवत, ऊपरा ऊपर इत के।
ले ले नाम मुजरा होत हैं, होए जुबां एक एक के।।२१

संभू ओका जसिया, ल्यावत हैं कलंगी।
श्री राज हाथों धरत हैं, सेवा अंगीकार करी।।२२

महाराजा कलंगी बनावत, अपने हाथों कर।
बांधत लटकनी छब की, हाथों हाथ धरें सिर पर।।२३

मुकुन्द दास ले आवत, तुर्रा कलंगी परन।
श्री राज सिर पर धरत हैं, झलकत है किरन।।२४

महाराज के रावर से, आवत कलंगी हार।
चित माफक अपने सोभित, दे महाराजा अपने लार।।२५

कहा कहों इन समें की, जहां राज बिराजे तखत।
आई जी मोरछल करत हैं, सो कहयो न जाए बखत।।२६

महाराजा मोरछल लिए, दोऊ बाजू चंवर ढुराए।
सेख बदल लाल खान, हाथ फेरत चमर बनाए।।२७

कबहूंक पीठ पीछे होए के, लाल केसव करे अरज।
कुरान हदीसां वास्ते, रहे पढ़नें की गरज।।२८

चितवनी की बारी मिने, भोग दियो बखत इन।
गावत संझा को अवसर, पहर रात लो रोसन।।२६

मना अरज करत हैं, बस्तर सुनने की।
सो राज मोसों कहो, मैं हाजिर ना थी।।३०

साड़ी रंग सेंदुरिएँ, स्याम जड़ाव कन्चुकी।
नीली लाहिको चरनियां, ए बस्तर ठकुरानी जी।।३१

चीरा रंग सेंदुरिया, जामा सुपेत जवेर तार।
पछेड़ी रंग आसमानी, देख परवरदिगार।।३२

नीले पीले रंग को, पटका बांधो कमर।
केसरिया रंग इजार है, ल्यो मूल बागों दिलधर।।३३

आज निरत नवरंगबाई को, साड़ी जड़ाव स्याम।
आंबा रस कंचुकी, पांच पटे चरनियां इस ठाम।।३४

पहिनी इजार नीली, ए बस्तर बाई निरत।
और सिनगार सब साथ को, स्यामा जी माफक देखत।।३५

ए बस्तर सब साथ को, कहते बखत दोए।
एक प्रात और संझा समें, साथ सुनत हैं सोए।।३६

सरूप दाता ब्रह्मांड में, भए हैं दो तीन।
सो लिखे सास्त्रों मिने, जो ल्याए आकीन।।३७

सो सरूप बैकुण्ठ का, जाए कह्या मलकूत।
कहने वाले फिरस्ते, जिनका ठौर जबरूत।।३८

ए सूरत अरस अजीम की, जाय कह्या अक्षरातीत।
कहने वाले धाम धनी, सुने मोमिन कर परतीत।।३६

नेष्टाबन्ध सुनत हैं, जाए सांच होवे कान।
पांव हाथ अंग इन्द्रियां, होए हक की ताए पहिचान।।४०

दूसरा कोई इत आए के, कबूं न बैट सकत।
काहू खुसामद गरज आवही, पर मिने न पेठ सकत।।४१

ए तो बात अंकूर की, होए न बिना सनमंध।
जो दुनियां को देखहीं, ताए कह्या बड़ा अंध।।४२

जब कलाम रब्बानी खुले, तब हुआ वखत कयामत।
तब लगा रोजगार को, है बड़ा कम हिंमत।।४३

आया समें आरती का, साथ आवत चारों तरफ।
इन समें सोभा की, कह्यो न जाए हरफ।।४४

श्री बाई जी आवत इन समें, होत बिछौने जोड़े तखत।
गादी तकिए बिहारी दास, बिछावत हैं इत।।४५

आरती होत आनन्द सों, करत अति घने प्यार।
सोभा होत संसार में, करत सबे मनुहार।।४६

झांझ ताल थैली मिने, ए दगड़ा राखत।
आरती समें ल्यावत, भाखरिया नाचत।।४७

दोऊ बाजू चंवर ढोरत, लालबाई पहिले।
गोबिन्द दास करता था, कोई दिन सिवराम के।।४८

हरनन्द कोई दिन, सेख बदल लालखान।
आखर आई इन पे, जिनका था ईमान।।४९

गावे गवावें साथ को, ए सेवा मुकुन्द दास।
आरती में आए खड़े, होत नित बिलास।।५०

बिन्दा कन्नड़ गावहीं, और गंगा राम।
अगरदास आनन्द सों, बद्री दास इन काम।।५१

कबहूं उत्तमदास आवहीं, बजावत हैं मृदंग।
झांझ ताल बजावत, केतिक सैयां इन संग।।५२

गावने में आगे खड़ा, परमानन्द प्रवीन।
भाव दिखावत भेद सों, आया कूवत माफक आकीन।।५३

साथ सबे खड़े रहें, भरके बाजू दोए।
झांझ मृदंग बजावत, आनन्द अजीम होए।।५४

सुन धुन इन समें की, कांपत कुली दज्जाल।
ए नेहेचे मोकों मारेगा, ऐही मेरा है काल।।५५

मेघा गादी बिछावत, श्री बाई जी के कदम तले।
जब आरती करत हैं, श्री बाई जी खड़े ऊपर इनके।।५६

आरती के बखत में, चादर बिछावत हीरामन।
चावल बधावत श्री बाई जी, सब आरती वाली सैयन।।५७

श्री बाई जी करें तिलक, चौड़त हैं चावल।
राघव रूमाल धरत है, करे सेवा अपने बल।।५८

आरती करें आनन्द सों, श्री बाई जी इत आई।
ए सेवा की जोगबाई, साज रूकमनी ल्याई।।५९

रूपे पच घड़ी आरती, गिरद दीपक जोत बतीस।
करे फिरते प्रकास चहुंदिस, सेवत मन परतीत।।६०

और आवत करने आरती, लच्छो इन समें।
दीपक जोत प्रकास के, कोई दिन हुई सेवा इनसे।।६१

और अंबो करे आरती, सामिल दूजी तरफ।
एक बाजू महतेन खड़ी, और भानी एक तरफ।।६२

और कई कुमारिका, लिए दीपक थाली हाथ।
झलकत जोत चहुं दिस, करे बाई जी ऊपर साथ।।६३

कंचन थाल चहुं मुख दिवला, दीपक जोत प्रकासी।
करत आरती जियावर रानी, आनन्द अंग उलासी।।६४

जुगल सरूप सुन्दर सुखदाएक, स्याम धाम धनी सोहे।
मंगल रसिक बदन की सोभा, निरखन्ता मन मोहे।।६५

सखियां निरत करें और गावें, आनंद अखंड अपार।
ताल मृदंग झांझ जन्त्र बाजे, सखियां बोले जै जै कार।।६६

बधावें मुक्ताफल सखियां, श्री जियावर स्याम सुहागी।
तन मन जीव निछावर कीन्हों, श्री इन्द्रावती चरणों लागी।।६७

रूकमनी थाल धरत हैं, श्री राज के आगे।
कर पसार बीड़ा धरें, करे मेहर धाम धनी ए।।६८

और सबकी थाली में, डारत है बीड़ी ये।
सेवा कल्याण प्रहलाद की, नित आवे करने के।।६९

इन भांत नित आनन्द, होत है बंगले में।
कई खलक आवे दीदार को, सुन कायमी पावे इनसे।।७०

इत धुन सूरज मन, करे आरती बोध।
श्री धाम धनी जियावर के, नाम लेत भागे बिरोध।।७१

एही अक्षरातीत है, एही हैं धनी धाम।
एही महम्मद मेहंदी ईसा, एही पूरे मनोरथ काम।।७२

इन भांत कई गावत, होए के मन मगन।
कई साथी संग गावत, सार्थें सूरज मन।।७३

इन भांत आरती समें, कई विध होत कलोल।
हैं गए बंगले ना सुनात, कोई सुख नाहीं इन तोल।।७४

एक पहर रात लों, होत है ए मनुहार।
कोई आवत कोई जात है, कहां लों कहूं प्रकार।।७५

सिंहासन बाई जी, जुगल सरूप सोभाए।
आनन्द सरूप सुतेज को, कहां लों कहूं बनाए।।७६

महामत कहें ऐ साथ जी, भया चरचा का वखत।
अब तुम सुनियो चित दे, लाल आगे आए बैठे इन तखत।।७७

प्रकरण।।६८।। चौपाई।।४१०५।।

छठा पहर

अब कहों पहर छटे की, जित चरचा होत है हक।
बैठे सुंनत जमात, जो खास गिरोह बुजरक।।१

साथ सबे बंगले मिने, बैठे होए सनमुख।
केसव दास बानी पढ़ें, कह्यो न जाए ए सुख।।२

कुरान हदीसां बांचने, बैठत है दास लाल।
गोकुलदास पढ़त हैं, करने राज खुसाल।।३

इत चरचा होत है चोपसों, बरखा होत अद्वेत।
रसना मीठी सों कहें, उड़ जात सब द्वैत।।४

मुरलीधर सम्मुख बैठत, पलक न मारत नैन।
मुख सों मुख सनमुख, श्रवण सुने मुख बेन।।५

एक बाजू श्री महाराजा, और देवकरन जी साथ।
और दुरगभान पीछल, जाके धनीएं पकड़े हाथ।।६

और चन्द्रहंस आवत, और साह रूप।
देत श्रवना कहते, सरूप सुन्दर रूप।।७

और किसोरी आवत, बैठत चरचा में।
झाडू देत बंगले मिने, सोहबत देवकरन सें।।८

अमानराए परबत सिंह, और नारायन दास।
और सकत सिंह आवत, और जगत सिंह खास।।९

हमेसा दुरगभान के, लोंगे आवत दोए।
एक रूपैया रसोई को, पहुंचावत है सोए।।१०

तुलाराम सेवा मिने, आवत दरसन को जब।
प्रणाम करके बैठत, चरचा सुनत है तब।।११

प्रेम जी पीताम्बर, और मकुन्ददास।
गोकुल केसव बैठत, और जेनती खास।।१२

और सूरतसिंह मकरन्द, और मोंनी गिरधर।
भगवान सिवराम सदानन्द, और बैटे गिरधर योंकर।।१३

और सेख बदल बैठत, और लाल खान।
मिहीन पठान बैठत, और अव्वल खां सुने कान।।१४

और नूर महम्मद, और चंचल दयाराम।
गुल जी नाथा टाड़ा रहे, पावें चरचा में आराम।।१५

टेकचन्द भली भाँत सों, और दुन्द राए।
पोहोकर दास भी आवत, गोविन्द राए बैठत आए।।१६

केसवदास मोदी बैटत, बैठे दूजा मुरलीधर।
इहाँ महावजी नित आवत, मोहन दास बैठे इन पर।।१७

मूल जी मामा बैठत, और काका बैठनहार।
सन्त दास सेवा मिने, गंगा राम बैठे खबरदार।।१८

और घनस्याम बैटत, कबूं नाहना भी आवत।
छतई भी सुनत है, और सुकदेव बैठत।।१९

और निरंजन नरसिंह दास, बैठे मके साहमन।
सिंघ घासी ब्रजभूषण, और धना सोहबत इन।।२०

वीर जी मोदी आवत, और लच्छी सुकल।
मिडई नित चरचा सुने, बिन सुने न पड़े कल।।२१

बिहारी फरास आवत, और बिहारी झंडूला।
दूर खड़ा सुनत है, भगवान कलाम अल्ला।।२२

मामा बनमाली दास आवत, और बैठत धन जी इत।
लालमन और संकर, और नारायन बैठत।।२३

मथुरा कासी आवत, खड़ा रहे बल्लभदास।
सन्तदास हजूर में, परसादी मोमिन खास।।२४

और असऊ बैठत, अगर दास आवत।
सुने दूर बैठा गोवरधन, छबील दास बिन्दा बैठत।।२५

भिखारी दास बैठत, और मया राम।
बेनीदास आवत, सोभा दास विसराम।।२६

गजपत गरीबदास जो, और देवी दास।
थानू बदले सुनत, और संकर रसोइया खास।।२७

स्यामजी सुनत हैं, और बैठे चंपत।
सुख चैन खरग देऊ, और मुरली आवे इत।।२८

और साथी केतिक, आवे नेष्टा बंध।
कोई आवे मरजाद में, कोई परवाह की सनंध।।२६

कोई सुनत है पुष्ट में, कोई सुने मरजाद।
कोई परवाह में कान दे, ए सुनने की बुनियाद।।३०

कोई ग्रहत है पुष्ट में, कोई ग्रहे मरजाद में।
कोई परवाह में लेत है, ए बीतक कही इन सें।।३१

एक पांव भरें पुष्ट में, दूजे मरजाद में कदम।
एक परवाह में पांव भरें, यों सोंपी आतम।।३२

यों एक एक के तीन तीन, तिन तीनों के नव।
फेर बांटे तीन बेर, सताईस कहो।।३३

फेर के बांटे तीन बेर, ताके इक्यासी भए पख।
और पच्चीस पख ब्रह्मसृष्ट के, कहें उन ऊपर अलख।।३४

ए पच्चीस की बात बड़ी, जिन नजर लाहूत पर।
सो हिसाब में न आवहीं, कहों सैयों की खातिर।।३५

तामें सात घाट धाम के, और जमुना जी पुल दोए।
दसों भोम मोहोल राजत, देखो साथ तुम सोए।।३६

और महल चौबीस हांस को, बड़ी नहरें और जोए।
और तालाब मानक, चार हार हवेली होए।।३७

चारों तरफ सागर के, और जिमी के होए।
मोहलात बड़ी रांग की, गिरदपाल कही सोए।।३८

और आठों सागर, और पहाड़ पुखराज।
जमुना जी इहां प्रगटी, ए बेवरा करत हैं श्री राज।।३९

जहां पटी महल खुली चली, मरोर खाया और।
इन दरम्यान कई भांत हैं, सब कहें है ठौर।।४०

ए चरचा नित होत है, भोम कही अद्वैत।
पच्चीस पख में सब है, उड़े सुनते द्वैत।।४१

श्री राज और स्यामा जी, ए दोनों जुगल किसोर।
रूहें रहें दरगाह में, ए तीनों एक सरूप न और।।४२

लखमी जी और भगवान जी, ए दोनों एकै अंग।
ए हैं अंग श्री राज के, ए पांचों अद्वैत एक संग।।४३

और भगवान जी की दृष्ट से, कई कोट उपजे इण्ड।
पल फिरे उड़त है, त्रिगुण समेत ब्रह्माण्ड।।४४

अक्षर आवें मुजरे को, श्री धाम धनी के दीदार।
मुजरा कर पीछा फिरें, रिझावें परवरदिगार।।४५

जहां राज के दिल में, इस्क रब्द कारण।
खेल दिखाए बेवरा किया, देखो मिल मोमिन।।४६

चाह करें खेल देखनें, मै बरजे बेर तीन।
तुम भूलोगे तहकीक, रहे न काहू आकीन।।४७

तब रब्द करें मुझसों, मेरे कह्यो न माने कोए।
तब सुपन दिखाऊंगा, इनों पें मंगाए के सोए।।४८

अक्षर को इच्छा भई, रूहों कैसा इस्क।
प्रेम परवरदिगार सों, क्यों रहे साथ हक।।४९

तब हुकम कुदरत मलकूती, भई दीदार चाह जो इन।
किन बिध नूर जमाल मोमिन, नूर सिलसिले से उपजा तिन।।५०

तब रुहों के दिल उपज्या, हम खेल देखें भगवान।
मांगे आज राज पे, हमें कब होए पहिचान।।५१

हम आपस में रब्द करके, आइयां पासे हक।
हमें खेल देखन की, रहे बड़ी चाह बुजरक।।५२

बहुत बरज्या इनको, फेर फेर तीन बेर।
बहुत चाह जब देखिया, उतारी बीच अंधेर।।५३

पहिले हुकम भगवान पे, हुआ एह सुपन।
उतारी रूहें तिन में, आइयां खेल देखन।।५४

पहिले आए ब्रज में रहे, अग्यारे बरस बावन दिन।
ता पीछे पहुंचे वृन्दावन, एक रात रोसन।।५५

तित तुमको इच्छा रही, तो आए तीसरी बेर।
इन्ना इनजुलना सूरत, तुम वास्ते उतरी खैर।।५६

रसूल आए तुम वास्ते, धरी जुदी तीन सूरत।
ए खेल तुम खातिर किया, फरदा रोज कयामत।।५७

पांच चीजें बका से उतरी, सो तुमारी खातिर।
हुकम आया तुम पर, ले फिरस्तों का लसगर।।५८

जबराईल जोस धनी का, करे तुमारी वकालत।
तुमको साफ राखहीं, कहूं पैठ न सके इल्लत।।५६

असराफील आइया, अपनी फौज बनाए।
सूर फूंका संसार में, कलाम रब्बानी गाये।।६०

रूह अंल्ला आए तुम पर, तिन पहिने जामें दोए।
रूहों तुमको खेल में से, ढूंढ़ काढ़े सोए।।६१

अरस अजीम के सुकन, जिनसों होए सिफायत।
दीदार होए हक का, सो तुम वास्ते ल्याए इत।।६२

सो तो सागर सुख के, बरनन करत हैं जेह।
विचार जिनको विवेक, दिल श्रवना देत हैं तेह।।६३

सातों सरूप स्याम के, बरनन करत श्री राज।
साथ को सुख उपजावहीं, पूरें मनोरथ काज।।६४

बरनन करते धाम को, परदक्षना पुखराज।
अहिनिस केल करत हैं, संग सैयां श्री राज।।६५

सातों घाट पधारते, श्री ठकुरानी जी संग।
खेलें सब सैंयन सों, श्री धाम धनी अरधंग।।६६

दोनों पुलों पधारत, कुंजबन मंदिर।
जमुना जहां मरोर खाए के, आए ताल मिली यों कर।।६७

हौज दिखावत हेत सों, और चारों घाट।
टापू बरनन करत हैं, एक हीरे को सब ठाट।।६८

गिरद ताल के बन भला, आगे पहाड़ मानक।
बीच महल खेलन का, जहां खेलत हक।।६९

चौबीस फुहारे बीच में, परे चौबीस गुरजें।
तासों परे चौबीस चादरें, गिरद परे कुण्डें।।७०

धनी मानक पहाड़ को, कर देत बरनन।
जहां हिंडोले दो पहाड़ बीच, सुन सुख पावें मोमिन।।७१

जित फिरती हवेलियां, चौखूनी गिरदवाए।
बारे हजार मंदिर हर एक में, फिरते बड़े दरवाजे आए।।७२

मानक पहाड़ से दछिन, नदी निरमल नीर।
ताकी सिफत कह दिखावहीं, जल उजल खुस्बोए खीर।।७३

दोऊ बाजू देहुरे बने, बड़ी हीरे की पड़साल।
सुन सैंयां कामिल, होत अति खुसाल।।७४

जहां राज रमत हैं, बन की जो मोहलात।
अत सुन्दर सोभा देत है, सो क्यों कर कहों विख्यात।।७५

अत ऊंची है अलंग, गिरदवाए फिरती।
चार हार मोहोल बनें, याकी सोभा कहों केती।।७६

आठों सागर ए कहे, जहां रमन की ठौर।
टापू बेट बिराजत, कह्यो न जाए मरोर।।७७

और बानी कई भांत की, कह समझावत सब साथ।
साथ अब कोई धाम में, पकड़ बैठाए हाथ।।७८

ए लीला केती कहों, रात होत पहर दोए।
कोई समें तीन जात है, चरचा कहि समझावे सोए।।७९

श्री राज पौढ़े पलंग पर, गादी तकिए उठावें ये।
बिहारी दास संग नाथा रहे, और साथी सामिल सेवा के।।८०

महामत कहें ए सैंयनों, ए छटे पहर की बीतक।
अब कहों पहर सातमां, जैसी सोहोबत हक।।८१

प्रकरण।।६६।। चौपाई।।४१८६।।

सातमा पहर

अब रात पहर दो गई, पोहोर चार दिन दो रात।
उपरान्त पोहोर सातमा, कहों ताकी विख्यात।।१

इन समें सेज समारत, नारायन द्वारका दास।
गंगादास परमानन्द, और सेज समारत खास।।२

इत साज समारत, ए जो दोए पलंग के।
एक पर बैठे एक कोतल, सोभा कही न जाए ते।।३

चार पाए अत सुन्दर, नूर भरे अत प्यार।
इस उपले नूर के, ताको क्योंकर कहों बिहार।।४

पचरंगी पाटी भरी, अत नरम सुखदाए।
तापर तलाई सोभित, तापर चादर बिछाए।।५

अत सुन्दर सेज बन्ध, जुगतें बांधे चारों पाए।
पांचों रंग रेसमी झलकत, सुन्दरता सुख दाए।।६

सिराने गाल मसुरिए, कहां लों कहूं बनाए।
चारों डांडे नूर के, ऊपर छत्री गिरदवाए।।७

झालर झलके नूर की, ऊपर छत्री घेर।
ए जो सोभा सेज की, क्यों कर कहों इन बेर।।८

सेज बिछाई सनेह सों, फेरत ऊपर हाथ।
जिन तिनका कोई रहे, बिसंभर सेवे इन साथ।।९

आए आगे अरज करी, सेवे बल्लभ दास।
घड़ी घड़ी पोहोर पोहोर, सुनावें धाम लीला खास।।१०

आनके अरज करी, घड़ी पहुंची आए।
धाम धनी याद कीजिए, समया पहुंचा धाए।।११

अरज करे सेज की, गंगादास इन काम।
समें भया पौढ़न का, राज पधारो इस काम।।१२

चरचा में चित रहे, स्वाद धाम बरनन।
सब श्रवना देत सनेह सों, खास गिरोह सैयन।।१३

सवाल करे कोई बीच में, ताको दे उत्तर।
फेर चरचा तिन पर होत है, रस घटे न क्यों ए कर।।१४

इन समें कोई आयत, लालदास ल्यावत।
फेर सुने चित देय के, पौढ़ने की अरज करत।।१५

जेनती इत आए के, बीच में करें अरज।
बातें गिरोह की सुनी होए, ताको उतारें फरज।।१६

गोकुलदास इत आए के, ल्यावत हदीसें।
केसवदास पढ़त हैं, हदीसां इन समे।।१७

साथी सब सेवन के, रहे गिरदवाए घेर।
फेर फेर अरज होत है, अब बहुत हुई है बेर।।१८

साथ सबे इन्तजार खड़े, श्री जी आप करें झेर।
चरचा के सुख वास्ते, सब मोंगे रहे फेर।।१९

यों करते आधी पर, घड़ी दोए चार बितीत।
फेर के अरज होत है, कहें उठत हैं ल्याओ परतीत।।२०

जब महाराजा होवहीं, देवें चरचा में श्रवन।
कोई न बोलें इन समें, साथ चरचा के आधीन।।२१

श्री बाई जी इत बैठत, करत इसारत साथ।
बेर भई अबेर, क्यों ना छोड़ो किताब हाथ।।२२

श्री राजें देखा साथ सामनें, हुए उठने को तैयार।
तब सरूप बरनन धाम का, दिखाया परवरदिगार।।२३

तुम सुरत राखो धाम में, श्री राज पौढ़ने की ठौर।
इन समें अपने सरूप को, याद ल्याओ न और।।२४

सरूप बरनन सनेह सों, करत साथ पर प्यार।
इन समें को सुख क्यों कहूं, जो करते थे मनुहार।।२५

इत वल्लभ अरज करत हैं, श्री धाम धनी की वृत।
संझा से आधी लग, कहता कोमल चित।।२६

श्री राज उठत इन समें, पधारत घर मानक।
हाथ पकड़ उठावत, गंगादास बुजरक।।२७

एक तरफ लालदास, यातो लच्छीदास।
या हाजिर होवे मकरन्द, पकड़ ग्रहत दिल उलास।।२८

पांवड़े बिछावन होत हैं, हाजिर रहे हिम्मत।
लटके मटके चलत, मीठी बातां बीच करत।।२९

पहुंचावे मानक के मकरन्द, बैठावत बाई गौर।
मानक बातें करत हैं, लिए हुज्जत चित मरोर।।३०

हंसते उत्तर देत हैं, कई न्याय चुकावें इत।
फेर इंहा से उठ चले, आए सेज पौढ़ने बखत।।३१

आय बिराजे सेज पर, साथ सब किया प्रणाम।
आप अपने आसन गए, पहिले उठी सब आम।।३२

इत गोदावरी आवत, ले आई कटोरी में तेल।
चोटी छोरें बातां करें, राज भला दिखाया हमें खेल।।३३

बातें श्री बाई जी की, घर की जो बीतक।
श्री राज श्रवना देत है, ए बातें बुजरक।।३४

अंगारे अंगीठी भर के, ल्यावत बिहारी दास।
थाली में अंगारे धर के, फेरत मानक खास।।३५

सेज तपावें भली भांत सों, रजाइयां और चादर।
कनढपी गोटा हाजिर करें, पहिनावत ऊपर।।३६

मुरलीधर बिदा भए, उठे गिरोह के लोक।
चरचा आहार अघाय के, भाग गए सब सोक।।३७

श्री राज पौढ़ें पलंग पर, सबको कही प्रणाम।
गावन वाली आइयां, अढ़ाई पहर गई जाम।।३८

बदले राग अलापत, साखियां लगा कहनें।
सब संगी सुर पूरत, लगे मीठी श्रवने।।३९

श्री राज चित दे सुनत हैं, बड़ी खुसाली कर।
इन समय साथी खिजमत के, आए अपनी खिजमत पर।।४०

चौकी सेज्या की बैठत, हंसे और साहमन।
केसवदास दौलत, और हजूरी सैयन।।४१

और बानी सुनन को, कोई कोई साथी बैठत।
मानक लगते सेज के, तलाई पठई उन बखत।।४२

लगते बिछौने बाई जी के, होत सिराने तरफ।
और घेर बिछौने सैयन के, और कोई दम ना मारे हरफ।।४३

और मोमिन भर बंगले, कोई बैठत कोई सोवत।
मुरलीधर और जेंनतीदास, बैठे चरचा को इत।।४४

कोठरी काके की, आगे मिलावा होत सैयन।
तहां कुरान हदीसां बांचत, लाल केसव मोमिन।।४५

गोकुल दास बैठत, और मोदी बूलचन्द।
और केतिक बाइयां बैठत, और सदा बैठे सदानन्द।।४६

इत बड़ा मिलावा होत है, कबूं बानी कबूं चरचाए।
कबहुं किताबें कई तरह, यों आहार रूह खिलाए।।४७

श्री राज उत्तर देत हैं, बैठे कौन इन बखत।
संकर बुधसेन बल्लभ, नाम साथ के बतावत।।४८

कबूं दस कबूं बीस, तीस चालीस पचास।
कबूं साठ सत्तर असी, ए धाम धनी की आस।।४६

आखर को सौ बैठत, कबूं ऊपर भी होए।
भर एक अलंग बंगले, बैठत हैं सब सोए।।५०

कोई कोई नेष्टा बन्ध, चूकत नाहीं सोए।
कोई कबहुं आवे कबहुं नहीं, ए चरचा सब मिल होए।।५१

ए चरचा सो करे, जो सुनी होय श्री राज।
तिन चरचा को अरचत, श्री राज रिझावन काज।।५२

मिलावा बैठत सैयन का, रीझ राज भेजत हार।
कबूं कलंगी बकसत, ऐसी करें मनुहार।।५३

उठ मुरलीधर लेत हैं, श्री राज की बकसीस।
बांट देत सब साथ को, फेर फेर नवावें सीस।।५४

गोकुल केसव दौलत, कबहुंक लालदास।
जो चरचा इत होत है, सो सुनावन की आस।।५५

राज सों बातां करन को, हरखत है मन मांह।
श्री राज राजी होत है, सुन विवेक इनको मुस्कायें।।५६

इत कई भांत बिहार की, बातां होए विवेक।
सो मेरी इन जुबां केती कहों, न आवे रसना एक।।५७

महामत कहे ए मोमिनों, ए सातवें पहर की बीतक।
अब कहों पहर आठमा, ताकी सुनो सिफत।।५८

प्रकरण।।७०।। चौपाई।।४२४४।।

आठमा पहर

अब कहों पोहोर आठमा, श्री राज पौढ़े पलंग पर।
बानी धाम धनीय की, गजरत सब ऊपर।।१

बारी वाले गावत, फिरती चौकी पर।
जिनकी आवे सो गावहीं, रसना मीठी कर।।२

बानी धाम धनीय की, ए चौदे तबक हैयात।
पहिचान भई न काहू को, रूह पिये हैयाती हो जात।।३

आज लों इन इण्ड में, कबहूं काहू सुनी न कान।
कई हुए इण्ड कई होवहीं, पर काहू न बोए पहिचान।।४

ए सुननें की ताकत, त्रिगुन को ना होए।
और नाम किन के लेऊं, इन उपरान्त सोए।।५

सो रस सागर रेलत, कोई ना धरत कान।
एक सैयों की रूह पीवहीं, और काहू ना पहिचान।।६

कैसी जिकर होत है, किन ठौर पहुंचत।
क्या नफा होत है, ए पहुंचावे कित।।७

एह मेहर किन करी, ए हुई किन ऊपर।
किन बरकतें आई इत, कोई पावे न पटन्तर।।८

जो पावे ए पटन्तर, ताकी पल न वृथा जाए।
सो इन रस में झीलत, ताको और कछू न सुहाए।।९

ए बैठत ढिग आए के, धरें सुनने को कान।
होत पहिचान रूह की, बढ़त जात ईमान।।१०

ए बानी इन धाम की, ले बैठावत निजधाम।
सबको सुख उपजे, होए पूरन मनोरथ काम।।११

इन बानी से होत है, नजर पड़े बीच बका।
ए रसना स्यामा जीए की, पिलावत रस रब्ब का।।१२

जो धाम अन्दर की, बिहार की मजकूर।
सो अक्षर को सुध नहीं, जो अन्दर का जहूर।।१३

जो अक्षर को सुध नहीं, सो त्रिगुन पास क्यों होए।
सो सब इन बानी में, सुपने नजर पहुंची सोए।।१४

नजर नाबूद जीव की, सो सुपने में रल जाए।
नींद उड़े उड़त हैं, सुध ना रहवे ताए।।१५

तिन नाबूद की नजर, बीच अखण्ड पहुंचे।
अक्षर ठौर सरूप की, इन बानी से देखे।।१६

जहां जबराईल रह्या, चल सक्या न आगे।
इन बानी की बरकतें, जमुना सातों घाट पहुंचे।।१७

आगे रसूल तखत पर, रफ रफ के बैठे।
जोए उलंघ आगे चले, देखा धाम ठौर जेठे।।१८

इन जुबां के सुर सुनते, सब ठौर आवे नजर।
रूह आतम पहुंचत, ताए हो जात फजर।।१९

इन बानी के सुनते, आप होत हैयात।
देखें बैठे माया मिने, ठौर बका हक जात।।२०

इन बानी के सुनते, खुलत भिस्त के द्वार।
आप देखे औरों दिखावहीं, पहुंचे नूर द्वार पार।।२१

इन बानी की बरकतें, कछू न रहवे सक।
रूहें राजी रहे रात दिन, जाए बैठे कदमों हक।।२२

इन बानी की बरकतें, भया जागृत सुपन।
पहिचान काहू ना हुई, पहिले पास आई सैंयन।।२३

तहां से ए संसार में, पसरी चौदे तबक।
बढ़ते बढ़ते बढ़ चली, जाए त्रिगुन पहुंची हक।।२४

इन बानी की बरकतें, नींद उड़ी नूर जलाल।
ए याद करे सुपन को, होए के दिल खुसाल।।२५

याद करे बानीय को, तब उठे आठों भिस्त।
इन बानी की बरकतें, धाम अन्दर पाई किस्त।।२६

इन बानी की बरकत, मावे न जिमी आसमान।
सुंन छोड़ बका पहुंचे, सो मोमिन सुनके कान।।२७

श्री धाम नव भोम है, इन बानी के में।
सो ठौर है अखण्ड, बानी ऐसी कहे सें।।२८

हौज जोए बाग जानवर, सो इन बानी बीच है सब।
सातों घाट जो पुल हैं, सो सैयां देखें अब।।२६

मानक महल पुखराज, और अलंग गिरदवाए।
सो सब बानी बीच में, सैंयन को पहुंचाए।।३०

आठों सागर सुख के, बीच टापू महल मोहलात।
सो सब है बानी में, पहुंचावत साथ हेयात।।३१

हक हादी रूहें रहत हैं, सो इन बानी में।
नित बिहार करत हैं, सो इन बानी सें।।३२

औलिया लिल्ला कामिल, दोस्त कहे खुदाए।
सो इन बानी बीच में, हमेसा इप्तदाए।।३३

और सिफत कहां लों कहों, पातसाही परवरदिगार।
सो इन बानी बीच में, सब सैयां जानन हार।।३४

इन बानी की बरकतें, सब दफे होत बलाए।
सदा सैतान कांपत, मिने पैठ न सके ताए।।३५

एह जिकर जुबान सों, करत हैं सब मोमिन।
श्री राज पौढ़े सुनत हैं, नींद न आवे नैनन।।३६

कछू आंख मिली के ना मिली, फेर सुनत हैं कान।
कोई आगूं पीछूं हरफ कहे, कहें मोमिनों को सुभान।।३७

ये आगे पीछे क्यों कहया, क्यों गए हरफ भूल।
चुप रहें अरज करें, कहें हमें न आया सूल।।३८

यों करते इन भांत से, बाकी रात रही घड़ी चार।
आया समें बिरत का, गिरोह उठने का करे बिचार।।३९

सरूप मुरलीधर कह के, करे साथ को प्रणाम।
साथ सब कोई उठे, अपने देह क्रिया के काम।।४०

कोई नींद करत हैं, कोई सुनने चाहें विरत।
उठे लालदास कहने को, पहले मंगला आरती के इत।।४१

मंगल आरती के समय में, साथ नेष्टाबन्ध आवे इत।
आरती सब मिल कर के, फेर बैठ के सुने विरत।।४२

सोवते सुन विरत को, बैठे आए के इत।
सावचेत सब दिल दे, होए बैठे जाग्रत।।४३

इत पहिले हंसे के घर में, बिरत का उठा अंकूर।
जेंनती गिरोह मिलाय के, करते थे मजकूर।।४४

तहां सेती लई लाल नें, ए मेहर हक सुभान।
फेर एक एक दिन सबों कही, जिनको जेती पेहेचान।।४५

वृन्दावन के घर में, कोई दिन कही विरत।
साथ सब उत बैठ के, कस्त जो करते इत।।४६

अग्यारहीं जोलों रही, दिल बड़ो चाह धरे।
फेर ठंडे पड़ते गए, कहे लाल अंग ठरे।।४७

लालें दई मकरन्द को, फेर लई लाल खान।
ये तीन फिरते कहे, श्री राज सुनत है कान।।४८

बहुत खुसाल होत है, सुन धाम बिरत प्रात।
उठ बैठे सेज्या पर, कानों सुनें विख्यात।।४९

पीवत कहवा मंगाए के, बिरत सुनत जात हैं कान।
देख मेहर हक सुभान की, करावत है पहिचान।।५०

आवे महावजी इन समें, नेष्टा लेकर दिल।
बिरत कहने वाले ढिग बैठत, अंग दाबें हिल मिल।।५१

जो कोई बिरत कहे, करे सेवा ताए।
आवें पिछली रात को, ऐही हेत दिल ल्याए।।५२

और मोहन दास आवत, और मोदी मूलचन्द।
नेष्टा ए ना छोड़हीं, ले दिल में आनन्द।।५३

और गोविन्द दास आवत, और इन पीछे सब कोए।
आवत सुनने सरूप को, आनन्द अंग में होए।।५४

धाम की गिरद कहके, फेर अन्दर पैठे।
चारों चौक उलंघ के, पहुंचे पांचवे चौके।।५५

कहे चौसठ थंभ फिरते, चन्द्रवा दुलीचे।
सिंहासन के ऊपर, जुगल किसोर बैठत।।५६

साथ गिर्दवाए घेर के, बैठे चबूतरे भर।
सब भूखन वस्तर, बरनन होत चित धर।।५७

फेर चौक गिरद के, गिरद छज्जे बन मोहोलात।
फेर लेत दूसरी भोम को, फेर तीसरी चढ़ जात।।५८

चौथी निरत की बरनन होत है, पैठे पौंढ़न पांचमी में।
फेर छठी सुखपाल की, हिंडोले झूलें सातमी ऐ।।५६

खट छप्पर है आठमी, नोंमी पे सिंहासन।
तहां बैठे गिरद देखहीं, बहुत झलकत नूर रोसन।।६०

जब पूरब तरफ बैठत, तब देखत सातों घाट।
और ठौर अक्षर की, वार न पार इन ठाट।।६१

बट पीपल चौकी बैठहीं, मानक और पुखराज।
या बीच धाम तालाब, इहां खेलें सैंया संग राज।।६२

तालाब मानक बीच में, चौबीस फुहारे उछलत।
चौबीस गुरजों चादरें, कुण्ड लहरें तलाबे इत।।६३

फेर मानक वर्णन होत है, गिरद फिरत हवेली ए।
दोइ बीच में दरवाजे, एक गिरद चौखूनी के।।६४

फेर गिरद के हिंड़ोलें, जहां बैठे बारे हजार।
नेहरां दोऊ बाजू देहुरे, सैयां रमते करें करार।।६५

नहरे चार आठ कहूं बारह, फेर आवें वन मोहोलात।
आगे मैदान देख के, खेले मेदान में इत।।६६

फेर अलंग बरनन करें, चार हार सोलह दरबार।
आठों सागर टापू बीच में, खेले परवरदिगार।।६७

फेर नवमी भोम से, जाए पहुंचे दसमी आकास।
तहां से तले चौक पांचमां, रूहें स्याम स्यामा जी खास।।६८

चारों चौक उलंघ के, आए पहुंचे बीच द्वार।
फेर आगे आए देखे चांदनी, दोऊ चबूतरों खेलनहार।।६९

सातों घाट फेर के, दोउ पुलों ऊपर जमुना।
चल आगे पीछे मरोर खाई, पहुंची तालाब में लेहरां।।७०

गिरद तालाब टापू बरनन, बन चौफेर गिरदवाए।
अन्न बन लगता आगे दूब बन, सब जरद रंग सोभाए।।७१

इन आगे मैदान है, फेर फूलबाग करें नजर।
सौ बाग तले सौ ऊपर, सोभा सुनते हो जाए फजर।।७२

फेर लाल चबूतरे आए के, आए चारों बन पुखराज।
हजार गुरज गिर्दवाए, चारों दरवाजे खेले श्री राज।।७३

आठ पेड़ पुखराज के, तले बंगले जमुना मूल।
आगे पटी जमुना खुली, मरोर खाए मिली पुल मूल।।७४

दोनों पुलों बीच में, सातों घाट कहे।
छुटक देहुरी तिन में, आगे चली तालाबें ये।।७५

कुंजबन इन बीच में, ए विरत होत बरनन।
दिन रह्या पोहोर पीछला, श्री राज स्यामा जी उठ बैठे सैंयन।।७६

कौन घाट आज जाएंगे, पूछ के पहुंचे तित।
एक पहर बिलास किया, दोए पहर बिहरत।।७७

फेर पौढ़े पांचमी, प्रात उठे इन ठौर।
तीसरी भोम पधारत, ए सोभा है जोर।।७८

आरोग पौढ़े भोम तीसरी, खेलें चौक में साथ।
श्री राजें आज चित धरी, खेल दिखाऊं पकड़ हाथ।।७९

खेल दिखावन की, जो भई रद-बदल इसक।
भूत भविष्य और वर्तमान, सब ये देखाया हक।।८०

फेर इस्क रब्द खिलवत की, मजकूर करी मोमिन।
आए तले बिराजत, होए आप में चेतन।।८१

इच्छा भई भगवान पर, आए बीच सुपन।
फेर रूहों पर हुकम हुआ, ब्रज में भए एक ठौर सैंयन।।८२

अग्यारे बरस बावन दिन, पीछे पहुंचे वृन्दावन।
एक रात तहां रहे, फेर तीसरा उत्पन।।८३

तहां रास लीला कर के, आए बरारब स्याम।
त्रेसठ बरस तहां रहे, वायदा किया इस ठाम।।८४

रूह अल्ला आए दसमी मिने, रहे बरस चौहत्तर।
ताए तीन सौ तेरे मिली, पाई कुरान में पटन्तर।।८५

ए संक्षेप बिरत का, एक एक कह्या सुकन।
विस्तार इत बहुत है, सब ठौर पावें मोमिन।।८६

ए बिरत श्री राज सुनत हैं, तब होत अरून उदे ।
सब सेवा में सनमुख, हुआ प्रात को समें।।८७

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए आठों पहर की बीतक।
अब सरूप साथ को देत हैं, सो कहूं सोभा हक।।८८

प्रकरण।।७१।। चौपाई।।४३३२।।

दिन आठों पहर की, कही बिरत जो ए।
नित कारखाने सेवहीं, कहूं साथी सब सेवन के।।१

मूल कुल दीवान गिरी, थी सेवा गरीब दास।
सो नित अरज करें, अब चले न सेवा मों पास।।२

एह तुम देओ और को, मजल राम नगर।
कही बहुत आतुर होए के, तब हुआ हुकम लाल पर।।३

गढ़े से हुकम हुआ, पातसाह के हजूर।
तब वृन्दावन को दई, जान के काम जरूर।।४

लाल का रहना हुआ, हुकम ना हुआ सो तेह।
सुनी ए सकुण्डल ने, परने जाए कहो एह।।५

तब लालदास को पठए, ले परने को पैगाम।
महाराजा सों मिल के, किया बुलावने को काम।।६

आए पहुंचे परना में, लाल चले ना तब।
तब छोड़ी वृन्दावन नें, सौंपी लाल को सब।।७

दे पठई कुंजी को, लाल को हुआ हुकम।
एह आई अज्ञा से, सेवा करो अब तुम।।८

मूल छत्तीस कारखाने का, सब दिया हाथ लाल के।
जिनको जो कछू चाहिए, सो सबों पहुंचावे ये।।९

एक मूल श्री बाई जी के, सब पहुंचावें साज।
बस्तर जो पहिनन के, तुमें क्या चाहियत हैं आज।।१०

दोनों सरूप और साथ के, सब बस्तर भूषन।
पहुंचावे सनेह सों, नित नित रंग नौतन।।११

और अनाज सब जात के, साक तरकारी सब।
मेवा मिठाई हरड़े, जो जिन समें चाहिए जब।।१२

रूई सूत और बासन, निरगुन और सरगुन।
सब पहुंचावें समें समें, आन आन देवें सैंयन।।१३

हाजिर रहें हजूर में, बैठे श्री राज के पास।
आगे पीछे ना होवहीं, ये सेवा करें खास।।१४

इनके पास रहत हैं, इन कारखाने में।
घनस्याम लेखा लिखें, धरम दास खजानें।।१५

सन्त दास सामिल रहें, और चतुर रहे इत।
और मानक रहत हैं, कल्यान भी आवत।।१६

भिखारीदास भी रहें, खजाना मकरन्द रखें।
इन पीछे गीगे को दई, सेवा करें सब कोए।।१७

कपड़ा मकरन्द देवहीं, सब साथ और राज।
नित सेवे सनेह सों, फेर खेम करन रखा इन काज।।१८

पहिले नारायन देवें कपड़ा, रहे सेवा में हुकम।
देवें सब सनेह सों, फेर करी खेमकरन आतम।।१६

महामत कहे ए मोमिनों, ए साथी सेवा के।
कहों केता अजूं बहुत हैं, जिन प्यारे चरन धनी के।।२०

प्रकरण।।७२।।चौपाई।।४३५२।।

गरमी के दिनों में, सब सेवा खुसबोए।
अतर खरीद सब जात के, आवे तुंग भरे गुलाब के सोए।।१

अगर चोवा खस खाना, करें सेवा गंगाराम।
खसबोय खाना सब रखत हैं, एही खरीद करें इस ठाम।।२

खस खाना बनावत, टटियां अपने हाथ।
छप्पर छांटे भली भांत सों, छिटकत पानी साथ।।३

टटियां बांधने को, एक ओका गंगा राम।
सेवा कृष्णदास दयाल, रहे महम्मद खां इन काम।।४

फते महम्मद आवत, खड़ा करन खस खान।
बंगले के बीच में, सब सेवा करें समान।।५

काम बढ़ई का पड़े, रहे मोहन हीरा मन।
सुतरी डोरी ल्यावन को, बूल चन्द मोहन।।६

बांस कमचिएँ ल्यावत, पुरबीए खोज पर।
समारने बांसन को, जग्गू वीर जी बुलावने पर।।७

लाल खारूआ चाहिए, ल्यावत है नारायन।
बनाए के ठाढ़ी करें, पोंढ़त है सुभान।।८

जल छिरकत सब बंगले, उठाए सब बिछौनें।
इनाएत खां भगवान, गंगाराम सेवें इनमें।।९

बिछौने वाले बिहारीदास, सब साथ दौड़े इन काम।
वीरजी मोदी जल छिरकत, कर राज की पहिचान।।१०

नन्दराम पखाले मंगावत, आखर बल्लभ इत छिरकत।
तर करें जिमी को, गरमी न फरकत।।११

वाओ ढ़ोले इत हजूरी, खड़े रहें इक पाये।
बिहारी वाओ ढोलत, कबूं गंगादास इत आए।।१२

संकर हाथ में रहत हैं, हमेसा ही बिजने।
जब महाराजा आवत, वाओ ढ़ोलें इन समें।।१३

और साथी सब ढोलत, जहां लग पौढ़त श्री राज।
चार जने इत खड़े रहें, वल्लभ संकर एही काज।।१४

गंगादास गंगाराम, और बिहारीदास।
सन्त दास सेवन में, खड़े रहें ए खास।।१५

और साथी भी सेवन को, खड़े रहें सदा सनमुख।
जिनों सुख लिया इन समें, कह्यो न जाए इन मुख।।१६

इन सेवा मिने पहिले, रहते निरमल दास।
ता पीछे प्रेमदास नें, सेवा करी जो खास।।१७

लाल मुकुन्ददास रहत हैं, निरमल दास के संग।
गोविन्द दास सूरती, मगन सेवत सर्वा अंग।।१८

जमुना मानक इन समें, रहें हजूर सेवा में।
राम बाई आखर में, ए सबे हुई बल्लभ सें।।१६

हकीकत खां भेजत है, गुलाब के सीसे।
छिरकत हैं सब सेज पर, गंगाराम इन समें।।२०

मिहीं वस्तर पहिनन के, प्रेमदास ल्यावे।
आखर को इन पे, नन्दराम पासे जावे।।२१

आई फेर बल्लभ पास, यापे सब सेवा को बोझ।
बहुत मेहनत इन करी, सब सेवा की खोज।।२२

महावजी भाई इन समें, आए पोरबन्दर से।
सेवा अनार राखवे की, और पत्री लिखवे की सेवा में।।२३

आसबाई इन समें, लागत हैं चरन।
श्री राज हेत कर बुलावत, प्रसन्न होए के मन।।२४

महामत कहें सैयन को, ए सेवा के कहे साथ।
इहां तेही खड़े रहे, जाके धनीएं पकड़े हाथ।।२५

प्रकरण।।७३।। चौपाई।।४३७७।।

कुल प्रकरण-७३, कुल चौपाई४३७७